निकाशकिः।

অর্থাৎ

ীকা দম্বনীয় গুরুশিসা লকণাদি যাবতীয় ইতি কর্ত্তরতা বিষয়ক প্রমাণ, প্রয়োগ, পূজা, পুরশ্চরণ, হোম, মন্ত্র, যন্ত্রাদি নম্মলিত এম্বং।

भिवाः खानः यत्नामार कृगार भागण मरक्रयः। जन्माकीरका भा त्याका ''इमीकित्स नगकः अस्मर्''॥

बोकोद्रापिक्रां भाषाप्रापिना

সংগৃগতা শ্রেকাশিতাত। শ্রীচন্দ্রমার তর্কালস্কারেণ অনুবাদিতা।

কলিকাত।।

वाधाकाव ; ५८ मः, त्राका त्राक्षवज्ञ ही है, नग-शातक व्याध ओडेमग्रह्य (वाक कावा मूर्ण हो।

. मन ১२२१।

(All rights reserved.)

विख्वां शन।

সম্প্রতি অনেকেই আমাদিগের প্রাচীন ঋষিদেবিত সনাতন আর্যাধর্মের প্রতি বিরক্ত হইয়া উটিতেছেন, কালমাহাত্যোই লোকের এইরূপ ধর্মানাস্থা ইইতেছে, ব্যক্তিবিশেষের অধিক লোষ দেওয়া ষায় না। ত্রংখের বিষয় এই যে, ঘাঁহারা দূর-দশী অথচ ধার্মিক বলিয়া সমাজে পরিচয়দিতেছেন, ভাঁহারাও मृक्याक्रेश निर्दार्गा कित्या (पिथिटिएन ना, शत्रु अर्नरक বিজ্ঞানের পক্ষপাতী হইয়া ভগবদমুশাসন বাক্যে অনাস্থা প্রদর্শন করিতেছেন। আর অনেক লোকই প্রত্যক্ষ বাদী, শুতরাং তাঁহারা যে কার্য্যের ফল সাক্ষাৎ সম্বন্ধে প্রত্যক্ষ क्तिएं ना भारतन, তांश विभागकत्तन ना। यां क्रकाल किन्द्रभग्रे विश्व कार्या कतिया (कर कान कल शाहरण्डन ना, এই निमित्हें मकाल ममयत इहेशा " मर्तित मिथा।" এইরাপে অধার্শ্মিক নাস্তিকগণ চীৎকার করি,তেছেন। কিন্ত कि काता। हिन्द्रशामी कि कार्या প্রত্যক ফলপ্রদান করিতেছে ना, कि आफिक कि नाष्ठिक (कश्टे जाश्त शक्र कात्रभ উদ্ভাবন করিতে যত্র বা চেফা করেন না। আমরা দেখিতেছি, णाधुनिक योजक ও यजगान (राज्ञश निक्ष भ आर्त्त (लोक, छोहामित्वत किया कलाथ । प्रहेतथ कल मिर्छ । किया हि किक्तभ डेभकताल, किक्तभ मगाय छ किक्रभ छक्षाता मः माधिड इड्रेल, जाङात প্রতি কেহই দৃষ্টিপাত, করেন না, কেবল शिशांत कल इंडेल गां, এই विलिशा भारत्रत मस्टाक व्यागांच करत्न। वार्जिक छक्रहे जागामिर्गत जेहिक छ भार्ता खक उन्निक माधानत वीक्यक्तभ, এवर किनिन्ने जातात हेरकाल अ भन्नकार्त्व जात्सूम (क्रात्मन कान्न इट्टि भारतम। जागना यिन मम् छक्र हिनिया लाई एक शाति, ध्वर हिनि छ (मन काल পाত नित्निवा मञ्जारिक किएक भीरतन, তाहां हहेत्न यागा-निर्धित मर्किकीन मक्षन माधन इट्रेंट कोन वाहा थारक ना,

আর অসদ্গুরুর অসত্পদেশে যে কত লোকের সর্বনাশ হইতেছে, তাহা অনেকেই প্রত্যক্ষ করিতেছেন। তথাপি কিরপ ব্যক্তি প্রকৃত গুরুপদের উপযুক্ত পাত্র ? কি প্রকারে কার্য্য করিতে হয় ? আর গুরুর কি কি গুণ থাকা আব-শ্যক ? তাহা লক্ষ্য করেন না। পক্ষান্তরে বিশুদ্ধবিধি পুস্তকের অভাবেও অনেক স্থলে যথোচিত দীক্ষা হইতেছেনা। যে দীক্ষা আমাদিগের জীবনের সারকর্মা এবং পুরুষার্থ সাধনের একমাত্র উপায়, তাহার প্রকৃত পদ্ধতির প্রচার নাই, ইহা সামান্ত ত্রুংথের বিষয় নহে। অতএব আমি দীক্ষাপদ্ধতি নামে একখানি পুস্তক প্রকাশ করিলাম, এই গ্রন্থে গুরুশিষ্যলক্ষণ, অকডমচক্র, व्यक्षश्ठक, अभीवनीठक, त्राभिठक, नक्षक्रक ७ कूलकूलां पि-ठक विठात, याख्रत দশবিধ मश्क्रात, मीक्रात कालाकाल, मीकात ইতিকর্ত্তব্যতা, পূজা, হোম ইত্যাদি দীকার সমুদায় বিষয়ই বিবৃত হইয়াছে, এমন কি, যাঁহার নিকট ইহার এক-খণ্ডপুস্তক থাকিবে, ভাঁহার দীক্ষা সম্বন্ধে পরিজ্ঞাতব্য বিষয় কিছুরই অভাব থাকিবে না। আমি বহু যত্ন ও কায়িক পরি-শ্রম স্বীকার করিয়া পঞ্চাশখানি তন্ত্র, পঞ্চরাত্র, সংহিতা, স্মৃতি, বেদ, ও পুরাণাদির প্রমাণ সংগ্রহ করিয়া এইগ্রন্থ থানি প্রকাশ করিলাম, ইহাতে আমার নিজের বিদ্যাবুদ্ধি কিছুই नारे, दकतल প্রাচীন আর্য্যঞ্জিদিগের মহাবাক্য সকলের অনুরূপ প্রকাশ করিলাম, ইহার মুদ্রাঙ্কণ অতি উত্তমরূপে নির্বাহিত হইয়াছে, গ্রন্থানি একবার দেখিলেই বুঝিতে পারিবেন। ইহার মূল্য ২, টাকা ডাকমাশুল % আনা।

श्रीकी तामिकाती (भाषाभी।

সূচীপত্ৰম्।

বিষয়	পৃষ্ঠা	গংক্তি	বিষয়	7्डं।	শংক্তি
व्यथं मक्ना हित्रनः •••	>	>	चथ नग्र निर्वतः	৬৬	5
. स्वन्यक्षः	ર	>	, नक माननिर्देशः	6 6	9
,, निनाशक गक्र १	•	æ	,, जान निर्वशः ···	92	•
	-		, यञ्चानाः मण मश्काताः	90	>
,, श्वर्षाहत्रगः	7	3	,, মাতৃকা যন্ত্ৰ	94	9
,. श्री छक्रतिया विधिः	>>	>	., कगावकी मीका-		_
., শিষা লক্ষণং	34	7	व्यायाः		>•
., निविक निवानकनः	3 *	9	,, সামান্তার্ঘ্য স্থাপনং সংস্থান্ত	92 V•	b
., अक्निमारमाः भन्नीकनः	१ २५	>>	., बात्रशृक्षाविष्ठः ,, बात्रनक्षि×्…	b ?	۳ ص
,, खक भकार्थः	२२	9	,, भक्ष भवा ख्रमानः	b \$	٥.
,, मीका विठावः	२8	3	,, ভূতভূদি:	F-9	53
,, जीमीका विहातः	? 6	> >	,, মাতৃকাঞ্চাস:	b b	ર
	-		,, অন্তর্শাত্ক। ···	64	•
,, अमीकिन्छ (मापः	9)	9	,, वाद्याङ्का शामः	\$>	>
,, भृष्ण निविक्रयञ्जः	99	2	,, मःशत माउक।	٥٦	æ
,, कूनाकून ठकः	9 6	አ	,, প্রাণায়ামঃ	8	'n
,, दानि हकः	೨ನ	5	,, পীঠন্তাস: ···	24	8
्र, नक् ज ठळः	8 ર	9	,, अयानि जानः	29	9
,, ष्रकथह ठळाः	89	5	,, অধ্য স্থাসঃ ,, অধ্য স্থাপনং	३ ৮	2.
,, অক্তম চক্রং ·	()			• २	R
., अनीधनी ठळार	69		,, পীঠপুৰা · · · ৷ ,, সৰ্বভোভন্ত		>8
,, मीका श्राकद्रगः			मखनः ১	o B	b
	63	>	., शकात्रक्रमी भीका ,, गरक्रम भीका ,, विषेड गर्श्टकाका-	29	ડ ર
,, मीका कानः	••	œ	,, गःटक्त मीका	, 90	>>
	4 >	>0	,, বশিষ্ট সংহিত্যেকা-		
,, जिथि नित्रयः	৬২	8	ভিবেক মন্ত্ৰ: ১ং) र	9
,, नक्ज निष्यः	6 0	2	,, गमाञ्च প্ৰাণছভিঃ ১ ,, गद्या প্ৰয়োগঃ ···	99	•
,. याश निर्वश्वः	ક ૯	3	,, मद्या श्रामः …	306	•
,, क्यूप निर्वयः	46	25	, मह्या श्री श्री ।	3 6	•
	-	- `	,, गात्रका शक्त्रण ्	8 \$	b

•								
विषग्र	পৃষ্ঠা	পংক্তি	নিষ্ম · ·	্র প্রতিষ্ঠা বিশ্ববিদ্যালয়	প: ক্রি			
অপ সন্ধ্যা ধ্যান	385	· ·	,. नजीनातायन मजः	२२७	e			
,, মানস পূজা · · ·	>89	>	,, पिरायन मद्रः	२२8	9			
,, সামাজ পূজাযন্ত্ৰং	>6.0	>	,, रुद्रिरुत्र यक्षः	२२७	2			
,, विकृशमां मन्ता "ह	>e+	3	ः ञ्रीक्र गरमर्कन		•			
., देवस्थवाह्यमः	764	9	या हा जा हुः	२२৮	>			
,. অস্ত পূত্রাপ্রয়োগঃ	565	•	्,, निरं मञ्जाः	₹ ३•	•			
,. किमवकी द्यां नि स्र	17: ১৫৯	۵	,. ञेक्श्रेष्ठातः	२७०	9			
,, ভত্তাস: ···	>68	b	,, পীঠশক্তি কাদ:	२७७	૨.			
,, राष्ट्रक खानः	369	4	,, व्यष्टीकत्र यहः	२७৯	.			
,, মৃতিপঞ্চ তাদঃ	くゃく	ь	,, অপর্মন্তাকর মৃত্র:	₹8₹	>			
,, বাপিক স্থাস: · · ·	८७८	74	।, মৃত্যুঞ্জ মন্ত্র:	२	Ь			
,, ধ্যানং	५ १२	•	,, পঞ্চাকর ষ্ডুকর মন্ত্র	: २ 8 8	3			
,, বিষ্ণুপূজারাং			,, হুৰ্গামশ্বা:	२८१	9			
পাত্রনিয়ম:	59 2	> 0	,, জয়ত্রী। মন্ত্রা:	२००	৯			
, আবরণ পূজা	390	8	,, মন্ত্রাস্তরাণি	२৫১	> 8			
" जीकृष्य महाः …	398	8	,, ত্র্গায়ন্তং	२৫৪	8			
,, অসু পু জা	399	> 2	,, খ্রামাপ্রকরণং	3 a a	8			
,, স্টি হাস: ···	3 24	٥	,, भागामञ्जः	20	٩			
,, বিভৃতিপঞ্জ ক্যাসঃ	228	0	•	२०५	8 6			
,, जिर्मामभौकत यहः ,, जहोत्रभौकत्रयञ्ज	> 6¢	٥	,, বোঢ়াক্সাদঃ ·	२०५	ર			
••			-	२ ५५	7 7			
ভৎপূত্র। ভিজ্ঞাক্তরমূল ২০০৮	\$2 \$2	9		२५२	8			
,, বিংশাক্ষরমন্ত্র তৎপুঞ্জ , শ্রীক্লফ বন্ত্রং ···	13 <i>0</i> 0	۵		२७६	C .			
, जाक्षणप्रकर गण्डः ,, षाविःभाक्षत्र गण्डः	२• २	1	•	२७७	>			
,, চতুর্দশাক্ষর মন্তঃ	2.0	>>		२ 98	>8			
,, এক†ক্ষেম্ভঃ	₹•€	3.	•	२१७ '	9			
ু, ভাষ্টাক্ষর মন্ত্রঃ	२०४	30	•	२३५	১৬			
,, चानभाकत मजः	23.	۵		२৯৯	b			
W	₹ }}	b	্, প্রাচণ পুর চরণ সকল: কর্মান		5 ¢			
6.6	२ऽ७	9		9•8 9•5	₩ •			
	₹ >8	į	,, হোমদ্রব্যাণং প্রমাণং		৩			
, कहीकत्र गडः	२ ,9	b	<u>~</u> .	9) §	9			
	36	1		938 938	22			
•	2+3	0		કરેર કરેર	• •			
k		7	V C E TOP 7 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	•				

जी का शिक्षि

পরাৎপরা শক্তিরনাদিরাদ্যা যাখগুবিশ্বস্থ নিদানভূতা। দীক্ষাবিধিস্তাং হৃদয়ে নিধায় নিরূপণীয়োবিহুষে ময়ৈষঃ॥

বেদাঙ্গাগম-কল্প-দৃক্ত-বহুধাতন্ত্ৰং পুরাণং স্মৃতিশ্বন্ধত্ৰি-প্রমুখপ্রণীত-বিবিধা যাঃ সংহিতা যামলং।
তেভ্যঃসারসমূহসংগ্রহবতা গোস্বামিনা কেনচিৎ
পঞ্চোপাস্তিমতামুপাসনবিধো দীক্ষাবিধিস্তন্মতে॥
দীক্ষায়াং গুরুকরণস্থাবশ্যকস্থাৎ প্রথমতো গুরুর্কিবিচার্যাতে।

সাধারণত: সচরাচর লোকে যে সকল কার্য্য করিতেছে, তাহাতে কোন অভিজ বাক্তির উপদেশ গ্রহণ করিয়া কার্য্য সাধনে প্রার্ত্ত হইলেই সেই কার্য্যের ফল প্রত্যাশার সম্ভব। কেহই প্রথমত: স্বতঃ দিদ্ধ হইয়া স্ফ্রার্ম রূপে কোন কার্য্য সাধনকরিতে পারে না, স্মৃত্রাং সকল কার্য্যেই গুরু-স্বীকারের আবশ্রকতা দেখা বাইভেছে। বিশেষ্তঃ দীক্ষাকার্য্যে গুরুই প্রধান অস্ক, অভএব দীক্ষাপন্ধতিবিস্তারের প্রথমে গুরুবিচার অবশ্রক্তিবা।

গুরুই আমাদিগের ঐহিক ও পারত্রিক উরতি ও অবনতির প্রধান কারণ। উপদেশকের উপদেশগুণে আমারা সংগারে সর্বাঞ্চার স্থায়ছেশে কাল যাপন কবিয়া পরকালেও নিত্যানন্ধাম পাইয়া অনম্বকাল নিত্যস্থ ভোগ করিতে পারি, এবং সেই উপদেশক গ্রার দোষে আমাদিগের স্থাব্য গু

ञ्थ शुक्लक्षर।

শান্তো দান্তঃ কুলীনশ্চ বিনীতঃ শুদ্ধবেশবান্। শুদ্ধাচারঃ স্প্রতিষ্ঠঃ শুচিদক্ষঃ স্ববুদ্ধিমান্। আশ্রমী ধ্যাননিষ্ঠশ্চ মস্ত্র

আত্মা উভয়ই কলুষিত হইয়া ইহকালে জনসমাজে তিরস্ত হইতে হয় ও পরকালেও অনস্তকাল নরকভোগ হইয়া থাকে। অতএব গুরু বিবেচনা করিয়া দীক্ষা গ্রহণকরা কর্তব্য।

यिनि भाख--- माः मातिक विवास छे एक छे छात्र वा शिवहीन ७ भगा नि छ भगू छ. व्यर्थाए व्यमने भागित रेष्ट्रा रहेला ७ (क्वल व्यमने भागितिकी रूपांव याँ हात्र ष्यिनाय, (कानक्रभ ष्याष्ट्रय वाह्ता हेन्हा नाहे, ष्यथह (ভाञन ব্যাপারের সময়াভিপাতেও যিনি কাতর নহেন। দান্ত—তপঃ ক্লেশসহিষ্ণু ও সংযতবাছেজিয়, অথাৎ যিনি ইজিয়গণকে অনাবশ্ৰকীয় বাহ্য বিষয়হইতে নিবর্ত্তিকরিয়া কেবল আত্মতত্ত্বপরিজ্ঞানের সাধনীভূত প্রবণমননাদি कार्या नियां करतन। কুলীন—কৌলাচারবিহিত কার্যো অনুরক্ত। विनौज-विनम्ना पिछ प्युक्त, लोकिक अछिगात अमछ नहन। বেশবান—পবিত্রবন্তাদিপরিধায়ী, আধুনিক ভণ্ড তপন্থীর স্থায় ক্যায়িত बद्धां मिनविधानद्वात्रा विक्रुं उत्भावी न्हा । ७का विक्रुं मक्ताविस्तामि कार्या ७९ भत्। ञ्लिडिक -- मरकार्याञ्कानदाता यभन्ती। ওচি-পবিত্রচিত্ত ও চাক্রায়ণ, গঙ্গাস্থান প্রভৃতি কর্মানুষ্ঠানরূপ পাপ-नामक कार्याबात्रा विश्वकिछ। मक-क्रियाकोमाछिछ। अवूकियान-मन् किमानी ७ मन्नासः कत्रन, ७७ व्यथवा क्रावाती नर्म। वाज्ञी— गृर्षाणि व्याध्यक्ति, উपानीन नहिन । धाननिष्ठ-नेधव उपिष्ठान उर्भव। <u> जञ्जमञ्जितिमात्रम — मोर्ज्ञाक (मर्ग्यूकामि कार्या भात्रमर्भी। निश्रहासूश्रह</u> শক্ত-যিনি অভিসম্পাতাদিদ্বারা অনিষ্ট করিতে পারেন এবং প্রসন্ন रहेरण वंद्रश्रान कदिया मन्भम् वृद्धिकदिएक भगर्थ। अथवा खिनिनाम ममकान। এইরূপ ব্যক্তিই প্রকৃত গুরুপদের যোগ্য পাত্র। আগম-नः हिजा मिथिज बाह्य एवं, यिनि छे भाषा वाता विया वर्ग कि मः मात्र

তন্ত্রবিশারদঃ। নিগ্রহানুগ্রহে শক্তো গুরুরিত্যভিধীয়তে॥ আগম সংহিতায়াং। উদ্ধর্ত কৈব সংহর্তুং সমর্থো ব্রাহ্মণোভয়ঃ। তপস্বী সত্যবাদীচ গৃহস্থো গুরুরুচ্যতে॥

মন্ত্রমুক্তাবল্যাং। অবদাতাশ্বয়ঃ শুদ্ধঃ স্বোচিতাচার-তৎপরঃ। আশ্রমী ক্রোধরহিতো বেদবিৎ দর্বনান্ত্রবিৎ। শ্রদাবানন্দ্রশ্চ প্রিয়বাক্ প্রিয়দর্শনঃ। শুচিঃ স্থবেশস্তরুণঃ দর্বভৃতহিতে রতঃ। শ্রীমানসুদ্ধতমতিঃ পূর্ণোহহন্তা বিমর্বকঃ। দগুণোহর্চাস্থ কৃতধীঃ কৃতজ্ঞঃ শিষ্যবৎসলঃ। নিগ্রহামুগ্রহে শক্তো হোমমন্ত্রপরায়ণঃ উহাপোহপ্রকারজ্ঞঃ শুদ্ধারামান্ত্রিয় কৃপালয়ঃ। ইত্যাদিলক্ষণৈয়ুক্তা গুরুঃ শ্রাদ্গরিমান্ত্রিয় ॥

হইতে উদারকবিতে পারেন, এবং অভিশাপাদিদারা বিনাশকরিতে সমর্থ, এইনপ ব্রাহ্মণশ্রেষ্ঠ সভাবাদী গৃহস্থাশ্রমী ব্যক্তিকে গুরু করিবে। যদি কাহারও গুরুকরণ আবশুক হয়, ভাহা হইলে উক্তলক্ষণাক্রাপ্ত ব্যক্তিকে গুরুরপে বরণ করিলেই সেই ব্যক্তি সমাক্রপে কার্য্য সাধনকরিয়া অভীষ্ট ফল লাভকরিতে পারে।

মন্ত্রমুক্তাবলীতে লিখিত আছে যে, যিনি সন্থংশক্ত অর্থাৎ বাহার পূর্বপুরুষ পাতিত্যাদি দোষরহিত এবং যিনি স্বয়ংও পতিত্যাদি দর্বপ্রেকার দোষবর্জিত, স্থার কুলোচিত আচার পালনে তৎপর, গৃহস্থাশ্রমী, বৈদিকাদি কার্য্যে সাতিশয় অমুরাগবান, দ্বেরহিত, প্রিয়ভাষী, ম্রুপবান, শুক্ষতিত্ত, পবিত্রবেশধারী, তরুপবর্ষ, সর্বপ্রাণীর হিতকর কার্যামুষ্ঠানে অমুরাগী, শ্রীমান, অমুক্ষতস্বভাব, সর্ব্বকার্য্যকুশল, অহিংসক, তর্ববিচার ক্রম, শুণশালী, ভগবদর্জনাতৎপর, ক্রভ্জ, শিষ্যবৎসল, নিগ্রহ অথবা অমুগ্রহ থার্য্যে সক্রম, হোমজপাদি কার্য্যে নিয়তচিত্ত, তর্কবিতর্কপার-দর্শী, বিশুদ্ধান্মা ও ক্রপাশালী। এইরূপ ব্যক্তিই গুরুপদের যোগা ও স্ব্বশ্রেষ্ঠ গুরু।

অগস্ত্যসংহিতায়াং। দেবতোপাসকঃ শাস্তো বিষয়ে-ম্বপি নিস্পৃহঃ। তত্ত্বজ্ঞো যন্ত্রমন্ত্রাণাং মর্মবেত্তা রহস্থবিৎ। পুরশ্চরণকৃদ্ধোমমন্ত্রসিদ্ধিপ্রয়োগবিৎ। তপস্বী সত্যবাদী চ গৃহস্থো গুরুক্চ্যতে।

বিষ্ণুস্তা। পরিচর্য্যা-যশো-লাভলিপ্নঃ শিষ্যাদ্গুরুর্নহি। কুপাসিদ্ধঃ স্থসংপূর্ণঃ সর্ব্বসত্ত্বোপকারকঃ। নিস্পৃহঃ সর্ব্বতঃ সিদ্ধঃ সর্ববিদ্যাবিশারদঃ। সর্বসংশয়সংছেতানলসো গুরু-রাহৃতঃ।

নারদপঞ্চরাত্রে শ্রীভগবন্ধারদসংবাদে। ব্রাহ্মণঃ সর্ব্ব-কালজ্ঞঃ কুর্য্যাৎ সর্ব্বেম্বনুগ্রহং। তদভাবাদ্ধিজঞ্চেষ্ঠঃ

আগস্তাসংহিতায় লিখিত আছে যে, যিনি দেবতার উপাসক, শাস্তশীল, বিষয়ভোগে স্পৃহাশৃষ্ঠ, ব্রহ্মতত্ত্বিদ্, যন্ত্র ও মন্ত্রের মর্মাভিচ্ন, শাস্তের নিগৃঢ়ার্থবেত্তা, ক্রতমন্ত্রপুর-চরণ, হোম, মন্ত্র ও জ্ঞপ করিয়া দিছিলাভ করিয়াছেন,
ক্রিয়াকলাপের প্রয়োগবেত্তা, তপস্থানিরদ, সতাবাদী, ও গৃহস্থাশ্রমী।
এবস্বিধ ব্যক্তিকেই গুরুকার্য্যের উপযুক্ত পাত্র বলাযার।

বিষ্ণুতিতে জানা যায় যে, যিনি শিষ্যের নিকট পরিচর্য্যা অথবা যশোলাভে ইচ্ছুক নহেন, কুপালুসভাব, সর্মপ্রাণীর উপকারকর্তা, ধনাদি লাভে নিম্পৃহ, সর্ম মন্ত্রাদিতে সিদ্ধি লাভ করিয়াছেন, সর্ম বিদ্যায় পারদর্শী, সর্মপ্রকার সংশয়ছেদনে সমর্থ ও আলস্থবিহীন, এইরূপ ব্যক্তিই গুরুষ পদের বাচ্য।

নারদপঞ্চরাত্রে শ্রীভগবরারদসম্বাদে লিখিত আছে যে, হে দ্বিলবর!
ব্রাহ্মণ সর্মাণলের কর্ত্তব্যকর্মাভিজ ও সকল বর্ণের প্রতি অমুগ্রহ করিয়া
থাকেন, অতএব ব্রাহ্মণই সর্মবর্ণের গুরু হইবেন! ব্রাহ্মণের অভাবে
ক্ষত্রিয়াদিরা; শাস্তপ্রকৃতি, ভগবদেকাগ্রচিত্ত, শুদ্ধচেতাঃ, দীক্ষাবিধানাদি
সর্মাণার্যে অভিজ্ঞা, সর্মশাস্ত্রবেত্তা, সংক্রিয়ামুক্তে, দিদ্ধিত্রর অর্থাৎ
নিষ্ক্র, গুরু ও দেবভাসাধনে পটু, এব্দিধ ক্ষত্রিয়কে মন্ত্রোপদেশ কার্য্যে

শান্তাত্মা ভগবন্দয়ঃ। ভাবিতাত্মা চ সর্বজ্ঞঃ শান্তক্জঃ সৎক্রিয়া পরঃ। সিদ্ধিত্রয়সমাযুক্ত আচার্যত্বে হভিষেচিতঃ। ক্ষত্র-বিট্শুদ্রজাতীনাং ক্ষত্রিয়োহনুগ্রহে ক্ষমঃ। ক্ষত্রিয়ভাবিদি চ গুরোরভাবাদীদৃশো যদি। বিশ্রঃ স্থাত্তেন কার্য্যন্ত হয়ে নিত্যমনুগ্রহঃ। সজাতীয়েন শুদ্রেণ তাদৃশেন মহামতে। অনুগ্রহাভিষেকো চ কার্য্যে শূদ্রস্থ সর্বাদ। কিঞ্চ। বর্ণোভরেমহণ্ড গুরো সতি বা বিশ্রুতাপি চ। স্বদেশতোহণবাভ্তানহণ কার্যাঃ শুভার্থিনা। বিদ্যমানে তু য়ঃ কুর্য্যাৎ যত্র তত্র বিপর্যায়ঃ। তম্পেহামুত্র নাশঃ স্থাতস্মাচ্ছাস্ত্রোক্তনাচরেৎ। ক্ষত্রবিট্ শুদ্রজাতীয়ঃ প্রাতিলোম্যং ন দীক্ষয়েৎ। পাদ্মে। মহাভাগবতক্রেচো ত্রাক্ষণো বৈ গুরুর্নণাং। সর্বেবানেব লোকানা মর্সো পুজ্যো যথা হরিঃ। মহাকুল-

অভিষিক্ত করিবে। ক্ষজ্রির, বৈশ্র ও শুদ্র এই তিন জাতির প্রতি ক্ষজ্রির অনুগ্রহ করিতে পারে, অতএব ক্ষজ্রির উক্ত ত্রিবিধ জাতির গুরু হইতে পারে, পরস্ক ক্ষজ্রিয়ের অভাবে উক্তরূপ বৈশ্র, বৈশ্র ও শৃদ্ধ এই দ্বিবিধ জাতির প্রতি অনুগ্রহে সক্ষম বিধার বৈশ্র উক্ত জাতিদ্বরের গুরু হইতে পারে। শৃদ্রের পক্ষে উক্ত ক্ষণাক্রান্ত শৃদ্রেরও গুরুকার্য্যের অধিকার আছে। প্রভাবি ভিন্ন বিজ্ঞাতীয় শৃদ্রকে গুরু করিবে না। বাস্তবিক উত্তম বর্ণকে গুরু করাই বিধের। বর্ণোভম ও লক্ষণাক্রান্ত স্বদেশীর গুরুর সম্ভব থাকিলে অন্ত দেশীর বাজ্ঞিকে গুরু করিবে না। আর সম্ভব সত্তে বে বাজ্ঞি উক্ত বিধির বিপর্যার করে, তাহার প্রহিক ও পার্ত্রিক ধর্ম্ম বিনাশ পার; অতএব শাস্ত্রোক্ত বিধি অনুসারে কার্য্য করিবে। সর্ব্ব বর্ণেরই বিলোমে দীক্ষাকার্যে নিষিদ্ধ। অর্থাৎ শৃদ্র বৈশ্য, ক্ষত্রের ও ব্রাহ্মণকে, বৈশ্য ক্ষত্রের গ্রাহ্মণকে এবং ক্ষত্রের ব্রাহ্মণকে দীক্ষা প্রদান করিতে পারে না।

भज्ञभूतार्थ विश्विष्ठ चार्ट्स रा, विनि मर्विध्यकात्र देवकव धर्म्य चन्नूत्रक,

প্রসূতোহপি দর্ববিজ্ঞের দীক্ষিতঃ। সহস্রশাখাধ্যায়ী চ ন গুরুঃ স্থাদবৈষ্ণবঃ। গৃহীতবিষ্ণুদীক্ষাকো বিষ্ণুপূজাপরো নরঃ। বৈষ্ণবোহভিহিতোহভিজ্ঞৈ রিতরোহস্মাদবৈষ্ণবঃ॥ ইতি গুরু লক্ষণং।

অথ নিন্দ্যগুৰুমাহ।

ক্রিয়াসারসমুচ্চয়ে। শ্বিত্রী চৈব গলৎকুষ্ঠী নেত্ররোগীচ বামনঃ। কুনখঃ শ্যাবদন্তশ্চ স্ত্রীজিতোহধিকাঙ্গকঃ। হীনাঙ্গঃ কপটী রোগা বহ্বাশী বহুজল্পকঃ। এতৈর্দোধৈর্বিমুক্তো যঃ স গুরুঃ শিষ্যসম্মতঃ।

ভগবন্মাহাত্মাবেকা ও ব্রাহ্মণ,তিনি মানবগণের গুরুকার্য্যের উপপযুক্তপাত্র।
বেমন হরি সর্বলোকের পূজা, সেইরপ উক্ত লক্ষণাক্রাপ্ত গুরুক সর্বজনের
পূজনীয়। আর বদি উক্তলক্ষণাধিত ব্যক্তি মহাকুলপ্রভব, সর্ব্যক্ত দীক্ষিত
ও সর্ব্যবেদাধ্যায়ী হইলেও বিষ্ণুভক্ত না হন, ভাহা হইলে তাহাকে
গুরুকার্য্যে বরণ করিবে না। যিনি বিষ্ণু দীক্ষা গ্রহণকরিয়াছেন
ও বিষ্ণুপ্লাতৎপর, তাঁহাকেই অভিজ্ঞ ব্যক্তিরা বৈষ্ণৰ বলিয়া থাকে,
ভক্তির মানগণই অবৈষ্ণৰ বলিয়া গণ্য হয়।

अनल किमानीय छक्त नक्षण कथि छ इहे छि हि। किमाना प्रमुक्ट एवत अमार्थ काना यात्र (य, यिनि विजी तांश्वान, शनि क्ष्रेंद्राशी, त्ज्र भी का नमश्चि, जिल्ले कि क्नियों, क्ष्रायम् के क्षेणितां प्रथ, यात्रात्र दिनान अकि जिल्ले कि का अधिक वा नान, यिनि क्षेणितां की क्ष्रेंद्र यिनि मूर्थ थर्यं त्र

[•] भगात्र्राक्षत्र नथकार्य এक क्षकात्र क्षकरत्रांग खत्म, এইরপ রোগ বিশিষ্ট ব্যক্তি।

र्ग यांहात व्यथान मञ्चरत्रत्र मर्था अकृषी कुछ मञ्ज थारक।

যামলে অভিশস্তমপুত্রঞ্চ কদর্য্যং কিতবং তথা। ক্রিয়া হীনং শঠঞাপি বামনং গুরুনিন্দকং। জলরক্তবিকারঞ্চ বর্জয়ে-শ্বতিমান্ সদা। সদা মৎসরসংযুক্তং গুরুং তন্ত্রেণ বর্জয়েৎ।

তত্ত্বাদরতো ছফৌহবাখাদী গুণনিন্দকঃ। অরোমা বহু রোমা চ নিন্দিতাশ্রমদেবকঃ। কালদন্তোহদিতোর্চশ্চ হুর্গন্ধি-খাসবাহকঃ। হুফলক্ষণসম্পন্নো যদ্যপি স্বয়মীখরঃ। বহু-প্রতিগ্রহাশক্ত আচার্য্যঃ শ্রীক্ষয়াবহঃ। ইতি নিন্দ্যগুরু লক্ষণং॥

ভান করিয়া অন্তর্ভাব গোপনপূর্বক লোকসমাজে কেবল সন্মান লাভকরিতে চাহেন. রোগগ্রন্থ, বহুভোক্তা, বহুজন্নক (বাচাল) এই সকল দোষ্যুক্ত ব্যক্তিই নিন্দাগুরু বলিয়া অভিহিত হয়েন, অতএব উক্ত প্রকার দোষরাশি বিহীন ব্যক্তিই গুরুপদের বাচ্য।

যামলে লিখিত আছে যে, যে বাক্তি অভিশাপগ্রস্ত, পুত্রবিহীন, কুৎসিত কার্য্যে অহ্বজ, ধূর্ত্ত, সংক্রিয়াবিহীন, শঠ, বানন, গুরুনিন্দক ও জলবক্ত বিকারী, সন্বিবেচক শিষা উক্ত লক্ষণাক্রাস্ত গুরুকে বর্জন করিবে। আর যিনি সর্বাদা মাৎসর্যাশালী, তাহাকেও পরিত্যাগ করিয়া গুরুকার্য্যে বরণ করিবে।

उदमात श्रमाण जानायात्र (य, यिनि वह एंडालंग, मीर्च एकी, पर्था थाहात मामाल कार्या अभिक ममग्र आश्रमा करत, विवग्र लालू प्र, क् उर्क कार्ती हो एंडा मग्र, ज्याहार का, भव खर्णत निम्म क, मर्सार दामि विदेश का प्रयोग वहरतामि विश्व निम्म का श्रमाण का प्रकार का प्रक का प्रकार का प्रकार

অথ গুৰ্বাচরণং ৷

জ্ঞানার্গবে—গুরো মানুষবুদ্ধিন্ত মন্ত্রে চাক্ষরবৃদ্ধিতাং।
প্রতিমাস্থ শিলাবৃদ্ধিং কুর্বাণো নরকং ব্রজেৎ। জন্মহেতৃ
হি পিতরো পূজনীয়ো প্রযত্নতা। গুরুর্বিশেষতঃ পূজ্যো
ধর্মাধর্মপ্রদর্শকঃ। গুরুঃ পিতা গুরুর্মাতা গুরুর্দেবো গুরুগতিঃ। শিবে রুফে গুরুত্রাতা গুরো রুফে ন কশ্চন।
গুরোহিতং প্রকর্তব্যং বাধ্যনংকায়কর্মভিঃ। অহিতাচরণাদেবি বিষ্ঠায়াং জায়তে ক্রিমিঃ। শরীরদঃ পিতা দেবি জ্ঞানদো
গুরুরেব চ। গুরোগ্র রুতরো নান্তি সংসারে ত্রংখসাগরে। যস্ত বক্তাদ্বিনির্যাতং বর্ণব্রক্ষময়ংবপুঃ। তারয়েমাত্র সন্দেহো নরকার্বিতো ধ্রুবং। মন্ত্রত্যাগাদ্ধবেন্ম্ ত্যু গুরুত্যাগাদ্ধরিদ্রতা।
গুরুমন্ত্রপরিত্যাগাদ্রেরং নরকং ব্রজেৎ। গুরো সমিহিতে

অনন্তর গুরুর প্রতি কিরপে আচরণ করিবে, তাহাই কথিত হইতেছে।
ফানার্গবে লিখিত আছে যে, ধিনি গুরুকে মহুবা, মন্ত্রকে অক্ষর এবং
দেবপ্রতিমাকে শিলাক্ষান করেন, তিনি পরকালে নরকগামী হইয়া
থাকেন। পিতা ও মাতা ইহারাই আমাদিগের ফল্পরিগ্রহের প্রধান
কারণ, অতএব তাঁহাদিগকে সবিশেষ পূজা করিবে। গুরু জনকজননী
হইতেও সমধিক সম্মানের পাত্র, কারণ গুরুই আমাদিগকে ধর্ম ও অধর্ম্মের
পণ প্রদর্শন করেন। অতএব গুরুই পিতা, গুরুই মাতা। গুরুই দেবতা এবং
একমাত্র গুরুই আমাদিগের আশ্রম এইরপ ক্ষানকরিবে। গুরুইস্তাণ
করিতে পারেন, কিন্তু গুরুদেব রুট্ট হইলে কেহই মানবগণকে পরিত্রাণ
করিতে পারেন, কিন্তু গুরুদেব রুট্ট হইলে কেহই মানবগণকে পরিত্রাণ
করিতে পারেন, কিন্তু গুরুদেব রুট্ট হইলে কেইই মানবগণকে পরিত্রাণ
করিতে পারেন। অতএব বাক্য, মন, শরীর ও কর্ম্মধারা সর্কাদা গুরুর
হিত্যান করিবে। যদি কেহ ক্থনও গুরুর অহিতাচরণ করে, তাহা হইলে
দেই নরাধ্য পরকালে বিঠাতে ক্রিমি হইয়া থাকে। পিতা আমাদিগকে

যন্ত পূজয়েদহাদেবতাঃ। স যাতি নরকং ঘোরং সা পূজা বিফলা ভবেৎ॥

প্রীক্রমে। উৎপাদকব্রহ্মদাত্রোগরীয়ান্ ব্রহ্মদঃ পিতা। তথানাতেত সততং পিতুরপ্যধিকং গুরুং। গুরুবদগুরু পুত্রেষু গুরুবভৎস্থতাদিষু। গুরুবৎ পূজনং কার্য্যং তোষণং বাক্যপালনং। গুরুবদ্জনং কার্য্যং সর্বাদা গুরুবদা গুরুবদা গুরুবদা

শরীর প্রদান করেন বটে, কিন্তু গুরু জ্ঞান প্রদানকরিয়া সেই শরীরের সার্থকতা সম্পাদন করিয়া থাকেন। এই তৃঃথমর সংসারসাগরে গুরু হইতে প্রধান কেহ নাই, যে হেতু সেই গুরুদেবের বদনহইতে আমরা ব্রহ্মর শরীর লাভকরিতে পারি, আর গুরুদেব আমাদিগকে নরকসাগরহইতে পরিত্রাণকরিতে পারেন, ইহাতে অনুমাত্র সন্দেহ নাই। পরস্ত যে পামর আপন কুলমন্ত্র পরিত্রাণ কবিয়া অক্তমন্ত্র গ্রহণকরে, অভিরকাল মধ্যে তাহাকে শমনভবনে গমন করিতে হয় আর আপন গুরু ত্যাগ করিলে সেই ব্যক্তির দরিল্লতা উপস্থিত হইয়া থাকে এবং যদি কেহ গুরু ও মন্ত্র এই উভয় পরিত্রাগ করিয়া অন্ত গুরুর নিকট অন্ত দেবতার মন্ত্র গ্রহণ করে, তাহা হইলে সেই পাপিছের অনস্তকাল রোরব নামক নরক ভোগ হইয়া থাকে। আর যদি কোন অক্তর ব্যক্তি গুরুসমীপে অন্ত দেবতার পূজা করে, তাহা হইলে সেই ব্যক্তির নরকগমন হয় এবং ঐ পূজা বিফল হইয়া যায়।

প্রাক্রমে লিখিত আছে যে, পিতা শরীরোৎপাদক এবং গুরু ব্রশ্বজ্ঞান প্রদান করেন, অতএব পিতা ও গুরু এই উভ্যের মধ্যে গুরুই গুরুতর, অত-এব পিতা হইতে গুরুর প্রাধান্য জানিতে হইবে। আর গুরুকে যেমন ভক্তি করিবে, গুরুপুত্রকেও সেইরূপ জ্ঞান করিবে, এবং গুরুপুত্রের সন্তানগণকেও গুরুত্ব্য জ্ঞান করিয়া কার্য্য করিতে হইবে। গুরুকে যেরূপ পূজাদি করিয়া থাকে, গুরুপুত্রাদিকেও এরূপ পূজাদি করিবে, আর যাহাতে গুরুর সম্ভোগ হইতে পারে, তাহাই করিবে, বিশ্বতঃ গুরুর বাক্যপালন সক্ নিগমকল্পদ্রদেশ—অবিদ্যোপা সবিদ্যো বা গুরুরেবচ দৈবতং। অমার্গস্থোহপি মার্গস্থো গুরুরেব সদা গতিঃ। আয়ান্ত মগ্রতো গচ্ছেদ্গচ্ছন্তং তমসুব্রজেৎ। আসনে শয়নে বাপি ন তিঠেদগ্রতো গুরোঃ। অনুজ্ঞাং প্রাপ্য তিঠেজু নৈবং শাপ মবাপ্রুয়াৎ। তথা ক্রিয়াসারে—গুরুর্মাতা পিতা স্বামী বান্ধবঃ স্কুদঃ শিবঃ। ইত্যাধায় মনো নিত্যং ভজেৎ সর্ব্বাত্মনা গুরুং।

লেরই সর্বতোভাবে কর্ম্বরা, পরস্ক গুরুসনিধানেও গুরুপ্তকে গুরুর স্থায় ভঙ্গনা করিবে।

নিগমকল্পদ্রমে লিখিত আছে যে, আপন পৈত্রিক গুরু বিদ্বান হটন, কি আবিদ্য হউন, তাহাকে দেবতা বলিয়া জ্ঞান করিবে, আর গুরু সন্মার্গন্ত কি অসংপথাবলধী হইলেও তিনিই আমাদিগের একমাত্র আশ্রম, এইরূপ জ্ঞান করিবে। গুরু যখন শিয়ালয়ে আগমন করিবেন, তথন শিয়া অগ্র-গামী হইয়া গুরুকে গৃহে প্রবেশিত করিবে এবং যখন তিনি শিয়াভবন হইতে প্রস্থান করিবেন, শিয়া ভাহার অমুগামী হইবে। আর যাবং গুরু অমুক্তা প্রদান না করেন, তাবং গুরুর পশ্চাৎ পশ্চাৎ গমন করিতে থাকিবে এবং গুরুর আজ্ঞা পাইলে, গুরুর অদর্শন পর্যান্ত সেই স্থানে দণ্ডারমান হইয়া থাকিবে, পরে গুরু দর্শনপথ অভিক্রম করিলে। শিয়া প্রতিনিবৃত্ত হইবে, এইরূপ না করিলে শিয়া শাপভাগী হইয়া থাকে। ক্রিরাদারসমূচ্চরে লিখিত আছে যে, গুরুই মাতা, পিতা, বান্ধব, স্থান ও শিব, এইরূপ জ্ঞান করিয়া স্বত্যভাবে গুরুকে জ্ঞান করিয়া স্বত্যভাবে গুরুকে জ্ঞান করিয়া স্বত্যভাবে গুরুকে জ্ঞান করিয়া স্বত্যভাবে গুরুকে জ্ঞান

जथ जी क्रक्टमवाविधिः॥

কৃশ্বপুরাণে ব্যাসগীতায়াং—উদকৃন্তং কুশান্ পুষ্পং সমিধোহতা হরেৎ সদা। মার্জনং লেপনং নিত্যমঙ্গানাং বাসদা
চরেৎ। নাস্ত নির্মাল্যশয়নং-পাছকোপানহাবপি। নাজামে
দাসনং ছায়ামাসন্দীং বা কদাচন। সাধয়েদন্তকাষ্ঠাদীন্
কৃত্যং চাল্মৈ নিবেদয়েৎ। অনাপ্চছ্য ন গন্তব্যং ভবেৎ প্রিয়হিতে রতঃ। ন পাদৌ সারয়েদন্ত সমিধানে কদাচন। জৃষ্ভা
হাস্তাদিকং চৈব কণ্ঠপ্রাবরণং তথা। বর্জয়েৎ সমিধো নিত্যমথাক্ষোটনমেব চ।

উশনঃস্মৃতো। শ্রেয়স্ত গুরুবদ্ ত্রিং নিত্যমেব সমা-চরেৎ। গুরুপুত্রেয়ু দারেয়ু গুরোকৈ ব স্বব্দুয়ু। উৎসাদনং বৈ গাত্রাণাং স্নাপনোচ্ছিফভোজনে। ন কুর্য্যাদ্ গুরুপুত্রস্থ

অনন্তর প্রী ওরুর সেবাবিধি কথিত হইতেছে। ক্র্পুরাণে ব্যাসগীতাতে জানা যায় যে, গুরুর আদেশাহুসারে জল, কুশ, পুলা ও সমিধ আহরণ করিবে এবং গুরুর গৃহলেপন, অসমার্জন, গাত্রে চলনলেপন, পাছকালি প্রকালন, সর্বাণা এই সকল কার্য্যে তৎপর থাকিবে। কদাচ গুরুর শয়াতে শয়ন করিবে না এবং পাছকা ও উপানহ ব্যবহার করিবেনা। গুরুর আসনে উপবেশন, হারালছনে, গুরুর ভোজনপাত্রে ভোজন, এই সকল কার্য্য করিবে না। আর গুরুদেবকে দক্তকান্তাদি আহরণ করিয়া দিবে এবং কর্ত্তব্য কার্য্য গুরুকে বিজ্ঞাপিত করিতে হইবে। গুরুর আক্ষা গ্রহণ না করিয়া গমন করিবে না এবং সর্বাণা গুরুর প্রিয়কার্য্যে রত থাকিবে। গুরুর সরিধানে কদাচ পাদপ্রসারণ করিবে না এবং ভৃত্তণ, হাল্প, উচ্চেভাবণ, কর্ত্তপ্রাবরণ, অস্কুলিক্ষোটন এই সকল গুরুসমীপে বর্জন করিবে।

উপনাপ্রণীত শ্বতিতে লিখিত আছে যে, গুরুর পুত্র, পত্নী ও তাহার বস্বর্গের প্রতি গুরুর স্থায় আচরণ করিলেই শিষোর মঙ্গল হয়, অতএব পাদয়োঃ শোচমেব চ। গুরুবৎ পরিপূজাশ্চ সবর্ণা গুরু-যোষিতঃ। অসবর্ণাস্ত সংপূজা প্রভ্যুম্থানাভিবাদনৈঃ। অভ্য-জ্বনং স্নাপনক গাত্রোৎসাদনমেব চ। গুরুপত্না ন কার্যাচ কেশানাক প্রসাদনং। শ্রীনারদোক্তৌ—যত্র যত্র গুরুং পশ্যেৎ তত্র তত্র কৃতাঞ্জালিঃ। প্রণমেদগুবস্ভূমো ছিন্ন-মূলইব দ্রুমঃ। গুরোর্বাক্যাসনং যানং পাছকোপানহোঁ তথা। বস্ত্রং ছায়াং তথা শিষ্যো লক্সয়েন্ন কদাচন।

নারদপঞ্চরাত্রে—যথা তথা যত্র তত্র ন গৃহ্নীয়াচ্চ কেবলং।
অভক্ত্যাচ গুরোর্নাম গৃহ্নীয়াচ্চ যতাত্ববান্। প্রণবশ্রীযুতং নাম
বিষ্ণুশব্দাদনস্তরং। পাদশব্দদমেতঞ্চ নত্যূর্দ্ধাঞ্জলীযুতঃ।
কিঞ্চলন ত্যাজ্ঞাপয়েমোহাত্র ভাজ্ঞাং নচ লক্ষয়েৎ। নানিবেদ্য
গুরোঃ কিঞ্চিন্ডোক্তব্যং বা গুরোস্তথা।

শুরুপুরাদির প্রতি গুরুবং আচরণ করিবে। পরস্ত গুরুপুরের গারোধর্ত্বন, স্নান, উচ্ছিষ্টভোজন ও পাদশোচ এই সকল কর্মা করিবে না। সবর্ণা গুরুপদ্ধীসকলকে গুরুর ন্থার পূজা করিবে এবং যাহারা অসবর্ণা গুরুপদ্ধীর অঙ্গে শুরুগিক প্রত্যাথান ও অভিবাদন দারা সম্মান কবিবে। আর গুরুপদ্ধীর অঙ্গে অঞ্জন প্রদান, স্নাপন, গারোধর্ত্তন ও কেশসংস্কার করিবে না। নারদ বিলয়াজ্যেন যে, যে যে হানে গুরুকে দর্শন করিবে, সেই সেই স্থানেই কুতাঞ্জলি হইয়া গুরুকে প্রণাম করিবে। আর যেমন ছিল্ল বৃক্ষা ভূতলে পতিত হয়, সেইরূপ ভূমিতে দণ্ডবং পতিত হইয়া গুরুকে নমস্কার করিবে। নিধ্য ক্যাচ গুরুবাক্যের অন্তথা করিবেনা, এবং আসন, যান, পাছ্কা, উপান্ধ, বক্সা, ও ছায়া এই সকল শুজ্যন করিবেনা।

নারদপঞ্রাত্রে লিথিত আছে যে, যে কোন স্থলেই ছউক, কেবল গুরুনাম গ্রহণ করিবেনা, ভক্তি পূর্মক সংযতিত্ত ছইয়া "ওঁ শ্রীঅমৃক বিফু পাদা" অইরাণে গুরুনাম উচ্চারণ করিবে। আর গুরুনামোচ্চারণকালে হরিভজিবিলাসে—যৎকিঞ্চিদমপানাদি প্রিয়ং দ্রব্যং মনো-রমং। সমর্প্য গুরুবে পশ্চাৎ স্বয়ং ভূঞ্জীত প্রত্যহং। ন গুরোর-প্রিয়ং কুর্য্যাৎ তাড়িতঃ পীড়িতোপি বা। নাবমত্যেত তদ্বাক্যং নাপ্রিয়ং হি সমাচরেৎ। আচার্য্য প্রয়ং কুর্য্যাৎ প্রাণৈরপি ধনৈরপি। কর্মণা মনদা বাচা দ যাতি পরমাং গতিং॥

বিষ্ণুশ্বতো—ত্রয়ঃ পুরুষস্থাতি গুরবো ভবস্তি মাতা পিতা আচার্য্যুন্ত। তেযাং নিত্যমেব শুশ্রমুণা ভবিতব্যং। যতে জ্রযুস্তৎ কুর্য্যাৎ। তেষাং প্রিয়হিতমাচরেৎ। নতে-রনসুজ্ঞাতঃ কিঞ্চিদ্পি কুর্য্যাৎ। এতএব ত্রয়োবেদা এতএব ত্রয়ঃ হারাঃ। এত এব ত্রয়ো লোকা এত এব ত্রয়োহগ্নয়ঃ।

কুতাঞ্জলি ও নতশির। হইবে। মোহবশত কলাচ গুরুকে কোন আদেশ করিবেনা এবং গুরু যে আদেশ করেন, তাহা ও লত্যনকরিবেনা। আর গুরুকে নিবেদন না করিয়া কোন বস্তু ভক্ষণ করিবেনা, অতএব অল্পানাদি যে কোন শ্রিয় মনোরম বস্তু ভোজন করিতে হইলে অগ্রে গুরুকে নিবেদন করিয়া পরে স্বয়ং ভোজন করিবে।

হবিভক্তিবিলাদে লিথিত আছে যে, কোনরপে তাড়িত বা পীড়িত্ত হইলেও গুরুর অপ্রিয় কার্যা করিবেনা, এবং উচার বাক্যের অগ্রথা করিবেনা। সর্বদা গুরুর হিভাগুষ্ঠান করিবে। ধন এবং প্রাণ দিরাও আচার্য্যের প্রিয় কার্য্য করিবে, যে ব্যক্তি কণ্ম, মন ও বাক্য দারা আচার্য্যের হিভসাধন করে, সেই ব্যক্তি উৎকৃত্তী গতি প্রাপ্ত হয়।

িফুশ্বতিতে লিখিত আছে বে, মাতা পিতাও আচার্য্য এই তিনই প্রথমের গুরু, প্রতিদিনই উক্ত গুরুতায়ের গুরুষা করিছে। আর উক্ত গুরুগণ যাহা আদেশ করেন, তাহাই করিছে। ইহারা যাহা আদেশ না করেন, তাহা করিছে না, সর্মদা উহাদিগের প্রিয় ও হিতসাধন করিছে, অত এব ইহারা তিমই বেদ, তিনই দেবতা, এইরূপ জ্ঞানকরা কর্মব্য। বিশেষ পিতাকে গার্হপত্যায়ি, মাতাকে দক্ষিণায়ি এবং আচার্য্যকে আহ-

পিতা চ গার্ছপত্যাগ্নি দক্ষিণাগ্নিশাতা গুরুরাহ্বনীয়ঃ। সর্বের তত্মাদৃতা ধর্মা যতৈতে ত্রয় আদৃতাঃ। অনাদৃতাস্ত মতৈতে সর্বাস্তত্মাফলাঃ ক্রিয়াঃ। ইমং লোকং মাতৃভক্ত্যা পিতৃ-ভক্ত্যা তু মধ্যমং। গুরুগুশ্রষয়া ত্বেবং ত্রন্মলোকং সমগুতে॥

মনুস্থতৌ—চোদিতো গুরুণা নিত্যমপ্রচোদিত এব বা।
কুর্য্যাদধ্যয়নে যত্রমাচার্য্যন্ত হিতেয়ু চ। শরীরঞ্বৈ বাচঞ্চ
বুদ্ধীন্দ্রিয়মনাংসিচ। নিয়ম্য প্রাঞ্জলিন্তিষ্ঠেদ্ধীক্ষমাণো গুরোর্দ্ধ্বিথা নিত্যং মুদ্ধৃতপাণিঃ স্থাৎ সাধ্বাচারঃ স্থসংযুতঃ।

বনীয় আগ্নিম্বরূপ চিস্তা করিবে। যে বাক্তি উক্তগ্রুত্তয়কে যথোচিত আদর করে, সেই ব্যক্তি সর্ব্ধ ধর্মানুষ্ঠানের ফল পায়, আর যে মনুষ্য পিতা, মাতা ও আচার্য্যকে বিহিত্তবিধানে আদর করে না, তাহার সকল ক্রিয়াই বিফল হুইয়া যায়। যে মানব মাতৃভক্ত, তাহার ঐহিক ফলভোগ হয়, পিতৃভক্তিতে পরকালে ফল পায় এবং আচার্য্যকে যথোচিত সেবা করিলে ব্রহ্মলোক প্রাপ্তি হইয়া থাকে।

মনুলিখিত বচনে জানা যাইতেছে বে, গুরু আজ্ঞা করুন, আর নাই করুন, সর্বাদা লিয়াগণ অধারনে ও আচার্য্যের হিতানুষ্ঠানে যত্ন করিবে। আচার্য্যের উপস্থিতি কালে শরীর, বাক্যা, বৃদ্ধি, ইন্দ্রির ও মন সংযত করিয়া গুরুর মুখ অবলোকন করত করপুটে দগুরিমান থাকিবে। শিষ্য গুরুসমীপে সদাচারতৎপর ও উন্নতপাণি হইরা থাকিবে এবং গুরু যখন উপবেশন করিতে। গুরুসমীপে সর্বাদা হীনবেশে অবস্থান করিবে। গুরু যখন আসন পরিত্যাগ করিয়া উঠিবেন, তাহার অগ্রেই শিষ্য দগুরিমান হইবে এবং আচার্য্য উপবেশন করিলে পর শিষ্য বসিবে। শর্মন করিয়া গুরুবাক্য শ্রবণ বা গুরু সম্ভাষণ করিবে না। আর উপবেশন বা ভোজন কালে আচার্য্যের সন্ভাষণ নিষিদ্ধ গুরু সমীপে পরাল্প হইরা থাকিবে না, গুরু উপবিট হইলে শিষ্য 'অবস্থিত হইয়া গুরু সমীপে নীচাননে উপবেশন গ

আশতামিতি চোক্তঃ সমাদীতাভিমুখং শুরোঃ। হীনামবস্ত্র-বেশঃ স্থাৎ দর্বদা গুরুদমিধোঁ। উত্তিছেৎ প্রথমকাশ্র চরম-ক্ষৈব সংবিশেৎ। প্রতিপ্রবণসম্ভাষে শরানো ন সমাচরেৎ। আদীনো নচ ভূঞ্জানো ন তিষ্ঠন্ন পরাঙ্মুখঃ। আদীনস্থা স্থিতঃ কুর্য্যাদভিগছংস্ত তিষ্ঠতঃ। নীচং শয্যাদনক্ষাস্থা সর্বাদা গুরুদমিধো গুরোস্ত চক্ষুর্বিষয়ে ন যথেকীদনোভবেৎ। নেদাহরেদস্থা নাম পরোক্ষমপি কেবলং। নচৈবাস্থামুক্রবীত গতিভাষিতচেষ্টিতম্। গুরোর্যত্র পরীবাদো নিন্দা বাপি প্রবর্তত। কণোঁ তত্র পিধাতব্যো গস্তব্যং বা ততো-

नीह भगाटि भगन कतिरव। छक्र यक्तृत मिथिटि शान, देशत मधा यर्थिछ **छि** शत्यांन क्रित्व नां, श्वक्रत जामम्बन्ध श्वक्रत नामाक्रत्यां विवास नां, আর গুরুর গমন, বাক্য ও অক্যাক্ত চরিত্রের অমুকরণ করিবে না। যে श्रात श्रक्त कान व्यथवाम वा निका कथन रुष्न, (मरे श्रात कर्ग व्यवक्रक ক্রিবে, অথবা সেই স্থান ছইতে অম্বত্ত গমন ক্রিবে, কোন রূপেও গুরুর পরিবাদ বা निका अवनक्तित्व ना। यে ব্যক্তি গুরুর পরিবাদ अবन করে, (म পরকালে গর্দভ হইয়া জয়পরিয়হ করে. শিষা ড়য় निना এবণ করিলে কুরুর যোনি প্রাপ্ত হয়। সার গুরু দ্রব্য ভোজন করিলে ক্রিমি र्य এবং যে खक्रत প্রতি মাৎস্থ্য প্রকাশ করে, সে কীট্যোনি পাইয়া থাকে, प्रकृ रहेशा खक्रत्र व्यर्कना कतिरव ना এवः क्रुष रहेशा छाँ हात्र मभौरि गमन कतिरव ना, रकान यानारवाद्यकारण श्वक्रत महिल मांकार इहेरण मिहे यान रहे**ि अवर्ताह्न क्रिया धक्रक नमञ्जात क्**रिटा। धक्रत्र महिल क्रिन প্রতিবাদ বা ভর্ক করিবে না। গুরুর অসাক্ষাতে ভৎসম্বন্ধীয় কোন কথা कीर्खन कतिरव ना। त्शायान, अश्वयान श्रामाम ७ পাষাन्यत्थ खब्रव महिज উপবেশন করিতে পারে, যদি কথনও গুরুর পুত্র উপস্থিত হয়েন, ভাহা हरेल जानन खक़त छात्र जाहत्रन कतिर्व, खक्रमभीरम जानन मिछा यां एरिक नयकात कविटल भारत ना। छे भाषात्र खक्र के अञ्चर्यां छ के त्र

হন্যতঃ। পরীবাদাৎ থরোভবতি শ্বাবৈ ভবতি নিশ্দকঃ পরিভোক্তা ক্রিমির্ভবতি কীটো ভবতি মৎসরী। দূরস্থো নার্ক্চয়েদেনং ন ক্রুদ্ধো নান্তিকে স্ত্রিয়াঃ। যানাসনস্থলৈটবন মবরুহ্ণাভিবাদয়েৎ। প্রতিবাদেহনুবাদেচ নাসীত গুরুণা সহ।
অসংশ্রবে চৈব গুরোর্ন কিঞ্চিদপি কীর্ভয়েৎ গোহশোষ্ট্রযানপ্রাসাদস্রস্তরেয়ু কটেয়ু চ। আসীত গুরুণা সার্দ্ধং শিলাফলকনৌমু চ। গুরোগ্ররা সমিহিতে গুরুষ্ ভিমাচরেৎ। ন
চাতিস্ফোগুরুণা স্বান্ গুরুনভিবাদয়েৎ। বিদ্যা গুরুষ্তেদেব
নিত্যা রুভিঃ স্বযোনিয়ু। প্রতিষেধৎস্ক চাধর্মান্ হিতঞোপদিশৎস্বপি। শ্রেয়ঃস্থ গুরুবব হিং নিত্যমেব সমাচরেৎ।
গুরুপুত্রেয়ু চার্য্যেয়ু গুরো শৈচব স্ববন্ধুয়ু। বালঃ সমানজন্মা
বা শিষ্যো বা যজ্ঞকর্মণি। অধ্যাপয়ন্ গুরুস্থতো গুরুবন্মানমর্হতি। গুরুপত্নী তু যুবতী নাভিবাদ্যেত পাদয়োঃ।

তারাপ্রদীপে—আগমোক্তবিধানেন কলো দেবান্ যজেৎ স্থাঃ। নহি দেবাঃ প্রদীদন্তি কলো চান্যবিধানতঃ। কৃতে

ন্তাম জ্ঞান করিয়া যথোচিত নমস্কারাদি করিবে। যেহেতু উপাধ্যাম গুরু
অধর্ম কর্ম করিতে নিষেধ করিয়া হিতকর উপদেশ প্রদান করিয়া থাকেন,
অতএব সর্কানাই উপাধ্যাম গুরুকে মন্ত্রপ্র গুলু জ্ঞান ও সেবাদি করা
কর্ত্তব্য। আর গুরুপুত্র ও গুরুর বন্ধুর প্রতিও গুরুবং আচরণ করিবে।
যদি গুরুপুত্র সমবমস্ক হন, তাহা হইলে তাহাকে অধ্যাপন করিতে পারে
কিন্তু সেই আচার্যাতনমকে গুরুবং সম্মান করিতে হইবে। আর যদি গুরুপদ্মী শ্বতী হন, তাহা হইলে তাহার পাদ গ্রহণপূর্ক অভিবাদন করিবে
না।

তারাপ্রদীপে লিখিত আছে যে, কলিকালে আগমোক্ত বিধানে দেবা-र्कनो করিবে, এইকালে অক্ত বিধানে দেবপূজা করিলে দেবগণ প্রসর শ্রুত্তনার্গঃ স্থাৎ তেতায়াং শ্বৃতিসম্ভবঃ। দ্বাপরেতু পুরাাক্তঃ কলাবাগমসম্মতঃ। অশুদ্ধাঃ শূদ্রকর্মাণো ব্রাহ্মণাঃ
কলিসম্ভবাঃ তেষামাগমমার্গেণ সিদ্ধিন শ্রোতবর্মনা। মন্ত্রার্ণা
দেবতা জ্বেয়া দেবতা গুরুরপিণী। তেষাং ভিদান কর্ত্বরা
যদিচ্ছেচ্ছুভ্যাত্মনঃ।

দেব্যাগমে শিববাক্যং—গুরুশয্যাসনং যানং পাছকো পানৎপীঠকং। স্নানোদকং তথা ছায়াং লজ্ফনং নৈব কার-য়েৎ। গুরোরত্রে পৃথক্ পূজামৌদ্ধত্যঞ্চ বিবর্জয়েৎ। দীক্ষাং ব্যাখ্যাং প্রভুত্বঞ্চ গুরোরত্রে পরিত্যজেৎ। রুজজামলে— ঋণদানং তথাদানং বস্তৃনাং ক্রয়বিক্রয়ং ন কুর্য্যাদ্ গুরুণা সার্দ্ধং শিষ্যো ভুত্বা কদাচন।

निত্যानन्दि— ७ऋ॰ न মर्छा॰ वूरधाङ यिन वूरधाङ ङञ्च

হয়েন না। সতাযুগে বেদোক্ত, ত্রেতাযুগে শ্বৃতিবিহিত, দ্বাপরযুগে পুরাণোক্ত এবং কলিকালে আগমসমত কার্যাই প্রশস্ত। কলিকালের ব্রাহ্মণগণ শূদ্র-যাজনাদিদ্বারা অশুদ্ধ হয়, অতএব তাহাদিগের বৈদিক কার্য্যে অধিকার থাকেনা, স্নতরাং আগমসমত ক্রিয়াই কলিকালে বিধেয়। মন্ত্র্যবসকল দেবতা এবং সেই দেবতাই গুরু, অতএব যে ব্যক্তি আপনার শুভ ইচ্ছা করেন, তিনি মন্ত্র, দেবতা ও গুরু, ইহাদিগের বিভিন্নতা জ্ঞান করিবেন না।

(परागिम श्रमात स्नाना या देखि हिंदि । महाराप विषिष्ठा किन, खक्र मगा, सान, पाक्ना, जेपानह, भीर्घ, स्नानापक, ख हान्ना এই मक्न मध्यन किन्नित ना, स्नान खक्रमभी पृथक पृक्षा ख छे छछ। प्रतिष्ठाण किन्नित विद् स्विष्ठ प्रीक्षा श्रमान ख कानक माञ्च व्यापा किन्नित ना। क्रम्याभल विश्व स्वाह त्य, खक्र क्ष्मणान वा खक्र हहे छ स्व छहन किन्नित ना व्यव किन्नित ना विश्व स्वाह त्य, खक्र किन्नित ना।

निजानन গ্রন্থে লিখিত আছে যে, গুরুকে সমুষ্য জ্ঞান করিবেনা,

তু। ন কদাচিন্তবেৎ দিদ্ধিন মক্ত্রৈর্দেবপূজনৈঃ। একগ্রামস্থিতঃ শিষ্যস্ত্রিসন্ধ্যাং প্রণমেদ্ গুরুং। ক্রোশমাত্রস্থিতো
ভূষা গুরুং প্রতিদিনং নমেৎ। অর্ধযোজনতঃ শিষ্যঃ প্রণমেৎ
পঞ্চপর্বস্থ। এক যোজনমার্গ্রতা যোজনদানধি। দূরদেশস্থিতঃ শিষ্যো ভক্ত্যা তৎসন্নিধিং গতঃ। তত্র যোজনসংখ্যোক্তমাসেন প্রণমেদ্ গুরুং। যদি দূরেচ চার্বাঙ্গি স্বগুরোর্নগরং ভবেৎ। বর্ষে বর্ষে চ কর্ত্রবাং গুরোশ্চরণবন্দনং।
এতেন একধা দক্ষিণায়নে একধা উত্তরায়ণে কর্ত্রবাং।

তাথ শিষ্যলক্ষণং ।

তন্ত্রসারে শান্তো বিনীতঃ শুদ্ধাত্মা শ্রদ্ধাবান্ ধারণক্ষমঃ। সমর্থশ্চ কুলীনশ্চ প্রাজ্ঞঃ সচ্চরিতো যতিঃ। এবমাদিগুণৈ-

যদি কেহ গুরুকে মনুষা বলিরা জ্ঞান করে, তাঁহার মন্ত্র, জপ ও দেবপূজন কিছুতেই দিদ্ধি হয় না। শিষা গুরুর এক গ্রামে বাদ করিলে ত্রিসন্ধ্যা গুরুকে নমস্কারকরিবে, গুরুর বাদস্থান হইতে একজ্রোশ মধ্যে যদি শিষ্যের বসতি হয়, তবে প্রতিদিন গুরুর চরণ বন্দনাকরিবে। শিষ্যালয় হইতে ক্রোশম্বর মধ্যে গুরুর বসতি থাকিলে পঞ্চপর্ব্বে অর্থাৎ পূর্ণিমা, অমাবস্থা, অইমী, চতুর্দ্দশী ও সংক্রান্তিদিবদে গুরুকে প্রণাম করিতে হইবে। ইতংপর একযোজন হইতে বাদশ যোজন পর্যান্ত দুরে গুরুধাম হইলে যোজন সংখ্যার অর্থাৎ যত যোজন অন্তরে প্রীপাট থাকিবে, তত মাস অন্তরে এক একবার প্রীগ্রুরর নিকটে উপস্থিত হইয়া অভিবাদন করিবে। আর যদি দাদশ-যোজনের অধিক দুরে গুরুর নিবাস হয়, তাহা হইলে এক বংসর মধ্যে এক একবার গুরুর নমস্কার করা কর্ত্ব্যা। ইহাতে জ্ঞানা যাইতেছে যে, একবার ক্রিরায়ণে ও একবার দক্ষিণায়ণে নমস্কার করিবে।

এইক্ষণ শিষালক্ষণ কথিত হইতেছে, যে ব্যক্তি শান্তপ্রকৃতি, বিনয়ী, ওদ্ধান্থা, তান্ত্রিক, বৈদিক কর্মে শ্রদ্ধাবান্, উপদেশ গ্রহণ ক বিষয় ধারণ করিতে

যুক্তঃ শিষ্যো ভবতি নাম্যথা। অম্যচ্চ পুণ্যবান্ ধার্ম্ব্রুঃ শুদ্ধো গুরুভক্তো জিতেন্দ্রিয়ঃ শিষ্যযোগ্যো ভবেৎ সৌন্দ্ দানধ্যানপরায়ণঃ।

মন্ত্রমুক্তাবল্যাং—শিষ্যঃ শুদ্ধাশ্বয়ঃ শ্রীমান্ বিনীতঃ প্রিদর্শনঃ। সত্যবাক্ পুণ্যচরিতোহদল্রধীর্দম্ভবর্জিতঃ। কা কোধপরিত্যাগী ভক্তশ্চ গুরুপাদয়োঃ। দেবতাপ্রবণঃ কা মনোবাগ্ভির্দিবানিশং। নীরুজাে নির্জিতাশেষপাতকঃ শ্রদ্ধানিতঃ। দ্বিজদেবপিতৃণাঞ্চ নিত্যমর্জাপরায়ণঃ। যুবা বি য়তাশেষকরণঃ করুণালয়ঃ। ইত্যাদিলক্ষণৈযুক্তঃ শিষ্টে দীক্ষাধিকারবান্।

ভাগবতে একাদশস্কন্দে। অমান্যমৎদরো দ্ নির্মমো দৃঢ়সৌহদঃ। অসত্বরোহর্থজিজ্ঞান্ত-রনসূত্যু-রমোঘবা

পারে, কার্যাদক্ষ, সদংশজাত, কার্যাভিজ্ঞ, স্পীল, সংযতিতির, ইব গুণবুক বাজিকেই শিষ্য করিবে। ইহার বিপরীত গুণশালীকে করিবে না। শাস্তান্তরপ্রমাণে কানা যায় যে, যে বাজি পুণাবান্, পরায়ণ, শুদ্ধান্থা, গুরুতক, জিতেজিয়, দাতা ও ধ্যানপর্যুণ, সেই ব কেই যোগ্য শিষ্য বলিয়া কানিবে।

यस्य प्रकारनी एक निथिक चार्छ (य, यिनि मदः मझाक, श्रीमान, दिनके स्माद्र पर्मन, मठावानी, मक्ठिति छ, महावृक्ति, मछहीन, कामरकाधानि पार्क दिक, छक्ष्मपत्र छिल्मानी, निवाता कि कायमरनावारका प्रवेणामत्र में नीरतानी, निमानी, श्रद्धावान, प्रवेणा, वाक्षण छ भिष्टा नार्कत व्यक्तनां कर्मत्र य्वा, मर्गे एक्या हि प्रामीन, विकृष्ण वाक्षिक की कामिर्व।

শীমন্তাগবতের একাদশ স্বন্দে লিখিত আছে যে, যিনি অভিযানী ব শাংস্থ্যশালী নহেন, অথবা সর্মকার্য্যে দক্ষ, পুত্রকল্যাদিতে সমতা শুক जाम भेठा-गृश- क्यां - श्रजन प्रतिशानियु। উपामीनः मगः भेश्यन् । द्विष्वर्थियाष्ट्रानः।

নিষিদ্ধশিষ্য-লক্ষণমাহ।

পাপিনে জুরচেন্টার শঠায় ক্পণায় চ। দীনায়াচারশূতায় ক্সন্থেপরায় চ। নিন্দকায় চ মূর্থায় তীর্থদ্বেষপরায় চ। গুরুভক্তিবিহীনায় ন দেয়া মলিনায় চ।

আগমসারে—অলসা মলিনাঃ ক্লিফী দান্তিকাঃ ক্রপণা-স্তথা। দরিদ্রো রোগিণো রুফী রাগিণো ভোগলালসাঃ। অসূয়ামৎসরগ্রস্তা সদা পরুষবাদিনঃ। অন্থায়োপার্জিতধনাঃ পরদাররতাশ্চ যে। বিত্বযাং বৈরিণশ্চৈব ত্যাজ্যাঃ পণ্ডিত-

শুরুজনের প্রতি অমুরাগী, বিষয়ে অবাগ্র, অর্থজানে অভিলাষী, অস্মা-বিহীন, সভাবাদী, স্ত্রী, পুত্র. গৃহ, ক্ষেত্র, স্বন্ধন ও ধনাদিতে অমুরক্ত নহে, এবং যিনি সকলকে আয়বৎ জ্ঞান করেন, ভিনিট প্রাকৃত শিষাপদের বাচ্য।

धरेकन निविक निश्नानकन कथिल इरेटलहा त्य वाकि भाभावतान वर्छ, क व्यक्ति, मर्थ, क्रभन, क्रिनेनमभाशक, ननावादिनिन, मञ्चलकी, नर्विनक्षक पूर्व, जीर्विदिकी, खक्र छिकिविशीन ७ मिनादिन, कार्वाक कमाह मीका श्रान किरिव ना।

चानमात निथि चाह रा, याहात चान शिन. मनिन्दम, चिं कांठत, मख्यतात्रम, क्रथम, मतिज्ञ, तानी, चिं जिस्तास्त्रानी, ट्यान-नानमात्रान, चर्त्रामानी, मार्श्यान्, मन कर्कमणाती, चर्मार्यापिक्षं व्यव्य धनतान, भत्रजीट चर्त्रक, भिंखनात्रमक, जनम्याद्यत भित्रजामा, भिंडाण्यानी, चाठात्र हो, चिंनी ठ्यान, थन, तहर्णाका, क्रत्र शक्र हि, घ्राचा, ममाक्र निर्देश, भाषिष्ठ, अ भूक्षाध्म, क्षेत्रभ वाक्रिनिगक भिया-क्राचा, ममाक्र विश्व ना, हेराना भिया हहे एक चानिराव छाहा निगरक মানিন:। অফাচারাশ্চ যে কফর্ত্রয় পিশুনাঃ থলাঃ।
বহ্বাশিনঃ ক্রুরচেফা দুরাত্মানশ্চ নিন্দিতাঃ ইত্যেবমাদয়োহন্যেপি পাপিষ্ঠাঃ পুরুষাধমাঃ। এবস্তৃতাঃ পরিত্যাজ্যাঃ শিষ্যব্বেনোপকল্লিতাঃ। যদ্যেতত্বপকল্লেরন্ দেবতাক্রোশভাজনাঃ
ভবস্তি হি দরিদ্রাস্ত পুত্রদারবিবর্জিতাঃ। নারকাশ্চৈব দেহাস্তে
তির্যাঞ্চঃ প্রভবস্তি তে।

হয়শীর্ষপঞ্চরাত্রে—জৈমিনিঃ স্থগত শৈচব নাস্তিকো নগ্ন এবচ। কপিলশ্চাক্ষপাদশ্চ ষড়েতে হেছুবাদিনঃ। এতম্মতামু-সারেণ বর্ত্তন্তে যে নরাধমাঃ। তে হেছুবাদিনঃ প্রোক্তা স্তেভ্যস্তক্রং ন দাপয়েৎ।

অथ গুৰু শিষ্যযোগ্ন পরীক্ষণং।

তয়োঃ পরীক্ষা চান্ডোন্ডমেকাব্দং সহবাসতঃ। ব্যব-হারস্বভাবাসুভবেনৈবাভিজায়তে। সারসংগ্রহে—গুরুতা

পরিত্যাগ করিবে। যদি মোহবশত কোন কোন আচর্য্য উক্ত লক্ষণাক্রান্ত ব্যক্তিকে শিষ্যক্রপে করনা করেন, ভাহা হইলে সেই সকল আচার্য্য দেবগণের অভিসম্পাতভাগী হট্যা থাকেন। এবং ইহকালে দরিদ্র ও প্র-দারাবিহীন হইয়া পরকালে নরকভোগাতে পশুযোনিতে জন্মগ্রহণ করিয়া থাকেন।

হয়শীর পঞ্চরাত্তে লিখিত আছে যে, জৈমিনি, বৌদ্ধ, নান্তিক, নগ্যক, কপিল, কণাদ, ইহারা হেত্বাদী অর্থাৎ কুতর্ককারী বাহারা উক্ত হেত্বাদীদিগের মভামুসারে আচরণ করে, কদাচ ভাহাদিগকে ভন্ত বা মন্ত্র প্রদান
করিবে না।

গুরু ও শিষ্য ইহারা এক বংসর সহবাস করিয়া পরস্পারের স্বভাব পরীকা করিবে। সংবংসর সহবাস করিলে ব্যবহারাদিঘারা পরীকা শিয়তা বাপি তয়োর্বৎসরবাসতঃ সদ্গুরুঃ স্বাঞ্রিতং শিয়ং বর্গমেকং পরীক্ষয়েৎ। তত্রৈব—রাজ্ঞি চামাত্যজাে দােষঃ পত্নী পাপং স্বভর্তরি তথা শিষ্যার্জিতং পাপং গুরুঃ প্রাপ্রোতি নিশ্চিতং। বর্ষেকেণ ভবেদ্যোগ্যাে বিপ্রোগুণসমন্বিতঃ। বর্ষদ্যেন রাজন্যাে বৈশ্রস্ত বৎসরৈক্রিভিঃ। চতর্ভির্বৎসরৈঃ শুদ্রঃ কথিতা শিষ্যযােগ্যতা।

গুরুশবার্থমাহ তন্ত্রার্থবৈ—গকারঃ সিদ্ধিদঃ প্রোক্তা রেফঃ
পাপত্ম দাহকঃ। উকারঃ শস্তুরিত্যুক্তন্ত্রিতয়াত্মা গুরুঃ পরঃ।
অপরঞ্চ—গকারাজজ্ঞানসম্পত্তী রেফঃ পাপত্ম দাহকঃ। উকারাচ্ছিবতাদাত্ম্যং দদ্যাদিতি গুরুঃ স্মৃতঃ। গুশব্দস্থদ্ধকারঃ স্থাক্রশব্দস্তমিরোধকঃ। অন্ধকারনিরোধিছাদ্ গুরুরিত্যভিধীয়তে।
ছইতে পারে। সারসংগ্রহে নিখিত আছে যে. এক বংসর একত্র অবন্তিতি
করিলেই গুরু ও শিষা উভন্ন পরস্পরের স্বভাবাদি জানিতে পারেন। অতএব যিনি সদ্গুরু, তিনি শিষাকে আপন সমক্ষে এক বংসর রাখিয়া পরীকা
করিবেন। গ্রু সারসংগ্রহে আর নিখিত আছে যে, মন্ত্রীর দোষ রাজাতে,
পত্নীর পাপ স্বামীতে বর্দ্ধে এবং শিষাজিত পাপপ্র গুরু ভোগ করিয়া থাকেন,
ক্রত্রের একবর্ষ কাল পরীক্ষা করিয়া শিষ্যের স্বভাবাদি পরিজ্ঞানপূর্কক
শিষ্যরূপে গ্রহণ করিবে। পরস্ক ব্রাহ্মণকে গ্রহণবার বংসর একত্র বাসে পরীক্ষা
করিয়া শিষ্য যোগ্য বোধ হইলে তথন দীক্ষা প্রদান করিবে।

তন্ত্রার্থির গুরুশস্থার্থে নির্নীত ইইয়াছে যে, গকার দিন্ধি প্রদান করে, রেফ পাপের দাহক এবং উকার শস্তু অতএব গুরু ত্রিতয়াত্মক। ঐ তন্ত্রার্থির আর লিখিত আছে যে, গকার হইতে জ্ঞানক্ষণ সম্পত্তি বৃদ্ধিপার, রেফ পাপদাহনকরে, এবং উকার শিবভাদাত্ম্য প্রদান করে, অতএব গুরু সিদ্ধি প্রদান করিয়া পাপবিনাশ পূর্ক্ক শিবত্ব প্রদান করেন। গুরুশক্ষের অন্ত প্রকার অ্রেকার অ্রেকার অ্রেকার অ্রেকার ব্যাধিক,

কুলচ্ডামপো—উদাদীনো হ্যদাদিনাং বনস্থা বনবাদিনঃ।
যতীনাঞ্চ যতিঃ প্রোক্তো গৃহস্থানাং গুরুগৃহী। বৈষ্ণবে
বৈষ্ণবো গ্রাহঃ শৈবে শৈবস্তথা পুনঃ। শাক্তিকে ত্রিতয়ং
বিদ্যাদ্দীক্ষাস্থামী ন সংশয়ঃ। পিতা মাতা তথা ভ্রাতা পিতৃব্যো
মাতুলস্তথা। যেনোপদিউস্তন্তেহিস্মিন্ তং গুরুং সমুপাদয়েৎ।
নচ বালো ন রদ্ধশ্চ'ন থঞ্জো ন কুশ স্তথা।

গুরুরপি গৃহস্থএ ব প্রশস্তঃ। তথাচ কল্পে—কলত্রপুত্র-বান্ বিপ্রো দয়ালুঃ সর্ব্বসম্মতঃ। দৈবে পৈত্রেহরিমিত্রে চ গৃহস্থো দেশিকো ভবেৎ।

অতএব গুরু আন্তরিক অজ্ঞান রূপ অন্ধকার বিনাশ করেন, ইহাই প্রতি-পাদিত হইতেছে।

কুলচ্ডামণিতে লিখিত আছে যে, উদাসীন উদাসীনকে, বনবাসী, বনবাসীকে, যতি যতিকে, এবং গৃহস্থ গৃহস্থকে গুরুকার্যো বরণ করিবে। আর বিস্থুমন্ত্র দীক্ষাতে বৈষ্ণব, শৈবমন্ত্রদীক্ষার শৈব গুরু প্রশস্ত। কিন্তু দীক্ষাতে বৈষ্ণব, শৈব ও শাক্ত এই ত্রিবিধ ব্যক্তিই দীক্ষাস্থামী হইতে পারেন। পিতা, মাতা, ভ্রাতা, পিতৃব্য, ও মাতৃল ইহাগিদের মধ্যে যিনিই তত্ত্বে উপদেশ করেন, তাহাকেই গুরু ক্ষানে উপাসনা করিবে। আর বালক, বৃদ্ধ, থঞ্জ, ক্কশ, ইহাদিগকে গুরু করিবে না।

नर्स व्यक्त व श्वक्त व श्वक्त श्वक्त

ञथ मीक्काविठातः।

পিত্রাদিমন্ত্রনিষিদ্ধমাহ যোগিনীতন্ত্রে—পিতুর্মন্ত্রং ন গৃহীয়াত্তথা মাতামহস্ত চ। সোদরস্ত কনিষ্ঠস্ত বৈরিপক্ষা-প্রিতস্ত চ।

গণেশবিমর্ষিণ্যাং—যতেদীক্ষা পিতৃদীক্ষা দীক্ষা চ বনবাসিনঃ। বিবিক্তাশ্রমিণো দীক্ষা ন সা কল্যাণদায়িকা। রুদ্রযামলে— ন পত্নীং দীক্ষয়েন্তর্ত্তা ন পিতা দীক্ষয়েৎ স্থতাং।
ন পুত্রঞ্চ তথা ভ্রাতা ভ্রাতরং নচ দীক্ষয়েৎ। সিদ্ধমন্ত্রো যদি
পতি স্তদা পত্নীং স দীক্ষয়েৎ। শক্তিত্বেন বরারোহে নচ সা
পুত্রিকা ভবেৎ। ইত্যাদি নিষেধবচনাদেভ্যো মন্ত্রং ন গৃত্নীয়াৎ। ইদস্ত সিদ্ধেতরবিষয়ং। সিদ্ধমন্ত্রে ন দৃষ্যতীতি বচনাৎ।
যতেরপি দীক্ষোক্তা শক্তিযামলে—তীর্থাচারযুতো মন্ত্রী

আপন জনকের নিকট মন্তগ্রহণ নিষিদ্ধ। যোগিনীতন্তে লিখিত আছে যে পিতা, মাতামহ, কনিষ্ঠ সহোদর ও শত্রুপক্ষাপ্রিত, ইহাদিগের নিকট মন্তগ্রহণ করিবেনা।

গণেশবিষষিণী গ্রন্থে লিখিত আছে যে, পিতা, যতি, বনবাসী ও
নিরাশ্রমী, ইহাদিগের নিকট দীক্ষা গ্রহণ করিলে সেই দীক্ষা কল্যাণদারিনী
হয় না। ক্ষত্রযামলে আনা বায় যে, ভর্তা পত্নীকে, পিতা কল্পা বা পুত্রকে,
ভ্রাতা ভ্রাতাকে দীক্ষিত করিবে না। পরস্ত যদি পতিসিদ্ধমন্ত্রহন, ভাহা হইলে
পত্নীকে দীক্ষিত করিতে পারেন এবং সেই পত্নীকে শক্তিরূপে গ্রহণ করিবে,
আন্য শিষ্যার ভাষ কল্পারূপে গ্রহণ করিবে না। দীক্ষাবিষয়ে এই যে,
নিবেধ উক্ত হইল, ইহা সিদ্ধ মন্তে নহে। পিতাপ্রভৃতি সিদ্ধমন্ত্র হইলে যদি
পুত্রাদিকে দীক্ষিত করেন, ভাহাতে কোন দোষ হইবে না।

दकान दकान यिव निकटिए क्रिकोड इट्रेंड भारत मिक्सिमान

জ্ঞানবান্। স্থদমাহিতঃ নিত্যনিষ্ঠো যতিঃ খ্যাতো গুরুঃ দ্যা ছোতিকোপি চ। তথাচ দিদ্ধযামলে—যদি ভাগ্যবশেনৈব দিদ্ধবিদ্যাং লভেৎ প্রিয়ে। তদৈব তাস্ত দীক্ষেত ত্যক্ত্বা গুরু-বিচারণং। প্রমাদান্ত তথাক্সানাৎ পিতুর্দীক্ষাং সমাচরেৎ প্রায়শ্চিত্তং ততঃ কৃত্বা মুনেদীক্ষাং সমাচরেৎ পিতৃরিত্যুপ-লক্ষণং তথা মাতামহাদীনামপি। প্রায়শ্চিত্তস্ত অযুত্সাবিত্রী-জপঃ সর্বত্র দর্শনাৎ।

শঙ্খঃ—দশসাহস্র্যজপ্যেন সর্ববিদ্যায়নাশিনী। তথা মৎস্থা সূক্তে। নিব্বীর্য্যঞ্চ পিতুর্মন্ত্রং শৈবে শাক্তে ন দূষ্যতীতি বচনং কৌলিকমন্ত্রদীক্ষাপরং। অত্র হেতুমাহ যোগিনীতন্ত্রে— শক্ত্যাদিবিদ্যামধিকৃত্য দীক্ষানিষেধাৎ। যদা শাক্তে তারাদি-

লিখিত আছে যে, যিনি তীর্থাচারযুক্ত, মন্ত্রক্ত, জ্ঞানবান, সংযতে জ্রিয়, তিনি যত্যাচারযুক্ত হইলেও গুরু হইতে পারেন। সিদ্ধামলে লিখিত আছে যে, যদি আপন সৌভাগ্যবশত কেহ সিদ্ধবিদ্যা লাভকরে, তাহা হইলে গুরু বিচার না করিয়া তৎক্ষণাৎ মন্ত্রগ্রহণ করিবে। যদি প্রমাদ বা অঞ্জান বশত কেহ পিতার কিয়া মাতামহাদির নিকট মন্ত্র গ্রহণ করে, তাহা হইলে প্রায়ন্তিত করিয়া মুনির নিকট দীক্ষাগ্রহণ করিবে। এই স্থানে অযুত (দশসহস্র) সাবিত্রী জপকরিলেই পিতৃমন্ত্র গ্রহণের প্রায়ন্তিত্র হইবে।

শঙাৰচনে জানা যায় যে, সাবিত্তীমন্ত্ৰ দশসহস্ৰ জপ করিলেই সর্কবিধ পাপ বিনাশ পায়, মৎস্তৃস্কে লিখিত তাছে যে, পিতৃমন্ত্ৰ বীৰ্য্যবিত্তীন, কিন্তু শৈব ও শাক্তবিষয়ে পিতৃমন্ত্ৰ বীৰ্যাহীন নহে। কৌলিকদীকাবিষয়ে এই বাৰহা জানিবে। এই বিষয়ের এহতু স্বরূপ যোগিনীতন্ত্রের বচনে জানা যায় যে, শক্তাদি মন্ত্ৰ দীক্ষাতেই নিষেধ উক্ত হইয়াছে। আর মৎস্তৃস্কু বচনে প্রতিপাদিত হইয়াছে যে, তারাদিবিদ্যার মন্ত্ৰদীক্ষাতেই পিতৃমন্ত্র গ্রহণ বিদ্যায়াং মৎস্থদৃক্তে তথা প্রতিপাদনাৎ। তথাচ নিজকুল-তিলকায় জ্যেষ্ঠপুত্রায় দদ্যাদিত্যাদি।

শীক্রমে—মনুর্বিম্বা দাতব্যা জ্যেষ্ঠপুত্রায় ধীমতে।
মহাতীর্থে উপরাগে সতি ন দোষঃ। তথাচ বিষ্ণুমন্ত্রমধিকৃত্য
সাধু পৃষ্টং ঘরা দেবি প্রবক্ষ্যামি ফলন্তব। ব্রহ্মণা কথিতং
পূর্বাং বশিষ্ঠায় মহাম্মনে। বশিষ্ঠোপি স্বপুত্রায় মৎপিত্রে দত্তবান্ স্বয়ং। প্রসমহাদয়ঃ স্বচ্ছঃ পিতা মে করুণানিধিঃ। কুরুক্ষেত্রে মহাতীর্থে সূর্য্যপর্বাণি দত্তবান্। ইত্যাদি বৈশম্পায়নসংহিতায়াং শৌনকং প্রতি ব্যাসবচনং। যোগিনীতত্ত্রে। নির্বী
র্যাঞ্চ পিতুর্দ্মন্তং তথা মাতামহস্য চ।

স্ত্রীদীক্ষাবিচারমাহ। স্বপ্নলব্ধং স্ত্রিয়া দত্তং সংস্কারেণৈব শুধ্যতি। যতু সাধ্বী চৈব সদাচারা গুরুভক্তা জিতেন্দ্রিয়া।

নিষিদ্ধ। কিন্ত নিজকুলভিলকস্বরূপ জ্যেষ্ঠ পুত্র পিভার নিকট দীক্ষিত হইতে পারে।

শ্রীক্রমের লিখিতবচনপ্রমাণে জানা যায় যে, মন্ত্রবিবেচনায় পিতা জ্ঞানী জ্যেষ্ঠ পুত্রকে মন্ত্র প্রদান করিতে পারেন। আর গঙ্গাকাশীপ্রভৃতি মহাতীর্থে এবং চক্রপ্র্যা গ্রহণকালে মন্ত্র গ্রহণকরিতে হইলে কোন দোষ বিচার করিবে না। বলিষ্ঠ ঋষি বিষ্ণু মন্ত্র দীক্ষা উপলক্ষে ব্রহ্মাকে জ্ঞানা করিলে, কমলযোনি বলিষ্ঠ ঋষিকে যেরপ উপদেশ করিয়া-ছিলেন, বলিষ্ঠ মুনি ঐরপে মহাতীর্থ কুরুক্ষেত্রে পরাশরকে প্র্যাগ্রহণকালে উপদেশ করিয়াছিলেন। অনস্তর এই কথা ব্যাসদেব শৌনক ঋষিকে বলেন, এই সকল কথা বৈশস্পায়ন সংহিতার বির্ত হইরাছে। যোগিনীতন্ত্র লিখিত আছে যে, পিতা ও মাতামহ কর্ভৃক প্রদন্ত মন্ত্র বীর্যহীন, অর্থাৎ উক্ত মন্ত্র জপে কোন ফল হয় না।

यथनक ७ छी थामछ मछत्र मः स्वात कत्रितारे एक रहा। मासी,

সর্ক্রমন্ত্রার্থতত্ত্বজ্ঞা স্থশীলা পূজনেরতা। গুরুযোগ্যা ভবেৎ সাহি বিধবা পরিবর্জ্জিতা। স্ত্রিয়া দীক্ষা শুভা প্রোক্তা মাতৃ-শ্চাফ্টগুণাঃ স্মৃতাঃ। ইদস্ত গুরোরুপাসিতমন্ত্রপরং। তথাচ ভৈরবীতত্ত্বে। স্বীয়মন্ত্রোপদেশে তুন কুর্য্যাদ্ গুরুচিন্তনং। মাতৃরিত্যুপাসিতেইফুগুণং। অনুপাসিতে শুভফলদমিত্যর্থঃ। সিদ্ধমন্ত্রবিষয়ম্বেতি কেচিৎ। বস্তুতস্ত্র স্ত্রীপদং বিধবাপরং। যোগিনী তত্ত্বে একবাক্যবলাৎ। বিধবায়াঃ স্থতাদেশাৎ কন্যায়াঃ পিতুরাজ্ঞয়া। নাধিকারে যতো নার্য্যাঃ সধ্বা ভর্ত্তুরাজ্ঞয়া। নাধিকার ইতি স্বাতন্ত্রোণাধিকারস্থ। স্ত্রীণাং

সদাচারতৎপরা, গুরুভকা, জিতে শ্রিয়া, সর্বমন্ত্রার্থতত্ত্তা, সুশীলা ও পূজাদি-কার্য্যে অনুরক্তা, এবস্তুতা স্ত্রী গুরুবোগ্যা, কিন্তু বিধবা স্ত্রী উক্তপ্রণালিনী इट्रेल उ जाहारक खक्रकार्या वर्जन कतिरव। क्षी खक्र न निक्र हिल শুভফল হইয়া থাকে, বিশেষত মাতার নিকট মন্ত্রগ্রহণ করিলে অপেকাক্বত অষ্টগুণ ফল হয়। পরস্ত মোগিনীতন্ত্রের উক্ত বচনসকলের তাৎপর্যার্থ উপাদিত মন্ত্র বিষয়ে জানিবে, অর্থাৎ মাতা যদি তাঁহার উপাদিত মন্ত্র श्राम करतम जाहा हहेलाहे चार्रेखन फण हहेर्य। टेज्रबीजस्त्रीक वहरम कानायात्र (य, यि छक्र व्यापन ऐपानिक मञ्ज व्यापन करत्रन, जाहा इहेटन श्वक विठादित व्यावश्रक जा नाहे। वास्त्र विक स्त्री एक विषय विषया পরিত্যাগ कत्रित. हेशहे भात्क्वत मर्पार्थ। এইরূপ मौगाःमा कत्रिलाहे यानिनौजत्क्वांक বচনের সহিত একবাকাতা হয়। স্ত্রীগুরুর নিকট দীক্ষা গ্রহণ নিষিদ্ধ विषया एवं कथिन इरेयाएइ, जिव्यास अनिश्चानय अरे एवं, विधवा सी भूखित অমুক্তাতে, কক্সা পিতার আজামুদারে, এবং দধবা স্ত্রী স্বামীর আজা গ্রহণ করিয়া দীক্ষা প্রদান করিতে পারে। স্থতরাং জানাযাইতেছে যে, দীকা कार्या रा खोत अधिकात नारे, এই कथाि नर्सव आपृड नरर। वाखिक क्षी च इक्षा मौका अमान कतिएक भातिए ना, हेशहे भारत्वत अक्रुड তাৎপর্য। গর্ভবতী জীর দীক্ষাগ্রহণে কোন দোষ হয় না, পরস্ক দশমমাস গর্ভবতীনাঞ্চ দীক্ষায়াং নৈব দূষণং। ন কুর্য্যাদ্দশমে মাসি কৃত্বা চ নারকী ভবেৎ।

বৈশপ্পায়নসংহিতায়াং—শুভা প্রোক্তা দ্রিয়োদীকা কালিকাদৌ বিশেষতঃ। শৈবে চ বৈশ্ববে চৈব মাতুর্মন্ত্রং শুভ প্রদং। বিধবায়াঃ দ্রিয়োদীকা ন শুভায় কদাচ ন। স্থতা-দেশবশাৎ সাধ্বী মন্ত্রদীকাধিকারিণী। মাতুর্দীকা বিচারে তু ন ঞ্চিনপি চিন্তয়েৎ। সধবা বিধবা বাপি গুরুর্মাতা গরীয়সী। পিতুর্মন্ত্রং বীর্যাহীনং মাতুর্মন্ত্রং সবীর্যাকং। দ্রিয়োদীকা বরা-রোহে সর্ব্বসম্পৎপ্রদায়িনী। ততোমাতুর্ব্বিশেষণ ফলঞ্চাই গুণং যতঃ।

र्यंगीर्यं । मार्थी मना हात्रयू । विभिष्ठे। मरेनव ज्ङा

গর্ভকালে দীকা নিষেধ। গর্ভের দশমমাদে যদি কোন স্ত্রীর দীকা হয়, তাহা হইলে নরকভোগ হইয়া থাকে।

হয়শীর্ষে লিখিত আছে যে. যে স্ত্রী সাধ্বী, সদাচারযুক্তা. গুরু ও দেব-তার প্রতি সবিশেষ ভক্তিশালিনী, ও সাধনকার্যো দক্ষা, সেই স্ত্রীকে গুরু থাগ্যা জ্ঞানিয়া তাহার নিকট মন্ত্রগ্রহণ করিবে। পরস্ত গুরুর উপাসিত গুরুদেরতান্ত। জিতেন্দ্রিয়া সাধনকা ব্যাদক্ষ। ভবেৎ স্থযোগ্যা গুরুযোগ্যকার্যো॥ গুরোরুপাসিতমন্ত্রে তুন কুর্যাদ্গুরু চিন্তনং। মাতা যদি নিজং মন্ত্রং দদাতি স্থতবৎসলা। তদা গুরুবিচারস্ত ত্যক্র্বা মাতুর্মকুং লভেৎ। বীর্যাহীনং পিতুর্মন্ত্রং মাতুশ্চাইগুণং স্মৃতং।

স্বপ্রলক্ষত্ত্বে যদি সদ্গুরুং প্রাপ্নোতি তদা তত এব তমন্ত্রং গৃহীয়াৎ নোচেৎ জলপূর্ণকলসে গুরোঃ প্রাণ-প্রতিষ্ঠাং বিধায় বটপত্ত্বে কৃষ্কুমেন লিখিতং মন্ত্রং তৎ-কলসে প্রক্ষিপ্য উত্তোল্য মন্ত্রং গৃহীয়াদিত্যর্থঃ। তথাচ—স্বপ্রলক্ষে চ কলসে গুরোঃ প্রণান্ নিবেশয়েৎ। বটপত্তে কৃষ্কুমেন লিখিত্বা গ্রহণং শুভং। ততঃ সিদ্ধিমবাপ্নোতি চান্তথা বিফলং ভবেৎ। ইনস্ত গুরোরভাবে তৎসত্ত্বে তত্মাদেব মন্ত্রং গৃহীয়াৎ। স্বপ্নে তু নিয়মো নহীতি নারদ্বিনাৎ। তত্ত্ব সিদ্ধাদিনিয়মো নাস্তি।

মন্ত প্রদানে গুক বিচারের আবিশুকতা নাই, বিশেষত মাতা যদি পুত্রবং-সলতাৰণত নিজমন্ত প্রদান করেন, তাহা হইলে সেইস্থান গুরু বিচার পরিত্যাগ করিয়া মাতার নিকট মন্ত্রহণ করিবে। পিতার মন্ত্র বীর্যাহীন বটে, কিন্তু মাতার মন্ত্র অষ্ট্রণ ফল প্রদান করিয়া থাকে।

স্থানে মন্ত্র লাভ করিলেও যদি সদানুক্ত পাওয়া যাঁয়, তাহা হইলে সেই গুরুর নিকট উক্ত মন্ত্র গ্রহণ করিবে। আর উক্তরপ গুরুর অভাবে জলপূর্ণ কুন্তে গুরুর প্রাণপ্রতিষ্ঠা করিয়া বটপত্রে কুন্তুমহারা মন্ত্র লিথিয়া সেই কুন্ত মধ্যে স্থাপন করিবে। পরে ঐ বটপত্রের সহিত মন্ত্র উত্তোলন করিয়া স্থাং দেই মন্ত্র গ্রহণ করিবে, কিন্তু গুরু উপস্থিত থাকিলে এইরূপ করিবে না, তথন গুরুর নিকটেই উক্ত মন্ত্র গ্রহণ করিবে। স্থালন্ধ মন্ত্রে সিন্ধানি চক্রানুসারে মন্ত্র দ্বিহিারের আবশ্রকতা নাই।

ত্রিবিধ গুরুমাহ। তত্র বিদ্যাধরাচার্য্যস্তং জাবালবচনং।
মধ্যদেশ-কুরুক্কেত্র-নাটকোহঙ্কনসম্ভবাঃ। অন্তর্কেদিপ্রতিষ্ঠানা
আবস্ত্যাশ্চ গুরুত্তমাঃ। মধ্যদেশ আর্য্যাবর্ত্তঃ। গৌড়াঃ
শাল্লোদ্রবাশ্চৈব মগধাঃ কেরলান্তথা। কোশলাশ্চ দশার্ণাশ্চ
গুরুবঃ সপ্ত মধ্যমাঃ। কর্ণাটনর্মদারেবা কচ্ছাস্তীরোদ্রবাস্তথা।
কালিন্দাশ্চ কলম্বাশ্চ কাম্যোজাশ্চাধ্যা মতাঃ।

বৃদ্ধবিদ্ধে শুরুর্বি, ক্ষা শুরুর্বিষ্ণু শুরুর্দিবো মহেশবঃ।
শুরুঃ প্রকৃতিরীশাদ্যা গুরুশ্চন্দোহনলো হরিঃ। শুরুর্বাযুশ্চ
বরুণো গুরুর্মাতা পিতা স্থৃহুৎ। গুরুরের পরংব্রহ্ম নাস্তিপুজ্যো
শুরোঃ পরঃ। ন সংপূজ্য গুরুং দেবং যো মূঢ়ঃ পূজ্যেদ্ ভ্রমাৎ।
ব্রহ্মহত্যাশতং পাপং লভতে নাত্র সংশয়ঃ। সামবেদেচ ভগ-

विमाधवाहार्या (य खावान मूमित वहन मःश्रह कतिया (एन विश्निष्ठ खक्र छेखमडापि निर्वय कित्रियाहिन, मिहे मकन वहन এই द्रान मूल छेक् छ खाहि। खावानमूनि विनियाहिन (य, मधा (एन व्यर्था) वर्षा, कुक्र एक् क. नाउँक, व्यक्त, अ व्यवश्री এই मकन (एनमख्ड छ खक्र हे छेखम। (भोत, भाव, व्यत, मभस, (कत्रन, कायन अ एमार्ग धहे मधा एक्स मधाम, व्यात कर्गाठ, नर्मान, (त्रवा, कह्र, जीत, कानिना, कन्य अ कार्खाख धहे मकन (एन मख्ड छ खक्र व्यवस्था वर्षा कार्मित ।

ব্রন্ধবৈবর্ত্পুরাণে লিধিত আছে যে, গুরুকে ব্রনা, বিষ্ণু, মহেশর, প্রকৃতি, ঈশর, চন্দ্র, স্থা, অগ্নি, বস্থ, বরুণ, পিতা, মাতা ও বস্থুসরপ জান করিবে, আর গুরুই পরংব্রন্ধ, স্থতরাং গুরু হইতে পূজাতম আর কেহ নাই। যে মৃঢ় ব্যক্তি ভ্রম বশতঃ গুরুপুলা না করিয়া অন্ত পূজা করে, ভাহার শত ব্রন্থতারে পাপ জন্ম। স্বরং হরি সামবেদে এইরূপে গুরুর

বানিত্যুবাচ হরিঃ স্বয়ং। তত্মাদভীফদৈবাচ্চ গুরুঃ পুজ্যো ন সংশয়ঃ।

দীক্ষাং বিনা জপস্থ সুইছাৎ প্রথমং সা নিরূপ্যতে॥
দিব্যং জ্ঞানং যতো দদ্যাৎ কুর্যাৎ পাপস্থ সংক্ষয়ং। তত্মাদ্দীক্ষেতি সা প্রোক্তা মুনিভিস্তন্ত্রবেদিভিঃ। সর্ববাশ্রমেয়
দীক্ষায়া আবশ্যকত্বং। তথাচ। দীক্ষায়ূলং জপং সর্ববং
দীক্ষায়ূলং পরং তপঃ। দীক্ষামাশ্রিত্য নিবসেদ্যত্র কুত্রাশ্রমে
বসন্। অদীক্ষিতা যে কুর্বস্তি জপপূজাদিকাঃ ক্রিয়াঃ। ন
ভবস্তি প্রিয়ে তেষাং শিলায়ামুপ্রবীজবং। দেবি দীক্ষাবিহীনস্থ ন সিদ্ধির্ন চ সদ্যতিঃ। তত্মাৎ সর্বপ্রথত্বেন গুরুণা
দীক্ষিতো ভবেৎ। অদীক্ষিতোহপি মরণে রৌরবং নরকং

মাহাত্মা কীর্ত্তন করিয়াছেন, অতএব অভীপ্তণেব অপেক্ষাও গুরুকে পূজাতম জ্ঞান করিবে।

অন্তর দীক্ষার আবশ্রকতা ও তির্বরে বিচারাদি বলিতেছেন। দীক্ষাব্যতিরেকে ক্লপ পূলাদি সকলই বিফল, অতএব প্রথমে দীক্ষা নিরূপণ
করিতেছেন। দীক্ষা মহ্ব্যকে দীব্য জ্ঞান প্রদান করিয়া তাহার পাপরাশি
কর্ম করে, অতএব তন্তবেতা মুনিগণ ইহাকে দীক্ষা বলিয়া থাকেন। এক্ষচর্যাদি সকল আশ্রমেই দীক্ষার আবশ্রকতা বলিয়াছেন। এই সংগার
সমস্তই দীক্ষামূল, দীক্ষা ব্যতিরেকে এই জগতের কোন কার্য্যই সম্পন্ন হর
না। এবং জপ তপস্থা প্রভৃতি সমস্ত কার্য্যই দীক্ষার উপর নির্ভর করে।
দীক্ষিত হইরা যে কোন আশ্রমেই থাকুক না কেন, সর্ব্বেই তাহার কার্য
দিন্ধি হইবে। দীক্ষিত না হইয়া যে জপপ্রাদি কার্য্য করে তাহার সেই
সকল কার্য্য পাবাণে রোপিত বাজের স্থায় নিক্ষল হয়। তে দেবি! দীক্ষাবিহীন ব্যক্তির সিদ্ধি বা সদ্গতি কিছুই হয় না। অতএব সর্ব্যপ্রয়ের
সদপ্তক্ষর নিকটে অবশ্র দীক্ষিত হইবে। ক্ষ্মীক্ষিতব্যক্তি মরণানস্তর,

ব্রজেৎ। অদীক্ষিতস্থ মরণে পিশাচম্বং ন মুক্ষণ্ডি। তথাদীক্ষাং প্রযক্তেন সদা কুর্যাচ্চ তান্ত্রিকাৎ। তথাচ নবরত্বেখরে। সর্বাসামপি দীক্ষাণাং মুক্তিং ফলমখণ্ডিতা। অবিরোধান্তবন্ত্যেব প্রাসঙ্গিকান্ত ভুক্তয়ঃ। উপপাতকলক্ষাণি
মহাপাতককোটয়ঃ। ক্ষণাদ্দহতি দেবেশি দীক্ষা হি বিধিনা
কৃতা। কল্পে দৃষ্ট্বা তু মন্ত্রং বৈ যো গৃহ্লাতি নরাধমঃ। ময়ন্তরসহত্রেয়ু নিষ্কৃতিনৈব জায়তে। নাদীক্ষিতস্থ কার্যাং স্থাৎ
তপোভিনিয়মব্রতিঃ। ন তীর্থগমনেনাপি ন চ শারীরয়ন্ত্রণৈঃ।
মহম্ম সূক্তে। অদীক্ষিতানাং মর্ত্যানাং দোষং শৃণু বরাননে।
অন্ত্রং বিষ্ঠাসমং তস্থ জলং মৃত্রসমং স্মৃতং। যহকুতং তম্থ
বা প্রাদ্ধং সর্বং যাতি ছধোগতিং। অতঃ—সদ্প্ররোরাহিতা
দীক্ষা সর্ববর্ণ্যাণি সাধয়েৎ।

বোরতর নরকে গমন করে। দীক্ষাবিহীন ব্যক্তির পিশাচত চ্র হয় না।
অতএব যত্নপূর্বাক ভাস্ত্রিক গুরুর নিকটে অবশু দীক্ষিত হইবে। নবরত্নেখরে
লিখিত আচে যে, সকলপ্রকার দীক্ষাতেই মুক্তিফল হইয়া থাকে। হে দেৰি
বিধানক্রমে দীক্ষিত হইলে সেই দীক্ষা ক্ষণকালমধ্যে লক্ষ উপপাতক ও
কোটি মহাপাতক দম্ম করে। যে ব্যক্তি গুরুর নিকট দীক্ষিত না হইয়া
গ্রহাদিতে দৃষ্টি করিয়া মন্ত্র গ্রহণ করে, দেই পাপিষ্ঠ নরাধম সহস্র মহস্তরেও
নিক্ষৃতি পায় না। অদীক্ষিত ব্যক্তির কোন কার্য্যে অধিকার নাই, স্থতরাং
তপস্থা, নিয়ম. ব্রত, তীর্থাসমন ও শারীরিক পরিশ্রমদ্বারা কোন কার্য্য হইতে
পারে না। মংস্থাক্তে মহাদেব বলিয়াছেন; হে দেবি! যে ব্যক্তি গুরুর
নিকট দীক্ষাগ্রহণ করে নাই, তাহার অর বিষ্ঠাসম ও জল মৃত্রতুলা জানিবে।
এবং অদীক্ষিত ব্যক্তি শ্রাদাদি কার্য্য করিলে তাহার ফল অধঃপতিত হয়।
বাস্তবিক সদ্গুরুর নিকট দীক্ষিত হইয়া বে কিছু কার্য্য করে, দীক্ষার
নাহাত্র্যা বলে সেই কার্য্যই সফল হইয়া থাকে।

শুদ্রেশ্ব নিষেধমাই তন্ত্রান্তরে প্রণবাদ্যং ন দতিব্যং মন্ত্রং পূদ্রায় সর্বাধা। আত্মমন্ত্রং গুরোর্মন্ত্রং মন্ত্রকাজপসংজ্ঞকং। ব্যাপ্রাপ্রবাদর করে প্রদাদিজঃ। শৃদ্রো নিরয়মাগ্রোতি ব্রাহ্মাণো যাত্যধাগতিং। প্রুতিরপি। সাবিত্রীং প্রণবং যজু-র্লহ্মীং স্ত্রীশৃদ্রো যদি জানীয়াৎ স মৃত্যোহধা গচ্ছতি। বিশেষমাই বারাহীয়ে। গোপালস্থ মন্ত্র্নেগ্রা মহেশস্থ চ পাদজে। তৎপত্র্যাশ্চাপি সূর্য্যস্থ গণেশস্থ মন্ত্রন্থা। এষাং দীক্ষাধিকারী স্থাদন্থা পাপভাগ্ ভবেৎ। তত্রাপ্যান্তর্ক্রণং মন্ত্রং দীক্ষয়েৎ। মননাল্রায়তে যন্মান্তন্মান্তর্ক্র প্রকীর্ত্তিতঃ। তথাচ স্বতাররাশিকারীর স্থাদন্ত্রান্ত্র ব্যান্তন্মান্ত্রং প্রকীর্ত্তিতঃ। তথাচ স্বতাররাশিকারীর স্থান্তর্ক্রান্ত্র প্রকীর্ত্তিতঃ। তথাচ স্বতাররাশিকারীর স্থান্ত্র ব্যান্তন্মান্তরং প্রকীর্ত্তিতঃ। তথাচ স্বতাররাশিকার্ত্রানামনুক্লান্ ভজেন্মনূন্। সিদ্ধসারস্বতে। তত্রচ—নৃসিংহার্কবরাহাণাং প্রাসাদপ্রণবস্থ চ। সপিণ্ডাক্ষরমন্ত্রাণাং

ন্ত্রী ও শৃত্রের দীকা বিষয়ে নিষিদ্ধ মন্ত্র কথিত হইতেছে। প্রাণ্ বিষয়ে নিষিদ্ধ মন্ত্র কথিত হইতেছে। প্রাণ বিষয়ে নিষদ্ধ মন্ত্র কথিব না। যে ব্রাক্ষণ আত্মানমন্ত্র, প্রকর মন্ত্র, অলপামন্ত্র (হংসঃ) স্বাহা, স্থা, প্রাণ অথবা প্রাণ্যসংস্কুল মন্ত্র শৃত্রকে প্রাদানকরে, দেই ব্রাক্ষণ ও শৃত্র উভরেরই নরক গমন হয়। বেদপ্রমাণেও আনাষার যে, যদি দ্রী অথবা শৃত্র সাবিত্রী মন্ত্র, প্রণব ও গল্পী বীজ (প্রা) এই সকল মন্ত্র উচ্চারণকরে, তাহা হইলে দেই দ্রী ও শৃত্র মন্ত্রণান্তে নরকে গমনকরে। বারাহীতন্ত্র লিখিত আছে যে, গোপাল, শিব, তুর্গা, স্থ্য ও গণেশ এই সকল দেবতার মন্ত্র গ্রহণেই শৃত্রের অধিকার আছে, অন্ত দেবতার মন্ত্র গ্রহণকরিলে শৃত্র পাপভাগী হইবে। মন্ত্রগ্রহণ করিতে হইলে কতিপর নিরম পালন করিতে হয়, যথা—সকলের পক্ষেই অন্তর্ক করিতে হইলে কতিপর নিরম পালন করিতে হয়, যথা—সকলের পক্ষেই অন্তর্ক করিলে মানবগ্রণ পরিত্রাণ পার, তাহাই মন্ত্র, অভ এব মুনিগণ 'মন্ত্র' এই সার্থক নাম নির্দেশ করিয়াছেন। আর ভারাচক্র ও রাশ্রাদিচক্র বিচারে বে মন্ত্র স্বান্ধ রাশ্বাদির অনুক্ল হয়, দেই মন্ত্রই গ্রহণ করিবে। সিদ্ধ্যার্থতে

দিদ্ধাদীদৈব শোধয়ে ॥ বারাহীতদ্রে। তারাচক্রং রাশিচক্রং নামচক্রস্তথৈব চ। তত্রচেৎ সগুণোমদ্রো নাম্যচক্রং বিচিন্তরে । ইতি তু প্রধানতয়া বোদ্ধবাং॥ তথাচ ধনিমন্ত্রং ন গৃহ্লীয়াদ-কুলঞ্চ তথৈব চ। ইত্যাদিদর্শনাক্তরচক্রবিচারস্থাবশ্য-কত্বাৎ প্রথমং তদ্ধিরূপাতে। স্বপ্নলকে দ্রিয়া দত্তে মালামন্ত্রে চ ত্রক্রের। বৈদিকেষু চ সর্বেষু সিদ্ধাদীদৈব শোধয়ে । মালামন্ত্রন্ত বারাহীয়ে। বিংশত্যর্ণাধিকা মন্ত্রা মালামন্ত্রন্ত বারাহীয়ে। বিংশত্যর্ণাধিকা মন্ত্রা মালামন্ত্রাঃ প্রকীর্তিতাঃ। নপুংসকস্থ মন্ত্রম্থ সিদ্ধাদীদৈব শোধয়ে । হংস্থাকীক্ষরস্থাপি তথা পঞ্চাক্রম্থ চ। একদ্বিত্র্যাদিবীজস্য সিদ্ধাদীদৈব শোধয়ে । তথা একাক্রম্য মন্ত্রম্য মালামন্ত্রম্য পার্বিতি। বৈদিকস্য চ মন্ত্রম্য সিদ্ধাদীদৈব শোধয়ে ।

লিখিত আছে থে, নৃদিংহ, স্থা ও বরাহ ইহাদিগের মন্ত্র, প্রাসাদ বীজা (হাঁ), প্রণব ও ক্টমন্ত্র ইহাদিগের সিদ্ধাদি বিচারের আবশুকতা নাই, বারাহীতন্ত্র মহাদেব বলিয়াছেন যে, তারাচক্র, রাশিচক্র ও নামচক্র এই সকল চক্রবিচারে যে মন্ত্র অমুক্ল বোধ হইবে, সেই মন্ত্র গ্রহণ করিবে, দীক্ষাকার্য্যে অন্ত চক্রবিচার করিবে না। এই বাক্যের তাৎপর্যার্থ এই যে, মন্ত্রগ্রহণে উক্ত চক্রব্রে বিচার অবশুকরিবে, অন্ত প্রণিধনীপ্রভৃতি চক্রদারা যে মন্ত্রবিচার করিবে না, তাহা নহে, কারণ অন্ত চক্রবিচার অকর্ত্রবা হইলে ধনী মন্ত্র গ্রহণ করিবে না, ইত্যাদি শাল্প বিফল হর। স্থতরাং তারাদি চক্র বিচার অবশুকর্ত্রবা এবং অশ্বান্ত বিচারও করিতে হয়, এইক্রপ মীমাংসা করিতে হইবে। ধনী ও অক্ল মন্ত্র গ্রহণ করিবে না, ইত্যাদি বচনাম্নসারে গ্রহকর্ত্রা চক্রবিচারের প্রথমেই কুলাকুলাদি চক্র বিচার করিলেন। স্থালন্ধ মন্ত্র, স্থীশুরুপ্রদন্ত মন্ত্র, মালামন্ত্র, ত্রাক্ররী মন্ত্র ও বেদোক্ত মন্ত্র এই সকল মন্ত্রের দীক্ষাতে সিদ্যাদিচক্র দারা মন্ত্র শোধ-বির আবশ্বতা নাই। বারাহীতন্তে যে মালা মন্ত্র নির্দৃতি হইরাছে, তাহা এই—বিংশতি অক্লরের অধিক অক্লর ঘটিত যে মন্ত্র তাহাকেই মালা মন্ত্র

পুংমন্ত্রা হঁ ফড়ন্তাঃ স্থান্তি ঠান্তান্ত দ্রিয়োমতাঃ। নপুংসকা নমোহন্তাঃ স্থানিত্যকা মনবন্ত্রিধা। এতৎ শৃত্যা মহাবিদ্যা মহাশব্দেন নীয়তে। মালিনীবিজয়ে॥ অথ বক্ষ্যাম্যহং যা যা
মহাবিদ্যা মহীতলে। দোষজ্ঞালৈরসংস্পৃষ্টান্তাঃ সর্বনা হি
ফলৈঃ সহ। কালী নীলা মহাত্র্গা ত্বনিতা ছিন্নমন্তকা। বাগ্বাদিনী চান্নপূর্ণা তথা প্রত্যাঙ্গির পুনঃ। কামাখ্যাবাদিনী
বালা মাতঙ্গী শৈলবাদিনী। ইত্যাদ্যাঃ সকলা দেব্যঃ কর্লোপূর্ণফলপ্রদাঃ। দিদ্ধমন্ত্রত্যা নাত্র যুগদেবাপরিশ্রমঃ। তথাহৈতা মহাবিদ্যাঃ কলিদোষান্ন বাধিতাঃ। তথাচ মুগুমালাতন্ত্রে। কালী তারা মহাবিদ্যা বোড়শী স্থ্বনেশ্বরী। ভৈরবী
ছিন্নমন্ত্রা চ বিদ্যা ধূমাবতী তথা। বগলা দিদ্ধবিদ্যা চ

वना यात्र। ये श्राष्ट्र व्यात्र निश्चित्र व्याह्म (य, नश्रमक मञ्ज, वरः स्प्रांत्र व्यक्तिकात्री व भक्षाकती मञ्ज व्याह्म मर्क्ष व्यक्तिक दिविक मञ्ज हेरामिरात्र मीका श्राह्म विद्या मिक्का मिक्का मञ्ज व्याह्म कि व्याह्म व्याहम व्या

মাতঙ্গী কমলাত্মিকা। এতা দশ মহাবিদ্যাঃ সিদ্ধবিদ্যাঃ প্রকীর্তিতাঃ। নাত্র সিদ্ধাদ্যপেক্ষান্তি নক্ষত্রাদিবিচারণা। কালাদিশোধনং নান্তি নারিমিত্রাদিদূষণং। সিদ্ধবিদ্যতয়া নাত্র যুগদেবাপরিশ্রমঃ। নান্তি কিঞ্চিম্মহাদেবি ছঃখসাধ্যং কদাচন। ইত্যাদি বচনাদেরু বিচারোনান্তি। বস্তুতস্ত ইদং প্রশংসাপরং। সর্বত্র বিচারস্থাবশ্যকত্বং তুরদৃষ্টবশাৎ কদা-চিদ্বৈরিমন্ত্রস্থ স্বপ্নাদৌ প্রাপ্ত্যা তদ্যোষস্থ দৃষ্টত্বাদিতি সাম্প্র-দায়িকাঃ॥

অথকুলাকুলচক্রং।

কুলাকুলস্থ ভেদং হি বক্ষ্যামি মন্ত্রিণামিহ। তথা নিবন্ধে। বায়্মিভূজলাকাশাঃ পঞ্চাশল্লিপয়ঃ ক্রমাৎ। পঞ্চ হ্রস্বাঃ পঞ্চ দীর্ঘা বিন্দ্রস্তাঃ সন্ধিসম্ভবাঃ। কাদ্য়ঃ পঞ্চশঃ যক্ষলসহাস্তাঃ

ভারা প্রভৃতিদেবতার মন্ত্রদীক্ষাতে সিদ্ধাদি শোধন, নক্ষঞাদিবিচার, কালাদিতদ্ধি ও অরিমিঞাদি দোব, এই সকল বিচার করিতে হর না। যে হেতু উদ্ধে দেবতারাই সিদ্ধবিদ্যা অভএব ইহাদিগের আরাধনার যুগাদিনিরম পাল-নেরও আবশুকতা নাই। এই সকল দেবভার উপাসনা করিলে কোন কার্যাই ছঃসাধ্য হয় না। বাস্তবিক উক্ত বচনসকল প্রশংসাপর। সকল দেবভার মন্ত্র গ্রহণেই মন্ত্রশোধন অবশ্য কর্ত্ব্য বলিয়া জানা যাইভেছে। ভূর্ভাগ্য বশত যদি কদাচিৎ স্থপ্নে বৈরি মন্ত্র লাভ হয়, ভাহাতেও দোব দৃষ্ট হইরাছে।

অনস্তর কুলাকুলচক্র বিচার কথিত হইতেছে। নিবন্ধগ্রছে লিখিত আছে যে, বারু অগ্নি, পৃথিবী, জল ও আকাশ এই পঞ্ছতমন্ন পঞ্চাশংবর্ণ ক্রমত লিখিয়া কুলাকুল মন্ত্র নির্ণয় করিবে। পাচটি হ্রম, পাচটি দীর্ঘ, অফ্সার, সন্ধান্ধর অর্থাৎ এ ঐ ও ও এই সকল স্বর্ব্ধ ও ক্কারাদি ব্যজন-

বায়ু	অগ্নি	Æ	জল	আকাশ	
অ আ	हे के	ক্ত ক্ট	३ 1 ३ 1	৯ ৯৯	
(ক্র	છ	જ	অং	
ক	খ	গ	ঘ	છ	
Б	₹	জ	ঝ	এ	
ठ	र्	ড	ঢ	ન	
ত '	থ	म	ध	न	
প	ফ	ৰ	ভ	ম	
য	র	ल	ঁ ব	*	
ব	ক্ষ	व	স	হ	

वर्ष गरेश थर्ड क्लाक्ल हिंग कि विषा । च चा थ क ह हे छ श य व है हात माक्र वर्ग, हे के थे थ, ह हे थ क त च है हाता चार्य वर्ग, छे छ थ न च छ प व न न है हाता शार्थिववर्ग, च छ थ व न है हाता वाक्रण वर्ग, > ३ ७ थ न म म ह थहे नक्ल चार्याम वर्ग। थहे करण वर्ग हान्य कि विद्या क्लाक्ल विहान कि ति छ है हिंद। मञ्जू ही छात्र नारमत चा कि, चक्रत छ रव मञ्ज शहर के विहान कि ति छ है हिंद, राहे मरद्वत चा कि चक्रत यकि थ कक्ष छ थ थक रेगव छ न, छाहा है है हिंद, राहे मरद्वत चा कि चार्य मर्ग विद्या के विद्या के विद्या के विद्या चार्य चित्र के विद्या चार्य च विद्या चा विद्या च विद्या

বারুণাঃ। ৯৯৯ অং ৪ ঞ ণ ন ম শ হা নাভসাঃ। সাধক খাক্ষরং পূর্বাং মন্ত্রখাপি তদক্ষরং। যদ্যেকভূতদৈবত্যং
জানীয়াৎ স্বকুলং হিতং। ভৌমস্থ বারুণং মিত্রং আর্য়েয়খাপি
মারুতং। মারুতং পার্থিবানাঞ্চ আ্য়েয়ঞ্চান্ত্রসাং রিপুঃ। পার্থিবানাঞ্চেতি চকারাৎ আ্যেয়ং পার্থিবানাং রিপুঃ। নাভসং
সর্বমিত্রং স্থান্থিরুদ্ধং নৈব শীলয়েৎ। তথাচ রুদ্র্যামলে।
পার্থিবে বারুণং মৈত্রং তৈজসং শক্রারিতঃ। ঐদ্রবারুণয়োঃ শক্রশ্মারুতঃ পরিকীর্তিতঃ। ইতি রাঘ্বভট্টগ্বত্বচনাৎ
জলমারুতয়োঃ শক্রতা ইতি কুলাকুলচক্রবিচারঃ॥০॥

व्हेम्राह, हेहामिश्व निम्म (य एय वर्ग निश्विष्ठ चाहि, काहामाहे वक्कृठ ख এক দৈবত। নামাদাক্ষর ও মন্ত্রাদাক্ষর এক কোণ্ডান্থিত হইলেই মন্ত্র স্বকুল यिन नामानाकत ७ मञ्जानाकत এकভूष ७ এकरेनवर्ड ना इत्र, जाश इहेल উক্ত বর্ণদ্বয়ের পরস্পর মিত্রতা থাকিলেও সেই মন্ত্র গ্রহণ করিতে পারে। नामापि वर्षित महिल मञ्जापि वर्षित मेळला हरेला (मरे मञ्जाहर् कित्रवना। এইকণ বর্ণের মিত্রতা ও শত্রতা নির্দেশ হুইতেছে, বারুণ বর্ণ ভৌমবর্ণের এবং মাক্ত বৰ্ণ আগ্নেয় বৰ্ণের মিত্র। মাক্ত ৰৰ্ণ পাৰ্থিৰ বৰ্ণের এবং चारधन्नवर्ग वाक्रण वर्णन ७ भाषिव वर्णन भक्त, चाकामवर्ग मर्क वर्णन मिल. এই প্রকারে বর্ণ সকলের শক্ততা ও মিত্রতা নির্বন্ন করিয়া মিত্র মন্ত্র গ্রহণ कतिरव, भक्त यञ्ज शहन कतिरव ना। क्षासामनवृह्दन साना याहेर छ एए, वाक्रण वर्ग भार्षिव वर्षित भिक्र ध्वरः चार्यत्र वर्षित भक्तः। याक्रक वर्ग चाकाण वर्ष ७ बाक्रन वर्षित्र मेळा। चात्र त्राचवछहेश्वक वहरून चीना यात्र ८य, जन वर्णित महिङ माक्रजवर्णित भक्जा चाह्य। धरे कुनाकून विठातित धक्छि ठळ जिंड कहा (शन, এই ठक पर्नन कतिरनहें कुनाकून मञ्ज जनाहारन পরিজ্ঞাত হইবে। সকল ব্যক্তিই চক্রান্ত্রসারে স্বীয় নামের ও মল্লের স্বাদ্যা-'कात्र ग्रेमा विठात श्रांक मञ्जर्भ कतिरव।

অথ রাশিচক্রং॥ তথাচ কল্পক্রমে। রেখাদ্যং পূর্ববপরেণ কুর্যাতিমধ্যতে। যাম্যকুবেরভেদাৎ। একৈকমীশাননিশাচরে

प्रम हिथ्न श्राह्म	्भव का हे जे	मान व व व व व व व व व व व व व व व व व व व
ক ক ট	রাশি চক্র	মকর তথদধন
FITE BY AND	কুলা ক থগ ঘ ঙ	ক ক ক ক ক ক ক ক ক ক ক ক ক ক ক ক ক ক ক

তু ত্তাশবায়োর্বিলিখেত্ততোহর্ণান্। বেদাগ্নিবহ্নিযুগল-শ্রবণাক্ষিসংখ্যান্ পঞ্চেযুবাণশরপঞ্চতুষ্টয়ার্ণান্ মেষা-দিতঃ প্রবিলিখেৎ শকলাংস্ত বর্ণান্ কন্যাগতান্ প্রবিলিখেদথ

এইক্ষণ রাশিচক্র বিচার কবিত হইতেছে। কর্মানে লিখিত আছে যে, উর্নাধোভাবে ছুইটি রেখা করিও করিয়া তির্যাক্ ভাবে আর ছুইটি রেখা দারা ঐ রেখা দারের কর্মন করিবে এবং ঈশানাদি চতুংজাণে অপর চারিটি রেখা অক্ষিত করিয়া একটি রাশিচক্র অক্ষিত করিতে হইবে। এই চক্রের ঘাদশঘরে মেয়াদি ছাদশ রাশি কর্মনা করিয়া মেয়াদিক্রমে বর্ণবিক্রাস করিতে হইবে। বর্ণবিন্যাসের নিয়ম এই—শ্মেষে চারিখন, বুবে তিনবর্ণ, মিথুনে তিন, কর্কটে ছুই, সিংহে ছুই, কল্লাভে ছুই, ভুলাভে পাঁচ, বুলিকে পাঁচ, ধক্তে পাঁচ, মকরে পাঁচ, কুছে পাঁচ, মীনে চারি এবং অবশিষ্ট পাচবর্ণ কল্লাভে লিখিবে।

শাদিবর্ণান্। শারদায়াং। বালং গৌরং খুরং শোনং শনীশোভেতি রাশিষু। ক্রমেণ ভেদিতাবর্ণাঃ কন্সায়াং শাদয়ঃ
শ্বতাঃ। অআইস মেয়ঃ। উউয় রয়ঃ। য়৯ঃ মিয়ুনং। এঐ
কর্কটঃ। ওও সিংহঃ। অংঅঃ শয়সহলক্ষাঃ কন্সাঃ। কবর্গস্তলা।
চবর্গো রশ্চিকঃ। টবর্গো ধয়ৣঃ। তবর্গো মকরঃ। পবর্গঃ কৃষ্ণঃ।
যবর্গো মীনঃ। স্বরাশীনামমুকূলং মস্ত্রং ভজেৎ। তথাচ স্বতাররাশিকোষ্ঠানামমুকূলান্ ভজেন্মন্নিতি নারদ্বচনাৎ।
রাশীনাং শুদ্ধতা জ্রেয়া ত্যজেচ্ছক্রেং মৃতিং ব্যয়ং। স্বরাশের্জ্রান্
রাশ্যন্তং গণনীয়ং বিচক্ষণৈঃ। যদাতু স্বরাশের্জ্ঞানং তদা
সাধকনামাদ্যক্রির্স্বন্ধিনং রাশিং গৃহীত্বা গণয়েৎ। নারায়ণীয়ে।

- এইরূপ বর্ণবিক্রাদের নিয়ম সারদাতিলকে কৌশলে লিখিত হইয়াছে, উক্ত श्रकात्र व ८, न ७, ग ७ हे जानि मक्डि कतिया 'वानः (गोतः'' हेजानि कार्ल निथित्राष्ट्रन। উक्त नित्राम वर्गविद्यांत्र कत्रिल स्माय का है हे क्रों हिन वर्ग, वृश्य के छ सा क्रों जिन वर्ग, मिथूल सा न है क्रों किन वर्ग, कर्कां वि व के वहे इहे वर्ग, निश्र्य के के बहे इहे वर्ग, क्छारिक पश पा: प व महम क वरे कार वर्ग, जूगाउँ क थ ग ए छ वरे भी हर्ग, वृन्हिक ह इ य का करे माहितर्ग, श्रमुख है है ए ए न करे माहितर्ग, मकरत खंश म म वह नीह वर्ग, कुर्ह्म न क व छ म वह नीह वर्ग वदः मीत्न व व न व वह ठाति वर्ग लिथिए इहेरव। अहे ऋण ठळ भर्था आकाराति क नर्गत वर्ग विश्वान क्षित्रा विठाव क्षिण क्षेट्र । नावन्य हत्न कानायात्र एव, कालन वालिव अञ्जून मञ्ज अर्ग कवित्व, ञ्चदाः वालिहक्यावा मध्यव खरा शक्ति विदय्वना कतिया गन्न अर्ग कतिद्य। अरे ठ उक्ति भगना व्यगानी वार्-जानन व्रामि रहेटल मझ वामि जबीर द्य वामिटल महाव जानिवर्न मुटे इक्ट्रें (मर्टे ब्रामि भर्षास भगना क्रिंग्यिमि महास्थि समात्रीमि इक्ट्रें वर्ष, जरेम, जथना बामम रव, छारा रहेला त्यरे मह धर्म कविद्यमा। ैयिन जम द्रानित चत्रन ना थार्क, छाहा हरेरन नारमन

অজ্ঞাতে রাশিনক্ষত্রে নামান্যক্ররদর্শনাৎ। সাধ্যাক্ষর্রাপ্যস্তং গণয়েৎ সাধকাক্ষরাদিতি রামার্চনচন্দ্রিকাপ্পত্যাচ্চ। তন্ত্র-রাজে। তেন মন্ত্রাদ্যবর্ণন নাম্বন্দান্যক্রেণ চ। গণয়েদয়ি ষঠং বাপ্যফীমং দ্বাদশস্কু বা। রিপুর্মন্ত্রাদ্যবর্ণঃ স্থাত্তেন তস্থা-হিতং ভবেৎ। রামার্চনচন্দ্রিকারাং। একপঞ্চনববাদ্ধবাঃ স্থাতা কৌ চ ষঠদশমাশ্চ সেবকাঃ। বহ্নিক্রমনুনয়স্ত পোষকা দ্বাদশাফীচতুরস্ত ঘাতকাঃ। চতুরস্ত ঘাতকা ইতি বিফুবিষয়ং। রামার্চনচন্দ্রিকাপ্পত্রাচ্চ। শক্ত্যাদে ষঠং বর্জনীয়ং। মঠা-ক্রমন্বাদশানি বর্জনীয়ানি যত্রত ইতি বচনাৎ। তন্ত্ররাজ-স্বর্লাচ্চ। তন্ত্রান্তরে। দ্বাদশরাশীনামিয়ং সংজ্ঞা নামান্ত্রপং ফলং। লগ্রং ধনং ভ্রাত্ব-বন্ধু-পুত্র-শক্র-কলত্রকং। মরণং ধর্মকর্মারব্যয়ো দ্বাদশরাশয়ঃ। নামান্ত্রপ্রেসমেতেয়াং শুভা-

অক্ষর স্থানী রাশি গ্রহণকরিবে। এই বিষয়ে নারায়ণীতান্ত্র গিথিত নাছে যে, জনার।শি ও জন্মক্তরের অপরিজ্ঞানে নামের আদিবর্ণ ইইতে মত্রের আদিবর্ণপর্যান্ত গণনাকরিবে। তন্ত্ররাজেও রাশি বিচারের এইরূপ ব্যবহা উক্ত আছে, এইরূপ গণনাতেও ষঠ, অন্তম ও দ্বাদশ রাশিন্তিত মন্ত্র পরিতাগি করিবে। ষঠ, অন্তম কি দ্বাদশ রাশিন্তিত মন্ত্র গ্রহণ করিলে সাধকের অনিষ্ঠ হয়। রামার্চন চক্তিকায় লিখিত আছে যে, প্রথম, প্রথম, প্রথম, ও নবম রাশিন্তিত মন্ত্র গ্রহণ করিলে সেই মন্ত্র বন্ধুর তার হিত্যাধন করে, দিওীয়, ষঠ ও দশম রাশিন্তিত মন্ত্র সেবাকরিলে সিদ্ধিপ্রদ হয়, তৃতীয় একাদশ ও স্থম রাশিন্তিত মন্ত্র সাধকের পৃষ্টিবন্ধন করে এবং চতুর্থ, অন্তম ও দাশ রাশিন্তিত মন্ত্র সাধকের পৃষ্টিবন্ধন করে এবং চতুর্থ, অন্তম ও দাশ রাশিন্তিত মন্ত্রকে ঘাতক বলিয়া জানিবে। বাস্তবিক বিফ্রবিষয়েই চতুর্থ রাশিন্ত মন্ত্রকে ঘাতক রলিয়া জানিবে। বাস্তবিক বিফ্রবিষয়েই চতুর্থ রাশিন্ত মন্ত্রকে ঘাতক রলিয়া হির করিবে। আর শক্তিমন্ত্রগ্রহণ ষঠ রাশিন্তিত মন্ত্র অবশ্র বর্জন করিবে। এই বিষমে তন্ত্রান্তরের বচন মুলে উক্ত আছে। তন্ত্র, ধন, সহোদর, বন্ধু, পুত্র, শক্ত, জায়া, নিধন, ধর্ম,

শুভফলং লভেছ। বৈষ্ণবৈ ছু বন্ধুন্থানে শক্রঃ শক্রন্থানে বন্ধুরিতি পাঠঃ। লগ্নে সিদ্ধিন্তথা নিত্যং ধনে ধনসমৃদ্ধিদং। ভাতরি ভাতৃর্দ্ধিঃ স্থাদ্বাদ্ধবে বাদ্ধবপ্রিয়ঃ। পুত্রে পুত্রবির্দ্ধিঃ স্থাচ্ছত্রো শক্রবির্দ্ধনং। কলত্রে মধ্যমা প্রোক্তা মরণে মরণং ভবেৎ। ধর্ম্মে ধর্ম্মবির্দ্ধিঃ স্থাৎ সিদ্ধিদঃ কর্ম্মসংস্থিতঃ। আয়ে চ ধনসম্পত্তির্ব্যয়ে চ সঞ্চিত্র্যয়ঃ। ইতি রাশিচক্রং।

व्यथ नक्ष जिल्हा व व्या व्यक्ति एनदः। रे ज्रिशी मानूषः। के छ छ क्रिका ताक्रमः। अ अ क इ त्राहिशी मानूषः। এ मृशिनिताएनदः। अ व्यक्ति मानूषः। ও छ भूनर्वाञ्चर्पदः। क भूषा एनदः। थ श व्यक्ति ताक्रमः।

কর্ম, আয়, ও বায়, লয়াদি ঘাদশ রাশির এই ঘাদশ সংজ্ঞা জানিবে। এই সংজ্ঞাত্সারেও শুভাশুভ নির্ণীত হইরা থাকে। বিক্ষমন্ত্রদীক্ষা বিষয়ে, বন্ধু, স্থানে শক্র এবং শক্র স্থানে বন্ধু এইরূপ পাঠ নির্দিষ্ট আছে। অর্থাৎ চতুর্থ রাশিক শক্রমান এবং ষষ্ঠ রাশিকে বন্ধুমান জ্ঞান করিতে হইবে। স্থানবিশেষস্থ মন্ত্র গ্রহণের ফল এই—সম্ম রাশিগত মন্ত্র গ্রহণে মন্ত্রদিরি, দিলীর রাশিস্থ মন্ত্রগ্রহণকরিলে ধনর্দির, তৃতীর রাশিস্থ মন্ত্রে ভাতৃর্দির, চতুর্থ রাশিস্থ মন্ত্রে বন্ধুপ্রিয়তা প্রস্থানস্থ মন্ত্রে প্রার্হির, শক্রম্থানে কার্যাসিদির, জ্য়াস্থানে পত্নীলাভ, মৃত্যুম্থানে মৃত্যু, ধর্মস্থানে ধর্মস্থানে কার্যাসিদির, আয়ম্থানে ধনসম্পত্তি এবং বায়স্থানস্থ মন্ত্র গ্রহণে সঞ্চিত ধনের বায় হ ইয়া থাকে। এই সকল বচনার্থের প্রতি বিশেষ লক্ষ্যকরিরা রাশিচক্রে শুদ্ধা

অনস্তর নক্ষত্রচক্তে কিরপে মন্ত্রন্ত বিবেচনা করিতে হয়,তাহাই কথিত হইছেছে। প্রথমে উত্তর দক্ষিণে চারিটি রেখা আছিত করিয়া ইহাদি-গোরমধ্যে পূর্মণন্চিমে আছিত দশ্টি রেখাদারা সপ্রবিংশতি কোঠা বিশিষ্ট একটি চক্র আছিত করিবে, পরে এই সপ্রবিংশতি কোঠাতে আখিনী প্রভৃতি নক্ষত্র সকলের নাম লিখিয়া অকারাদি ক্ষপর্যন্ত বর্ণ বিস্তাস

नक्ति ठिक्रः।

<u>ब</u> िका	क्रिप्रजी विकास	(C) (C)	(ब्राहिनी	भूशिकादा	क्र	श्री वर्ष व्य	A SA	क दुन
ক ক	Yor	NS NS	AR AR AR	9	∕ु	1 9	10	な
्म युः स्था	क्री के सु	इस्किन्	भाग्रियः	ट्रिप्	के विशेष	(A)	64	्र के प्र
श्रद्धा	श्र्यकञ्जन	श्र्यक्सनी डेउदक्सनी	8	विव	প্ৰ	विकारिया	बन्ध्रताधा	(क) कि
M	Þ	(a)	8	AD OF	Þ	ट	क	
द्राक्रिज	्रहे के कि कि	के प्रक जिल्ला	्र र	द्रायकमु	्र स्	्र कि गु	्र त्र	अ कि में
भूला	श्र्वायां	श्र्वायां छेड्द्रायां	खिवनी	धनिष्ठा	अल्डिया अल्डिया	श्र्वाव	क ल्डास	রেবতী
15 10	I ♥	13)	F	₩ W	 5	ie Iv	W W	लक्ष
SK SK S	भारत	भीसुर	्र त्र	इं किया	द्राक्रिमः	भाग्रिक्ष	माञ्च	
•								

घ ଓ भवा त्राक्रमः। ठ शूर्ववक्क्षुणे मानूयः। इ क उँ उत यस्त्री यायुषः। य এ इस्र। (पवः। हे हे हिला त्राक्रमः। ড স্বাতী দেবঃ। ঢ ণ বিশাখা রাক্ষসঃ। ত থ দ অনুরাধা (एतः। ४ (काष्ठी त्रिक्तः। न श क भूली त्रिक्तः। ব পূর্ববাষাতা মানুষঃ। ভ উত্তরাষাতা মানুষঃ। ম শ্রবণা (प्रवः। य त धनिष्ठी त्रीक्षमः। ल শতভিষা त्रीक्षमः। व শ পূর্বভাদ্রপদা মানুমঃ। ষ স হ উত্তরভাদ্রপদা মানুষঃ। অং षाः ल क दावनी (नवः। त्रक्षीक्राय। উन्तानिकार्गाश বেখাং কুর্য্যাচ্চতুন্টয়ীং। দশরেখাঃ পশ্চিমাঃ স্থ্যঃ কর্ত্ব্যা वीदविन्दि। अशिग्रानिक्तमरेगव विलिथिडांतकाः श्रनः। व्यक्तांति क्रकातांखान् वि-ठक्त-विक्र-तिमकान्। कृशीन्तूर्व-চন্দ্রান্চ অশ্লেষান্তং থগো প্রিয়ে। দ্বিভূনেত্রনেত্রযুগ্নাংন্চেন্দু নেত্রাগ্রিযুগ্মকান্। ম্যাদিকোপি জ্যেষ্ঠান্তং দ্বিতীয়ং নব-তারকং। বহ্নিভূমিন্দু চন্দ্রাংশ্চ যুগোন্দু-নেত্রবহ্নিকান্। বেদেন (ভिদিতান্ বর্ণান্ রেবত্যন্তং গতাঃ ক্রমাৎ। তথাচ নিবন্ধে।

কবিতে হইবে। কোন্কোন্নকত্তে কি কি বৰ্ণ ও কি কি গণ ভাচা মূলে স্থাপিই লিখিত আছে। তদ্তি কোঠামধাে নক্ষত্ৰ, বৰ্ণ ও দেবাদিগণ লিখিবে, কোন্কোন্ ঘার কষ্টি করিয়া বৰ্ণ লিখিতে চইবে, ভাচার নিয়ম এই—প্রাণম ঘারে ত্ই বর্ণ, দ্বিভীর ঘারে একবর্ণ, তৃতীয়ে ভিনবর্ণ, চৃত্রে ঘারে চারিবর্ণ, পঞ্চম ঘারে একবর্ণ, বর্প্পারে একবর্ণ, সপ্রম ঘারে তৃইবর্ণ, অইমদরে একবর্ণ এবং নাব্যঘরে তৃইবর্ণ লিখিবে, এইরূপে প্রাথম পংক্তির নাবগৃহে বর্ণ অক্ষিত করিয়া দিতীয় পংক্তির নাব্যারে প্রথম হইতে নাব্যঘর পর্যান্ত ক্ষাত্ত নাব্যঘর তৃইবর্ণ তৃতীয় পংক্তির নাব্যানে প্রথম হইতে নাব্যঘর পর্যান্ত ক্ষাত্ত নাব্যান্ত তৃত্তীর পংক্তির নাম কোঠাতে প্রথম ঘার হইতে নাব্য

পূর্ব্বোত্তরত্তর কৈব ভরণ্যার্দ্রাথ রোহিণী। ইমানি মানুষাত্যাহ্বমক্ষত্রাণি মনীবিণঃ। ক্ষেষ্ঠা শতভিষা মূলা ধনিষ্ঠালেষ
কৃত্তিকাঃ। চিত্রা মঘা বিশাখাঃ স্মান্তারা রাক্ষদদেব্তাঃ।
অধিনী রেবতী পুন্যা স্বাতী হক্তা পুনর্বস্তঃ। অনুরাধা মূগশিরঃ প্রবণা দেবতারকাঃ। তথা—স্বজাতো পরমপ্রীতির্দ্মধ্যমা
ভিন্নজাতিরু। রক্ষোমানুষ্যোর্নাশো রৈরং দানবদেবয়োঃ।
জন্মসম্পদ্বিপৎক্ষেমং প্রত্যরিং সাধকো বধঃ। মিত্রং পর্মমিত্রঞ্চ জন্মাদীনি পুনঃ পুনঃ। জন্ম-ভৃতীয়-পঞ্চম-সপ্রমানি

কোষ্ঠা পর্য্যন্ত যথাক্রমে তিন, এক, এক, এক, তুই, এক, তুই, তিন ও हाति वर्ग निथिट इहेटव। পूर्त्त एखनी, পূर्ताषाण পूर्वाणा, উত্তর-ফল্লনী, উত্তরাধাঢ়া, উত্তরভাদ্র, ভরণী, আদ্র্যা ও রোহিণী এই नश्रुं नक्क माञ्यगण। (काष्ठां, मङ्ख्यां, मृला धनिष्ठां, व्यक्षयां, कृष्टिकां, চিত্রা, ম্যা, ও বিশাখা এই নয়ট নক্ষত্র রাক্ষ্যগণ। অশ্বিনী, রেবভী, পুষ্যা, चा औ, श्रु।, श्रूनर्तञ्च अञ्चाधा, मृगिता ७ अवना এই नगढि नक्त দেবগণ। স্বজাতিতে পরমপ্রীতি, ভিন্ন জাতিতে মধ্যমপ্রীতি, রাক্ষদ ও মাত্রষ বিনাশক এবং রাক্ষম ও দেবগণে শক্ততা জানিবে। মন্ত্রণহীতার জন্ম-নক্ষত্র ও মন্ত্রের আদি অক্ষর যে গৃছে খাকে, সেই গৃহগতনক্ষত্র. এই উভয় नक्ष नहेका गणना कतिरव। यि छेक छेल्य नक्ष এकगण हम, लाहाहहरन সেই মন্ত্র গ্রহণে গুভ হইবে, যাহার মান্ত্রগণ সে দেবগণ মন্ত্র গ্রহণ করিভে পারে, মার্হার মনুবাগণ দে যদি রাক্ষদগণ মন্ত্র গ্রহণ করে, ভাহাহইলে সেই নম্বাহীতার মৃত্যু হইয়া থাকে, আর যাহার দেবগণ সে রাক্ষসগণ মন্ত্র গ্রহণ করিলে মন্ত্রের সহিত শক্ততা হয়। অর্থাৎ উক্ত রূপ মন্ত্র গ্রহণে অভ্ত হয়, সূতরাং শত্র বা বিনাশক মন্ত্র গ্রহণ করিবে না। জন্ম, সম্পদ্ ক্ষেম, প্রভাবি, সাধক, ৰধ, মিত্র ও পরম্মিত্র, এইরপে জন্ম নক্তর চইতে তারস্ত করিয়া মন্ত্রকজ পর্যান্ত পুন: পুন: পুণনা করিবে। যদি মন্ত্র নক্ত बागनेक य रहें ए बना, ज्डीय, नक्ष्य किशा मक्षय रत्र, जारा रहें दि (महे यञ्ज নক্ষত্রাণি বর্জনীয়ানি। তথাচ—রসাইনবভক্রাণি যুগ্যুখাগতানি চ। ইতরাণিন ভদ্রাণি তত্তাজ্যানি মনীষিণা ইত্যাদি।
তত্ত্ব স্বনক্ষত্রাদেব নক্ষত্রং গণনীয়ং। স্বনক্ষত্রাজ্ঞানে স্বনামাদ্যক্ষরসম্বন্ধিনক্ষত্রাদেব নক্ষত্রং গণনীয়ং। প্রাদক্ষিণ্যেন গণয়েৎ
সাধকাদ্যক্ষরাৎ স্থবীঃ। প্রকারান্তরং নিবম্বে। প্রাপালাভাৎ
পটুপ্রাহ্যং রুদ্রস্থাত্তিরুক্তঃ করং। লোক-লোপ-পটুপ্রায়ঃ
খলো ঘো ভেযু ভেদিতাঃ। পক্ষৈকত্র্যক্ষিক্ষপাবনিভূজশশি
যুগ্যেন্দুপক্ষাঃ। যুগ্মক-দ্বি-যুগ্ম-নেত্তেন্দুপক্ষাগ্রিচন্দ্রকান্। ত্রয়শশিভূরেকপক্ষেন্দ্রেত্রাগ্রিবেদাঃ। বর্ণাঃ ক্রমাৎ স্বরাশ্রন্ত্রী
রেবত্যংশগতাবৃত্রে। জপ্তুর্নক্ষত্রাদথ পরিগণয়েৎ জন্মসম্পৎ ক্রমেণ স্থবিরতি বচনাৎ। তথাচ পিঙ্গলায়াং। প্রকটং
যস্ত্র নক্ষত্রং তস্ম জন্মক্ষ তো ভবেৎ। ইতি নক্ষত্রচক্রং।

প্রচণ করিবেনা, ভার যদি জন্মনকত হইতে মন্ত্রনকত বঠ, ভাইম, বিতীয়, চতুর্থ কিল্পা নবম হয়, তাহা ছইলে সেই মন্ত্র গ্রহণে শুভকণ হইবে, অত্প্রব বিবেচক ব্যক্তি জন্ম, তৃতীয়, পঞ্চম, ও সপ্তম মন্ত্র পরিত্যাগ করিয়া মন্ত্র প্রহণে করিবে। এই নকত্রতক্র পণনাম সাধকের জন্মনকত্রে হইতে পণনাকরিছে ছইবে, ইহাই উক্ত হইরাছে। বলি ভ্রমনশত মন্ত্র গৃহীভার জন্ম নকত্রের পরিজ্ঞান লা থাকে, তাহা হইলে, আপন নামের আলাক্রম সবদ্ধী নক্তর লইয়া গণনাকরিতে হইবে। অভান্ত গ্রহে মক্তর চক্তে বর্ণবিজ্ঞানের ক্রম অক্রান্তরে লিখিত হইবে। অভান্ত গ্রহে মক্তর চক্তে বর্ণবিজ্ঞানের ক্রম অক্রান্তরে লিখিত আছে, অর্থাৎ র ২, ন ৩, ও ত ৪ ইন্ড্রাছি বঙ্গেত ক্রমে লিখিত হইরাছে। বর্ণের মর্ণগত সংখ্যাইছুসারে উক্ত সঙ্গেত ক্রিখিত হইরাছে। ক্রই নক্তর চক্তের ধণনা সহজ্যে বেলিগ্রমা হইবে, এই নিমিন্ত্র হক্তরাছে। এই নক্তর চক্তের ধণনা সহজ্যে বোধগ্যমা হইবে, এই নিমিন্ত্র নক্তর চক্তের বিবর বিলেব পরিক্রাত হইবে। এই নক্তরচক্রটি মন্ত্রবিংশতি ক্রেটিয় বিভক্ত হইরাছে। এই চক্তের প্রথমি হইতে সন্ত্রিংশতি ক্রেটিয়

অথ অকথহচকেং। চতুরক্রে লিখেবর্ণান্ চতুং কোর্চ সমবিতে। চতুংকোর্চে বোড়শকোর্চ ইতি যাবং। বিশ্বসারে।
চতুরক্রং লিখেৎ কোর্চংচতুংকোর্চসমন্বিতং। পুনশ্চতুক্কং
তত্তাপি লিখেকীমান্ ক্রমেণ তু। ততঃ বোড়শকোর্চেযু, অকারাদিবর্ণান্ প্রাদিকণ্যেন্ লিখেং। তত্ত্র ক্রমঃ। ইন্দ্রমিরুদ্রনবনে ক্রযুগক দিকু ঋত্বন্ট বোড়শচতুর্দশভৌতিকেয়ু। পাতালপঞ্চ
দশবহিংহংমাশু কোর্চে বর্ণাল্লিখেল্লিপিভবান্ ক্রমশস্ত ধীমান্।

অকথহ	উঙ্গ	আখদ	উচফ
ওডব	৯ঝম	উঢ়শ	र्ड अध
अधन	ৠজভ	ই গধ	ধাছব
অঃতস	ঐঠল	অংণষ	এটর

व्यक्षिणि मिश्रविः मिश्रि नक्ष्य ও वहनाक्ष्मात्त्र य य य य य य य वर्ग. निथिত हरेय, मिरे ममछरे निथिত व्याहि।

অনস্তর অকথহ চক্রের বিধরণ প্রকাশিত হইভেছে। প্রথমে চতুরশ্র ও চতুষোণ একটি ক্ষের অভিত করিয়া ভাহা চারিকোণ্ডার বিভক্ত করিলে বোড়শ এই চারিকোণ্ডার প্রভাককে চারি চারি ভাগে বিভক্ত করিলে বোড়শ কোণ্ডাবিশিষ্ট একটি চক্র অভিত হইবে। বিশ্বদারভত্ত্বেও এই বিশ্বর্যটি লিখিত আছে। অনস্তর উক্তচক্রের ষোড়শ কোণ্ডাভে অকারাদি হ পর্যান্ত সম্দরবর্ণ শিখিবে। এই চক্রে ধর্ণ বিদ্যাসের ক্রম এই—প্রথম ঘরে অ, ভূড়ীর ঘরে আ, একাদশে ই, নবমে ই, ছিতীরে উ, চতুর্বে উ, ছাদশে ঝ, দশমে গ্লা, নামদ্যক্ষরমারভা যাবন্মন্ত্রাদিমাক্ষরং। চতুর্ভিঃ কোঠেরেকৈকমিতি কোন্ঠচতুষ্টয়ং। পুনঃ কোন্ঠগকোঠের সব্যতাে, নাম্ন
আদিতঃ। সিদ্ধঃ সাধ্যঃ স্থসিদ্ধোহরিঃ ক্রমাজ্জেয়া বিচক্ষণৈঃ। সব্যতাে দক্ষিণতঃ। কল্পদ্রুমে। পূর্বাপরায়তং কৃষা
প্রঞ্চনুত্রং প্রকল্লয়ে। তথিব দক্ষিণােদীচ্যক্রমেণ পঞ্চসূত্রকং। যথা যােড়শকোন্ঠানি সম্পদ্যস্তে তথা লিখেং।
বিশ্বসারে। দক্ষিণাবর্ত্তযােগেন কোন্ঠে বর্ণান্ লিখেং স্থবীঃ।
যেনৈব লিখনং কুর্যাাত্রেনৈব গণনং স্মৃতং। সিদ্ধঃ সিধ্যতি

यर्ष के ब्रह्मि है (बाफ्राम ज, हर्क्सम जै, शक्या छ. मश्राम छे, शक्षमाम ब्र এবং ত্রেয়াদশ ঘরে অঃ, এইরূপে ষোড়শ ঘরে অকারাদি ষে।ড়শ স্বরবর্ণ लिथिया भूनर्यात ये मकल घर उन्जे नियम ककाता मि इ भगान्य वर्ग निथि ए रहेरव। यावर वर्ग मकल भिष्ठ ना रुग्न छावर छेक निग्रस्य वर्ग विद्याम করিবে। এইরপে বর্ণ বিস্থাস করিলে প্রথম কোষ্ঠাতে অ, ক, থ এবং হ এই চারিবর্ণ পিতিত হইবে, এই নিমিত্ত ইহার ''অ ক থ হ চক্র'' এই নাম क्रेग्नाटक्। विजीय चरत छ, ७, १, जुडीरम आ, च এবং म এই जिन वर्ग व्हेर्त। এই एक्तित निषय महस्क माधात्रानंत (वाधगमा व्हेर्क भारत, এहे गागाम हेहात একটি প্রতিক্ষতি অভিত করা হইল, দৃষ্টি করিলেই কোন্ কোন্ কোষ্ঠায় কোন্ কোন্ বর্ণ বিক্তস্ত হইল, ভাছা বোধ গম্য হইবে। এই প্রকারে চক্রান্ধণপূর্বক তন্মধ্যে বর্ণ বিক্যাসকরিয়। মন্ত্রগৃহীতার নামের णामि जकत रहेर्ड जात्रञ्ज कतिय। मस्त्रत्र जामि जकत পर्गाञ्ज मिक, नांधा, স্পিদ ও অরি, এইরপে গণনা করিবে। প্রথমতঃ চারিকোঠ জানে পিদাদি গণনা করিয়া পরে ঐ চারি কোষ্ঠার এক এক কোষ্ঠার অন্তর্গত যে চারি-কোঠা আছে, তাহাতে ও এরপ গণনা করিতে হইবে। কল্প্রফমে লিখিত चाष्ट्र (य, পূর্ম পশ্চিমে পাঁচটি রেথা অঞ্চিত করিয়া ভাহার উপরি উত্তর मिक्तितं चात्र शांठि (त्रथा शांठकतित्व। এই त्रत्थ शांठ शांठि (त्रथा चिक्रिक • कतिराहे (याज्ञ काष्ट्रां विक अकि ठिक रहेर्त, विषमात्त्र विशिष्ठ अभाव

কালেন সাধ্যস্ত জপহোষতঃ। স্থানিকো গ্রহণাদের রিপুর্য্ব লং
নিক্ততি। তত্রান্তরে। সিদ্ধাণি বাদ্ধাঃ প্রোক্তাঃ দাঁদ্ধান্ত
সেবকাঃ স্মৃতাঃ। স্থানিকাঃ পোষকা জ্যেয়ঃ শত্রবো ঘাতকাঃ
স্মৃতাঃ। জপেন বৃদ্ধুঃ সিদ্ধঃ স্থাৎ সেবকোহধিকসেবয়া।
পুঞাতি পোষকোহভীষ্টং ঘাতকো নাশয়েদ্প্রুবং। সিদ্ধঃ
সিদ্ধো যথোক্তেন দিগুণাৎ সিদ্ধাধ্যকঃ। সিদ্ধঃ স্থাসিদ্ধো বিগুণকঃ
সাধ্যঃ সাধ্যো নিরর্থকঃ। তৎস্থাসিদ্ধো দিগুণজপাৎ সাধ্যারির্হন্তি গোত্রজান্। স্থাসিদ্ধানির্হন্তি পাত্রজান্ বিগুণকারির স্থানারির্হন্তি গোত্রজান্। স্থাসিদ্ধানির্হন্তি পোত্রজান্। স্থাসিদ্ধানির স্থানারির্হন্তি গোত্রজান্। স্থাসিদ্ধানির স্থানারির্হন্তি গোত্রজান্। স্থাসিদ্ধানির স্থানারিঃ স্থানারির স্থানারির প্রামিকাং। তৎস্থাসিদ্ধানির স্থানার স্

জানা যায় যে, দক্ষিণাবর্তে উক্ত চক্রে বর্ণবিস্থাদ ও গণনা করিতে হইবে।
এইক্ষণ কোন্ মন্ত্র গ্রহণ করিলে কিরপে কল হইবে, তাহাই কথিত হইতেছে।
দিল্লমন্ত্র গ্রহণকরিলে দেই মন্ত্র শ্বরং দিল্ল হুরুগা থাকে, দাধা মন্ত্র গ্রহণ করিয়া জপ হোমাদি করিলে মন্ত্রদিল্লি হয়। যদি কেই স্থানিল্ল মন্ত্রগ্রহণ করে,
তাহা ইইলে মন্ত্র গ্রহণ মাত্র দিল্লিলাভ করিতে পাবে এবং অবিমন্ত্র
গ্রহণকরিলে সমূলে বংশ বিনাশ পায়। অল্লভন্তে লিথিও আছে যে, দিল্ল মন্ত্র
বাহ্বব, সাধ্য মন্ত্র দেবক, স্থানিল্ল মন্ত্র পোষক এবং অরি মন্ত্র বাহ্বক। পরস্ত্র
বন্ধন্ত্র জপদারা, দেবকমন্ত্র অধিক দেব্য দিল্ল হয়, পোষকমন্ত্র সাধকের
প্রীলাধন করে এবং ঘাতক মন্ত্র অভীষ্টবিনাশ করে। আর দিল্লমন্ত্র ভইলে
বথোক্ত জপদারা দিল্লিহ্র, দিল্লায়িমন্ত্র জপ করিলে বন্ধুবিনাশ হয়। সাধ্যমন্ত্র বিশ্বনত্ত্র ইয়া থাকে, আর দিল্লারিমন্ত্র জপ করিলে বন্ধুবিনাশ হয়। সাধ্যমন্তর বিশ্বনত্ত্র ইয়া থাকে, আর দিল্লারিমন্ত্র জপ করিলে বন্ধুবিনাশ হয়। সাধ্যমন্ত্র দিল্লমন্ত্র ইবল বিশ্বনা হয় সাধ্যমন্ত্র করিবল করে বিশ্বনা হয় মন্ত্র করিবল করে বিশ্বনা হয় মন্ত্র করিবল করে বাংগার জন্ধ কল

ত্যাগপ্রমাণমাই তত্ত্বে। গবাং ক্ষীরে দ্রোণমিতে জপেমান্ত্রং
শতাইকং। শীঘা ক্ষীরং জপেত্তবং সমুচ্চার্য্য ত্যজেত্তথা।
অনেনৈব বিধানেন বৈরিমন্ত্রাদ্বিমূচ্যতে। অরিমন্ত্রং বিদিছা
তুন পুনঃ প্রজপেচ্চ তং। সংত্যজ্য তং দেবতায়াস্তস্থা
অন্তং ভজেমান্ত্রং। দ্রোণপরিমাণং যথা তন্ত্রাস্তরে। পলবয়স্ত প্রস্তিঃ কুড়বং তচ্চতুইটয়ং। চতুর্ভিঃ কুড়বৈঃ প্রস্থং প্রস্থাশতবার আঢ়কং। চতুর্ভিরাঢ়কৈর্দ্রোণঃ কথিতো মানবেদিভিঃ।
প্রকারাস্তরমাই রুদ্র্যামলে। বটপত্তে লিখিন্বারিমন্ত্রং প্রোতিদি নিক্ষিপেং। এবং মন্ত্রবিমূক্তিঃ স্থাদিত্যাই ভগনান্ শিবঃ। ইতি অকথহচক্রেং।

कति एक मिकि इरेगा थाएक, माधाति यदा माध्यकत यः म विनाम करत्। ञ्जिकि मञ्ज व्यक्तिष्ठाल, ञ्जिक माधा मञ्ज विश्वन करने এवः ञ्जिक ञ्जिक मञ्ज श्रं कि कि विषय विषय । स्विति विषय निर्माण कि विषय विषय कि विषय ध्यर चित्रिक यञ्ज भूख, चित्रिमांशा यञ्ज कछा, चित्रिस्तिक यञ्ज भूको । जित्र অরিমন্ত্র সাধককে বিনাশ করিয়া থাকে। এই চক্রের একটি প্রতিক্বজি थानिं इहेन, मृष्टि क्रिवान अहेठाकत मर्पार्थ महत्व (वाधनमा इहेर्व। कर्नाठ अतिमञ्ज शर्ग कत्रिय ना, यमि कान नाथक अञ्चान रमे अतिमञ्ज धर्ग करत्र, ভारा रहेरण मिर मञ्ज भित्रकाश कतिरव। मञ्ज भित्रकारित्र ' প্রণালী এই—এক জোণপরিমিত গব্য তথ্যে একশত আটবার মন্ত্র অপ कतिया (मरे एक भानकतिर्व, भूनर्कात अक्नेष्ठ ष्रहेवात्र मञ्जूष्म कतिया न्हे (मर्जात पञ्च मञ्ज अर्गक दिर्ग। पञ्चाञ्च जरत्र निथिक (ज्ञानमसार्थ) बाना यात्र (य, प्रहेशन वर्धाए ৮ ভোলায় এক প্রস্থৃতি, ৪ প্রস্তৃতিতে এক कुष्य, ३ कुष्ट्य धक श्रञ्ज, ३ श्राष्ट्र धक चाहि, ३ चाहिष्ठ धक द्राव। क्षक्षांगरम ध्वकातास्वतं रेवतिम शतिष्ठारिशतं विधि प्रेक्ष वाहि, यथा--बर्धेभेटक बड़ निर्वित्रों जाहा ट्याटिंग क्लिंग निर्क्रिय क्लिंग्रिय । यहार बहारमय अरेक्रन अविगत निविज्ञारमक विधि विमिन्नार्हन।

व्यक्ष्य ठकः दत्रथाषयः शूर्वशद्यं क्र्याख्यादा यांगाकूरवत्रराज्यां । यर्ष्ण-त्रराकाश्विभिज-कर्मन जिसाक

	41	ড খ	D T T T
	खे ख क		ভ ল
A Company of the Comp	S T S S S S S S S S S S S S S S S S S S	ज ह	B B B B B B B B B B B B B B B B B B B

বায়ুহুতাশনেন। অকারাদিককারান্তান্ তথা लिएथखङः। श श्र वर्षद्रशः ৯ ह ङक्ति क्रीवः

"अनुद्ध व क प्रमाद्ध व विवयन कथिल हरे एक । खथरम भूक्ष निष्य इर्रों दियां व्यक्ति कविया जारामिश्य देशिय केव्यमित्य वाय इर्रों **८त्रथा चक्किक क**तिहय। भटत केमानामि हकूकाण चात्र हात्रिक दत्रथा चात्रा একটি রাশিচক্র অন্ধিত করিবে। এই চক্রে মেবাদি বুষ পর্যান্ত পঞ্চিপাবর্তে व्यकात्रामि बाम्भ वत्रवर्ग मिथिया। साधा > ३ वरे ठात्रिवर्ग भतिकााभ कविटि रहेर्द। भारत अहेत्रार्भ ककात्रामि अक अकृष्टि वर्ग अक अक महम निधित, यावर भक्न वर्ग त्या ना हब, छावर भूनः भूनः এইक्राल वर्गविष्णाम প্রচক্ষতে। একৈকজনতো লেখ্যান্ মেষাদিষু রুষান্তকান্।
গণয়েৎ ক্রমশো ভদ্রে নামাদিবর্ণপূর্বকান্। মেষাদিতোপি
মীনান্তং গণয়েৎ ক্রমশং স্থাই। জপ্তঃ স্বনামতো মন্ত্রী যাবমন্ত্রাদিমাক্ষরং। রত্নাবল্যাং। দ্বাদশাখ্যে রাশিচক্রে কৃটষণ্ডবিবর্জ্জিতান্। আদিহান্তান্ লিথেছর্ণান্ পুরতো যাবদীশ্বরং।
সিদ্ধসাধ্যস্থসিদ্ধারীন্ পুনঃ সিদ্ধাদয়ং পুনঃ। নবৈকপঞ্চমে
সিদ্ধঃ সাধ্যঃ ষড়দশযুম্মকে। স্থসিদ্ধন্ত্রিসপ্তকে রুদ্রে বেদার্ফদ্বাদশে রিপুঃ। এতত্তে কথিতং দেবি অকডমাদিকমূত্রমং
ইদস্ত গোপালবিষয়কমেব। গোপালেহকডমঃ শ্বৃত ইতি
বচনাৎ। শিববিষয়েপি। বৈষ্ণবং রাশিসংশুদ্ধং শৈবঞ্চাকডমং
শ্বৃতং। ইতি যামলীয়াৎ। তথাচ বারাহীতন্ত্রে। তারাশুদ্ধিক্রিফ্রবানাং কোষ্ঠশুদ্ধিঃ শিবস্ত চ। রাশিশুদ্ধিস্তৈপুরে
চ গোপালেহকডমঃ শ্বৃতঃ॥ ইতি অকডম চক্রং।

করিতে হইবে। এইরপে বর্ণবিস্থাস করিলে প্রথম অ ক ড ম এই চারিবর্ণ বিস্তুস্থ হইবে, এই নিমিন্ত এই চক্রের অ ক ড ম চক্র নাম হইয়াছে। এই চক্রেব একটি প্রতিক্ষতি অন্ধিত হইল, দৃষ্টি করিলেই কোন্ কোন্ ঘরে কোন্কোন্বর্গ বিস্তুস্থ ইইয়াছে, তাহা জানিতে পারিবে। এই চক্রেও মন্ত্রগৃহীতাব নামেব আদি অক্ষব হইতে মন্ত্রের আদি অক্ষরপর্যন্ত দক্ষিণাবর্ত্তে সিন্ধ, সাধ্য, সুসিদ্ধ ও অরি এইরপে গণনা করিতে হইবে। এইরূপ গণনার যদি মন্ত্র সিন্ধ, সাধ্য অথবা সুসিদ্ধ হয়, তাহা হইলে সেই মন্ত্র গ্রহণ করিলে সাধ্যক্ষির গুভক্ত হইয়া থাকে, অরিমন্ত্রাহণকরিলে অগুভ্গটনা ঘটে। অতএব অরি মন্ত্রগ্রহণ করিবে না। সিদ্ধাদি মন্ত্রগ্রহণের ফল অক্থই চক্রে অথ ঋণীধনীচক্রং। তদ্যথা। কোষ্ঠান্তেকাদশান্তেব বেদেন
প্রিতানি চ। অকারাদি হকারান্তান্ লিখেৎ কোষ্টের্
ভত্ত্বিং। প্রথমং পঞ্চকোষ্টের্ হ্রম্বদীর্ঘক্রমেণ তু। দ্বয়ং দ্বরং
লিখেত্ত্র বিচারে থলু সাধকঃ। শেষেষেকৈকশো বর্ণান্
ক্রমশস্ত লিখেং স্থাঃ। তথা দ্বো দ্বো স্বরো পঞ্চয়্র কোষ্ঠের্
শেষান্ স্বরান্ যড়েকমেকং। কাদীন্ হশেষান্ বিলিখেত্ততোহর্ণান্ একৈকমেকাদশকোষ্ঠকেয়্। ষট্কালকালবিয়দ্যি
সমুদ্রবেদখাকাশশূলদহনাঃ খলু সাধ্যবর্ণাঃ। যুগ্ম-দ্বি-পঞ্চবিয়দন্বর-যুক্শশান্ধ-ব্যোমান্ধি-বেদ-শশিনঃ খলু সাধকার্ণাঃ।
নামাজ্বলাদকঠবাদ্গজভুক্তশেষং ভাষোভ্যোরধিকশেষমূণং
ধনং স্থাং। অস্থার্থঃ। সাধ্যবর্ণান্ স্বরব্যঞ্জনভেদেন পৃথক্-

অনস্তর খণীধনী চক্র বিবৃত্ত হইতেছে। প্রথমে একাদশ কোঠা অন্ধিত করত তাহাদিগকে চারি কোঠা দারা প্রণ করিয়া একটি চক্র অন্ধিত করিবে। এই চক্রে অকারাদি বোড়ণ স্বর ও ককারাদি বর্ণ সকল লিখিতে হইবে। প্রথম পঞ্চ কোঠার একটি হুল ও একটি দীর্ঘ অর্থাৎ প্র পঞ্চ কোঠা পর্যান্ত প্রাচ ঘরে হুই হুইটি করিয়া বর্ণ বিস্তাস করিবে। পরে একারাদি রঞ্জন বর্ণসকল এক এক ঘরে এক একটি লিখিতে হুইবে। পরে এই একাদশ কোঠার উপরি ভাগে ৬,৬,৬,০,৩,৪,৪,০,০,০,০, এই একাদশটি অন্ধ লিখিবে। এই সকল আন্ধের নাম সাধ্যান্ত। অর্থাৎ যথম মন্তের অক্ষান্ত করিরা গণনা করিবে, তখন এইসকল আন্ধ প্রহণকরিবে। আর চক্রের একাদশটি আন্ধ লিখিবে। ইহাদিগের নাম সাধ্যান্ত অর্থাৎ যথম সাম্বের অক্ষান্ত করিরা লিয়ভাগে ২, ২, ৫, ০, ০, ২, ১, ০, ৪, ৪, ১, এই একাদশটি আন্ধ লিখিবে। ইহাদিগের নাম সাধ্যান্ত অর্থাৎ যথম সাধ্যকর নামান্ত করিবে এই কণ উক্র চক্রেরারা কির্পে গণনা করিতে হুর, তাহাই ক্ষিত হুইভেছে। মন্তের স্বর ও ব্যক্রন বর্ণ স্কল পূর্ণক করিয়া রাধিবে। এই ক্ষিত হুইভেছে। মন্তের স্বর ও ব্যক্তন বর্ণ সকল পূর্ণক করিয়া রাধিবে। এই ক্ষিত হুইভেছে। মন্তের স্বর ও ব্যক্তন বর্ণ সকল পূর্ণক করিয়া রাধিবে।

माशाकाः।

8	.	ب	•	•	8	8	0	0	0	9
অআ	रेञ	উম্ভ	ধাশ্বা	28	. A	19	9	4	व्यर	অঃ
ক	থ	গ	ঘ	B	5	S	জ	ঝ	ট্রের	ট
र्ठ	ভ	5	ศ	ত	থ	प्र	ध	न	প	\$
ব	ভ	ম	য	র	ল			ষ	.স	হ
2	2	Ø	0	0	ર	>	0	8	8	>

সাধকান্ধাঃ।

क्ञान् यहेकालामा देक्क निञान् क्षा जथा माधकनामाकतान् यत्र वा अनक्ष निञान् क्षा य्यारेमा तर्क निञान् क्षा असे मध्या जिल्ला जिल्लाः माधामाधक द्यार्थम क्षिकः जम्भः यम् । नः जक्षनः। अतः क्षाषा मञ्जः ममार। मञ्जालम् । चविज्ञ जमा मञ्जः स्वराम जविज्ञ । मद्धा

আছে, সেই সেই কোঠার উপরি তাপে বে সকল আছ বিধিত আছে,
প্রত্যেক অকরের সেই সকল আছ লইরা একত্র বোগ করিবে এবং এই
সক্ষক আট্রিরা তাগ করিলে বাহা অবশিষ্ট থাকে, তাহা এক ছানে
রাশ্বিরে, পরে এইরপে মন্ত গৃহীতার সামের খন ও ব্যঞ্জন বর্ণসকল পুরুক
পূথক করিয়া ঐ সকল বর্ণের কোঠার নিয়বতী অভসকল প্রহণ করিবে
এবং এই সকল আছ একবোগ করিবা যুক্তাছকে ৮ বিশ্বা তাল করিলে বাহা
স্থানিত থাকিবে, এই অবশিষ্টাক ও পূর্বজ্ঞানিত অহু এই উভন্নত লইরা

বিবেচনা করিয়া দেখিবে। বে অছ অধিক, তাহা ঋণী এবং বে অছ ন্ান, ভাহা ধনী। বদি মন্ত্ৰ ঋণী অৰ্থাৎ মন্ত্ৰান্ধ অধিক হয়, ভাহা হইলে সেই মন্ত্ৰ গ্ৰহণ করিতে পারে আর বে মন্ত্ৰ ধনী অর্থাৎ যে মন্ত্ৰান্ধ ন্যান, সেই মন্ত্ৰ গ্ৰহণ করিবেনা। আর বদি মন্ত্ৰান্ধ ও নামান্ধ সমান হয়, তাহাহইলেও মন্ত্ৰ গ্ৰহণ করিতে পারে। উভয়ান্ধ শৃক্ত হইলে সেই মন্ত্ৰ গ্ৰহণ করিলে মন্ত্ৰ গৃহীতার মৃত্যু হয়। অভএব ভাহা পরিভাগে করিবে। এই বিষ্ত্রে অক্তান্ত ভাল্তের বচনও মৃলে উদ্ধৃত আছে। কলেবামলে স্থানিখিত আছে বে, সাধান্ধ ও নাধকান্ধ গ্রহণ করিয়া ভাহাকে নরনিয়া ওপ করিবে এবং ওনফলকে দিলা ভাগ করিয়া অবলিটান্ধে ঝণী ধনী রিবেচনা পৃর্বাক মন্ত্রন্ত্রণ করিবে। ভারাবিধ লিখিত আছে বে, গণীমন্ত্র ওভফল প্রান্ধ এবং ধনী মন্ত্র অভভলারক। আর বধন সাধান্ধ ও সাধকান্ধ ভূল্য হয়, তখন সেই মন্ত্র গ্রহণ করিবে। ভালা বধন সাধান্ধ ও সাধকান্ধ ভূল্য হয়, তখন সেই মন্ত্র গ্রহণ করিবে। ভালা বার বে, উজর অন্ধৃত্তে দ্বিরা ভালা করিলে খণি উভলের অবশিষ্ট শৃক্ত হয়, ভালা হইলে সেই সন্ত্র গ্রহণে

थानी शुक्रमतार्था अभी छ। जूनाः यना छ मकनः कथिएा सुनीरेनः। जग्रा न्यूचा स्वायाद्यां धरन ह विकलः ভবেर। भारत कू व्याखिमार्द्धन मर्विमिक्किन काग्रर्छ। थकात्राखतः। नामामाक्यत्रमात्र्षा यावश्राखामिमाक्यतः। जिथा কুত্বা স্বরৈর্ভিন্নং তদন্যদ্বিপরীতকং। অস্থার্থঃ। সাধকনামাদ্য-ক্ষরতো গণনয়া যাবন্মন্ত্রাদ্যক্ষরং তৎসংখ্যং ত্রিধা কুত্বা সপ্ত-ভিহ্ন ত্বা অধিকং ঋণং শেষং ধনং স্থাৎ। অন্তদিতি মন্ত্ৰাদ্য-ক্ষরমারভ্য যাবৎ সাধকনামাদ্যক্ষরং ভবেৎ তাবৎ সংখ্যং मश्रुकाः कृषा जिर्ভिर्दार्। जग्रुक्त शिक्रनायर् । माधानाय-দ্বিগুণিতং সাধকেন সমশ্বিতং। অফাভিশ্চ হরেচ্ছেষং তদগ্য-দ্বিপরীতকং। অস্থার্থঃ। সাধ্যনামস্বরব্যঞ্জনভেদেন কুত্য সাধকনামাক্ষরেণ স্বরব্যঞ্জনভেদেন সংযোজ্য অফাভি-হ্ন স্থা খাণং ধনং জ্ঞোয়ং। অম্যদিতি সাধকনামাক্ষরান্ স্বরব্যঞ্জন-ভেদেন দ্বিগুণীকৃত্য সাধ্যিক্ষরেণ স্বরব্যঞ্জনভেদেন সংযোজ্য नाधरणत मृत्रा रहेशा थारक এवः धनीमञ्ज श्रहण रकान कलहे हम ना, श्री मञ्ज গ্রহণ করিলে তংকণাৎ সর্বাদিদ্ধি হইয়া থাকে। আতা গুড়ান্তে লিখিড व्याद्य (य, माध्यक्ष नामामाक्रव हहेटल महामाक्षत्र भर्यास भना कतित्व यक , সংখ্যা হইবে, তাহাকে তিন গুণ করিয়া ৭ দিয়া ভাগ করিয়া অবশিষ্টাস্ক একস্থানে রাখিবে, পরে মন্ত্রাদ্যক্ষর্ইতে সাধকের নামাদ্যক্ষর পর্যান্ত গণনা कत्रित्व यञ मःथा। इहेर्य, जाहारक मश्रक्षणिङ कत्रिया ७ विया जान कत्रित এবং राहा बर्गाङ थाकित्व मिहे बाह्र छ भूसी छानित बाह्र महेगा भूसीयर बागी धनौ विद्यहना कदित्य। शिक्रमाण्ड निथिण माहि एए, महिन यहा कल माधक नारमंत्र खत वाक्षन वर्त्त्र णक मकल वागकतिता चाहे नित्रा काश कतिया अक्षारन त्राथिय, भरत केत्रभ माथकनारमत वर्गाक मकत विक् भिष्ठ कित्रा धरे छण करण छेक शकात्र मजदर्गाक द्यांग कतित्व अंदर द्यांग

অক্টাভিছ দ্বা অধিকং ঋণং শেষং ধনং জ্বোং। নামগ্রহণ-প্রকারমাহ সনৎকুমারীয়ে॥ পিছুমাছকুতং নাম ত্যক্ত্বা শর্মাদিদেবকান্। শ্রীবর্ণঞ্চ ততো হিদ্বা চক্রেয়ু যোজয়েৎ ক্রমাৎ। নামগ্রহণপ্রকারমাহ পিঙ্গলায়াং। প্রসিদ্ধং যন্তবৈদ্ধাম কিশ্বাস্থ জন্মনাম চ। যতীনাং পুষ্পপাতেন গুরুণা যথ কৃতং ভবেৎ। তন্ত্রান্তরে। লোকপ্রদিদ্ধমথবা মাতাপিত্রা তথা কৃতং। ক্রদ্রঘামলে স্থপ্তো—জাগর্তি যেনাসোঁ দূরন্থঃ প্রতিভাষতে। বদন্ত্যগ্রমনকোপি তন্ধাম গ্রাহ্থমেব চ॥

দেবতাভেদে চক্রবিচারস্থাবশুকত্বমাহ বারাহীতন্ত্রে জাম-লাদৌ চ। তারাশুদ্ধিবৈষ্ণবানাং কোঠগুদ্ধিঃ শিবস্থ চ। রাশিশুদ্ধিস্ত্রৈপুরে চ গোপালেহকডমঃ স্মৃতঃ। অকডমো রাম-

ফলকে ৮ দিয়া ভাগ করিলে যাহা অবশিষ্ট থাকিবে, সেই অন্ধ ও পূর্ব স্থাপিত অন্ধ লইয়া পূর্ববিৎ ঋণী ধনী বিচার পূর্বক মন্ত্র গ্রহণকরিবে। সনং-কুমার তন্ত্রে বে নামগ্রহণপ্রণালী লিখিত আছে, তাহা এই—পিতা বা মাতা বে নাম নির্দেশ করিয়াছেন, সেই নামের দেবশর্মা প্রভৃতি উপাধি ও শ্রী পরিত্যাগ করিয়া অন্তান্ত বর্ণদকল গ্রহণকরিবে। পিললাভক্তে লিখিত আছে বে, যাহার বে প্রসিদ্ধ নাম ভাহা লইয়াই ঋণী ধনী বিচার করিবে। ক্রের্যামলপ্রমাণে জানা যায় যে, যে নামে সম্বোধন করিলে নিজিত ব্যক্তি আগ্রত হয় এবং দ্র হইতে প্রভৃত্তর করে, সেই নামে দীক্ষা বিধির লিখিত সমস্ত কার্য্য করিবে। ভন্তান্তরে লিখিত আছে যে, দীক্ষাকালে গুল্পদেব নামকরণ করিয়া লইতে পারেন।

धरेक्न क्यान क्यान क्यान क्यान महिला महिला क्यान क्या

চন্দ্রে গণেশে হরচক্রকম্। কোষ্ঠচক্রং বরাহস্ত মহাক্ষ্যাঃ
কুলাকুলং। নামাদিচক্রং সর্বেষাং ভূতচক্রং তথৈব চ।
কৈপুরং তারকে চক্রে শুদ্ধং মন্ত্রং জপেদ্বুধঃ। তথা—বৈষ্ণবং
রাশিসংশুদ্ধং শৈবঞ্চাকডমং স্মৃতং। কালিকায়াশ্চ তারায়াভারাচক্রঃ শুভাবহঃ। চণ্ডিকায়াস্তারকোষ্ঠে গোপালেহকডমঃ
স্মৃতঃ। হরচক্রে সর্ববমন্ত্রং ধনাধিক্যে ন চাপ্রারেৎ। ঋণাধিক্যে শুভং বিদ্যাদ্ধনাধিক্যে চ নোবিধিঃ। দোষান্
সংশোধ্য গৃহ্লীয়ামধ্যদেশোদ্ভবস্ত চ। ঋণী মন্ত্রঃ শুভফলো
ধনী মন্ত্রোহশুভপ্রদঃ। ভূল্যং যদা শুভফলং কথিতো মুনিসত্তমৈঃ। অত্যত্রাপি—শৃত্যে মৃত্যুমবাপ্রোতি ধনে চ বিফলো
ভবেৎ। ঋণে চ প্রাপ্তিমাত্রেণ সর্ববিদ্ধিন্ত জায়তে॥ ইতি
ঋণীধনী চক্রম্॥

পূর্বক মন্ত্র গুদ্ধি করিয়া দীক্ষিত হইবে। আর যে যে চক্রে নামাক্ষর লইয়া বিচার করিতে হয়, সকল মন্ত্রেই সেই সকল চক্রবিচারের আবশুকতা আছে। কালী ও তারা মন্ত্র গ্রহণে নক্ষত্রচক্রে, চণ্ডিকামন্ত্রে রাশিচক্রে ও কোর্চ চক্রে মন্ত্রগুদ্ধি হইলে সেই মন্ত্র গ্রহণ করিতে পারে। বাস্তবিক সকল দেবতার মন্ত্র গ্রহণেই ঋণীধনীচক্রে অবশু মন্ত্রগুদ্ধি শেথিবে। এই চক্র সহজে বোধগমা হইতে পারে, এই অভিপ্রান্ধে একটি প্রতিকৃতি প্রদর্শিত হইল, ইহার প্রতি দৃষ্টিপাত করিলেই ঋণীধনী চক্রের বিষয় অনারাসে ব্রিতে পারিবেন।

पृष्ठी । मदनकत दर्गान नाथरकत नाम ''कौरतापिवहाती' 'हेनि "ह्ली" এই
मह्याह्न क्रिटिंड शारत्न किना ? এই विठात क्रिटंड हेटेरव । এইक्रन नाथरकत
नाय्मत चत्र छ वाञ्चनवर्ग नकल शृथक क्रित्रा ताथिरल क—क—अ—अ—
प—क्रिक्ट ह—क्या—त—अ— এইत्रभ हेटेरव । এই नकल वर्षत्र ठळक्रिंड नाथकाह, क=२, व=४, जे=२, त्र=०, छ ०, प=>, च=२, व=२,
दे=२, ह=>, क्या=२, त=०, जे=२। এই नकल जह এक र्यांग क्रिंटल

অধ দীকাপ্রকরণং। গুরুদ্বীকাপূর্ব্বদিনে স্থানিগার্মন্তিমন্তরেও। দর্ভনয়াং পরিক্ষতা শিষ্যং তত্র নিবেশরেও। স্বাপমন্ত্রেণ মন্ত্রজ্ঞঃ শিশোঃ শিকাং প্রবন্ধরেও। তত্মন্তং স্বাপদময়ে
পঠেষারত্রয়ং শিশুঃ। শ্রীগুরোঃ পাছকাং ধ্যাত্মা উপবাদী জিতেন্দ্রিয়ঃ। তারো হিলিদ্বয়ং শূলপাণয়ে দ্বিঠ সরিতঃ।
স্বপমানস্থ মন্ত্রোহয়ং শস্তুনা পরিকীর্তিতঃ। মন্ত্রান্তরং। নমো
জয় ত্রিনেত্রায় পিঙ্গলায় মহাত্মনে। রামায় বিশ্বরূপায়
স্বপ্রাধিপতয়ে নমঃ। স্বপ্নে কথয় মে তথাং দর্বকার্য্যেস্বশেষতঃ। ক্রিয়াসিদ্ধিং বিধাস্থানি ত্বওসাদামহেশর। ইতি
মন্ত্রেণ সচ্ছিষ্যো দেবং প্রার্থ্য স্বপেচ্চ বা। স্বপ্নে শুভাশুভং দৃষ্টং
প্চেছৎ প্রাতঃ শিশুং গুরুঃ। কস্থাং ছত্রং রথং দীপং প্রাসাদং

২০ হয়। এই কৃড়িকে ৮ দিয়া ভাগ করিলে ৪ অবশিষ্ট থাকে। এইরপে 'ভ্র্না" এই মন্ত্রের শ্বর ও বাঞ্জনবর্ণ পৃথক করিলে দ — উ—র—গ—আ হইবে এবং এই সকল বর্ণের চক্রন্থিত সাধ্যাক্ত দ — ৪, উ — ৬, র — ত, গ — ৬, আ — ৬। এই সকল অহু যোগ করিলে ২৫ হয়। এই ২৫কে ৮ দিয়া ভাগ করিলে ২ অবশিষ্ট থাকে। এইকণ দেখা ষাইতেছে যে, সাধকার্ক ২ এবং মন্ত্রাক ১, ক্তরাং মন্ত্রাক্ত সাধকাকাপেকা ন্যুন হইতেছে অভএব ইহা ধনী মন্ত্র হইল, অভএব ক্ষীরোদ বিহারী ভ্র্ণা এই মন্ত্রে দ্বীক্ষিত হইতে পারে না, বে হেতু ধনী মন্ত্র গ্রহণ করিলে অভত ফল হইরা থাকে।

এইক্ষণ দীক্ষাপ্রকরণ বিরুত হইতেছে। অর্থাৎ দীক্ষার কর্ত্তবা ও বিহিত তিথাদি কথিত হইবে। দীক্ষার পূর্বাদিনে গুরু শিষ্যকে সংখাধন পূর্বাক পবিত্র কুশাদিরিভিত শয্যোপরি শর্ম করাইয়া নিজামত্রে শিষ্যের শিশা বন্ধনকরিবেন এবং শিষ্যও শর্মকালে ঐ মন্ত্র ভিনবার পাঠ করিরা উপবাসী ও ক্ষিতেজির হইয়া শ্রীশুক্রর চরণ চিন্তাকরতঃ শর্ম করিবে। ''ওঁ মিলিমিলি শ্লপাণ্যে স্বাহা' ইহাই নিজামন্ত্র। স্বরং মহাদেব এই নিজা- কমলং নদীম। কুঞ্জরং র্ষভং মাল্যং সমুদ্রং ফণিনং জ্রেমম্। পর্বতং তুরগং মেধ্য মামমাংসং স্থরাসবম্। এবমাদীনি সর্বাণি দৃষ্ট্ব। সিদ্ধিমবাপ্রুয়াৎ ॥ ইতি মন্ত্রসিদ্ধিজ্ঞাপনার্থং শিষ্যাভিষন্ত্রণম্॥

অথ দীক্ষাকালঃ। মন্ত্রারম্ভস্ত চৈত্রে স্থাৎ সমস্তপুরুষার্থদঃ।
বৈশাথে রত্নলাভঃ স্থাইজ্যপ্তে চ মরণং ভবেৎ। আযাঢ়ে
বন্ধুনাশঃ স্থাৎ পূর্ণায়ুঃ প্রাবণে ভবেৎ। প্রজানাশো ভবেস্তাদ্রে আখিনে রত্মক্ষয়ঃ। কার্ত্তিকে মন্ত্রসিদ্ধিঃ স্থামার্গশীর্ষে
তথা ভবেৎ। পৌষে তু শত্রুপীড়াস্থান্মাঘে মেধাবিবর্দ্ধনম্।

মন্ত্র কহিয়াছেন। অস্ত্র প্রকার নিজামন্ত্র যথা—"ওঁ নমো জয় ত্রিনেত্রার পিঙ্গলার মহায়নে। বামায় বিশ্বরূপায় অপাধিপত্রে নমঃ। অপে কথর মে তথাং সর্বাকার্য্যে শেষতঃ। ক্রিয়াসিদ্ধিং বিধাস্তামি ত্রংপ্রসাদান্মহেশ্বর।" শিষ্য এই মন্ত্রে দেবভার আরাধনা করিয়া শ্বনকরিয়া থাকিবে। পর দিবস গুরু শিষ্যের নিকট অপ্রেব শুভাশুভ জিজ্ঞাসা করিবেন এবং শিষ্য ও সমস্ত অপ্র বিবরণ গুরুসমীপে নিবেদনকরিবে। ক্য়া, ছত্র, রথ, প্রদীপ, অট্টালকা, পদ্ধ, নদী, হন্তী, বৃষ, মালা, সমুদ্র, সর্প, পর্বাত, ঘোটক, ষজীর মাংস ও মদ্য এই সকল অপ্রে দৃষ্ট হুইলে মন্ত্র সিদ্ধ হুইবে।

অনস্তর দীক্ষকাল নির্ণীত হইতেছে। টৈজমালে মন্ত্র গ্রহণকরিলে
সমস্ত প্রবার্থ নিদ্ধি হয়, বৈশাথে য়ত্র লাভ, জৈ ঠে ময়ণ, আঘাতে বন্ধনাশ,
শাবণে দীর্ঘায়, ভাত্রে সন্তাননাশ, আখিনে রত্নকয় কার্ত্তিকে ও অগ্র
হায়ণে মন্ত্রসিদ্ধি, পৌষে শক্রবৃদ্ধি ও পীড়া, মাঘমালে মেধাবৃদ্ধি, এবং
কাল্তনমালে মন্ত্রগ্রহণ করিলে নাধকের সকল মনোরথ পূর্ব হয়। পরস্ত উক্ত
বিহিক্ত মানও যদি মলমান হয়, তাহা হইলে সেই মালে মন্ত্র গ্রহণকরিবে
না। দীক্ষাবিষয়ে যে চৈত্র মানের প্রশন্তকা উক্ত হইয়াছে, ভাহা গোপাল
মন্ত্র দীক্ষা বিষয়ে জানিবে। যেহেত্ চৈত্র মানে মন্ত্র গ্রহণকরিলে লাধকের
হাথ ও ময়ণ হয়, অত্রব গোপাল মন্ত্র ভিয় ক্ষম্ত দেবভার মত্তে চৈত্র

কাস্ত্রনে সর্ববিদ্যা স্থালনাসং বিবর্জনার । তৈত্তে স্থার গোপালবিষয়ং গোতমাক্তরা । মধুমাসে ভবেদীকা হুঃখায় মরণায় চ। ইতি বচনামান্তত্তে । তথা—জৈয়তে মৃত্যুপ্রদা বিদ্যা আবাতে প্রথমপাদঃ । ইতি যোগিনীহাদয়াদাবাতে প্রীবিদ্যায়াং ন দোষঃ ॥ অত্ত চ মাসঃ সৌর এব । সৌরে মাসি শুভা দীকা ন চাল্রে ন চ তারকে । ইতি গোতমীয়াহ ॥ বৈশপায়নসংহিতায়ায় ॥ মন্ত্রসারস্ত্রণং মেষে ধনধান্তপ্রদং ভবেহ । র্যে মরণমাধ্যোতি মিধুনেহপত্যনাশনম্ । কর্কটে মন্ত্রসিদ্ধিঃ স্থাহ সিংহে মেধাবিনাশনম্ । কন্তা লক্ষীপ্রদা নিত্যং তুলায়াং সর্বসিদ্ধয়ঃ । রশ্চিকে স্বর্ণলাভঃ স্থাদ্ধমুশ্মানবিনাশনম্ । মকরঃ প্রাদেং প্রোক্তঃ কুস্তোধনসমৃদ্ধিদঃ । মীনো তুঃপ্রদান নিত্যমেবং মাসবিধিক্রমঃ ॥

অথ বারনিয়মঃ। রবিবারে ভবেদ্বিত্তং সোমে শান্তির্ভবেৎ

মানে দীক্ষিত হইতে পারে না। জৈঠামানে দীক্ষিত হইলে মন্ত্র্যুতার মৃত্যু হর এবং আবাচ্মানের দীক্ষা সর্ব্যস্পৎ প্রদানকরে, এই
বোগিনী তন্ত্রের বচনবলে আবাচ্মানে শ্রীবিদ্যার মন্ত্র দীক্ষার কোন দোর
হইতে পারে না। দীক্ষা বিষয়ে সৌরমাসই প্রশস্ত, চাক্রমানে দীক্ষা নিবিদ্ধ,
ইহাই গৌতমীর ভন্তবচনে প্রতীয়মান হইরাছে। 'বৈশক্ষায়নসংহিভার
লিখিত আছে বে, মেব রাশিতে স্ব্যু সত্ত্বে দীক্ষা গ্রহণ করিলে সেই দীক্ষা
ধন ধাত্ত প্রদানকরে, এইরূপে ব্যে মৃত্যু, মিপুনে অনশন, কর্কটে মন্ত্রাসিদ্ধি,
সিংহে বৃদ্ধিবিদ্যাপ, ক্তাতে সম্পদ লাভ, তুলাতে সর্বাসিদ্ধি, বৃশ্চিকে স্বর্ণলাভ, ধর্মরাশিতে মানহানি, মকরে পুণ্য বৃদ্ধি, কুন্তে ধন সমৃদ্ধি, এবং মীন
রাশিতে স্বর্ণ্যে অবস্থান কালে' দীক্ষিত হইলে মন্ত্রগৃহীতার ত্বংথ হইয়া
থাকে। এইরূপে মাস বিচার ক্রিয়া মন্ত্র গ্রহণ করিবে।

ष्णनस्त्र मीन्याविषद्य वाक्रनियम् कथित हहेटल्ड । त्रविवादः अञ्जल्

কিল। আয়ুরঙ্গারকে হস্তি ততো দীক্ষাং বিবর্জয়েং। বুধে সৌন্দর্যাসাথোতি জ্ঞানং স্থান্ত, রহস্পতো। শুক্তে সৌভাগ্য-মাথোতি যশোহানিঃ শনৈশ্চরে॥

অথ তিথিনিয়মঃ॥ আগমকল্পক্রদেম। প্রতিপদি কৃতা দীকা
জ্ঞাননাশকরী মতা। দ্বিতীয়ায়াং ভবেজ্জ্ঞানং তৃতীয়ায়াং শুচিভবেৎ। চতুর্থ্যাং বিত্তনাশঃ স্থাৎ পঞ্চম্যাং বৃদ্ধিবর্দ্ধনং। ষষ্ঠ্যাং
জ্ঞানক্ষয়ং সোখাং লভতে সপ্তমীদিনে। অফম্যাং বৃদ্ধিনাশঃ
স্থান্ধবম্যাং বপুষঃ ক্ষয়ঃ। দশম্যাং রাজসোভাগ্যমেকাদশ্যাং
শুচির্ভবেৎ। দ্বাদশ্যাং সর্বাসিদ্ধিঃ স্থাক্রয়োদশ্যাং দরিক্রতা।
তির্য্যগ্রোনিশ্চতুর্দিশ্যাং হানির্মাসাবসানকে। পক্ষান্তে ধর্ম্মরুদ্ধিঃ স্থাদস্বধ্যায়ং বিবর্জয়েৎ॥ অস্বধ্যায়মাহ। সন্ধ্যাগর্জ্জিতক্রিদে গৃহীতার বিদ্যা লাভ হয়, এইরপ সোমবারে শান্তি, মললবারে
আয়্ঃক্ষয়, ব্রবারে সৌন্ধ্যার্দ্ধি, বৃহস্পতিবারে জানলাভ, শুক্রবারে
সৌভাগ্য, শনিবারে, যশোহানি, হইয়া থাকে।

' এইকণ দীক্ষাকার্যের তিথিনিরম কথিত হইতেছে। আগসকল্পদ্রেম লিখিত আছে যে, প্রতিপত্তিথিতে মন্ত্র প্রহণকরিলে জ্ঞানবিনাশ হর, এইরূপ দিতীয়াতে জ্ঞানবৃদ্ধি, তৃতীরাতে শুচিন্তা, চতুর্থীতে বিপ্রবিনাশ,
পক্ষমীতে বৃদ্ধিবৃদ্ধি, বল্লীতে জ্ঞানকর, সপ্রমীতে স্থলাত, অইমীতে বৃদ্ধিবিনাশ, নবমীতে শরীর কর, দশ্মীতে রাজসোভাগ্য, একাদ্শীতে শুচিন্তা
দাদ্শীতে সর্মকার্যাসিদ্ধি, প্রশোদশীতে দরিস্ততা, চতুর্দ্মশীতে দীক্ষিত হইকে
দেই মন্ত্রগৃহীতার তির্যুক্ যোনি প্রাপ্তি হর। আর অমাবস্তাতে ভার্যাহানি এবং পূর্বিমাতে মন্ত্র প্রহণকরিলে শিব্যের ধর্ম বৃদ্ধিপার। দীক্ষা
প্রহণে অন্ধ্যার তিথি বর্জনকরিকে, অর্থাৎ যে যে তিথিতে বেদ পার্চ্র
নিবিদ্ধ, সেই গেই তিথিতে মন্ত্র প্রহণ করিবে না। এইকণ অনধ্যার দিন
কথিত হইতেছে। যে দিনে সক্ষা গর্জন, ভূষিকক্ষা ও উন্থাপাত, হর সেই
দিনকে অনধ্যার বলা বার। আরা বেলাক্ত ক্ষনধ্যার দিনও দীক্ষা কার্য্যে

নির্যোধ-ভূকশোক্ষানিপাতনে। এতানভাংশ্চ দিবসান্ ভার্জ্যাক্রান্ পরিবর্জয়েৎ। দ্বিতীয়া পঞ্চমীচৈব ষঠীচেব বিশেষজঃ।
দাপামপি কর্ত্তব্যং ত্রয়োদশ্যামধাপিষা। ইতি ষৎ ষঠীত্রয়োদাবিধানং ভিদ্পিবষয়ং রামার্জনচন্দ্রিকাপ্পত্রাৎ। পঞ্চমী
সপ্তমী ষঠী দ্বিতীয়া পূর্ণিমা তথা। ত্রেয়োদশী ভূ দশমী প্রশস্তা
সর্ব্ব কামদা। ইতি সনৎকুমারবচনাৎ ষঠীবিধানমপি শিববিষয়ে। দশমীসপ্তম্যোনিষেধমাহ। শুরুপক্ষস্ত দশমী সপ্তমী
চ বিশেষতঃ। নিন্দ্যা সদৈব ষঠী স্থাদিতি শৈবাগমান্তরে।

অথ নক্ষত্রনির্নায়। অশ্বিদ্যাং স্থমাপোতি ভরণ্যাং মরণং ধ্রুবম্। কৃতিকায়াং ভবেদ্ধঃখা রোহিণ্যাং বাক্পতির্ভবেৎ। মুগশীর্ষে স্থাবাপ্তি রার্দ্রায়াং বন্ধুনাশনম্। পুনর্ববেদী ধনাচ্যঃ

वर्জन कतिरत। विकीशा. शक्ष्मी, वर्छी, वाल्मी खं वरवाल्मीराठ लोका कतिराठ शारत, हेन्जाल कर्जाक करत्रत वहरन रच वर्छी ७ वरवाल्मीराठ लोकात विधान रम्या यात्र, कार्श विक्रमात कीकाराठ खानिरव। तामार्कनहिक्कात्र वर्छी ६ वरवाल्मीराठ लोका केन्द्र कार्र्स, व्यवः शक्ष्मी, वर्षी, मध्यी, विकीता, शृश्मिं।, वरवाल्मी ६ लम्मी वर्षे मक्क्रमात किथि लोका कार्र्या व्यव्यक्त ७ मर्सकामक्ष्म, हेन्जाल मन्यो ६ मन्यो ६ मन्यो ६ मन्यो ६ मन्यो ६ वर्षी किथिराठ लोकात निरम्ब बोकाराठ खानिरव। बात्र लम्यो ६ मध्यी किथिराठ लोकात निरम्ब बार्स, स्वरह रम्यागम वहरन एक्रभरक्षत्र लम्यो, मध्यी ६ वर्षी वर्षे मन्यो ६ वर्षी वर्षे मन्यो ६ वर्षी वर्षे मन्यो ६ वर्षी वर्षे मन्यो ६ वर्षी वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे क्रिक्ष क्रिक्ष क्रिक्ष निक्षीत्र वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे मन्यो ६ वर्षी वर्षे व

মনস্তর দীকা কার্ব্যের বিহিতাবিহিত নক্ষত্র কথিত হইতেছে। অধিনী নক্ষত্রে দীকা গ্রহণ করিলে গৃহীতার হুবলাত হয়, এইরপ ভরণতে মরণ, ক্ষিকাতে হঃখ, য়ে।হিণীতে পাতিত্য, আর্তানক্ষত্রে রল্পাল, মুগলিরাতে হুংখ, প্রক্ষিতে ধন, প্রাতে শক্রবিনাশ, অস্নোবাতে মৃত্যু, মবাতে হঃখ, মেচন, প্রক্ষিতি দৌকর্ষা, উত্তর্গন্তনীতে জান, হন্তাতে ধন,

ত্বাৎ পুষ্যে শক্রবিনাশনন্। অশ্লেষায়াং ভবেন্দৃত্যুর্ম্বায়াং হংথমোচনন্। সৌন্দর্য্যং পুর্বকল্পন্যাং প্রাপ্তেচ ন সংশয়ঃ। জ্ঞানক্ষেত্রকল্পন্যাং হস্তায়াঞ্চ ধনী ভবেৎ। চিক্রায়াং জ্ঞানসিন্ধিঃ ত্বাৎ স্বাত্যাং শক্রবিনাশনন্। বিশাথায়াং ত্রখং চান্দ্র্রাধায়াং বন্ধুবর্দ্ধনন্। জ্যেষ্ঠায়াং স্বতহানিঃ ত্বান্মূলায়াং কীর্ত্তিবর্দ্ধনন্। প্র্বাষাঢ়োভরাষাঢ়ে ভবেতাং কীর্ত্তিদায়িকে। প্রবগায়াং ভবেদ্ধুংখী ধনিষ্ঠায়াং দরিক্রতা। বৃদ্ধিঃ শতভিষায়াং ত্বাল্ধা প্রবিভাদে ত্রখা ভবেৎ। সৌখ্যঞ্চোভরভাদে চ রেবত্যাং কীর্ত্তিবর্দ্ধনং। আর্দ্রাকৃত্তিকয়োর্দিষেধন্ত শিববক্ষীতরবিষয়ে।
তথাচ—আর্দ্রায়াং কৃত্তিকায়াঞ্চ মন্ত্রারম্ভঃ প্রশাসতে। যদীশস্য কৃশানোর্ব্বা মন্ত্রায়ভো যথাক্রমং। তন্ত্রান্তরে—অ্রিনী-ভরণীস্বাতি-বিশাখা-ইস্তভেমু চ। জ্যেষ্ঠোভরাত্রয়েষবং ক্র্যান্মন্ত্রাভিষেচনং। ইতি জ্যেষ্ঠাভরণ্যের্বিধানং তত্র রামবিষয়মগস্ত্যসংহিতোক্তত্বাৎ।

চিত্রাতে জ্ঞানবৃদ্ধি, স্বাতীতে শক্রবিনাশ, বিশাথাতে স্থ, অনুরাধাতে বন্ধুদ্ধি, ক্যেন্ডাতে প্রহানি, মৃলাতে কীর্ত্তিবৃদ্ধি, পূর্বাবাঢ়া ও উত্তরাবাঢ়াতে যশোলাত, প্রবণতে হংখ, ধনিন্ঠাতে দরিক্রভা, শতভিষাতে বৃদ্ধিবৃদ্ধি, পূর্বাভানে ও উত্তর ভালে স্থ এবং রেবতী নক্ষরে দীক্ষত হইলে মন্ত্রগৃহীতার কীর্তিবৃদ্ধি হইরা থাকে। এই বচনে যে মার্ল্রা ও ক্তিকা নক্ষরে দীক্ষা নিষেধ উক্ত হইল, এই নিষেধ শিব ও বহ্নিমন্ত্রের অন্তর্জ জানিবে, অর্থাৎ আর্ল্রা ও ক্তিকা নক্ষরে পিবমন্ত্র ও বহ্নিমন্ত্র গ্রহণ করিতে পারে। যেহত্ 'বিদ্ধি ও অগ্নির মন্ত্র ক্ষেত্র করে তাহা হইলে আর্ল্রা ও ক্তিকা নক্ষরে ক্রিকা নক্ষরে ক্রিকা নক্ষরে ক্রিকা মন্ত্র ক্রিকা নক্ষরে ক্রিকা মন্ত্র ক্রিকা নক্ষরে ক্রিকার মন্ত্র বিদ্ধান প্রক্রিকা নক্ষরে ক্রিকার মন্ত্র বাহণে আর্ল্রা ও ক্রিকা নক্ষরে ক্রিকার মন্ত্র গ্রহণ আর্ল্রা ও ক্রিকো নক্ষরে ক্রিকার মন্ত্র গ্রহণ আর্ল্রা ও ক্রিকা নক্ষরে ক্রিকার ক

শব্দ যোগনির্ণয়:। বিশ্বসারে—শুভঃ সিদ্ধন্তথায়ুশ্বান্
ধ্বযোগন্ততঃ পরং। প্রীতিঃ সোভাগ্যযোগশ্চ রৃদ্ধিযোগন্ততঃ
পরং। হর্ষণশ্চ তথা যোগঃ সর্বতত্ত্বে শুভাবহাঃ॥ রত্বাবল্যাং—
যোগাঃ স্থ্যঃ প্রীতিরায়ুশ্বান্ - সোভাগ্যঃ শোভনো ধ্বতিঃ।
রৃদ্ধির্শ বঃ স্থকর্মা চ সাধ্যঃ শুক্রশ্চ হর্ষণঃ। বরীয়াংশ্চ শিবঃ
সিদ্ধো ব্রশ্বাইন্দ্রশ্চ ষোড়শ॥ দীক্ষাতত্ত্বপূত রত্বাবল্যাং—
যোগাশ্চ প্রীরায়ুশ্বান্ সোভাগ্যঃ শোভনো ধৃতিঃ। রৃদ্ধির্শ বঃ
স্কর্মাচ সাধ্যঃ শুক্রশ্চ হর্ষণঃ। বরীয়াংশ্চ শিবঃ সিদ্ধো
ব্রশ্বাচ সাধ্যঃ শুক্রশ্চ হর্ষণঃ। বরীয়াংশ্চ শিবঃ সিদ্ধো
ব্রশ্বাচ সাধ্যঃ শুক্রশ্চ হর্ষণঃ। বরীয়াংশ্চ শিবঃ সিদ্ধো
বিশেষতঃ। সক্লাদীনি বিষ্টিঞ্চ বিশেষেণ বিবর্জ্জয়েৎ।
সক্লাদীনি শকুনি-চতুম্পাদ-নাগ-কিন্তু-ম্বানি॥

অথ করণনির্ণয়ঃ। বব-বালব-কৌলব-তৈতিল-বণিজ-স্তদনস্তরম্। করণানি শুভান্মেব সর্বতন্ত্রেষু ভাষিতম্॥ এই বচনে যে, জ্যেষ্ঠা ও ভরণী নক্ষত্রের বিধান উক্ত আছে, ভাহা রামমন্ত্র দীকাতে জানিবে, এই রূপ অগন্তা সংহিতার উক্ত আছে।

আনস্তর দীকাকার্য্যে বোগনিয়ম কথিত হইতেছে: বিশ্বসারঙল্পে লিখিত আছে যে, সিদ্ধ, আযুমান, ধ্বন, প্রীতি, সৌভাগ্য ও বৃদ্ধি এই সকল বেগে গুভফল সম্পাদন করে, এইরূপ সর্বাভিন্তে উক্ত আছে যে, প্রীতি, অযুমান, সৌভাগ্য,শোভন, ধৃতি, বৃদ্ধি, ধ্বন, স্কর্ম্মা, সাধ্য, শুক্র, হর্ষণ, বরীয়ান, শিব, সিদ্ধ, ব্রহ্ম, এই বোড়শ বোগই দীকাকার্য্যে প্রশন্ত। দীকাতব্যয়ত বচনে জানা যায় বে, প্রীতি আযুমান, সৌভাগ্য, শোভন, ধৃতি, বৃদ্ধি, ধ্বন, স্কর্মা, সাধ্য, শুক্র, হর্ষণ, বরীয়ান, শিব, সিদ্ধ, ব্রহ্ম, এই বোড়শ বোগ দীকাকার্য্যে শুক্রম। আর শকুনি, চতুম্পাদ, নাগ, কিং, তু, দ্ব ও বিষ্টি এই সকল বোগ দীকা কার্য্যে বর্জন করিবে।

व्यवस्त्र मीकांत्र क्युनिन्य कथिछ ह्ट्रेडिह। यव, यानव, क्लेनव,

অথলগনির্ণয়ঃ। রুষে সিংহে চ কন্যায়াং ধমুশ্মীনাখ্যলগ্নকে।
চন্দ্রতারামুক্লে চ কুর্য্যাদ্দীক্ষাপ্রবর্ত্তনম্। তথা—স্থিরলগ্নং
বিষ্ণুমন্ত্রে শিবমন্ত্রে চরং শুভং। দ্বিস্বভাবগতং লগ্নং শক্তিমন্ত্রে
প্রশাসতে॥ অগস্ত্যসংহিতায়াং—ত্রিষড়ায়গতাঃ পাপাঃ শুভাঃ
কেন্দ্রত্রিকোণগাঃ। দীক্ষায়াস্ত শুভাঃ সর্বেব বক্রস্থাঃ সর্বানাশকাঃ॥

অথ পক্ষনির্বাঃ। শুক্লপক্ষে শুভা দীক্ষা কৃষ্ণেইপ্যা-পঞ্চমাদিনাৎ। অগস্তাসংহিতায়াং—শুক্লপক্ষে তু কৃষ্ণে বা দীক্ষা সর্বত্র শোভনা। কালোত্তরে তু—ভূতিকামেঃ সিতে

তৈতিল, ও ৰণিজ, এই সকল করণ সর্কবিধ তান্ত্রিক কার্য্যে প্রশস্ত । ইহা সর্বভন্নেই উক্ত আছে।

এইক্লণ দীক্ষা কার্য্যে বিহিতাবিহিত লগ্ন কথিত হইতেছে। বৃষ, সিংহ, কন্তা, ধনু ও মীন এই সকল লগ্নে, চন্দ্র ও তারাগুদ্ধি সত্ত্বে দীক্ষা গ্রহণ করিবে। তত্ত্বে আর লিখিত আছে যে, বিষ্ণুমন্ত্র দীক্ষাতে লিরলগ্ন, অর্থাৎ বৃষ, সিংহ, বৃশ্চিক ও কুন্ত এই চারিলগ্ন, শিবমন্ত্র দীক্ষায় চর অর্থাৎ মেষ, কর্কট, তুলা, ও মকর এই চারি লগ্ন এবং শক্তিমন্ত্র দীক্ষাতে ঘ্যাত্মক অর্থাৎ মিপুন, কন্তা, ধনু ও মীন এই চারি লগ্ন প্রশস্ত । আগত্তাসংহিতার লিখিত আছে যে, মন্ত্রলগ্নের তৃতীয় ষষ্ঠ ও একাদশ স্থানে পাপগ্রহ এবং কেন্দ্র অর্থাৎ লগ্ন, চতুর্থ, সপ্তম ও দশম এবং ত্রিকোণ অর্থাৎ নবম ও পরুম এইসকল স্থানে শুভগ্রহ থাকিলে মন্ত্র গ্রহণে শুভ হইবে। আর দীক্ষাকার্য্যে বক্তীগ্রহ অনিষ্ট কারী, অত্রথব তাহা বর্জন করিবে।

জনত্তর দীক্ষার বিহিতাবিহিত পক্ষ কথিত হইতেছে। শুরুপক্ষে দীক্ষা হইলেই সেই দীক্ষা শুভপ্রদান করে এবং রুফপক্ষেও পঞ্চমী পর্যন্ত দীক্ষা গ্রহণের বিধি আছে। অগস্তাসংহিতার লিখিত আছে বে, কুফণক ও গুরুপক্ষ উভর্ই সর্ব্ধ মন্ত্র দীক্ষাতে শুভ প্রদান করে, স্বতরাং দীক্ষাতে সদা মুক্তিকামৈঃ কৃষ্ণপক্ষে ইতি শেষঃ। নিষিদ্ধেদি মাসেষ্
বিশেষো মুনিভেদিতঃ। রক্ষাবল্যাং —ষঠী ভাত্রপদে ঈষে তথা
কৃষণ চতুর্দ্দশী। কার্ত্তিকে নবমী শুক্লা তথা মার্গে তৃতীয়িকা।
পৌষে তু নবমী শুক্লা মাঘে শুক্লা চতুর্থিকা। ফাস্তুনে নবমী
শুক্লা চৈত্রে কামচতুর্দ্দশী। ত্রয়োদশীতি কেচিৎ। বৈশাথে
চাক্ষয়া চৈব জ্যৈষ্ঠে দশহারা তিথিঃ। আষাঢ়ে পঞ্চমী শুক্লা
শ্রোবণে কৃষ্ণপঞ্চমী। এতানি দেবপর্বাণি তীর্থকোটিফলং
লভেৎ। অত্র দীক্ষা প্রকর্ত্ত্রা ন মাসঞ্চ পরীক্ষয়েৎ। ন
বারং নচ নক্ষত্রং ন তিথ্যাদিকদৃষণম্। ন যোগকরণকৈব
শঙ্করেণ চ ভাষিত্রম্। অশুচ্চ মত্রম্। চৈত্রে ত্রয়োদশী শুক্লা
বৈশাথৈকাদশী দিতা। জ্যৈষ্ঠে চতুর্দ্দশী কৃষ্ণা আষাঢ়ে নাগপঞ্চমী। প্রাবিণকাদশী ভাত্রে রোহিণী সহিতাকী মী। আখিনে

চ মহাপুণ্যা মহাউন্যপ্যভীউদা। কার্ত্তিকে নবনী শুরা মার্গশীর্বে তথা দিতা। ষষ্ঠা চতুর্দশী পৌষে মাঘেহপ্যেকাদশী দিতা। ফাল্পনে চ দিতা ষষ্ঠা চেতি কালবিনির্ণয়ঃ। যোগিনী-তদ্রে। আয়নে বিষুবে চৈব গ্রন্থণে চক্রসূর্যয়েঃ রবিসংক্রান্তি-দিবসে যুগাদ্যায়াং স্থরেশ্বরি। মন্বন্তরাস্থ সর্বান্থ মহাপূজা-দিনেযু চ। চতুর্থী পঞ্চমী চৈব চতুর্দশুন্তমী তথা। তিথয়ঃ শুভদাঃ প্রোক্তা দীক্ষাগ্রহণকর্মণি। ইত্যাদি বচনাচ্চতুর্দশু-ইমীতি শক্তিবিষয়ং। চতুর্থীতি গণেশবিষয়ং। তত্তৎকর্মো-কর্মণে নিন্দিতেষপি মাসেযু দীক্ষোক্তা গ্রহণে শুভা। স্ব্যাগ্রহণকর্মণি। তত্ত যদ্যৎ কৃতং সর্বমনন্তফলদং ভবেৎ। ন বারতিথিমাস্ক্রাদিশোধনং স্ব্যাপর্বেণি। এবং চন্দ্রগ্রহণপর্যাণ ক্রাদেশি

दाहिनीयुका चहेमी. चाचित्तत महाहेमी, कार्डित्वत छक्नानवमी, च्छाहान मात्रत छक्नानवमी, त्रोद्धत वर्षा छ हर्क्षमी. माद्यत छक्नावका मिनी. काद्धत्तत छक्नावकी, त्रोद्धत वर्षा छ हर्क्षमी. माद्यत छक्नावका मिनी. काद्धत्तत छक्नावछी वहे भक्त छिल मोक्नात ध्रमछ कात । त्यानिनीछद्ध निर्धिठ चाद्ध त्य, मिक्नावन ६ छक्तात्रण भरक्वाखित्य, हक्ष्मपुं ध्रहत्न. त्रिमावाद्ध व्यवका मित्रत, मोक्ना ध्रहणकतित छक्ष क्ष्म हव, चात्र हज्यों, भक्षमी छ चहेमी वहे भक्त छिल मोक्नाव्या छक्ष्मपुं छक्षपुं छक्षपु छक्षपुं छक्षपुं छक्षपुं छक्षपुं छक्षपुं छक्षपुं छक्षपुं

বিভাবদৌ। ন ক্র্যাদৈক্ষবীং তাস্ত যদি চন্দ্রমদো গ্রহঃ।

15চ্চ গোপালঞ্জীবিদ্যেতরবিষয়ং। অতেষু পর্কযোগেষু

গ্রহণে চন্দ্রস্থায়োঃ। ইতি গোতমীয়াৎ। প্রশস্তা দকলা

নীক্ষা স্বস্ববারে তদা ভবেৎ। দুর্য্যগ্রহণকালে তু নাতাদ্রে
ষিতং ভবেৎ। ইতি যোগিনীহাদয়াক্ত। তারাদৌ তু বিশেষো

যথা। দীক্ষাকালং প্রবক্ষ্যামি নীলতন্ত্রামুসারতঃ। কৃষ্ণপক্ষ্যা

চাই্টম্যাং শুভে লগ্নে শুভে কণে। পূর্বভাত্রপদায়ুকে

মিত্রতারাদিসংযুতে। অথবাপ্যমুরাধায়াং রেবত্যাং বা

প্রশস্যতে। জানীয়াচ্ছোভনং কালং মন্ত্রস্য গ্রহণং প্রতি।

স্বৈষে চৈব বিশেষেণ কার্ত্তিকে চ বিশেষতঃ। দুর্য্যগ্রহণে

বিশেষমাহ রত্বাবলীধৃত্যামলে। শ্রীপরায়ানি বীজানি
লোপা দৌর্গন্চ যোমসুঃ। দুর্য্যস্য গ্রহণে লক্ষ্ণো নণাং মুক্তি-

কালে শক্তিমন্ত্রদীকা এবং চন্দ্রগ্রহণকালে বিক্ষার দীকা করিবে না, ইহা
প্রবিদ্যা মন্ত্রও গোপালমন্ত্র ভিন্ন দীকাতে জানিবে। যেহেতৃ অন্ত
পর্বাহাগে ও চন্দ্রগ্রেরণে দীকাগ্রহণ করিবে, এইরূপ গৌতমীরতন্ত্র উক্ত
আছে। যোগিনী হৃদর প্রমাণে জানা ঘাইতেছে যে, যথোক্ত বারে দীকা
গ্রহণ করিবে, কিন্তু স্থা গ্রহণকালে দীকা গ্রহণ করিতে হইলে মন্ত কিছুই
বিবেচনা করিবে না। তারাদি বিদ্যার মন্ত্রদীকাতে বিশেষ আছে
যে, কুন্তু পক্ষের অইনীতে শুভলগ্নে, শুভক্ষণে, পূর্বভাল্র পদনক্ষত্রে, মিত্র
ভারাতে, অথবা অন্তরাধা কিন্বা রেবতী নক্ষত্রে দীকা প্রশন্ত এবং উক্ত
কালই মন্ত্র গ্রহণে শুভপ্রদ। আর আম্বিন ও কার্ত্তিক এই ছই মাস মন্ত্র
গ্রহণের বিহিত্ত কাল। স্থা গ্রহণ কালে দীক্ষার প্রশন্ততা রন্নাবলীতে
উক্ত আছে। প্রবিদ্যার লোশাস্ত্রা মন্ত্র ও ছুর্গামন্ত্র স্থা
গ্রহণ মৃক্তিক্ষণ প্রধান করে। আর ম্ললবারে অমাবক্তা, সোমবারে
চতুর্দ্দী, ও রবিবারে স্থমী হইলে শতস্থাগ্রহণকালের ভূলা জানিবে।

कन्रथमः। ज्यावमा। भाषाद्य छोषवाद्य छक्नी। मुख्यी 🦿 त्रविवादत ह मृर्गाभर्यमादैकः मभाः। कूलार्गद-मश्रमी त्रविवादित ह भारम मर्गछरिथव ह। हिंचूर्थी कूजवादित ह व्यख्नेमी চ বৃহস্পতে। দেবপর্ববসমা জেয়া তান্ত দীক্ষাং সমাচরেৎ। यांगल—श्वाजीर्थ कुक़रकारक (मवीनीठेठकरा। श्रार्भ শীগিরৌ কাশ্যাং কালাকালং ন শোধয়েৎ। বিষ্ণুযামলে— দেবীবোধং সমারভা যাবৎ স্থান্নবনী তিথিঃ। কৃতা তাস্ত্র वूरियमीका नर्वाजीखेकनथना। श्वक्रभक्क वित्निरम् তত্রাপি তিথির্ঘ্টমী। তত্রাপি শারদী তুর্গা যত্র (परी गृष्ट गृष्ट। তত্র দীক্ষা প্রকর্তব্যা মাসর্কাদীন্ न (माधरप्र । ज्था—ताधरन रिव पूर्गाग्राः कालाकालः न (लाधराए। অलाकाथाधिमी यक त्रामाथा नवमी ज्था। লগে বাপ্যথক্ষ লগে যত্র তত্র তিথাবপি। গুরোরাজ্ঞানু

कुनार्गद निथिত আছে ए. त्रविगात मक्षमी, मामवात प्रमानका, युधवाद्र ठजूथी, ६ दूर्व्या जिवादा कष्टमी, रहेल (पवनर्स रुप्त, এই (पवनदर्स দীকা গ্রহণ করিতে পারে। যামলে লিখিত আছে ধ্য, পুণাতীর্থে, কুরুকেত্ত্রে, 👯 দেবীর চারি পীঠ স্থানে, প্রয়াগে, শ্রীপর্মতে, ও কাশীতে মন্ত্রগ্রহণ করিতে हरेल कानाकान विरवहना कतिरव ना। विकृ यामरन निथिञ আছে एव, **(एवीव (वाधन ७ महानवमी हेहामिश्तिव मर्था मीका श्रह्म क्रिया मर्यक्यकाव** चडी है क्लनांड इम्र, चात्र এই সকল ভিথিন মধ্যে শুকুপকে বিশেষত चहेमी एक मी किन्छ इट्टा नमिथक कन इहेमा 'थाक । वास्तिक या नमस्म शृंदर शृंदर भावमीत्र शूका रुत्र, त्मरे मगद्य गद्य श्रद्ध कि निवास गामि । विरिक्ता क्रिरिका। जात ह्र्गात (बाधन हरेल मीकार्ड काना कान विष्वहना ना नारे, जवर अप्लाकार्रमो । ब्रामनवमी एक मीका अर्षि । कान (मायविष्ठांत कतिरवना, পत्रस यथन खक्त आरमभाज्ञभारत मञ्जाहन कतिरव,

রূপেণ দীক্ষা কার্য্যা বিশেষতঃ। চতুর্থ্যঙ্গারবারে চ দিবসে ত্রিদিনম্পূশি। তত্র লগ্নাদিকং কিঞ্চিন্ন বিচার্য্যং কথঞ্চন। সমরাতন্ত্রে—যুগাদ্যায়াং জন্মদিনে বিবাহদিবসে তথা। বিষুবায়নয়োর্দ্ধ নৈর কিঞ্চিন্নিচারয়েৎ। তথা— শিষ্যানাহুয় গুরুণা রূপয়া যদি দীয়তে। তদা লগ্নাদিকং কিঞ্চিন্ন বিচার্য্যং কদাচন। সর্বের বারা গ্রহাং সর্বের নক্ষত্রাণি চ রাশয়ং। যশ্মিন্নহনি মন্ত্রজ্ঞো গুরুং সর্বের শুভাবহাং। যোগিনীতন্ত্রে—গ্রহণে চ মহাতীর্থে নাস্তি কালস্য নির্ণয়ং॥

তত্ত্বদারে। যদৈবেছা তদা দীক্ষা গুরোরাজ্ঞানুসারতঃ।
ন তিথির্ন ব্রতং হোমোন স্নানংন জপক্রিয়া। দীক্ষায়াং
কারণং কিন্তু স্বেছা বাপিচ সদ্গুরোঃ। শিষ্যত্রিজন্মদিবসে
সংপ্রাপ্তে বিষুবায়নে। স্বতীর্থেহ্কবিধুগ্রাসে তন্তুদামনপর্ববাণেঃ। মন্ত্রদীক্ষাং প্রক্রবাণো মাসক্ষাদীম শোধয়েৎ।

ज्याति निधित चार्ड (य, श्रुकृत चाक्रास्माति यथम हेन्हा ज्यनहे मञ्ज श्रुक्त कर्तिष्ठ भारत । यथम म्श्रुक चत्रः श्रुव्ह हहेन्ना मञ्ज श्रुमाम करतम, ज्यम जिथिनक्षमानि विर्वितना क्रिया मा वदः भूजा, हाम, जान, बंजभ তন্ত্রপর্বর পরমেশ্বরোপবীততিথিঃ শ্রাবণী দার্মনপর্বর মদনভঞ্জনতিথিঃ চৈত্র শুক্লা চতুর্দিশী।

অথ বক্ষ্যামি দীক্ষায়াঃ স্থানং তন্ত্রাসুসারতঃ। গোশালায়াং গুরোর্গেছে দেবাগারে চ কাননে। পুণ্যক্ষেত্রে তথোদ্যানে নদীতীরে চ মন্ত্রবিৎ। ধাত্রীবিল্বসমীপে চ পর্ব্বতাগ্রে গুহাস্থ চ। গঙ্গায়ান্ত তটে বাপি কোটিকোটিগুণং ভবেৎ॥ নিষিদ্ধানমাহ—গয়ায়াং ভাক্ষরক্ষেত্রে বিরক্তে চন্দ্রপর্বতে। চট্টলে চ মতঙ্গে চ তথা কন্যাশ্রমেষু চ। ন গৃহীয়াত্তবাদীক্ষাং তীর্থেষেতেষু পার্ববিত। বারাহীতন্ত্রে—শুক্রোহস্তো যদি বা রন্ধো গুর্বাদিত্যো ভবেদ্যদি। মেষরশ্চিকসিংহেষু তদা দোষো ন বিদ্যতে। মহাবিদ্যান্থ সর্ব্বান্থ কালাদিবিচারো

ना कतिराव मोका इटेर्ड भारत। भिराखनानियम अन्नमश्काखिए मडीर्थ, हक्षप्रश्वाश्वाश्वारात, जन्न भर्स छ नाम भर्स मौका গ্ৰহণ करिया माःम, ভিথি, नक्षज देशमिरभन्न मामक्षण विस्त्रहन। कतिर्य ना। जन्न भर्स भरक जावगमारमन खन्नामामनी अवः मामनभर्स भरक देहजमारमन खन्नाहर्क्षणी।

वहेकन उद्यमाद्वाक मोकाञ्चान कथिउ इहेक्क्ट । त्मामाना, अकन्र, , त्मानान, कानन, भूगात्कव, उमान, नमोजीत, विव अ जामनकोद्दक्त्रम्न, भर्मजाञ्च, भर्मज्ञ वहान, नमोजीत वह नकन जातन मोक्किं इहेल्म द्माविश्वन कम इहेता थात्क। महाग्रहर्गत निविष्ठ जान यथा। जनात्ज, जान्द्रक्तव्व, विवज्ञा जीर्ट्य, व्रक्षणम्मत्ज, वृद्धिका जीर्ट्य, व्रक्षणम्मत्ज, वृद्धिका जीर्ट्य, व्रक्षणम्मत्ज, वृद्धिका जात्व, व्यवक्रिक्त व्यवक्रिक जात्व, व्यवक्रिक कार्यन, जान्द्र विवच व्यवक्रिक व्यवक्र व्यवक्र

नान्ति। छङ्कः यूख्यानाज्य —कानानित्नाधनः नान्ति नानि-यिकानित्यन्य्॥

মহাকপিলপঞ্চরাত্রে। তত্র ভূমিং পরীক্ষেত বাস্ততভবিশারদঃ। ক্টুটিতা চ সশল্যা চ বল্মীকারোহিণা তথা।
দূরতঃ পরিবর্জ্ঞ্জা ভূঃ কর্ত্ত্রায়ুর্থনাপহা। ক্টুটিতাচেতি চকারে
ণোষরেতি লভ্যতে। ক্টুটিতা মরণং কুর্য্যাদূষরা ধননাশিনী।
সশল্যা ক্রেশদা নিতং বিষমা শক্রেতো ভয়ং। ইতি বর্জ্জনীয়ভূমিকথনং॥ তত্রৈব। ঈশকোণপ্রবা সা চ কর্ত্ত্ত্ত্ত্রপ্রনা প্রবিদ্ধার রিদ্ধিকরী ধনদা ভূভরপ্রবা। বিদ্বেষং মরণং
ব্যাধিং কুর্য্যাদ্যিপ্রবা মহী। ধর্ম্মরাজপ্রবা ভূমির্নিত্যং মৃত্যুভয়প্রদা। গৃহক্ষয়করী সাচ ভূমির্যা নৈঋতপ্রবা। ধনহানিকরী
পৃথ্বী কীর্ত্তিতা বক্ষণপ্রবা। বাতপ্রবা তথা ভূমির্নিত্যমুদ্বেগকারিণী। ইতি দিক্প্রবভূমিগুভাগুভে। তত্রেব। শেতা তু

মহাবিদ্যার মন্ত্রদীক্ষাতে কালাদি বিচার ও করিমিত্রাদি দেখেবিচার অবশ্র কর্ত্তব্য নহে।

মহাকপিলপঞ্চাত্তে লিখিত আছে যে, বাস্ত্রণান্তান্ত্রা পরীকা।
করিয়া গুভত্মি নির্ণয় পূর্বক দীকাদি কার্য্য করিবে। যে ভূমি ক্টিত, শল্যযুক্ত, বল্লীক্রিশিষ্ট, সেই ভূমি অবশু পরিত্যাগ করিবে, যে হেতৃ উহা কর্তার
আয়ু ও ধন বিনাশ করে। ক্টিত ভূমিতে কার্য্য করিলে কর্তার মৃত্যু হয়,
উবয়ভূমি ধননাশ করে, শল্যযুক্তাভূমি ক্লেশ্লায়িনী এবং বিষমাভূমি শক্ত
ভয়প্রদা। ঈশানকোণনিয়াভূমি কর্তার শ্রীপ্রদান করে, পূর্বনিয়া ভূমি
বৃদ্ধিদায়িনী, উত্তরনিয়া ভূমি ধুনদায়িনী, আয় যে ভূমি অগ্লিকোণনিয়া
ভাহা বিষেষ, সারণ ও ব্যাধি প্রদান করে। দক্ষিণনিয়া ভূমি মৃত্যুদায়িনী,
নৈশ্বতনিয়া ভূমি গৃহক্ষয়কারিণী, পশ্চিমনিয়াভূমি ধনহানি এবং বাযুক্তাণ
নিজা ভূমি সতত উল্লেগ প্রদানকরিয়া পাকে। খেতা ভূমিকে বালণী

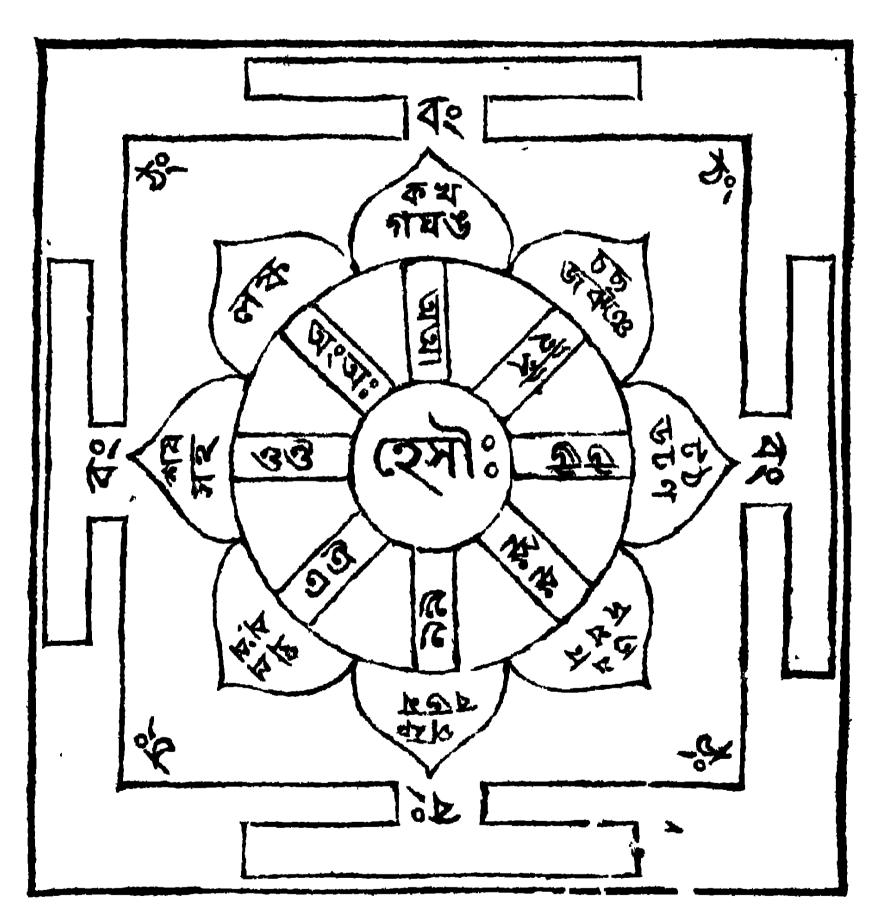
ব্রাহ্মণী ভূমী রক্তাঁ বৈ ক্ষত্রিয়া স্মৃতা। বৈশ্বা পীতা ভূ বিজ্ঞেয়া শূদ্রা কৃষণা প্রকাঠিতা। ব্রাহ্মণী ঘৃতগন্ধা স্থাৎ ক্ষত্রিয়া রক্তাগিকা। ক্ষারগন্ধা ভবেদৈখা শূদ্রা বিভূগিন্ধিনী ক্ষিতিঃ। মধুরা ব্রাহ্মণী ভূমিঃ কষায়া ক্ষত্রিয়া স্মৃতা। বৈশ্বা তিকা চ বিজ্ঞেয়া শূদ্রা স্থাৎ কটুকা মহী। ব্রাহ্মণী ভূঃ কুশোপেতা ক্রিয়া স্থাছবাকুলা। কুশকাশাকুলা বৈশ্বা শূদ্রা সর্ব্ব-তৃণাকুলা॥ শ্বেতারুণা পীতকৃষণা বিপ্রাদীনাং প্রশন্মতে। ত্যজ্যা ভূমিঃ ক্ষারগন্ধা পৃতিগন্ধাচ যা ভবেৎ।

জ্যোতিষে। ধ্রুব-মৃদ্নক্ষত্রগণে রবিশুভবারে সভিগো দীক্ষা। স্থিরলয়ে শুভে চন্দ্রে কেন্দ্রে কোণে শুভে গুরৌ ধর্মো।

রক্তাভ্মিকে ক্ষত্রিরা, পীতবর্ণা ভ্মিকে বৈশ্রা, এবং রুম্বর্ণা ভূমিকে শ্রা ভূমি বলিয়া জানিবে। ব্রাহ্মণী ভূমিতে ঘত গন্ধ, ক্ষত্রিয়া ভূমিতে রক্ত গন্ধ, বৈশ্রা ভূমিতে ক্ষারগন্ধ, এবং শ্রা ভূমিতে বিঠাপন্ধ অমূভূত হয়। বাহ্মণী ভূমির মধুর রস, ক্ষত্রেরা ভূমির ক্ষার রস, বৈশ্রা ভূমিতে তিক্ত রস এবং শ্রা ভূমিতে কটু রসের আঘাদ হইরা থাকে। ব্রাহ্মণী ভূমি কুশো-পেতা, ক্ষত্রিরা ভূমি শবাকুলা, বৈশ্রা ভূমি কুশকাশাকুলা এবং শ্রা ভূমি তৃণাকুলা হয়। ব্রাহ্মণের খেতভূমি, ক্ষত্রেরের রক্তভূমি, বৈশ্রের পীতভূমি এবং শ্রের পক্ষে ক্ষথাভূমি প্রশন্ত। আর যে ভূমিতে ক্ষারগন্ধ অথবা ছর্গন্ধ অমূভূত হয়, ভাহা পরিত্যাগ করিবে।

জ্যোতিষে লিখিত আছে যে, জবগণ অর্থাৎ উত্তরকল্পনী, উত্তরাবাঢ়া উত্তরভাল ও রোহিণী; মৃত্গণ অর্থাৎ চিত্রা, অনুরাধা, মৃগদিরা ও বেবতী এই সকল নক্ষত্রে; রবি, সোম, বৃধ, বৃহস্পতি ও গুক্রবারে; গুড-তিথিতে, স্থিরলয়ে অর্থাৎ বৃষ, সিংহ, বৃশ্চিক ও কৃত্ত লয়ে, চল্লগুদ্ধি সঙ্গে 'কেল্ল অর্থাৎ প্রথম, চতুর্থ, সপ্তম ও দশম স্থানে এবং ত্রিকোণ অর্থাৎ নবম ও পঞ্চম গুড্গুত্র সংস্থা দীকা কার্য্য গুড্ফল প্রদান করে। অথ মন্ত্রাণাং দশসংক্ষারাঃ। গোতমীয়ে—জননং জীবনং পশ্চাতাড়নং বোধনস্তথা। অথাতিষেকো বিমলীকরণা-প্যায়নে পুনঃ। তর্পণং দীপনং গুপ্তির্দ শৈতা মন্ত্রসংক্ষ্যিয়াঃ। স্বর্ণাদিপাত্রে সংলিখ্য মাতৃকাযন্ত্রমূত্রমম্। কাশ্মীরচন্দনেনাপি ভন্মনাবাথ স্থব্রতে। কাশ্মীরং শক্তিসংক্ষারে চন্দনং বৈষণ্ডবে মণো। শৈবে ভন্ম সমাখ্যাতং মাতৃকাযন্ত্রলেখনে॥

व्यथं माष्ट्रका यद्धः। त्यास्मित्मित्रमनार्गकिर्गिकमहाः इत्यः



ध्वनस्त मरद्वत मम्बिथ मश्कात कथिल श्हेरलहा (गोलमीरव लख निविल धारक रव, धानन, खीवन, खाज़न, रवाधन, धालरवक, विमनीकत्रन, धानावन, जर्भन, भीनन ख खिर, हेशताहे मरद्वत मममश्कात। खाथमल धानिभारक माज्का यत निविर्द। कूडूम, जमन वा जम बाता यद्व धादिल कतिरव, मिक्क विवरत कूडूम, विक्कृविद्दत जमन এवर निवमस्त जमवाता यद्व निविर्द।

माङ्कायश्राक्ररणव कम वहे-- (ह्मी: वह मन कर्निका मर्था व्यवः (कमरव

শার্বৎকেশরং বর্গোল্লাসি বস্তুচ্ছদং বস্তুমতীগেঁহেন সংবেষ্টিতং। আসাস্থাম্মির লান্তলাঙ্গলিযুজা কোণিপুরেণারতং বন্তনোঃ পরং নিগদিতং সোভাগ্যসম্পৎকরং। বন্তস্থা দিক্ষু বং বিদিক্ষু চং লিখেৎ। তথাত গৌতমীয়ে—কাদিমান্তাঃ পঞ্চর্গা দিক্ষু পূর্বাদিতো অসেৎ। যাদিবান্তাঃ শাদিহান্তা লক্ষ মীশে প্রবিঅসেৎ। চতুরক্রং চতুদ্ধারং দিক্ষু বং চং বিদিক্ষু চ। ইতি মাতৃকা যন্ত্রং॥

মন্ত্রণাং মাতৃকাযন্ত্রাত্বনারো জননং স্মৃতং। পঙ্ ক্তিক্রমেণ বিধিনা মুনিভিস্তত্র নিশ্চিতং। প্রণবান্তরিতান্ কৃত্বা মন্ত্রবর্ণান্ জপেৎ স্থবিঃ। প্রত্যেকং শতবারস্ত জীবনং তত্ত্বাহৃতং। দশসংখ্যো বা জপঃ। বিশ্বসারে—পৃথক্ শতং বা দশধা মন্ত্রবর্ণান্ জপেৎ স্থবী রিতি। মন্ত্রবর্ণান্ সমালিখ্য তাড়য়েচ্চ-ন্দনান্ত্রসা। প্রত্যেকং বায়ুবীজেন পূর্ববত্তাড়নং মতং। তাড়নং

भाक्ता यञ्च रहेट ज्ञाकत शहर कित्रिता (य, मर्खाकात कितिए हम, जाहाहे जमन, श्रीराज मञ्ज वर्णत शृह कि भारत खें अहेरी का रिवा कित्रिता भूथक भूथक भाजवात वा प्रभवात क्षण कित्रिता, हेहात नाम कीवन। मञ्जर्भ मक्य निविद्यां किमाना कात्रा श्रीराज वास् वीराज जांकन कित्रिता हमाना क्षणता श्रीराज वास् वीराज जांकन कित्रिता हमाना व्या विश्व विश्व

ত্ই ত্ইটি করিয়া স্বরবর্ণ লিথিবে। তৎপরে অন্তপত্তে অন্তবর্গ লিথিবে, অর্থাৎ পূর্বাদলে কবর্গ, আগ্রেয়দলে চবর্গ, দক্ষিণদলে টবর্গ, নৈশুতদলে তবর্গ, পশ্চিমদলে পবর্গ, বায়্দলে যবর্গ, উত্তরদলে শবর্গ এবং ঈশানদলে ল ও ক্ষ এই ত্ইবর্ণ লিথিবে এবং ভূপুর ও চতুর্ঘরে লিথিয়া দিকচত্ঠয়ে বং ও চতুহোণে ঠং এই বীক্ষ লিথিকে হইবে। এইবন্ধ সাধকের সৌভাগ্য ও সম্পদ প্রদান করে। এই বন্ধবিষয়ে গোড়মীয় তত্ত্বের প্রমাণ মূলে উক্ত আছে।

শতধা দশধা বা। তথাচ তন্ত্ৰান্তরে—তাড়নং তাড়য়েদ্বর্ণান-थिलाः म्हन्सनाखमा। भाजः वामगंथा वालि विविध्याक् मकुः जजः। विश्वमाद्य-नमधा गृनू (मर्विण जांफ्नः পরिकीर्जिजः। विलिशा मखन्नाः ख श्रम्रोनः कत्रवीत्रोकः। ज्याखन्नाः भारिकर्णातिकः (वास्नः। जञ्जाखरत—विनिशाकतमःशारिजः भूरेष्म त्रक-र्शाति जिः। यञ्जवर्गान् विकिटनकम जियञ्जा मक्र मक्र । जज-माख्याक्विविधिमा অভিষেকঃ প্রকীর্তিতঃ। অশ্বর্থপল্পবিঃ সিঞ্চে-माजी मजार्गनःथाय। मिकिछा मनमा मजः स्यूमामूल মধ্যতঃ। জ্যোতির্মন্ত্রেণ বিধিবদহেশালত্রয়ং যতী। তারং ব্যোমাগ্রিমমুযুগ্ দণ্ডী জ্যোতির্মমুর্মতঃ। তারং প্রণবঃ। ব্যোমো হকারঃ অগ্নীরেফঃ মন্তুরৌকারঃ দণ্ডী অনুসারঃ।তেন ওঁ হোঁ। স্বর্ণেন কুশতোয়েন পুষ্পতোয়েন বা তথা। তেন মজেণ বিধিবদাপ্যায়নবিধিঃ স্মৃতঃ। মজেণ বারিণা মজে তর্পণং তর্পণং মতং। মধুনা শক্তিমজেষু বৈষ্ণবে চেন্দু-यञ्जिलः । लित् श्राप्तन प्रश्निम प्रश्नी निष्धा । অভিষেকেপি তথা। তারমায়ারমাযোগো মনোদীপনমুচ্যতে। अहे वीटक इन कतिरव, हेरांत्र नाम (वाधन। मञ्जवर्गनकन भृथक छारव निश्चित्र। মন্ত্রাক্ষর সংখ্যক রক্তকরবীরপুষ্প ছারা রং এইমন্ত্রে এক একবার অভিমন্ত্রিত कित्रा व्यथथभव दात्रा मञ्जवर्गनःथात्र व्यक्तिक कतित्व, हेराहे व्यक्तिक भःकात । स्वृतात मृग ७ मधा**लात (एत्र मद्य हिलाकतित्रा ७ दहाँ এই** म**रब** मणजन मध कतिरव, देहांत्र नाम विमनीकत्रण। मञ्चवर्गनकनरक अर्थनाता कून वन व्यवा भूत्वानरक ७ दशे वह यात्र वाभाग्रन कतित, हेशहे वाभाग्रन सः कात्र। (मत्र महात्र वर्व मः थात्र ७ दो वरे महा जनवात्रा छर्पन कत्रियः, हेशांक छर्नन वरन। मिकिमरत मधु, विक्रमरत कर्न्त मिसिछ छन् धवर निव महा इक्षात्रा छेक छर्न ७ किएरक कतित्। ७ दो वी धरे मद राष महात छिপति जभ कत्रिया महत्रत मीशिवृद्धि कत्रिए एत्र, देशह मीथन। छिभाज

জপ্যমানস্থ মন্ত্রস্থ গোপনং ত্রপ্রকাশনং। সংক্ষারা দশ
সংপ্রোক্তাঃ সর্বতন্ত্রের্ গোপিতাঃ। যান্ কৃত্বা সম্প্রদায়েন
মন্ত্রী বাঞ্চিত্রমাপুয়াৎ। মলত্রয়মিতি আমব্যং মায়িকং
কার্ম্মণকৈতি। প্রপঞ্চসারে—মায়িকং নাম যোষোত্থং
পৌরুষং কার্মণং মলং। আনব্যং তদ্বয়ং প্রোক্তং নিষিদ্ধং
তদ্মলত্রয়ং। তারমায়ারমাযোগ ইতি। তারমায়ারমাবীজপুটিতং মন্ত্রমকৌত্তরশতং জপেদিত্যর্থঃ। তথাচ বিশ্বসারে—
তারমায়ারমাবীজপুটিতেন জপেদাসুং। শতমকৌত্রবিশ্বব
দীপয়েৎ সাধকোত্রমঃ। ইতি।

অথ কলাবতীদীক্ষাপ্রয়োগঃ । শিষ্যঃ পূর্ববমুপোষিতঃ কৃতনিত্যক্রিয়ঃ স্বস্তিবাচনপূর্বকং সক্ষয়ং কৃর্য্যাৎ। তদ্যথা ও অদ্যেত্যাদি অমুকগোত্রঃ শ্রীঅমুকদেবশর্মা ধর্মার্থকামমোক্ষ প্রাপ্তিকামঃ অমুকদেবতায়া অমুকাক্ষরমন্ত্রদীক্ষামহং করিষ্য ইতি সক্ষয়্য গুরুং রুণুয়াৎ। শিষ্যঃ ও সাধ্তবানাস্তাং গুরুঃ ও সাধ্বহমাদে ইতি। শিষ্যঃ ও আর্চমিষ্যামো ভবস্তং গুরুঃ

মত্র প্রকাশ না করিয়া গোপনে রাখিবে, ইহাকেই গুপ্তি বলে। এই দশ
সংশ্বার সর্বা ভত্তেই গুপ্ত আছে।এইরপ সংশ্বার করিয়া মত্র গ্রহণ করিলে অভীষ্ট- ''বিদি হয়। আনব্য, মায়িক ও কার্মণ, এই ত্রিবিধ মলই বিমলীকরণে দ্রীভূত হয়। স্ত্রী হইতে যে মল উৎপর হয়,তাহার নাম মায়িক মল, পুরুষ হইতে
যে মল জন্মে, তাহার নাম কার্মণ এবং উক্ত উভর বিধ মলই আনব্য মল
লামে বিখ্যাত।

अनस्त होकाविधि कथिछ इरेडिह, होकाशूर्किवर निया छेशवानी थाकिया होकाकित প্রাত: ज्ञानािक निष्ठा कुछा नमाश्रम शूर्कक पश्चिमात्स मःक्षप्त कतिया अकरक वत्रश कतिर्दा निया कत्रस्मार्फ, "अं नाधू ख्वानाछ।" श्रह बाका बनात्म खक्र "अं नाध्वर्थात्न" रेराहे बनिर्दा । जनस्त निया "अं कर्कित्रशार्था खब्दः" बनिर्दा श्रद्ध "अं कर्कत्र" बनिर्दा । जनस्त निया — ভঁজর্চর ইতি। ততঃ গন্ধপুল্পবন্ত্রালন্ধারাদিভি গুরুষভার্চ্য তক্ষ দক্ষিণং জামু ধৃত্বা ওঁ অদ্যেত্যাদি অমুকগোত্রঃ শ্রীজমুক-দেবশর্মা অমুকদেবতায়া মৎকর্ত্তব্যামুকাক্ষরমন্ত্রদীক্ষাকর্মণি অমুকগোত্রং শ্রীজমুকদেবশর্মাণমেভিঃ পাদ্যাদিভি রভ্যর্চ্য গুরুত্বেন ভবস্তমহং রূণে ওঁ রতোহস্মীতি গুরুঃ। শিষ্যঃ ওঁ যথাবিহিতং গুরুকর্ম কুরু। গুরুঃ ওঁ যথাজ্ঞানতঃ করবাণাতি ততোগুরুরাচম্য দ্বারদেশে সামান্যার্ঘ্যং কুর্যাৎ।

অথ সামান্তার্য্যং। ত্রিকোণর্ভভূবিম্বং বিলিখ্য ওঁ আধারশক্তরে নমঃ ইতি সংপূজ্য ফড়িতি মন্ত্রেণ পাত্রং প্রকাল্য
সাধারং শব্যং তত্র নিধায় নমঃ ইতি মন্ত্রেণ জলেনাপূর্য্য অঙ্কুশমুদ্রয়া ওঁ গঙ্গে চেত্যাদিনা সূর্য্যমণ্ডলাতীর্থমাবাহ্য প্রণবেন গন্ধাদীনিক্ষিপ্য ধেমুমুদ্রাং প্রদর্শ্য ওমিত্যইথা জপ্তা দশধাভিমস্ত্রেরেং। তথাচ—ত্রিকোণর্ভভূবিম্বমণ্ডলং রচয়েত্তঃ। অধার

শুক্ষকে বস্ত্রালক্ষাকাদি প্রদানকরিয়া গুক্র দক্ষিণ জামু ধারণপূর্মক বথোক্ত ৰাক্যে বরণ করিবে। পরে গুরু 'ওঁ বৃত্তোদ্মি' বলিবেন এবং শিষা "যথা, বিহিতং গুরুক্ম কুরু" ৰলিবে। তৎপরে গুরু যথাজ্ঞানতঃ করবাণি এই যাক্য বলিবেন। তৎপরে গুরু ঘারদেশে সামান্তার্য স্থাপনক রিবে।

অনন্তর সামান্তার্ঘান্থ।পনপ্রণালী কথিত হইতেছে। সাধক সীর বামভাগে ভূমিতে ত্রিকোণ মণ্ডল অন্ধিত করিবা তাহার বহির্ভাগে বৃত্ত এবং তদান্থে চড়বল্র মণ্ডল অন্ধিত করিবে, পরে এই মণ্ডলের উপরি ও আধার শক্ষরে নমঃ এই মন্ত্রে পূজা করিরা ফট্ এই মন্ত্রে অর্থাপাত্র প্রকানস্থাক মণ্ডলোপরি অর্থাপাত্র স্থাপন করিরা ভত্পরি শুলাদি যথেকে অর্থাপাত্র স্থাপন করিবে। অনন্তর নমঃ এই মন্ত্রে অল্বারা অর্থাপাত্র পূরণ করিবা "ও গলে চ বমুনে চৈব" ইতাদি মন্ত্রে অন্থ্যমুদ্রার স্থামণ্ডল হইতে তীর্থানাহন করিবে এবং অর্থাপাত্রে ও এই মন্ত্রে গরুপুপাদি নিক্ষেপ পূর্বক বিষ্ণুত্রা প্রদর্শন করিবে। অনন্তর অর্থাপাত্রোপরি ও এই মৃত্র অইবার

শক্তিং সংপূজ্য তত্রাধারং বিনিক্ষিপেৎ। অন্ত্রেণ পাত্রং সংশোধ্য क्यारखन প্রপ্রয়েৎ। निःक्रिश्बीर्थ मार्वाश् गक्कामीन् প্রণ-दिन छू। पर्नाराष्ट्रभूद्धाः दे मामार्गाग्रिमः गुजः। ইতি গোত্মীয়বচনাৎ। অফথাপ্রণবজপঃ বিশেষার্ঘ্যে তথাদর্শনাৎ। শক্তাদো তু দশধা তদর্ঘ্যে তথাদর্শনাৎ। পাত্রং তোরৈঃ প্রপূর্য্যাথ প্রণবং দশধা জপেৎ। ইতি ভৈরবীয়াৎ। ফড়িতি जञ्जलन द्वात्रमञ्जा द्वात्रशृकाः क्राए। जन्यथा—**উ**र्का-पुत्रदत्र ७ विश्वाग्न नमः ७ महालदिका नमः। ७ मतस्रदिज नमः प्रकिन्नाथायाः ७ किञ्नानाय नमः। उत्याः नार्ष खँ भक्रारिय नमः खँ यमूनारिय नमः एक्लाः खँ ख्याय नमः । ইতি ক্রমেণ চতুদ্ধারং পূজয়েৎ। নিবন্ধে—দ্বারং মন্ত্রাম্বুভিঃ প্রোক্ষ্য দ্বারপূজাং সমাচরেৎ। উদ্ধোড়ম্বরকে বিল্পং মহা-লক্ষীং সরস্বতীং। ততো দক্ষিণশাখায়াং বিদ্বং ক্ষেত্রেশমন্যতঃ। পাশ্ব দ্বয়ে তথা গঙ্গাযমুনে পুষ্পবারিভিঃ। দেহল্যামর্চয়েদস্তং প্রতিদ্বারমিতিক্রমাৎ। অশক্তশ্চেদ্বারদেবতাভ্যোনমঃ ইত্যে-তাবমাত্রং। ত্রিপুরাদিপূজাদিয়ু স্বতন্ত্রতন্ত্রে—গনেশং ক্ষেত্র-পালक यािशनीः वर्षेकछथा। शकाक यमूनारिक्व लक्नीः वािंगः কিমা দশবার জপ করিবে। গৌতমীতেত্রে অর্ঘান্থাপনের প্রমাণ লিখিত আছে। ভৈরবীয় ভল্লের বচনে জাদা ধায় যে, শক্তি দেবভার অর্যাস্থাপনে क्रवात्रा भाजभूत्रवकात्व क्रव्याभाजाभित्र ७ वह मञ्ज सम्यात क्रभ क्रताहे बाबङ्गा। তৎপরে সাধক ফট্ এই মন্ত্রে দ্বার অভুক্ণ করিয়া দারদেবভার পূका कतित्व। निवक ज्ञा निविज्ञ विधिज वहन काना गात्र (य, ज्ञेक्षाज्यत्व उ विद्यात्र नयः, ७ यहानदेन्त्रा नयः, खिदेव नयः, मत्त्रदेखा नयः, पिक्न भाषाद्य ७, विश्वाय नमः, वामभाशाय ७ क्या क्या नाम नमः, छेखन्या धि ७ नाम दिन ै नमः पिक्निपार्ष ७ यमूनादेव नमः (पर्नीएक ७ जञ्जाय नमः এरक्रिप পুজাও जनश्रा वातरमर्भ बातरमयणात्र পুজা করিবে। প্রত্যেক পুঞাতে

उट्डांबर १९। हे जिरिलयः। देवस्वर्यक—नमः सुनमार्क्षण श्राहरका वनवर है। श्रावरना जलनामां ह स्जरता वित्र वित्र विश्व विश् क्षणवामिन त्याश्रक्त नामगरञ्जल भूक्तरप्र । उर्जा मिकलभाम-शूतः मतः वागणांथाः न्यू नन् मिक्शांकः मटकारुत् गर्थशासः थिविश्व निश्व जाः वाख्यक्षयां नमः ७ जनाः रेजि शृक्रदश्व । ততো দেয়মজেণ দিব্য দৃষ্ট্যাবলোকনাৎ দিব্যান্বিশ্না-सूरमाया व्यञाय कि रेजि मिलि कत्ननाख्यीकगान् विद्या-নুৎসার্য্য বামপাঞ্চি ঘাতত্রয়েণ ভৌমান্ বিদ্বান্থৎসার্য্য ফড়িজ সপ্তজ্ঞান্ বিকিরানাদায় ওঁ অপদর্পন্ত তে ভূতা যে ভূতা ভুবি সংস্থিতাঃ। যে ভূতা বিল্লকর্তারন্তে নশুস্ত শিবাজ্ঞয়।। ইতি বিকিরেৎ। লাজচন্দনসিদ্ধার্থভিমানুর্বাকুশাক্ষতাঃ। विकिता इंडि मन्षिष्ठाः मर्विविष्त्रीधनां मकाः। अनस्तरः (मिनिक्टिला मिनाम्कान्यान्दिनाक्तिः। मिनामू ध्मान्द्राविद्यान्। वञ्चाजिनास्त्रीकशान्। शास्त्रिं घारे जिल्ला विर्वाशन् देखि विश्वािश्ववाद्रार्थ। ততে श्रिक्क जान् मभाषाय परक नाता हमू प्रय প্রক্রিপদন্তমন্ত্রেণ গৃহান্তবিষ্ণান্তয়ে ॥ অপসর্পন্ত তে

আশক ব্যক্তি বেবল ও বারদেবতাত্যো নমঃ এই মন্ত্রে পূকা করিলেই বার পূকা নিদ্ধ হইবে। ত্রিপুরাদেবীর পূকাতে গণেশ, কেত্রপাল, যোগিনী. বটুক, পলা, যমুনা, লল্পী ও শ্বর্শতী, এবং বিষ্ণুপ্রতে নল, স্থান্দ ইত্যাদি, ব্যারদেশে এই সকল দেবতার পূকা কবিতে হইবে। অনস্তর শুক্ষ দক্ষিণপাদপ্রংগর দক্ষিণ শাখা স্পর্শ করত দক্ষিণাঙ্গ সঙ্গোচ করিয়া যাগমগুণে প্রবেশ করিবে। অনস্তর নৈশ্বতকোণে বাস্তপুরুষ ও ত্রনার পূকা করিয়া মূলমন্ত্রে দিব্যুল্টিক্সে অবলোকন পূর্কক অস্তার ফট, এই মান্ত্রে করিয়া গুলমন্ত্রাক্সিক, ভূমিতে বামপার্কিবাত্রের বারা ভূমিণ্ড বিশ্বস্থা নিবারিত করিয়া ফট এই মন্ত্র সংখ্যার কপ ক্রুজ্ বিক্র

हेि मात्रमीयार ॥ मत्यार्गङ्ख—विकितान् विकित्त्रिख সপ্তজপ্তাম্ শবামুনা ইতি। ততো ব্রীং আধারশক্তি কমলাসনায় নমঃ ইত্যাসনং সংপূজ্য ধূজা পঠেৎ 🗗 আসন্-মন্ত্রস্থা মেরুপৃষ্ঠশ্লষিঃ স্থতলং ছন্দঃ কুর্মো দেবতা আসন-পরিগ্রহণে বিনিয়োগঃ। ওঁ পৃথি ত্বয়া প্রতা লোকা দেরি তং विक्थना श्रुण। एक शांत्र मार निजार शविखर कूक ठांमनर। हेि शिवा अखिकामिक त्याभिविष्य जेशिवश विश्वायू -मात्रराष्ट्र। তञ्जाखरत---वार्षा विद्यान् मगूरमार्या शन्हाषाम-নকল্পনং। অথবা চাদনে স্থিত্বা বিশ্বান্থৎসারয়েৎ স্থ্রধীঃ। ততঃ পঞ্চাব্যেন মূলেন মগুপং শোধয়েৎ। তৎপ্রমাণ (गोजभीरम्-- পঞ্চগব্যেন তদেগহং মণ্ডপঞ্চ বিশোধং। পঞ্চগব্যপ্রমাণস্ত তত্ত্রৈব—পলমাত্রং ত্র্প্পভাগং গোমূত্রং ত मिथ প্রস্তিমাত্রং স্থাৎ পঞ্চগব্যমিদং স্মৃতং। অথবা পঞ্চ গব্যানাং সমানো ভাগ ইষ্যতে। মূলমন্ত্রেণ সংমন্ত্র্য তেনৈব পরিশোধয়ে । তেন সর্ববিশুদ্ধিঃ স্থাৎ সর্ববিপাপনিকৃত্তনং । গ্রহণ পূর্বক ও অগদর্গন্ত তে ভূতা ইত্যাদিমন্তে সর্বাভূত নিবারণার্থ পূর্বীভ विकित्र निरम्भ कतिरव। जांक (रेथ) हक्तन, एवंड गर्दभ, ज्ञा, जूका, कूम, व्याजन्यकुन, এই नकन स्रवाह विकित्र विनित्रा श्रामक। व्यावहरू नामाछ-मुखाम ७७ म अर्व कतिया ७ जलाव करे अरे मध्य शृहमर्था निर्क्त कत्रक मसंबिद्धत माखि कतिरय। भरत हो वाश्वतमिक कथनाममात्र समः धारे महत्र जागरमत शृक्षा कतिया जागम धात्र कत्र जागमम्बद्ध रेखाणि

सिक्कि क्षेत्र पृथि पत्रा देखांकि गड गाउँ भूकि चामनविक्कि क्षित्रा

चिकानिक्राम (महे जामत्न जैभरवनन कतिरव। रगोजनीत जल्लाक वर्डान

काना यात्र ८व, नकनवाबात्रा भूका चावत्यावम कतिरव। नकनवा ७ ७०

ততঃ স্বদক্ষিণে পূজাদ্রব্যাণি বামভাগে স্থবাসিতামুপূর্ণ কুছং
হস্তকালনার্থং পাঞ্জান্তরং পূর্তদেশে স্থাপরেৎ। সর্বাদিকু স্থতপ্রদীপাংশ্চ দ্বাপরিষা পূটাঞ্জলিভূ হা বামে ও গুরুভো নমঃ
ও পরমপ্তক্ষভো নমঃ পরাপরগুরুভো নমঃ ও পরমেপ্তি
গুরুভো নমঃ দক্ষিণে ও গণেশায় নমঃ। মধ্যে ও
অমুকদেবতায়ৈ নমঃ। অথাচ—কৃতাঞ্জলিপুটো ভূষা বামে
গুরুত্রয়ং যজেৎ। গুরুঞ্চ পরমাদিক পরাপরগুরুং তথা
পরমেপ্তিগুরুট্ফব প্রণমেদ্বামভাগতঃ। দক্ষিণে চ গণেশানং
মৃর্দ্ধি, দেবং বিভাবয়েৎ। ততঃ ফড়িতি মদ্রেণ গর্মপুল্পাভ্যাং
করো সংশোধ্য উর্দ্ধোর্কতালত্রয়ং দক্বা ছোটিকয়া দশদিখন্ধনং
কৃষ্বা ভূতগুদ্ধিং কুর্য্যাৎ।

অথ ভূতশুদ্ধিঃ। তদ্যথা রমিতি জলধারয়া বহ্নিপ্রাকারং বিচিন্তয়েৎ। ততঃ স্বাক্ষে উত্তানো করো কৃত্বা দোহহমিতি জীবাত্মানং হৃদয়স্থং প্রদীপকলিকাকারং মূলাধারস্থিতকুল-

পরিমাণ বথা—ছথ, গোমুত্র ও ছত এই তিন ত্রব্য প্রত্যেকে ৮ তোলা, গোমর ২ তোলা এবং দধি এক গশুম, এইরূপ পরিমাণে উক্ত ত্রব্য সকল লইরা কার্য্য করা বিধের। অথবা সমপরিমাণ পঞ্চাব্য মৃলমন্ত্রে অভিমন্ত্রিত করিরা কার্য্য করিবে। তৎপরে সাধক খীর দক্ষিণভাগে প্রাক্রব্য এবং বামভাগে ছগজি জলপূর্ণ কুত্ত এবং পৃষ্ঠবেশে হতপ্রকালানার্থ প্রাক্রেরর রাখিবে, তৎপরে মৃত্ত ছালীপ জালিরা করবোড়ে বামে ও জমভ্যো নমঃ, এইকালে পরমঞ্জ,পরাপর গুরু,পরমেটি জল,দক্ষিণে গণেশ ও মধ্যে মৃলমেবভার নমভার করিবে। পরে ফট এই মত্রে গঙ্গপুশবারা করখোধন এবং ক্রমণঃ উপর্ব পরি ভিন্টি করভালকানি করিরা ছোটকাম্ভার মুক্তিগ্রন করিবে। আনছর ভ্তত্তি করিবে। বং এই মত্রে জলাইরা মুক্তিগ্রন করিবে।

कतिया यक्ति व्याकाम हिन्दा कतिर्व धवः योग काम उद्योग कम्बन साशन

ক্ওলিতা সহ সুষ্মাবন্ধনা ম্লাধারস্বাধিষ্ঠানমণিপ্রানাহতবিশুদ্ধান্তাবিদ্ধানি ভিত্তা শিরোবন্ধিতাধোম্থসহন্দ্রদলকমলকর্নিতান্তাপরমান্ধনি সংযোজ্য তবৈর পৃথিব্যপ্তেজোবায়াকাশগদ্ধরসরপস্পর্শন্দকনাসিকাজিজাচক্ষুঃশ্রবণন্ধক্
বাক্পাণিপাদপায়পন্থপ্রকৃতিমনোবৃদ্ধাহস্কাররপচতুর্বিংশতি তত্ত্বানি বিলীনানি বিভাব্য যমিতি বায়ুবীজং ধ্রুবর্ণং বাম
নাসাপুটে বিচিন্তা তত্তা যোড়শবারজপেন বায়ুনা দেহমাপূর্য্য নাসাপুটো ধুন্ধা তত্তা চতুঃপ্তিবারজপেন ক্স্তকং ক্বরা
বামকৃক্ষিন্ধক্ষবর্ণপিপপুরুষেণ সহ দেহং সংশোষ্য তত্তদ্বাত্তিংশবারজপেন দক্ষিণনাসয়া বায়ুং রেচয়েৎ। দক্ষিণনাসাপুটে রমিতি বহিন্বীজং রক্তবর্ণং ধ্যান্থা তত্তা বোড়শবারজপেন বায়ুনা দেহমাপূর্য্য নাসাপুটো ধুন্ধা তত্তা চতুঃঘত্তিবারজপেন ক্সত্তকং ক্রা পাপপুরুষেণ সহ দেহং মূলাধারন্থিতবহ্নিনা দগ্ধ্যা তত্তা দ্বাত্রিংশবারজপেন বামনাসয়া ভন্মনা সহ

করিয়া সোহং এই মরে প্রদীপকলিকাকার হাদরহিত জীবাছাকে মৃশাধ্রহিত কুলকুগুলিনীর সহিত যুক্ত করিয়া অধুয়াবছে মৃলাধার, স্থাধিষ্ঠান,
মলিপুর, জালাহত বৈশুদ্ধ ও আজাধা, এই বট্চক্র ভেদ করিয়া শিরংস্থিত
জধোমুথ সহস্রদল কমলের কর্নিজর্গত পরম শিবে সংঘোজিত করিবে
এবং তাহাতে পৃথিবাদি চত্র্বিংশতি তম্ব বিশীন করত বং এই বায়্বীজ্প
বামনাসাপুটে চিন্তা এবং ঐ বীজের ষোড়শবার জপদারা হেছ পূর্ব করিয়া
উভন্ন লাগাপুট ধারণ করত ঐ বীজের চতৃঃষ্টিবার জপ দারা কুন্তক করিয়া
বাম্কুক্ষিন্থিত ক্রঞ্চবর্গ পাপপুরুষের গৃহিত দেহ শোষণ করতঃ ঐ বীজের
হাজিংশৎবার ক্ষণ দারা বায়ু পরিত্যাগ করিবে। জনস্কর দক্ষিণ নাসাতে
রুক্তবর্গ রং এই বহিনীজ ধ্যান করিয়া ঐ বীজ বোড়শবার ক্ষপ করতঃ
বাস্থাবা দেহ পূরণ করিয়া নাসিকাদ্য ধারণ পূর্ক্ত ঐ বীজের চতৃঃষ্টিবার

वायुः द्रिष्ठद्रिष्ट्। विभिन्नि कस्परीकः शक्रवर्गः वामनाभिक्षिणः धाषा जञ्ज त्याष्ट्रभवातकत्थन लगारहे हसः नीषा नामाधुरही। ধুতা বমিতি বরুশবীজন্ম চতুঃপ্রিবারজন্দেন তত্মাললাটচন্তা-मगलिङ्यध्या याङ्कवर्गाञ्चकया जयखरमर् विव्राग लियिङ পृथीवीकच पाजिश्मवांत्रक्रांत्रम् (पर्श्चपृष्ट् विक्रिष्ठा प्रिक्रांपन বাষুং ব্লেচয়েৎ। যাত্রাসংখ্যয়া বা। তত্তকং গৌতমীয়ে-স্বযুদ্ধা-वर्ज्य ना मिश्विजियद्भिण योजद्रिष् । मह्वाद्र निवस्दि भन-याजानि দেশিকঃ। ধূত্রবর্ণং ততো বায়ুবীজং ষড় বিন্দুলাঞ্তিং। পূরয়েদিড়য়া বায়ুং স্থাঃ ষোড়শমাত্রয়া। মাত্রয়াভু চতুঃ-- ষষ্ট্যা কুম্ভয়েচ্চ স্থয়ুম্নয়া। দাত্রিং শন্মাত্রয়া মন্ত্রী রেচয়েৎ পিঙ্গলাখ্যয়। পুরয়েদনয়া চৈব সঞ্চিন্ত্য নীলমারুতং। রক্তবর্ণং বহ্নিবীজং ত্রিকোণং স্বস্তিকান্বিতং। তেন পূরক-यात्रिम माज्या याष्ट्रभाषाया। ठकूश्यका माज्या ठ निर्माहर কুম্ভকেন তু। বামপার্যন্থিতং পাপপুরুষং কজ্জলপ্রভং। विकार्गानितक्षक वर्गस्ययूक्षयः। व्याभानक्षा युक्रः

জপ হারা কৃষ্ণক করিয়া কৃষ্ণবর্ণ পাপপুরুষের সহিত দেহকে মৃশাধার ছিত

। জারিছার। দাহ করত ঐ বীজের ছাত্রিংশংবার জপ হারা বামনাসিকার বার্
রেচন করিবে। তৎপরে বামনাসিকাতে শুকুবর্ণ ঠং এই চক্র বীজ ধাান
করত ঐ বীজের বোড়শবার জপ হারা ললাটদেশে চক্রকে আনায়ন পূর্বক
উভয় নাসিকা ধারণ করত বং এই বরুপরীজের চতুংবাইবার জপহারা
ললাটত চক্রহুইতে গলিত অমৃত হারা মাতৃকাবর্ণমন্ন সমস্তদেহ রচনা করত
লং এই পৃথী বীজের ছাত্রিংশংবার জপ হারা দেহকে স্বৃত্চিত্রা করিতে
ক্রিতে ছন্দিন নাসিকার বাযু বেচন করিবে। এই বিষরের গোত্সীর
ভল্লের বচন মূলে উত্ত আছি। তৎপরে হংস এই বীজে ক্পালনী ও
শ্বিবাদি চত্রিংশতি তত্ব ষধাস্থানে স্থাপন করিবে। শক্তিবিহ্নে হংসক্রণী জীবাত্বাকে সোহং এই মত্রে পর্যনিবে বোজিত করিয়া পৃথিবাাদি

श्रास्ट्राक्षियाः। जरमःमर्शिभाष्यम् अञ्चलाज्यः। जेभ-পতিকরোমাণং রক্তশাশ্রে বিলোচনং। থড় সচর্ত্তবির্ত্তা कुटको विविधास । मूलाशादाशिएक कि विकिता निर्माहक ত । ' वरः मश्म् अतिर्ा विविश्नमाविश ज्वः। ' ज्याना महिकः मञ्जी द्रिष्ठदाषिण्या श्रूनः। वामनाणाः हेन्द्रवीकः क्रम्बयुजमथाङः ভালেन्यूরां क मः योका जङः योक्न-यां व्या । अयुष्या ह्यूश्वरी ह्यूश्वरी । श्रापा-युजयग्नीः रुष्टिः পकानवर्त्राभिनाः। जग्ना (महः विविधितः यनमा शिक्रनाध्यना। षाजिश्नमाज्या यक्षी नश्नी जन पृष् नरम् । अशान राम्यान श्नारा श्वार छवानि চানীয় স্বন্থানে স্থাপয়েত্ততঃ। ইতি কৃত্বা ভূতশুদ্ধিং মাতৃকা-স্থাসমাচরেৎ। ততঃ হংস ইতি জীবং হৃদয়মানীয় কুল-कुछिनीः शृथिवामीनि यथाश्वान स्राभारा । वित्नसङ्ख শক্তিবিষয়ে। হংস ইতি জীবাদিকং পরমশিবে সংযোজ্য সোহমিতিমন্ত্রেণ স্বস্থানে নয়েৎ। তথাচ তন্ত্রান্তরে—দোহ त्यवः नमां जोवः क्षि नमांन एव । भूति कृ वित्न द्या वर्राशिकत्त-रश्माथाः न पात्र भूता पृष्ठला कर्माहन। न्यवर्गामज्ञकः यां जि मीका छ विकला ज्यवर। मात्रमायाः--

ठर्ज्सिः मिछ छ रथाशात शानन कतिए रहेटन। अहे निरम अभान स्ट्रांस्त्र मिथिक साह्य। नृष्ट्य नटक नातारीका मिथिक साह्य एत, स्वक्षांस्कृदिश नृष्ट रःगः अहे यह स्वतन कतिएन ना, यह नृष्ट रःगः यह स्वतनका, कर्म राहे नृष्ट नद्दक नाम कर्म ६ छाहाँ मीका विक्रम स्थ। मानमाजिनस्य मिथिक साह्य स्म, नृष्ट रूपमञ्जूष्टम नमः अहेनह साम स्विमा कार्य कतिए। विकरस्योगकाह स्वतनिष्ट व्यापका वर्ष

कीनः दशकामानः वाका। मदमामदानं दर्शकदत्र ॥ , अक्रमा भागादमिक्ता विकास विकास निर्माण निर्माण कर्मा । यविद्यायम् । अत्रायायमानः द्योगायः जलिकितिमः भटलिक। वासिशियः स्वाधात्रावटकाकीवः व्यवसार्गन द्रिश्निकः। इर्दमनं शुक्तवादिन भवगावित त्यांकत्वर । जनगार्गः समुना । जिभूवा-माव्यममूक्तद्य--- मश्रयांका जीवमथ ज्रगमभागांकीमार्गण श्रकत-निविक्यिभित्व स्यूषि। ठठ जाः लाहः हेि शर्विषा समि इसर मचा वानविकिशः कूर्याद । कानार्वत—वानविकिया भन्छ-क्लीवः (मटर नियाक्रायः। मूश्रद्धः ममूकार्या इःमस विश-त्रीजकः। जिन्नद्रबर পরযেশানি বিদ্যেয়ং ত্যাক্ষরী মতা। প্রাণ-প্রতিষ্ঠামক্রোহয়ং সর্ববিদ্যাণি সাধয়েৎ। তেনৈব বিধিনা দেবি विद्वीकृर्याधिकः जसः। পুরশ্চরণচন্দ্রিকায়াং—অথ-वाग्रधकारतम क्रिश्विविधीय्र । धर्मकमममूह् उर छोन-नालः स्ट्लांखनः। धेश्रयाखिम्टलाट्नाट्नाः भतः दिवागाकर्निकः। श्रीय्रश्वयाम थ्राराय थारवन थकानिकः। कृषा जदकर्निका मः यः धनीशकलिकानिजः। जीवाजानः स्त्रि धांषा गूल

काना वात्र, त्व, त्व कावा वात्रा नतीत, काकात ७ शृथिवाति कृष नकन एक हरेता क्षवात व्यक्त महिल मरगुक रत, तारे कावात्क कृष्णिक वरन। वात्राबीकात निविष्ठ कारक त्व, तारक मुनाधात रहेटल स्पृत्त वर्षा रूपन-मुनावा कीवाकात्क मन्त्राचात महिल तान कतित्व। विभूतामात्रमूक्त्व निविद्ध कारक त्य, कीवाकात्क मत्राचात महिल मरगुक कतिता कृष्ण क्षित्र काविद्धा क्षेत्रव। ल्रुश्नित विविष्ठ कारक त्या कार त्यांवर वह मद्धा व्यक्ति काविद्धा कात्रव, कामार्थ्य निविष्ठ कारक त्या व्यक्ति क्षित्रक क्षित्रक क्षेत्रमूक्त कात्रव, श्राकृत्वमृहित्तकात्र त्य मर्थकम कृष्णिक विविष्ठ कारक, काला विश्वस्त्रव, व्यक्तिकात्र त्य मर्थकम कृष्णिक क्षित्रक क्षात्रक क्षेत्रमूक्त कात्रव, श्राकृत्वमृहित्तकात्र त्य मर्थकम कृष्णिक क्षात्रक क्षेत्रमूक्त कात्रव, श्राकृत्वमृहित्तकात्र त्य मर्थकम कृष्णिक क्षात्रव, क्षात्रक क्षात्रक श्रीव क्षात्रम्य कात्रव, श्रीव क्षात्रम्य क्षात्रक क्षात्रक क्षात्रक क्षात्रक क्षात्रक व्यक्तिक क्षात्रक क्यात्रक क्षात्रक अधिकार क्लार । अपयोग्या भाषाना वास्त्राम् । अधिकार प्राथमित TIPATULATE TO THE TIPE TO THE वाण गाठ्कामण यमभविष्याधीकरमा गाठ्कामण्ड टार्नित्र । रहना रीजानि अवाः अकर्या अक्रिका कि विकासित निविति छ जवादि सवदा नगः गूर्थ छ शास्त्रीक्ट्र सदम नगः श्रिष अ माष्ट्रका मनवारे जा दिया ने महत्त्वार करणा के माना दिया। वीटकट्डा नगः शाषरग्राः छ यदत्रडाः अक्टिएा नगः। छथा खानांन्द्रन-माष्ट्रकार मृत् दमदिनां ग्राम् भागि निक्खनीर। अपि ज्ञान यन्य गासकीष्ट्रम उठाउँ। त्यका याङ्का त्यती बीक्ट वाक्षनमूठारक। भक्तमञ्ज यद्या एकि यदक्षणाममाठाद्य । जलः कताक्रगाम्भा । जः कः थः शः घः छः जाः जक्रोजाः नगः। है हः हः हः यः थः अः है जर्बनीजाः याहा। छः हे हे णः हर नर छैर यथायां जार त्यहें। जर छर धर पर मर जर वाना मिकाजार ए। उ भर कर यर जर जर मेर के कनिर्णाणार ८वीयके। जार यर तर लर यर मर मर मर लर लर कर जा जलशुक्राधार करे। धावर श्रमशामिय वार कर थर शर घर छर बार क्षत्याय मगः ইতामि। उथाठ खानार्वि—बाः बार मर् क्यमेख हैं से या उपाक्त कर है। या उपाक्त कर कि

जन ग्रमाथारत क्रमक्षणिनीनिक्यक हिन्दा कतिया सम्भा नाम सम्भाषा ज नहिन रमाथ क्रमारे क्षणकि हरेगा पारकः

AND THE RESERVE AND STATE OF THE STATE OF TH

व्यश्वकाष्ट्रका। कारणामः विज्ञानः विकासने हिन्दिनं क्रिकासं विकासने क्रिकास क

मग्रमात्रुष्क नाष्ट्री एकात्रामीन् ग्रामम् वेष्ट्रे श्व्याक्षाः मिन्रक् वकातामीन् गटमक वर्। वाधादत हकूदता वर्गान् ग्रामिन् हर्कत्न। रको क्रमशारा भाषा विषय विश्वापि षू-- এ কৈ वर्ग यूष्ठा यूष्टा या वा वा विष्ठ दि । यदा विष्ठ विष्ठ বিন্যাস আন্তরঃ পরিকীর্তিতঃ। অথান্তর্মাতৃকান্যাদো মূলা-थाति ठकूर्मिल । अवर्गाट वन्यमठकूर्वर्गविकृथित । यकुमल रिक्राञिनरि याधिष्ठारिनर्नकिषि । वज्रियंतरेनयूरिक विरिध यण् जिन्छ ञ्चा । মণিপূরে দশদলে নীলজীমূতসন্ধিতে। **डा** मिकाञ्चमरेलर्यू एक विद्यास्थिष्ठ मञ्जादक । व्यनाश्टल भामभादत প্রবালরু চিসন্নিভে। কাদিঠান্তদলৈযু ক্তে যোগিনাৎ হৃদয়-ঙ্গমে। বিশুদ্ধে যোড়শদলে ধূত্রাভে স্বরভূষিতে। আজাচত্রে षू ठक्तां जिन्त इक्नलाञ्चित । मर्ञात रिमनि मर्य-বর্ণবিভূষিতে। অকথাদিত্রিরেখাত্মহলক্ষত্রয়ভূষিতে। তশ্মধ্যে পরবিন্দুশ্চ স্থাষ্ট্রন্থিতিলয়াত্মকং। এবং সমাহিতমনা ধ্যায়েম্যা-দোহয়মান্তরঃ।

সপর্যান্ত চারিবর্ণ এবং ক্রমধ্যন্তিত ছিদলপত্মে "হক্ষ" এই ত্ইবর্ণ বিক্র্ত্ত করিয়া স্থাস করিবে। এই বিবরে জ্ঞানার্গবের প্রমাণ মূলে উদ্ধৃত আছে। এইরপে আন্তরিক স্থাস করিয়া বাহ্যাস করিবে। অন্তর্মাতৃকা স্থাস মনে মনে করিতে হইবে। বিফুবিষরে আধারাদি শিরোহন্ত বট্পত্মে স্থাস করিবে। মূলাধারন্তিত স্থবণিত চতুর্দ্দশপত্মে ব শ ব স এই চারি বর্ণ, লিক্সুলন্তিত বিহাতাত বড়্দলপত্মে ব হইতে ল পর্যান্ত হব বর্ণ, নাভিম্ল-ছিত নীলমেষ্প্রত দশদলপত্মে ত হইতে ফপর্যান্ত দশবর্ণ, প্রবালকচিসরিত হারন্তিত ছাদশল অনাহতপত্মে ক্যারান্তি ঠকারান্ত ছাদশ বর্ণ, কণ্ঠন্থিত হ্মবর্ণ বোড়শ্দলপত্মে অকারাদি বোড়শ স্বর্ণ এবং ক্রমধ্যন্তিত, চক্রবর্ণ

ততো বাহুমাত্কাধ্যানং। পঞ্চাশল্লিপিভির্বিভক্তমুখদোঃপন্মধ্যবক্ষঃস্থলাং। ভাস্বশ্যেলিনিবদ্ধচন্দ্রশকলামাপীনতুঙ্গন্তনীং। মুদ্রামক্ষগুণং স্থাট্যকলসং বিদ্যাঞ্চ হস্তামুদ্রি
বিজ্ঞাণাং বিশদপ্রভাং ত্রিনয়নাং বাগ্দেবতামাশ্রয়ে। এবং
ধ্যাত্মা অদেৎ। তত্রাঙ্গুলিনিয়মন্তন্ত্রে—ললাটেইনামিকামধ্যে
বিঅদেশ্ম খপঙ্কজে। তর্জ্জনীমধ্যামানামা রন্ধানামা চ
নেত্রয়োঃ। অঙ্গুচং কর্ণয়োর্ন্তি কনিষ্ঠাঙ্গুষ্ঠকৌ নসোঃ।
মধ্যান্তিশ্রোগগুয়োন্ত মধ্যমাঞ্চেষ্ঠয়ের্ন্তদেহ। অনামাং দন্তয়োর্ন্তি মধ্যমামূত্রমাঙ্গকে। মুখেইনামাং মধ্যমাঞ্চ হস্তে পাদে
চ পার্বয়োঃ। কনিষ্ঠানামিকামধ্যান্তান্ত পূর্ষে চ বিশ্তদেহ।
তাঃ সাঙ্গুষ্ঠা নাভিদেশে সর্ব্বাঃ কৃক্ষো চ বিশ্তদেহ। হৃদয়ে
চ তলং সর্বমংশয়োশ্চ ককুৎস্থলে। হৃৎপূর্বং হন্তপ্রক্রুক্তি

দিদলপদ্মে হক্ষ এই ছই বর্ণ স্থাস করিবে। তৎপরে হিমবর্ণ সহস্রারপদ্মে উক্ত সর্ববর্ণ ভাবনা করিবে। এইরূপে নিবিষ্টচিত্তে স্থাস করিয়া বাহ্য স্থাস করিবে।

ত বাহ্ মাতৃকাতাদের প্রথমে মাতৃকাদেবীর ধ্যান করিয়া ভাস করিতে হইবে। মাতৃকাদেবীর শরীর অকারাদি পঞ্চাশ্বর্ণময়, ই হার লগাটে উজ্জন চক্র নিবক্ষ আছে, স্তন্তর অতি স্থল এবং চারিহন্তে মুলা, জিপমালা, স্থাপূর্ণ কলস ও বিদ্যা ধারণ করিয়াছেন, এবছুতা বিশদপ্রতা, ত্রিনয়না, বাগেদ্বতাকে আক্রম করি, এইরূপ ধ্যান করিয়া ভাস করিতে হইবে। ভাসবিবরে অসুলি নিয়ম কথিত হইতেছে। লগাটদেশে অনামিকা ও মধ্যমাসুলিয়ারা ভাস করিবে, এইরূপে মুখে তর্জনী, মধ্যমা ও অনামিকা, নেতৃত্বয়ে বৃদ্ধা ও অনামিকা, কর্ণবরে অসুষ্ঠ, নাসিকাদ্বরে কনিষ্ঠা ও অসুষ্ঠ, গওরুরে তর্জনী, মধ্যমা ও অনামিকা, ও অনামিকা, ও গুরুরে মধ্যমা, দন্তপঙ্ জিন্বরে অনামিকা, মন্তকে মধ্যমা, মুথে অনামিকা, ও মধ্যমা, হতে, পদে, পার্ম্বে ও পৃঠে ক্নিষ্ঠা, অনা-

মুখেয়ু তলমেব চ। এতাশ্চ মাতৃকামুদ্রাঃ ক্রমেণ পরি-कीर्दिणाः। অজ্ঞাত্বা বিশ্বদেদ্যন্ত স্থাদঃ স্থাত্ত নিম্বলঃ। ইতি। গৌতমীয়ে—ললাটমুখর্ত্তাক্ষি-শ্রুতিন্তাণেয়ু গওয়োঃ। उर्छम्टिं ভ्याञ्चाञ्च एमाः भरमका श्रादक्ष ह । भार्षरग्राः भूष्ठेर्छ। नार्छो कठरत रुपराश्र्भरक। ककूमाः एम ह रूर्श्वभावि-পাদযুগে তথা। জঠরাননয়োন্য মাতৃকার্ণান্ যথাক্রমং। जन्यथा— यः नत्या ललाि याः नत्या यूथवृत्व हैः केः **ठकुर्याः छे** छे कर्रयाः थः श्रः नमाः कः इः गख्याः धः . ७८ छ अ व्यथदत । ७१ छ क्रिम एख ७१ वारधाम एख वार बकातरक षाः मूरथ। कः मक्षवाञ्मूल यः कृतित गः मिवरक्ष घः विञ्चलमका धारक्यू। धवः छे ४ ४ ७ ७ । १ मक्क शाम्यूलमका-शक्य। शः मक्तभाष्यं कः वामभाष्यं वः भूष्ठं छः नाष्टी यः উদরে यः হৃদি রং দক্ষিণবাহুমূলে লং ককুদি বং বাম-वाङ्गृत्न भः क्रमामिनककरत यः क्रमामिवायकरत मः क्रमामि

मिका ७ मधामा, नांकितिन किनिष्ठी, जनांमिका, मधामा ७ जक्ष्ठे, উत्तत प्रक्ता क्रूलि, वक्षः ख्राले, जर्नाहत क्रूलि, क्ष्मानि हर्छ, क्षांनि शिक्त, क्षमानि हेन्छ, क्षांनि शिक्त, क्षमानि हिन्द ७ ह्रानि मूर्थ ह्छ हल्वाता छात्र कित्र (वह्न क्ष्माने मूर्थ ह्छ हल्वाता छात्र कित्र (वह्न क्ष्माने मूर्य क्षिण हहेल। वह मूर्या नां कांनिया एवं वाख्यि वहें छात्र कर्त्व, छाहात्र छात्र विकल हहेर्द। (वोष्ठमीयष्ठ माष्ट्रकाछारत्र द्रानियम लिथिष खाहि, यथा—ललांहे, मूर्य, ह्र्यू, कर्य, नांतिका, व्रञ्ज, ख्रह्म, क्ष्मानियम लिथिष खाहि, यथा—ललांहे, मूर्य, ह्र्यू, क्ष्मानियम क्ष्मानिय ७ ह्र्युनानां अ, वार्ष्वय, वृहे, नांकि, जेनत, ह्राम्ब, अक्ष्मय, क्ष्मु, ह्र्युनियमि छ ह्र्युनानां अ, वार्ष्वय, वृहे, नांकि, जेनत, ह्राम्ब, अक्ष्मय, क्ष्मुन, ह्रानि ह्राम्ब, ह्रानि वाल, ह्रानि वाल, ह्रानि क्ष्मु, ह्रानि वाल, ह्रानि वाल, ह्रानि वाल, ह्रानि मूर्थ वहेनकल ह्रान्त छात्र कितरवाल वालहे ध्रानि नरमाछ मह्राम् कितरवाल क्ष्माने कितरवाल ह्रान्त ह्राम्ब

मक्किशामि देश हो विभिन्न कि हो हो हो हो हो है। ज्यो हि स्वाधि है। ज्यो है।

অথ সংহারমাতৃকান্যাসঃ। অস্থা ধ্যানং যথা—অক্ষত্রজং হরিণপোত্রমূদপ্রটক্ষং বিদ্যাং করৈরবিরতং দথতীং ত্রিনেত্রাং। অর্জেন্দুমোলিমরুণামরবিন্দবাসাং বর্ণেশ্বরীং প্রণমত স্তনভারন্ত্রাং। ত্যাসস্ত ক্ষকারাদি অকারাস্তঃ যথা—ক্ষং মনো হুদাদি মুখে ইত্যাদি। অপরঞ্চ চতুর্জা মাতৃকা প্রোক্তা কেবলাবিন্দুসংযুতা। সবিদর্গা সোভয়া চ রহস্তং শৃণু কথ্যতে। বিদ্যাকরী কেবলা চ সোভয়া ভক্তিদায়িনী। প্রজা সবিদর্গা তু সবিন্দুর্বিত্তদায়িনী। বিশুদ্ধের—বাগ্ভবাদ্যা চ বাক্সিন্ধ্যৈ রমাদ্যা শ্রীপ্রদ্ধয়ে। হুল্লেখাদ্যা সর্বসিদ্ধ্য কামাদ্যা লোকবশুদা। শ্রীকণ্ঠাদ্যানিমান্ত্রস্থ

उँ चः नमः, उँ चाः ज्याः हेड्याणि क्राप्त प्रकाणपर्वपाता उठः यात जान कतिर्ड हरेरव।

সংহারমাত্কার স্থাদ এই—"অক্ষেত্রগং" ইত্যাদি ম্লের লিখিত ধানি
পাঠ করিয়া হুলরাদি মুখে ক্ষং নমঃ হুলাদি উদরে হং নমঃ, ইত্যাদিরপে
স্থাদ করিবে। মাতৃকাস্থাদ চারিপ্রকার—কেবল, বিন্দৃত্ত, বিস্দৃত্ত এবং বিন্দৃত্ত ওবং বিন্দৃত্ত ভাগে কিবা, বিন্দৃত্ত ওবং বিন্দৃত্ত এবং বিন্দৃত্ত হাদে বিভাগে হয়। বিশুদ্ধে ভাগে বিভাগে হয়। বিশুদ্ধের ভাগে বিভাগে হয়। বিশুদ্ধের ভাগে বিভিগান হামীল (ঐ') আদি,
শ্রের্থিকামনার শ্রিবীজ (শ্রি') আদি, স্বাদিরিতে মারা বীজ (গ্রা')
আদি, লোক বশীকরণে কামবীজ (ক্রী') আদি, স্থাদি, স্থাদ করিলে কার্যা দিছি

সর্ববসন্তঃ প্রসীদতি। শ্রীবিদ্যাবিষয়ে নবরত্বেশ্বরে—বাগ্ভবাদ্যা নমোন্তাশ্চ কান্তব্যা মাতৃকাক্ষরাঃ। শ্রীবিদ্যবিষয়ে
মন্ত্রী বাগ্ভবাদ্যফীসদ্ধয়ে। জামলে—ভূতশুদ্ধিলিপিক্যাসো
বিনা যন্ত প্রপূজয়েৎ। বিপরীতফলং দদ্যাদভক্ত্যা পূজনং
যথা। সামাক্তক্যাসে অঙ্গুলিনিয়মন্ত গোত্মীয়ে—মনসা
বিক্তসন্থোনান্ পুলেপণৈবাথ বা মুনে। অঙ্গুলামিকাভ্যাং
বা চাক্তথা বিফলং ভবেৎ। বিশেষক্যাসে ভূ নায়ং নিয়মঃ।
শ্যামাদিবিদ্যায়াং বিশেষমাতৃকক্যাসো হস্তি॥

অথ প্রাণায়ামঃ। প্রাণায়ামে অঙ্গুলিনিয়মস্ত জ্ঞানার্ণবে। কনিষ্ঠানামিকাঙ্গুষ্ঠৈর্ঘমাসাপুটধারণাং। প্রাণায়ামঃ স বিজ্ঞেয়-স্তর্জ্জনীমধ্যমে বিনা। প্রাণায়ামো দ্বিবিধঃ সগর্ভো নিগর্ভশ্চ তথাচ—সগর্ভোমস্ত্রজাপেন নিগর্ভোমাত্রয়া ভবেৎ। মাত্রাচ—

হয়। প্রীবিদ্যাবিষয়ে নবরত্বেশবে লিথিত আছে যে, বাধীজাদি নমোস্ক অর্থাৎ "ঐ অং নমঃ" ইত্যাদি রূপে পঞ্চাশহর্ণদারা তাস করিরে। জামসে লিথিত আছে যে, ভৃতশুদ্ধি ও মাতৃকাত্যাস-ব্যতিরেকে যে ব্যক্তি পূজাদি কার্য্য করে, তাহার সেই পূজাদি কার্য্য ভক্তিহীন পূজ্জুল ক্যায় বিফল হইয়া যায়। গোত্মীয়তভ্রোক্ত সামাত্যতাসের অঙ্গুলিনিয়ম নাই, মনে মনে, পূজ্জারা অথবা অঙ্গুই ও জনামিকাদারা ভাসকরিবে, জত্তথা সকল ভাসাদি বিফল হয়। সাধারণ তাসে এই নিয়ম জানিবে, কিন্তু বিশেষ তাসে এই নিয়ম আশ্রম করিবে না, শ্রামাদি বিদ্যবিষয়ে মাতৃকাত্যাসের বিশেষ আছে।

धनस्त श्रीमा कथि इहेएएए। किनिधी धनामिका ६ अनुधे धाना नागिए। धाना किनिया श्रीमाम किनिया श्रीमाम किनिया श्रीमाम किनिया श्रीमाम किनिया भागाम किनिया भागाम किनिया भागाम किनिया भागाम किनिया श्रीमाम किनिया श्रीम किनिया श्रीमाम किनिया श्रीम किनिया श्रीम किनिया श्रीम किनिया श्रीम किनिय श्रीम किनिया श्रीम किनिया श्रीम किनिय श्रीम किनिया श्रीम किनिय श्रीम किनिय श्रीम किनिय श्रीम किनिय श्रीम किनिय श्रीम

বামজামুনি তদ্বস্তভামণং যাবতা ভবেৎ। কালেন মাত্রা मा (ज्ब्या मूनिভिर्द्विष्णात्ररेगः। मूनमञ्जूष्ण वीज्ञण প्रश्नव्या वा सिष्मिवांत्रक्राप्यन वामनामाथूर्णन वाशुः शृत्ररश्र । ज्याह कालिकाञ्च एय-श्रानायायवाः कूर्याम्य तन श्रान्य वा। व्यथवा मजनीत्क्रन यत्थाक्रविधिना इधीः। তত्य ठकुःषष्टिवात-জপেন বায়ুং কুম্ভয়েৎ। তস্ত দাত্রিংশদারজপেন দক্ষিণ नामिकया वायुः द्रिष्ठाय । शूनकिकित्वाश्र्या উভाजाः কুম্ভয়িত্বা বামেন রেচয়েৎ। পুনর্কামেনাপূর্য্য উভাভ্যাং কুম্ভয়িত্বা দক্ষিণেন রেচয়েৎ। সারসমুচ্চয়ে—বিপরীতমতো বিদধীত বুধঃ পুনরের তু তদ্বিপরীতমিতি। যৌগিকে পুনর্মাত্রা-नियमः। তথাচ গৌতমীয়ে—মন্ত্রপ্রাণায়ামঃ প্রোক্তো যৌগিকং कथग्रामि (छ। পূর্য়েদ্বাম্যা বিদ্বান্ মাত্রাষোড়শসংখ্যা। ইতি। यत्रा ठेष्ट्रार्थाफ्नार्खेवात्रज्ञ त्यन পূরকাদিকং কুর্য্যাৎ। অথবা একচতুর্দ্বিবারেণ। তথাচ তন্ত্রাস্তরে—পূরয়েৎ ষোড়শ-ভিব্বায়ুং ধারয়েচ্চ চতুগু গৈঃ। রেচয়েৎ কুম্ভকার্দ্ধেন অশক্ত্যা जबुतीयरेकः। जमभरको जक्षपूर्यः चारमवः थानच मःययः। অস্তা নিত্যত্বমাহ সএব—প্রাণায়ামং বিনা মন্ত্রপুজনে ন হি

প্রণারাম করিবে। তৎপরে চতৃঃষ্টিবার জপদার। কুন্তুক করিয়া দাতিংশদার জপদারা দক্ষিণনাসায় বায়ু রেচন করিবে। পুনর্বার বোড়শবার
জপদারা বামনাসায় বায়ু পুরণ ও চতৃঃষ্টিবার জপদারা কুন্তুক করিয়া
দাত্রিংশদার জপদারা দক্ষিণনাসার বায়ু রেচন করিবে। সারসমূচ্যে
ও গৌভমীয়ভয়ে এই বিশ্রের প্রমাণ আছে। অথবা চারিবার জপদারা
প্রণ, বোড়শবার জপদারা কুন্তুক ও অপ্রবার জপদারা রেচন করিবে। কিমা •
এক বার জপদারা পূরণ, চারিবার জপ করিয়া কুন্তুক ও তুই বার জপদারা

যোগ্যতা। নিবন্ধে—আদাবন্তে চ যদ্ধেন প্রাণায়ামং সমা-চরেৎ। কর্মস্বপি সমস্তেষু শুভেম্বপ্যশুভেষু চ। গোপালে তু বিশেষো বক্তব্যঃ॥

ততঃ পীঠন্তাসঃ। ওঁ আধারশক্তয়ে নমঃ এবং প্রকৃতিত্য কূর্মায় অনন্তায় পৃথিবৈত্য ক্ষীয়সমূদ্রায় শেতদীপায় মণিমগুপায় কয়য়য়য়য় মণিবেদিকায়ে রত্বসিংহাসনায়। এতৎ সর্ববং ছদি। ততো দক্ষিণস্কমে ধর্মায় বামক্ষমে জ্ঞানায় বামোরে বিরাগ্যায় দক্ষিণোরে ঐশ্বর্যায় মুখে অধর্মায় বামপার্শে অজ্ঞানায় নাভৌ অবৈরাগ্যায় বামপার্শে অনৈশ্বর্যায় সর্বত্ত প্রণবাদিনমোন্তেন ক্যসেৎ। তথাচ সারদায়াং—অংশোক্ষ-মুখয়ো বির্দ্ধান্ প্রদিশ্বেণান সাধকঃ। ধর্মাং জ্ঞানক বৈরাগ্যামগুলায় বাদক্ষিণ্যেন সাধকঃ। ধর্মাং জ্ঞানক বৈরাগ্যামগুলায় আদক্ষিণ্যেন মাধকঃ। ধর্মাং জ্ঞানক বৈরাগ্যামগুলায় বাদক্ষলায়নে নমঃ উৎসোমমগুলায় বোড়ক্মক্রাজ্মনে নমঃ এবং পদ্মায় অংস্ব্রামগুলায় বাদক্ষলায়েন নমঃ উৎসোমমগুলায় বোড়ক্মক্রাজ্মনে নমঃ সংস্থায় রং রক্ষসে তং তমসে আং আজ্মনে অং অন্তরাজ্মনে ক্রী জ্ঞানা-

বেচন করিবে। তন্ত্রান্তরে ইহার প্রমাণ শিধিত আছে। পূজাদি কার্য্যে প্রণাথাম অবশু কর্ত্তব্য, প্রণাথাম ব্যতিরেকে মন্ত্রজ্ঞপ ও পূজাদিতে অধিকার হয় না। নিবদ্ধে শিখিত আছে বে, গুভাগুভ সমস্ত কার্য্যের আদিতে ও অত্তে প্রাণাথাম করিতে হইবে। প্রাণাথামে গোপালবিবরে বাহা বিশেষ আছে, স্তাহা পরে ক্থিত হইবে।

वहें सन भीठे जान क्षणांनी विद्रक बहे दक हैं। वहें जारमत मह ल हान म्राम क्षण है निश्चिक व्यादक, मृष्टिक त्रिराण है वहें जारम विषय मकन वृत्ति हैं। भाति विश्व विश्व व्यादम विक व्यादक, रमहें रमहें छारम इस्त क्षणांम-भूति व व व्यादा समः हें जो कि मृर्ण त निश्च महत्र जाम क्षित्व ম্বানে নমঃ ইত্যন্তং বিশ্বস্থ হৃৎপদ্মশ্য পূর্বাদিকেশরেষু পীঠ-শক্তীর্মধ্যে পীঠমনুঞ্চ শুদেং। যথা সারদায়াং—অনস্তং হৃদয়ে পদ্মং তশ্মিন্ সূর্য্যেন্দুপাবকান্। এষু স্বস্বকলাং শুশু নামাদ্যক্ষরপূর্বতঃ। সম্বাদীন্ ত্রিগুণান্ শুশু তত্রবাত্র গুরুত্রমং। আত্মানমন্তরাত্মানং পরমাত্মানমেব চ। জ্ঞানাত্মানং প্রিশুশু শুদেং পীঠমনুং ততঃ॥

অথ ঋষ্যাদিন্সাসঃ। ঋষিস্ত — মহেশ্বরমুখাজ্জাত্বা যঃ
সাক্ষাত্তপদা মনুং। সংদাধয়তি শুদ্ধাত্মা দ তম্ম ঋষিরীরিতঃ। গুরুত্বামস্তকে চাম্ম ন্সাসন্ত পরিকীর্তিতঃ। দর্বেষাং
মন্ত্রত্বানাং ছাদনাচ্ছ দ উচ্যতে। অক্ষরত্বাৎ পদত্বাচ্চ মুখে
ছন্দঃ দমীরিতং। দর্বেষামেব জন্তুনাং ভাষণাৎ প্রেরণাত্তথা।
হৃদয়াজ্যোজমধ্যস্থা দেবতা তত্র তাং ন্যুসেৎ। ঋষিচ্ছন্দোহপরিজ্ঞানান্ন মন্ত্রফলভাগ্ভবেৎ। দৌর্বল্যং যাতি মন্ত্রাণাং

এই পীঠग्रामের প্রমাণস্করপ যে সকল বচন সারদাতিলকে লিখিত আছে, ঐ সকল বচন মূলে উদ্ভ হইয়াছে।

শ অনস্তর যেরপে থায়াদিসাদ করিতে হইবে, তাহার প্রণালী কথিত হইতেছে। যে শুদ্ধান্ধা ব্যক্তি প্রথমে মহেশরের বদন হইতে যে মন্ত্র প্রবণ করিয়া তপস্তাদ্ধারা দিন্ধিলাভ করিয়াছেন, তিনিই দেই মন্ত্রের ঋষি, এই শ্বিই আদি গুরু, এই নিমিন্ত মন্তকে ঋষিস্তাদ করিয়া থাকে। ছদ্দ দকল দর্বপ্রকার মন্ত্রত্বাদিকে আছোদন করিয়া রাথে, এইহেতু ছদ্দ এই নাম হইয়াছে। ছদ্দদকল অক্ষর ও পদঘটিত, দেই অক্ষর ও পদ মুথ হইতে প্রকাশ পাইরা থাকে, এই নিমিত্র মুখে ছদ্দশ্রাদ করা কর্ত্ব্য। যিনি দকল প্রাণিদিগকে দর্বপ্রকার কার্য্যে প্রেরণ করেন, তিনিই দেবতা, অতএব হংপপ্রের ফল লাভ করিতে পারে না, আর বিনিযোগের অঞ্চানে মন্ত্র ত্র্মণ হয়।

বিনিয়োগমজানতাং। তন্ত্ৰান্তরে—ঋষিং অদেম দ্ধি, দেশে ছলপ্ত মুখপক্ষজে। দেবতাং হৃদয়ে চৈব বীজন্ত গুহুদেশকে। শক্তিঞ্চ পাদয়োশ্চৈব সর্বাঙ্গে কীলকং অদেৎ। ততন্ত তত্ত্বান্ত্রোক্ত-আসান্ কুর্যাৎ। তহুক্তং জ্ঞানার্ণবে। আগমোক্তেন বিধিনা নিত্যং আসং করোতি, যঃ। দেবতাভাবমাপ্নোতি মন্ত্রসিদ্ধিঃ প্রজায়তে। যো আসকবচচ্ছন্দো মন্ত্রং জপতি তং প্রিয়ে। দৃষ্ট্বী বিদ্বাঃ পলায়ন্তে সিংহং দৃষ্ট্বী যথা গজাঃ। অকৃত্বা আসজালং যো মূড্রাৎ প্রজপেন্মনুং। সর্ববিদ্যঃ স বাধ্যঃ আন্ত্রাইন্রর্ম্গশিশুর্যথা॥

অথাঙ্গন্তাসঃ। তত্র অঙ্গুলিনিয়মঃ—ত্রিদ্বোকদশকত্রিদ্বি-সংখ্যয়া শৈলসম্ভবে। অঙ্গুলীনামিতি বচনাদিতি সর্বত্র সাধারণং। যামলে—হদয়ং মধ্যমানামাতর্জ্জনীভিঃ স্মৃতং

অন্ত তত্ত্বে লিখিত আছে যে, মন্তকে ঋষি, মুথে ছন্দ, হাদরে দেবতা, গুছে বীজ, পাদৰয়ে শক্তি এবং সর্বাঞ্চে কীলক ন্তাগ করিবে। আর প্রথমে ঋষ্যাদিন্তাগ করিয়া তত্ত্বমন্ত্রোক্ত বিশেষ বিশেষ ন্তাগ করিবে। জ্ঞানার্গবে লিখিত আছে যে, যে ব্যক্তি আগমোক্ত বিধানে নিত্যন্তাগ কবে, সেই ব্যক্তি দেবত্ব পাইয়া। খাকে এবং তাহার মন্ত্র পিদ্ধি হয়, যে ব্যক্তি ন্তাগাদি করিয়া দেবতার মন্ত্র জপ করে, তাহাকে দর্শন মাত্র হন্তী যেমন সিংছ দেখিয়া পলায়ন করে, সেইরূপে পাপসকল পলায়ন করিয়া যায়। আর যদি অজ্ঞান বশতঃ ন্তাগাদি না করিয়া মন্ত্র জণ করে, তাহাহইলে ব্যাঘ্র যেমন মৃগশাবককে আক্রমণ করে, বিশ্বসকল সেইরূপ সাধককে আক্রমণ করিয়া থাকে।

অনম্বর অঙ্গলাদের অঙ্গলিনিয়ম কথিত হইতেছে। ক্রমত জিন, তুই, দশ, তিন ও তুই অঙ্গুলিদারা হৃদয়াদিতে ষড়ঙ্গলাদ করিতে হইবে। যামলে লিখিত আছে যে, মধ্যমা, তর্জনী ও অনামিকা, এই তিন অঙ্গুলিদারা কৃদ্যে, মধ্যমা ও তর্জনীদারা শিরে, অঙ্গুলিদারা শিথা স্থানে, স্কাঙ্গুলি भितः। यथायां उर्जनी जाः सामक्रिक भिषा उथा। मभिकिः कवरः (थाङः जिष्ठिर्जियोतिषः। (थाङात्र्नीजा-মন্ত্রং স্থাদঙ্গকুপ্তিরিয়ং মতা ইতি। তিস্থভিন্তর্জনীমধ্যমা-नामाण्डिः। उर्जनीमधामामा (थाका निववास कमार। यिन निज्ञा श्वाकः जना जर्जनीयधास्य। देजि ताचत्ज्छे-श्रु विकार अपन्न विकार अपने अपने अपने अपने । अपने प्राप्त नगः পূर्वरः भितरम विश्ववल्या। भिथारेय वयिष्कूरकः কবচায় ভ্নীরিতং। নেত্রত্রায় বৌষট্ স্থাদস্ত্রায় ফড়িতি क्यां । यज्ञ्ञयञ्जानिकाळान् यज्ञ्ञय निर्याक्षरा । প्रकाञ्जानि মনোর্যত্র তত্র নেত্রমন্থং ত্যজেৎ। ইতি সারদাবচনং। বৈষ্ণবে তু অনঙ্গুষ্ঠা ঋজবো হস্তশাখা ভবেন্মদ্রা হৃদয়ে শীর্ষ-কেহিপ চ। অধোহঙ্গুষ্ঠা খলু মুষ্টিঃ শিখায়াং করদ্বনদ্বাস্থলয়ো वर्षाणि ജाः। नाताच्युक्रीफ्र जवाङ्यूग्रकाक्ष्ठेजर्ब्बन्गामिरजा ধ্বনি স্ত। বিশ্বখিশকা কথিতান্ত্রমুদ্রা যত্রাক্ষিণী তর্জনীমধ্যমে অঙ্গহীনস্থা মন্ত্রস্থা স্থেনৈবাঙ্গানি কল্পয়েৎ। তথাচ

वाता करति, छर्जनी, मधामा ও जनामिका এই जिन ज्ञञ्चित्ता निज्यस्त এবং তর্জনী ও মধাमা এই जञ्चित्तप्रवाता कर्यान जाम करित् । यि উপাত দেবতার ছই নেত্র হয়, তাহা হইলে তর্জনী ও মধামাঙ্গুলিলারা নেত্রে ত্যাস করিবে। রাঘবভট্টধৃত বচনে উক্ত আছে যে, হদয়ায় নম:, শিরুসে স্বাহা, শিখাসৈ বষট, কবচায় ছঁ, নেত্রত্রয়ায় বৌষট্ এবং অস্তায় ফট্, এইরপ ক্রমে হদয়াদি স্থানে ষড়স্বভাস করিবে। সারদাভিলকে উক্ত আছে যে, যে স্থানে পঞ্চালভাস উক্ত আছে, সেই স্থালে নেত্র পরিভাগে করিয়া অভ হদয়াদি পঞ্চাকে ভাস করিবে, বিফু পুজাদির ভাসকালে অসুষ্ঠহীন করশাখা ভারা হৃদয়ে ও মন্তকে ভাস করিতে হইবে, এবং অসুষ্ঠমধ্যণত মুষ্টিভারা শিখাতে, উভয়হত্তের সর্মাস্থালারা কবচে, তর্জনী ও মধামান্বারা নেত্রে ভাস ব্রক্ষামলে—সনামান্যকর বাঁজং দর্বেষামভিধীয়তে। ততন্ত্র মন্ত্রন্থাদং কৃষা তত্তৎকল্পোক্তমুদ্রাং প্রদর্শ্য যথোক্তধ্যানং কৃষা মানদেঃ সংপূজ্য শঙ্খন্থাপনং কুর্য্যাৎ। তথাচ সনৎ-কুমারতন্ত্রে—অকৃষা মানসং যাগং ন কুর্য্যাদ্বহির্চ্চনং।

ততোহর্ঘ্যস্থাপনং। তদ্যথা—অর্ঘ্যস্ত ত্রীণি পাত্রাণি পাদ্যস্থাপি ত্রয়ং ভবেং। তথৈবাচমনীয়ানি পাত্রাণি চ বিভাগশঃ। তথা করণদোর্ববলাদেক এব প্রশস্ততে। ষড়াচমনপাত্রাণি ইতি আগমন্তারে পাঠঃ। তথাচ পুরশ্চরণ-চব্রিকায়াং—একস্মিমথবা পাত্রে পাদ্যাদীনি প্রকল্পয়েং। ইত্যত্যস্তাশক্রবিষয়ং। কিন্তু সামান্যার্ঘ্যবিশেষার্ঘ্যস্থাবশ্য-কয়ং। তথাচ নবরত্বেশ্বরে—একপাত্রং ন কর্ত্ব্যং যদি

করিয়া অঙ্গুষ্ঠ ও তর্জনীদারা করতলে ধ্বনি করিবে। যে হুলে অঞ্গ মন্ত্র নির্দিষ্ট নাই, সেই স্থলে দেবতার নামের আদিবর্ণ দারা অঞ্গর্জান করিতে হইবে। এইরূপে স্থাসাদি করিয়া তত্তদেবতার মৃদ্রা প্রদর্শন পূর্বক ধ্যান ও তদন্তে মানস পূজা করিয়া শঙ্গুখাপন করিবে। সনৎকুমার তত্ত্বে শিখিত আছে যে, মানস পূজা না করিয়া বাহ্য পূজা আরম্ভ করিবে না।

অর্থ্যাপনের প্রণালী কথিত হইতেছে। অর্থা এবং পাদ্য এই উভয়েরই প্রভাকে তিন তিনটি পাত্র এবং আচমনীয়েরও তিন পাত্র স্থাপিত করিবে। অশক্তিতে এক পাত্রে সমস্ত কার্যা করিবে। আগমাস্তরে আচমনীয় পাত্র ছয়টি করিবে, এইরপ লিখিত আছে। প্রশ্চরণিক্রিকায় লিখিড আছে যে, এক পাত্র হইতে পাদ্য, অর্ঘ্য ও আচমনীয় ইত্যাদি প্রদান করিবে। কিন্তু সামাক্ত অর্ঘ্য ও বিশেষার্ঘ্যের তুই পাত্র স্থাপন করিতে হইবে, ক্লাচ এক পাত্রে উভয় অর্ঘ্য করিবে না। নব রত্তেশরে লিখিত আছে যে, য়ি শিবও প্রক্ত হন, তথাপি একপাত্রে অর্ঘ্য়ে করিবেন না। যদি প্রমাদ বশতঃ কেহ এক পাত্রে অর্ঘ্রিয় স্থাপন করে, তাহা হইলে মন্ত্র

माकागरश्वतः। मञ्जाः পরাদ্ধাথা যান্তি আপদশ্চ পদে। इंश लाक मित्रियः याग्रां ह भण्णा बाजर। ज्था त्राघवভद्वेश्वछ-वठनर । मर्करेखव প্रশক্তোহজঃ শিवमूर्गार्कनः বিনা। অজঃ শঙ্খঃ। অর্ঘ্যপাত্রস্থ মানমাহ লৈঙ্গে— गऐ जिर्गमञ्जलः পाज्य ज्ञर পরিকী ঠিতং। यश यस जिञा-(गानर कनी या प्राप्तनाष्ट्रमर। य्वाय जित्नाग्य खनर कृषा ততুপরি ত্রিপদিকামারোপ্য ফড়িতি শঙ্খং প্রকাল্য ততুপরি সংস্থাপ্য নম ইতি মন্ত্রেণ গন্ধপুষ্পাক্ষতদূর্বাদি তত্র নিক্ষিপ্য विभनजित्न वित्नाभभाक्कशा भूत्न ह शृतराष्ट्र। यथा—कर लः नर यः भः वर लर यः यः यः छः वः यः भर भर नर सः पर थर जर नर एर फर फेर छेर जार यार जर हर हर एर एर पर भर कर बाः बार खेर खर हर कर भ्रार भार खेर खेर हेर बार बार ইত্যানেন। ততো মং বহ্নিমণ্ডলায় দশকলাত্মনে নমঃ ইতি जिপि कि यार वर्षा मुर्या मध्या माम कला प्राप्त नमः है जि

পরাত্ম থ হইয়া বার, পদেপদে তাহার আপদ ঘটে এবং ইহকালে দরিদ্র হইয়া পরলোকে পশুভ প্রাপ্ত হয়। রাহ্বভট্টপুত বচনের মর্ম এই যে, সকল পূজার অর্ঘ্য হাপন কার্য্যেই শহ্মপাত্র প্রশন্ত, কিন্তু শিব ও স্থ্যপূজাতে শহ্মপাত্র বাবহার করিবে না। লিঙ্গপুরাণে লিখিত আছে যে, ষট্ তিংশং অঙ্গুল পরিমিত অর্ঘ্যপাত্র উত্তম,চতুর্ফিংশতি অঙ্গুল পরিমাণ অর্ঘ্যপাত্র মধ্যম এবং লাদশাঙ্গুল পরিমাণ অর্ঘ্যপাত্র অধ্যা। বামভাগে ত্রিকোণমণ্ডলকরিয়া তত্পরি ত্রিপদিকা স্থাপন করিষে, এবং ফট্ এই মত্ত্রে গদ্ধা প্রশানপূর্বক ত্রিপদিকা স্থাপন করিষে, এবং ফট্ এই মত্ত্রে গদ্ধা, পূলা, দ্র্ব্যা ও তত্ত্ব অর্ঘ্যপাত্র নিক্ষেপ করিয়া মূলমন্ত্রে ও বিলোম মাতৃকমন্ত্র অর্ঘ্যপাত্র কলবারা পূরণ করিবে। বিলোম মাতৃকা মূলে প্রতিরূপে লিখিত আছে। তৎপরে মং বহিমগুলার দশকলাত্মনে নমঃ এই ব্লিয়া ত্রিপদিকাতে অং স্থামগুলার ঘাদশকলাত্মনে নমঃ, এই ব্লিয়া শহ্যে এবং উং সোমমগুলার

শঙ্খে উং দোমমগুলায় ধোড়শকলাত্মনে নমঃ ইতি জলে সংপূজ্য ওঁ গঙ্গে চ যমুনেচৈব গোদাবরি সরস্বতি। নর্মদে সিশ্বু कारवित्रि জলেशित्रान् मित्रिविश कूकः। ইত্যানেनाकू ने मूख्या मूर्या-मखनाजीर्थमावाञ् अमूकि (দবি ইহাবহ হই তিষ্ঠ ইতি সহদয়ে দেবতাং তত্রাবাছ হুঁ ইতি তর্জনীভ্যামবগুণ্ঠ্য ব্যড়িতি গালিনী-मूजाः अन्ना वोषिष्ठि जञ्जनः वीका शूनवक्रमरेखः मकनी-কৃত্য গন্ধপুষ্পাভ্যাং তত্র দেবতাং সংপূজ্য তত্নপরি মৎস্থমুদ্রয়া আচ্ছাদ্য মূলমন্ত্ৰঅষ্টধা জপেৎ। তথাচ গৌতমীয়ে—গন্ধপুল্পৈঃ সমভ্যর্চ্য কৃষ্ণাখ্যং ধাম যোজয়েৎ। অফকুতো জপেমান্ত্রং শিখ্যা গালিনীং অদেৎ। অত্র কৃষ্ণপদং তত্তদেবতাপরং। ততো রমিতি মন্ত্রেণ ধেনুমুদ্রাং প্রদর্শ্যান্ত্রেণ সংরক্ষ্য তত্মাৎ কিঞ্চিজ্জলং প্রোক্ষণীপাত্তে নিক্ষিপ্য তেনোদকেনাত্মানং পূজো-পকরণঞ্চ মূলেন ত্রিরভ্যুক্ষ্য পাঠন্তাসক্রমেণ শরীরে ধর্মাদীন্ পূজয়েৎ। তদ্যথা দক্ষিণক্ষন্ধে ওঁ ধর্মায় নমঃ বামে ওঁ জ্ঞানায় ষোড়শকলাত্মনে নমঃ, এই বলিয়া জলে পূজা করিয়া ওঁ গজে চ ধমুনেটেব हेजामि मा ज जाकू मामू मात्र स्वाम खन इहेट जीर्थ आवाइन कतिया ७ जाम्कि मिवि हेरावर रेर जिसे এर वाका चन्नपत्र मिवजात चावारन कतिरव। তৎপরে एँ এই মত্রে ভর্জনীষম ছারা অবগুঠন. ব্ষট্ এই মত্রে গালিনী मूल। श्रामन ७ (वीषि । এই मञ्ज छज्जन पर्नन कत्रिया जनमञ्जाता मकनी। করণ করিবে। তৎপরে গন্ধপুপদারা অর্ঘাপাত্তে দেবতার পূজা ও মৎস্ত-मुजाय आस्हानन कतिया मृनमञ्ज षष्टेवांत्र स्न कतित्व। भोजभीयणस्त निधिज चाट्ह (य, शक्ष भूञ्चाता चर्छना कतिया छे भाष्ठ प्रयक्तांत्र चावाङ्न এवः चौत्र श्रमा श्राम श्रम् कि छ। कतिरव। छन्न खत तः अहे मा अध्या वानमंत ७ करे वह मात्र मःत्रकन कित्रा, वार्यकारहेट किकिए जन . ट्याक्नीभाटक निरक्षभ कतिरव এवः भिर क्वानाता म्नम् व वनतीत्र ও পূজার উপকরণদ্রবা সকল তিন বার অভাকণ করিয়া, পীঠ-

नगः वात्यादती विदाशाय नगः निक्ताता अश्रयाय नगः मूर्थ ज्रथमां ये वामि पर्दि ज्ञाना ये नार्को जरवता गाय पिक १-পার্শ্বে অনৈশ্বর্য্যায় সর্বত্ত প্রণবাদিনমোহস্তেন পূজয়েৎ। তথাচ धर्माः छानक दिवागारिययर्ग्याभागात्वामा । यूथभार्य नाजि-পার্ষেধর্মাদীন্ প্রকল্পরে । হৃদয়ে ও অনন্তায় ও পদায় वाः व्यक्तमञ्जास मान्नकलात्रात छेः माममञ्जास साफ्न कलाजारन यः विक्यि अलाग मनकलाजारन नयः मः मखाग রং রজদে তং তমদে আং আত্মনে অং অন্তরাত্মনে পং পরমাত্মনে ব্রীং জ্ঞানাত্মনে প্রণবাদিনমোহন্তেন मथ। পুষ্পাদ্যৈঃ পীঠমশ্বন্তং তি সাংশ্চ পরদেবতাং। ততো হৃৎপদ্মস্থ পূর্বাদিকেশরেষু পীঠশক্তিং সংপূজ্য মধ্যে পীঠমমুং यरक्र । তত क्रमर्य मूलर्पवर्णः तिर्वा भक्षारेषाः शृक्रदा । তথা । निवस्क निवा निवस्क रिना विना किर्वे ममर्फाराए। তত উত্তমাঙ্গ-হৃদয়-মূলাধার-প্রাদেশু

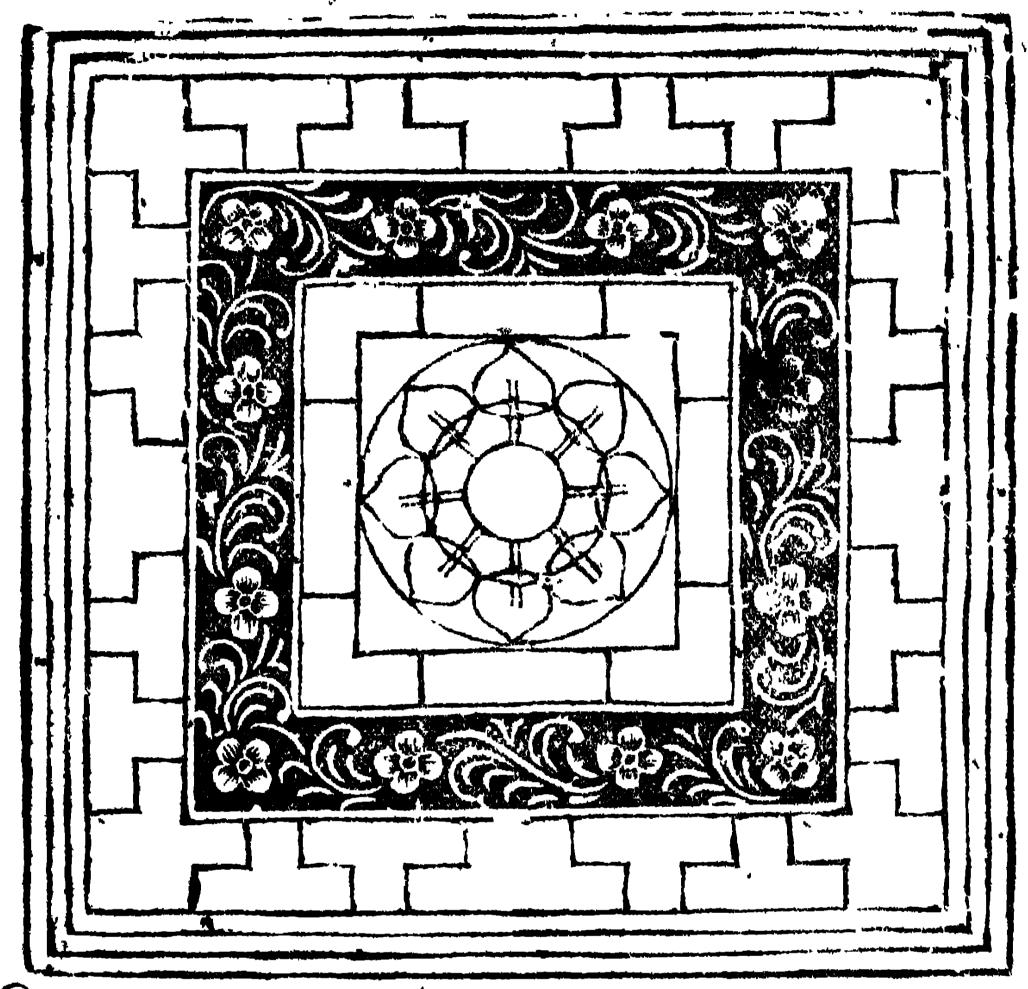
মূলেন পঞ্চ পুষ্পাঞ্জলীন্ দত্ত্বা যথাশক্তি মন্ত্ৰং জপ্তা ওঁ গুছাতি-গুছগোপ্ত্ৰী দ্বমিত্যাদিনা জপং সমৰ্পয়েৎ। তথাচ নিবন্ধে—পঞ্চকৃতস্ততঃ কুৰ্য্যাৎ পুষ্পাঞ্জলিমনশ্বনীঃ। উত্তমাঙ্গছদাধার-পাদস্ববিষ্ণকং শুদেৎ। সৰ্বমেতৎ প্ৰোক্ষণীপাত্ৰশ্ববিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যান্ত ততঃ প্ৰোক্ষণ্যাস্তোয়ং বিস্ক্তা পূৰ্ববিদাপূৰ্য্য বহিঃপূজামারভেৎ তত্ত্ব বক্ষ্যমাণদারদোক্তস্ববিভাজন্মগুলাদ্যখ্য-তমং বিধায় তত্ত্ব পূজ্যেৎ।

অথ দর্বতোভদ্রমণ্ডলং। দারদায়াং—চতুরত্রে চতুংকোষ্ঠে কর্ণদূত্রদমন্বিতে। চতুর্মুপি চ কোষ্ঠেরু কোণদূত্রচতুষ্টয়ং। মধ্যে মধ্যে যথা মৎস্থা ভবেয়ুং পাতয়েত্রথা। পূর্ববাপরায়তে দে দে মন্ত্রী যাম্যোত্রয়য়তে। পাতয়েত্রেরু মৎস্থেরু দমং দূত্রচতুষ্টয়ং। পূর্ববৎ কোণকোষ্ঠেরু কর্ণদূত্রাণি পাতয়য়ঽ। তত্ত কোষ্ঠেরু মৎস্থেরু দদ্যাৎ দূত্রচতুষ্টয়ং। ততঃ কোষ্ঠেরু মৎস্থাঃ স্থাস্তেরু দূত্রাণি পাতয়েহ। যাবৎ শতদ্বয়ং মন্ত্রী

স্থানে পঞ্চপুলাজনি প্রদান করিয়া যথাশক্তি মূলমন্ত্র জপ এবং ওঁ গুঞাত-গুঞ্গোপ্রীয়ং ইত্যাদি মন্ত্রে জপ সমর্পণ করিবে। এই সমস্ত কার্য্য প্রোক্ষণী পাত্রস্থ জলদারা প্রোক্ষণ করিয়া সাধন করিবে। তৎপরে প্রোক্ষণীপাত্রস্থ জল পরিত্যাগ করিয়া বাহ্নপূজা আরম্ভ করিবে। প্রথমতঃ সারদাতিমকোক্ত সর্বতোভ্যাদিমগুলের কোন একটি মণ্ডল নির্মাণ করিবে।

সর্বতোভদ্রমণ্ডল—একটি চতুরত্র অন্ধিত করিয়া কর্ণপ্র পাতধারা ভাহাকে চারিকোষ্ঠায় বিভক্ত করিবে। পুনর্বার ঐ চতুঃকোষ্ঠমধ্যে কর্ণপ্র পাত করিয়া যাহাতে ঐ সকল কোষ্ঠমব্যে সকল কর্ণবেথা সকল অন্ধিত হইতে পারে এইরূপ করিবে। পরে পূর্বপশ্চিমে ও উত্তরদক্ষিণে ছই ছইটী করিয়া রেখাপাত করিতে ছইবে। এইরূপ পুনঃ পুনঃ কোষ্ঠগত কোষ্ঠাতে কর্ণরেথা ও মধ্যরেশা পাত করিবে। যাবং ২৫৬ কোষ্ঠা ছয়, ভাবৎকাল পূর্ববং কোণপ্র

शह्रम्भाग् भाग्याभा जावाद्धरेनव विधिना ज्व मृखानि भाजराद। यहेजिः गजा भरेनचार्या निष्य भाः समक्रगः।



বহিঃ পঙ্ক্ত্যা ভবেৎ পীঠং পঙ্ক্তিয়ুগোন বীথিকা। দ্বার-শোভোপশোভাভ্যাং শিফীভ্যাং পরিকল্লয়েৎ। শাস্ত্রোক্ত-বিধিনা মন্ত্রী ততঃ পদ্মং সমালিখেৎ। পদ্মক্ষেত্রস্থ সংত্যজ্য দ্বাদশাংশং বহিঃ স্থবিঃ। তন্মধ্যে বিভজেদ্ ভিস্তিভিঃ

ও মধ্যত্ত পাভকরিয়া রেখা অন্ধিত করিবে। তংপরে ষট্তিংশং কোঠাতে স্থলকণ পদ্দ অন্ধিতকরিবে। তদাছে এক পঙ্জিতে পীঠ ও পঙ্জিদ্বে বীথি, তদাছে পঙ্জিদ্বে দার, শোভা, উপশোভা ও কোণ্
হবৈ। পরে পদ্দ অন্ধিতকরিতে হববে। পদ্দক্তের দাদশংশি পরিতাগ করিয়া অবশিষ্ট ক্তেকে সমান তিন অংশে বিভক্ত করিবে।
ইহার আদাভাগ কনিকান্থান, বিতীয় ভাগ কেশ্বস্থান ও ভূতীয় ভাগ

দমবিভাগতঃ । আদ্যং স্থাৎ কর্ণিকাস্থানং কেশরাপাং দিতীয়কং। তৃতীয়ং পদ্মপত্রাণাং মুক্তাংশেন দলাগ্রকং। বাছ্যবৃত্তান্তরালস্থ মানেন বিধিনা স্থাঃ। আলিখেরাছ্যবন্তন দলাগ্রাণি সমন্ততঃ। দলমুলের যুগশঃ কেশরাণি প্রকল্পয়েং । এতৎ সাধারণং প্রোক্তং পক্ষজং তল্রবেদিভিঃ। পদানি ত্রীণি পাদার্থং পীঠকোণের মার্জয়েং । অবশিক্তৈঃ পদৈর্কিদ্বান্ পীঠগাত্রাণি ক্রায়েং । পদানি বীথিসংস্থানি মার্জয়েং-পঙ্ক্রভেদতঃ। দিক্ষু দারাণি রচয়েদ্দিচভূংকোষ্ঠকৈস্ততঃ। পদৈস্তিভিরথকেন শোভাঃ মুদ্রারপার্ষয়াঃ। উপশোভাঃ। স্থারেকেন ত্রিভিঃ কোষ্ঠেরনন্তরং। অবশিক্তিঃ পদৈঃ ষড়ভিঃ কোণানাং স্থাচত কুইয়ং। রঞ্জয়েং পঞ্চিত্ববিশিগ্রন্থলং তন্মনোহরং। পীতং হরিদ্রাচূর্ণং স্থাৎ সিতং তণ্ডুলসম্ভবং। কুস্থ-

পত্রস্থান নির্দেশ করিবে। বাহার্ত্তর অন্তরাল পরিমাণে চতুর্দিকে লগ সকল অন্ধিত করিবে। প্রত্যেক পত্রের মৃণে ছই ছইটা করিয়া কেশর অন্ধিত করিবে। পরে পীঠকেত্রের চারি কোণে তিন তিন কোষ্ঠায় চারি পীঠকোণ মার্জনা করিবে, পীঠকেত্রের অবশিষ্ট কোষ্ঠাতে পীঠগাত্র মার্জনা করিয়া ভন্বাহে পঙ্কিন্ধয়ে বীথিস্থান মার্জনা করিবে। তৎপরে চতুর্দিকে সর্ববাহ্ণ পঙ্কিন্ধরের মধ্যত্রলে বাহ্ণ পঙ্কির চারি কোষ্ঠা এবং তত্বপরি পঙ্কির ছই কোষ্ঠা এই ছর্ম কোষ্ঠাতে হার, প্রক্রণে এক কোষ্ঠা ও তিন কোষ্ঠা এই চারি কোষ্ঠাতে শোভা, প্রক্রপ ভিন কোষ্ঠাত উপলোভা অন্ধিত করিরা অবশিষ্ট ছর্ম ছর কোষ্ঠাতে চারি কোম্বাভি উপলোভা অন্ধিত করিবে। এই রূপে চারিদিকে চারি নার, শোভা এবং উপশোভা মার্জনা করিবে। এই রূপে চারিদিকে চারি নার, শোভা এবং উপশোভা মার্জনা করিবে, ইহাতে চারিটি নার, আটটি শোভা ও আটটি উপশোভা ছইবে। পরে এই মণ্ডল পঞ্বর্ণ গুপ্তিকান্ধারা চিত্রিত করিবে। শুমুন্ত-শীত্বর্ণ, তণ্ডুল্র্ন্প-শুক্রবর্ণ, কুমুন্ত-

স্তুর্গরকণং কৃষণং দর্মপুলাকলজং। বিল্লাদিপত্রজং শ্রামমিত্যুক্তং বর্ণপঞ্চকং। অঙ্গুলোৎসেধবিস্তারাঃ সীমারেখাঃ
সিতাঃ শুভাঃ। কর্ণিকাং পীতবর্ণেন কেশরাণ্যক্রণেন চ।
শুভ্রবর্ণানি পত্রাণি তৎসন্ধীন্ শ্রামলেন চ। রজ্ঞসা রঞ্জয়েমাঞ্জী
যদ্মা পীতৈব কর্ণিকা। কেশরাঃ পীতরক্তাঃ স্থ্যরক্রণানি
দলানি চ। সন্ধয়ঃ কৃষ্ণবর্ণাঃ স্থাঃ সিতেনাপ্যসিতেন বা।
রঞ্জয়েৎ পীঠগর্ভাণি পাদাঃ স্থারক্রণপ্রভাঃ। গাত্রাণি তম্ম
শুক্রানি বীথিষু চ চতস্বু। আলিখেৎ কল্পলতিকা দল
পুষ্পসমন্বিতাঃ। বর্ণেনানিবিধেন্চিত্রৈঃ সর্ববৃদ্ধীমনোহরাঃ।
দ্বারাণি শ্বেতবর্ণানি শোভা রক্তাঃ সমীরিতাঃ। উপশোভাঃ
পীতবর্ণাঃ কোণাগুসিতভানি চ। তিস্রো রেখা বহিঃ কার্যাঃ
সিতারক্রাসিতাঃ ক্রমাৎ। মগুলং সর্বতোভদ্রমেতৎ দাধারণং মতং॥

চ্ব-রক্তবর্ণ, শশুহীন ধান্তদগ্ধ চ্ব রক্ষবর্ণ, বিল্পজ্বর্ণ-শ্রামবর্ণ। এক অম্বূলির উৎসেব ও বিস্তার পরিমানে শুক্রবর্ণ সীমারেখা করিবে। তৎপরে কর্নিকা পীতবর্ণ কেশর রক্তবর্ণ ও পদ্মপত্র সকল শুক্রবর্ণ রঞ্জিত করির। শ্রামালবর্ণে সবিস্থান চিত্রিত করিবে। প্রকারাম্বরে কর্নিকা পীতবর্ণ, কেশর সকল পীতবর্ণ কিম্বা রক্তবর্ণ, পদ্মপত্র সকল রক্তবর্ণ, সন্ধি সকল রক্ষবর্ণ, পীঠগর্ত শুক্রবর্ণ কিম্বা রক্তবর্ণ, পীঠগাদ রক্তবর্ণ ও পীঠগাত্র শুক্রবর্ণ করিয়া বীধিচতুইয়ে সর্ব্বর্ণে পত্র ও পৃশ্পসহিত মনোহর কল্পতা চিত্র করিবে। পরে মার সকল শুক্রবর্ণ, শোভা রক্তবর্ণ, উপশোভা পীতবর্ণ ও কোণচতৃইয় রক্ষবর্ণে চিত্রিত করিয়া। মণ্ডলের বহির্দেশে শ্রেতবর্ণ, রক্তবর্ণ ও রক্ষবর্ণ তিন্টী রেখা চিত্রিত করিবে। এইরূপে সাধারণ সর্ব্বভোভদ্রমণ্ডল নির্দ্ধাণ করিতে হটবে। ইহার একটি প্রতিরূপ আন্ধিত করা গেল, দৃষ্টিপাত করিয়া বচনের সহিত্র প্রকা

ততঃ ওঁ মণ্ডলায় নমঃ ইতি মণ্ডলং সংপূজ্য শালিডিঃ কার্থনিনাপ্র্যা তছুপরি তণ্ডলান্ বিস্তীর্যা তেরু দর্ভানান্তীর্যা বিষ্ণরং চাক্ষতসংযুক্তং তত্তপরি ক্তমেৎ ক্রেডা মণ্ডলে এতাঃ পূজ্ঞাহে। তদ্যধা ওঁ আধারশক্তয়ে নমঃ ওঁ কূর্মায় নমঃ ইত্যাদিপীঠনমহন্তং তত্তৎপটলোক্তপীঠপূজাং ক্র্যাহ। ততো মণ্ডলে প্রাদিকিণ্ডেন এতাঃ পূজ্যেই। ওঁ ধূআর্চিষে নমঃ ইত্যাদিকক্যানাণবহ্দেশকলা বিশ্বস্থা পূজ্যেই। ততো হেমাদিরচিত্যক্তঃ ফড়িতিপ্রক্ষাল্য চন্দনাগুরুকর্প্রির্ধ্পয়িত্বা ব্রিস্তণতন্ত্রনা সংবেষ্ট্য ওঁ কুস্তায় নমঃ ইতি গন্ধপূজ্ঞাভ্যাং সংপূজ্য বিষ্ণরাক্ষানাক্ষতনবর্ত্বানি চ প্রক্ষিপ্য প্রণব্যুক্তরন্ কুম্বপীঠয়োরেক্যং বিভাব্য পীঠে স্থাপয়েই। গোতমীয়ে কুম্ববিধানস্তল্প ক্রেণ্ডা তথা তাত্রং মার্ভিক্যা স্বশক্তিতঃ। বিভ্নাচ্যং ন

অনন্তর ও মণ্ডলায় নম: এইবলিয়া পূজাকরিবে, তৎপরে ধান্তবারা মণ্ডলকণিকা পূরণ করিয়া আতপতগুল বিক্ষেপ করিবে। তৎপরে মণ্ডলোপরি নিয়-করিয়া, তত্পরি তণ্ডলযুক্ত বিষ্টর স্থাপন করিবে। তৎপরে মণ্ডলোপরি নিয়-লিখিত দেবতাগণ্যের পূজা করিবে। প্রথমতঃ ও আধারশক্ষে নম: ও কুর্মায় নম: ইত্যাদি প্রকারে তত্তৎপটলোক্ত প্রণালীক্রমে পাঁচদেবভার পূজা করিবে, তৎপর মণ্ডলে প্রকাকরেমে ও ধুমার্চিবে নম: ইত্যাদি বহির দশকলার বিস্তাস করিয়া পূজা করিবে। তৎপরে ক্রব্যাদি নির্মিত কুল্ল ফট্ এই মন্ত্রে প্রজালন করিয়া চক্ষন, অন্তর্ম ও কর্পুরবারা ধূপিত করিয়া জিগুণ প্রভারা বেইন পূর্যক গদপুলারা ও কুন্তার নম: এই মন্ত্রে পূজা করিবে এবং বিষ্টর, আছেপতগুল ও নবরত্ম কুন্তমধ্যে প্রক্ষেপ করিয়া ও এই মন্ত্র উচ্চারণ করতে কুন্ত ও পীঠের ঐক্যভাবনা করিয়া পীঠোপরি স্থাপন করিবে। গোত্মীয়তন্তে লিখিত আছে যে, ক্রব্র, ভৌলা, তান্ত্র অথবা মৃত্তিকাবারা স্বীয়ণক্তি অনুবারে কুন্ত নির্মাণ করিবে, ইহাতে

ক্রীত রতে নিম্বলমাধ্যাৎ। যট্ জিংশদস্লং কৃষ্ণং বিস্তারোমতিশালিনং। বোড়শং ঘাদশ্যাপি ততো ন্যানং ম
কার্যেং। ততঃ কৃত্তে প্রাদক্ষিণ্যেন সূর্যান্ত ওঁ কং ছং
তপিতৈ নমঃ ইতি ঘাদশকলা বিশুন্ত পূজ্যেং। ততঃ কীরক্রুষক্ষায়েণ পলাশস্কুত্তবেন বা তীর্থোদকৈর্বা গদ্ধপূল্পন্থবাসিতজলৈর্বা আত্মাভেদেন মাতৃকাং মন্ত্রক্ষ প্রতিলোমতো
ক্রপন্ কৃষ্ণং দেবতাধিয়া পূজ্যেং। উত্তশক্তর্জামৃতাদিযোড়শকলা জলে প্রাদক্ষিণ্যেন বিশুন্ত ওঁ অমৃতায়ৈ নমঃ।
ইত্যাদিনা সংপূজ্য শন্তান্তরং কীর্দ্রুমক্ষায়াদিদ্রব্যৈরাপুর্যা
গদ্ধান্তকং বিলোভ্য তিয়ান্ জলে সকলাঃ আবাহ্ পুজ্যেং।
শারদায়াং—গদ্ধান্তকঞ্চ ত্রিবিধং শক্তিবিফুশিবাত্মকং। চন্দনা-

বিজের শঠতা করিবে না। যাহার বেষন শক্তি তত্পযুক্ত দ্রবাদারা কৃত্ব নির্মাণ করিবে। কপটতা করিলে কার্য্য বিষল হইবে। ঐ কৃত্ব ঘট্রিংশৎ অঙ্গুল পরিমিত উরতি ও যথোচিত বিজ্ঞৃতি বিশিষ্ট করিবে। অথবা বোড়শাঙ্গুল কিখা দানশাঙ্গুল উচ্চ কৃত্ব করিবে, ইহার নান করিবে না। তৎপরে কৃত্বোপরি প্রান্ধিকক্রমেণ্ড তিলিকৈ নমঃ ইত্যাদি রূপে ক্রেয়ে দানশ কলা বিভাগ করিয়া পূলা করিবে। তৎপরে ক্রিয়া ক্রেয়ে অথবা পলাশবুক্তের বকলের ক্রেয়ার কিছা তীর্ধজল বা অগন্তি অগনাঙ্গার ক্রেয় কুত্ব পূর্ব করিবে। পরে আত্মা ও মন্ত্রের ঐক্য ভাবনা করিয়া দের অগনাঙ্গার প্রতিলোধে অপ করিয়া দেবতা আনে কৃত্তের অর্ভনা করিবে। তৎপরে চক্তের অনুভাদি ঘোড়শ কলা প্রদক্ষিণ ক্রমে কলে বিভাগ করিবে। তথ্যরে চক্তের অনুভাদি ঘোড়শ কলা প্রদক্ষিণ ক্রমে কলে বিভাগ করিবে। ক্রেয়া রুত্ব শুর্বারাণিকারা শত্মম্বার পূর্বা করিবে। শারণাতত্ত্ত লিখিত আছে হৈ ক্রিয়া ক্রায়াকা, বিষ্ণু ও শিব তেলে গর্নাইক ভিন্ন প্রকার। শক্তি গন্ধাইক বথা—

श्वकर्व्वानिक्ष्य विश्वक विश्य र्गकाखेकः विष्ठः । ठमानाखक्रद्वीर्वत्रक्षक्रूम्पनगर्भाः । करियांभी अत्रिवि विस्थितिकार्यकः प्रकः। उन्यनास्यकन्त्र ज्यानजनकूष्यः। कृषिणः कृष्यः पूज्यः प्रकाष्टिकः श्राण्डः। ज्यार्थः। जन्मनाश्रतः कर्ण्त क्षणी कूडूम त्राज्ना किंगाश्मी गाठियांना निकर्गकार्ककः। इन्सनिकदः वाना कूष् कुषुय त्या विवास कि कि विवास कि कि विवास कि कि विवास । कि नाश्चक्र कर्श्व ज्यांन वांना कूकूम त्रक्रामनकूष्मिकि मिवका। **ज्जा**रिंग वर्ट्स्प्रभक्ताः शृक्तरत्र । वर्ट्स्य यार्कितानिष्ण कमा ইহাগছত গছত ইহ তিষ্ঠত ডিষ্ঠত ইহ সমিহিতা ভবত ইত্যাবাহয়েৎ। ততো मूलमञ्जः প্রতিলোমেন জপন্ মন্ত্রস্থা দেবতাং মনসা ধ্যাযন্ আসাং প্রাণপ্রতিষ্ঠাং কুর্যাৎ। छन्यथा पाँ औँ द्वाँ दः मः धूर्यार्कितानिविञ्ननकलानाः

हमान, व्यक्षम, कर्ष्य, क्रक्षणी, क्ष्म, त्यारताहना, कहामाःमी, व गरितामा । ' विक्षणकांद्रेक वर्षा । हमान, व्यक्षण, वाणा, क्ष्म, क्ष्म, त्यंह द्यारम्म, कहामाःगी, व त्यवामः। नियमकांद्रेक वर्षा । हमान, व्यक्षण, कर्ष्य, कर्ष्य, व्यक्षण, वाणा, क्ष्म, व्रक्षणमा, व क्ष्म। व्यव्यक विषय वयामाः व्यव्यक्षण व्यक्षण व्यक्षण व्यव्यक्षण व्यव्यक्षण व्यक्षण व्यव्यक्षण व्यवस्थल व्यवस्यवस्थल व्यवस्थल व्यवस्यवस्यस्य व्यवस्यस्य व्यवस्थल व्यवस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्

MARINE MA मिल्लाम् स्वादानसम्बद्धाः वाचानसम्बद्धाः वाचानस्य वाचानस्य वाचानस्य वाचानस्य वाचानस्य वाचानस्य वाचानस्य वाचानस क्रिक्ट कारा। देखि वानान् व्यक्तिमा नमामिक भूमाधित्राविका विश्वासा नगः। इंडापिता भाषानहार्यः भवतार्थ। जवः बार्कार्यन भ्वतार् व्यापा स्थार्किय नगः। त्रः छत्रारेष नगः। तर सिरिय नयः। यर कालिरिय नयः। भर विकासिय भगः पर स्थिति नगः। मर इक्रभारेश नगः एर किर्निति नमः नः र्यायार्गारम नमः कः करावार्गारम नमः जलाजि প্রত্যেকমাবাহ্ পূজ্যেৎ। ততঃ সূর্যান্ত তপিতাদি মাদশ-कलाः পूर्वदर প्रावशिकां वाह्यां मिकः कृषा शुक्रायेषा ह প্রভাকন্ত পুরুষে । দাদশকলা যথা—তপিনী তাপিনী भूजा महीठी क्लिमी ऋिः। स्यूष्टा जागमा विश्वा वाधिमी शाबिगी क्या। এতাঃ कलाञ्च मूर्याण मूर्यायथलमश्चिणाः। जन्यका कः जः जिलिखा नमः शः यः जिलिखा नमः गः कः भुखारिय नमः घः भः मदीरिष्ठ नमः छः नः क्षितिरेश नमः हः थर सर्टा नमः हर पर श्यूषारिय नमः खर थर एकानपारिय नमः

त्वकात नृषा कतित्व। त्वकावित्यत साम व मत्र'म्टन त्विटि शहित्य । व्यक्ति विद्या करिता विद्या करिता विद्या करिता करित करिता करि

याः उ वियारिय नयः अः भः स्वितिस्य नयः छ ए भारित्यः नगः रे॰ ए॰ क्यारिय नगः। हे जि शुक्रायर मा का म्हर श्राह्म यां वाका প্রত্যেক গন্ধাদিছি: প্রচেষ্ট । তথাচ নিবমে-क जामा। वसमाः भोताः ठेणाखा चामर्मात्रजाः। তত প্জাগে । তদযথা—क व्यव्योग नवः आ॰ यमनोर्य नगः है श्वादेय नगः में इति नगः छ श्रीका नगः छ दोठा नग भ र .ठा नगः सा मिरिया नगः ०९ र्जिन्करिय नगः इर कारेखा नगः अ॰ (ज्या एकारिय नगः की बिरिय नमः छ व्योरिका नमः अर व्यक्षभारेय नम अर अर्गिरिय समः। वा अर्गाम्कारिय समः। नाकर-उर शानाक यावाश् भाषा। पिति ७, भक्तरय । उड कन्दानि भक्षाम १ कलाः श्र जस्य । यथा- एके। मि क्यर्ग विकाम नक्ताः श्रवंतर श्रान-প্রতিষ্ঠাদিক কুরা প্রত্যেক প্রায়ের। প্রত্যেকপ্রনাম্ব--कः एटि नम अं सहिला नम श स्रुटिश नम घ त्रभारिय नगः ७ कि खा नगः ६ लिया नग ५० भ्रता नग ५० खितारिय नम, स खिरिंडा नमः अ॰ मिरका नमः मंख्य-४६९

করিয়া পূলা করিবে। ইহার বিশেষ মূলে দৃষ্টি করিশের জানিতে
পর্ণিরেন। তথপরে অমৃতাশি চত্তের বেডেশ কলার প্রাণপ পি চার্ডি
করিয়া পূলা করে পূজা কার্বে। অমৃতাদি যোড়শকলার নাম ও বীজ
মাল বিধিও আছে। শক্ত চ্ইলে প্রত্যাক সাবাহন করিয়া পালাদি
ঘারা পূলা করা কঠবা। তদনস্তর ক্টাদি প্রাণ্ডি কলার পূজা
ক বলা। পূল্বিং আল্ডাড্ডা ও আবাহনদি পূর্বক কং ক্টো নমঃ

अखाक्यावाञ् भागामिजिः भूकास्। তত उ[°] रः मः स्रुष्ठि াদ্বস্থরন্তরীক্ষণ দক্ষোতা বেদিদদ্তিথিছ রোনদন্ধদর দদ্ত-নদ্যোম সদজা গোজা খাতজা অদ্রিজা খাতং রহদিতি জপু, भावांच्य भाषा शृक्षरायः। ততো জয়ामि টতবগৈর্দশকলাঃ श्रुविव श्रां श्रां शिकः कृषा श्रुक्त स्थ । हे इस् क्रां रिय नमः हैं भालित्य नमः छः भारिखा नमः एः जेश्रदेश नमः गः तर्ति। नमः जः कालिकारेश नमः मः स्लामिरेग नमः धः श्रीटेग नमः नः नीर्गारेय नगः मर्तवा भका । ততঃ ওঁ প্রতিষিধ্বস্তপতে বীর্যোণ মুগোন ভীমঃ কুচরো গরিষ্ঠে। याः शांकव् जिव् विक्रगाः भिक्षां छी ज्वनानि विश्व है जि ज्यु। আবাহা পূজায়ে। ততন্তীক্ষাদিপয়বৰ্গদশকলাঃ পূৰ্ববৰং-প্रावश्वितिकः क्रा श्रुह्म १ शः जिक्रारेम नगः मः (बीजिरिय नमः वः ज्यारिय जः निजिरिय मः जेखा यः भूधारिय तः (क्वाधिरेग नः क्रिय़रिय वर उटकातिर्गा नः यूगरिव नयः। मर्तिक भक्राम्ह প্রতোকমাবাহ্য পাদ্যাদিভিঃ পুজয়েং। ততঃ ও তাত্বকং गङ्गागाः द्रशक्षिः পুष्टिवर्षनः উर्वाक्रक-মিব বন্ধনান্ত্যাশ্ম কীয়মামতাং ইতি জপু বোহা পাদ্যাদিভিঃ

থং ঋতি নম ইত্যাদি এং দিলৈ নম: এই প্ৰান্ত পূজা করিয়া ও হংস ইত্যাদি মন্ত জপ পূৰ্বক ট জয়ারৈ নম: ইত্যাদি সমস্ত দেশতার পূজা করিলে। পরে নং দীর্ঘারৈ নম: এই প্রয়ন্ত পূজা করিয়া ও প্রান্ত বিষ্ণু ইত্যাদি মন্ত্র জপ করিবে। তদনস্বৰ তীক্ষারৈ নম: ইত্যাদি শংমৃত্যবে নম: এই প্রান্ত পূজা করিবে। শক্ত হইলে প্রত্যেকে আবাহন করিয়া পাদ্যাদিবারা অর্চনা করিবে। তংপরে ও লামকং যজামতে ইত্যাদি, মন্ত্র জপ করিয়া আবাহন ও প্রাণ্পতিষ্ঠাপ্রক পীতাদি দেশতার পূজা

পূজয়েৎ। ততঃ পীতাদি মবর্গপঞ্চলাঃ পূর্ববিৎ প্রাণপ্রতিষ্ঠা-मिकः कृशवाश् भागामिन्धिः भूक्षराए। यः भीठारेग मः भ-তारिय्र इर व्यक्त गरिय लर व्यमिकारिय कर व्यमखारिय नमः भक्त-শেৎ প্রত্যেকমাবাহ্য পূজ্যেৎ। ততঃ ওঁ তদিফোঃ পরমং পদং সদা পশান্তি সূরয়ঃ। দিবীব চক্ষুরাততম্। ইতি বিষ্ণুৎ স্মরেৎ। ততো নির্ত্যাদি ষোড়শকলাঃ পূর্ববিৎ প্রাণপ্রতিষ্ঠা-पिकः कृषा व्यावाद्य शृक्षत्यः । जन्यथा—वः निवृद्धिय नमः षाः প্रতिष्ठारेय हैः विमारिय नेः भारेखा छ गिक्षकारेय छः मीशिकारेय याः तिकिकारेय याः गािकिकारेय २९ शतिय हर मृक्यारेय अः मृक्याय्वारय अः खानाय्वारय अः वाभगायिख उँ व्यालिटिश षः व्यागक्रशिय षः यमस्राय नगः भक्रास्ट প্রত্যেকমাবাহ্য পাদ্যাদিভিঃ পুজয়েৎ। ওঁ তদিপ্রাদো विপगरवा जागृवाःमः मिश्रक्ता विस्थिरिए भ्रायः भूमः विस्थार्यानिः প্रकन्नग्रज् इस्ने क्रिशिन शिःषज्। वािषक्रजु প্রজাপতি ধাতা গর্ভং দধাতু তে। গর্ভং ধেহি শিনীবালি গর্জং ধেহি সরস্বতি গর্ভন্তে অশ্বিনো দেবা বাধতাং পুকরশ্রজাবিতি জপ্তাবাহ্য পুজয়েৎ। ততঃ কলাত্মকং

कतित्व ध्वर यः भीजादेव नयः ইजापि कः क्रमखादेव नमः ध्रहे भर्यस भूका कित्रत्व। मक इहेल প্রত্যেক দেবতার পৃথক পৃথক আবাহনাদি করির। भागापि উপচারে পূজান্তে ওঁ ভবিষ্ণে। ইত্যাদি মন্ত্রে বিষ্ণু অরণ করিবে। ভবপরে নির্ব্যাদি যোড়শ কলার প্রাণপ্রতিষ্ঠা ও আবাহন করিয়া অং নির্দ্তাহৈ নমঃ ইত্যাদি অং অনভাবৈ নমং এই পর্যন্ত পূজা করিবে। শক্ত হলৈ প্রত্যেক আবাহন করিয়া পাদ্যাদি উপচারে অর্চনা করিবে। পরে তি ভবিধানো ইত্যাদি মন্ত্র লপ করিয়া আবাহন করিয়া পূজা করিবে।

তিংশশ্বদ্ধং কাথং কৃষ্ণে নিক্ষিপেং। ততাংশ্বদ্ধ পনসচ্তপল্লবৈরিজ্রবল্লীবেষ্টিতিঃ কল্পরক্ষবৃদ্ধা। কৃষ্ণবক্ত্রণ পিধায় তিমান্ কৃষ্ণবক্ত্রে সফলাক্ষতং চষকং কল্পরক্ষফলবৃদ্ধা। স্থাপয়েং। ততঃ কৃষ্ণং নির্মানেন ক্ষোময়ুয়েন সংবেষ্ট্যাম্লেন কৃষ্ণে মূলেন কৃষ্ণে মূলিং নিরমা যথোক্তর্মপেণ দেবতাং ধ্যাম্বা তত্রাবাহনং কৃষা পূজয়েং। মূলমন্ত্র মূচ্চরন্ অমুক ইহাবহ ইহ তিঠ তিঠ ইহ সন্নিধেহি ইহ সন্নিক্ষধ্যম্ব ইত্যাবাহনাদিকং কৃষা ছঁ ইত্যবগুঠ্য দেবতাক্ষে ষড়ঙ্গগাসং কৃষা রমিতি ধেকুমুদ্রয়া অমৃতীকৃত্য পরমীকরণমুদ্রয়া পরমীকুর্যাং। ততঃ প্রাণপ্রতিষ্ঠাং কৃষা বোড়শোপচারেঃ পুজয়েরং। যথা—মূলমুদ্রার্য্য ইদমাসনং অমুকদেবতায়ৈ নমঃ অমুকদেব স্বাগতন্তেইতি স্বাগতং। ততো মূলমুদ্রার্য এতং পাদ্যং অমুকদেবতায়ৈ নমঃ ইতি পাদাম্বলে। এতং শ্রামকদ্র্ব্রাজক্রান্তান

তৎপরে কলাসকপ শহরে কাপ কুন্তে নিক্ষেপ করিবে। এবং অখথ, পনস
ও আত্রপলব ইন্দ্রবলী লতাবারা বেষ্টন করিয়া কলর্কজ্ঞানে কুন্তের মুথ
আচ্চাদন করিয়া সেই কুন্তের মুথ ফল ও তণ্ডু লযুক্ত শ্লাব কলর্কের ফল
জ্ঞানে কুন্তোপরি স্থাপন করিবে। তৎপরে নির্মাল ক্ষোমবন্তাবারা মূলমন্তে
কুন্ত বেষ্টন করিয়া কুন্তে দেয়মন্তের মূর্ত্তি কলনাপূর্বাক যথোকেরপে দেবতার
ধ্যান করিয়া আবাহনানত্তর পূজা করিবে। মূলমন্ত্র উচ্চারণপূর্বাক অমুক দেব
ইহাগছে ইত্যাদি কপে আবাহন ও হুঁ এই মন্তে অবগুষ্ঠনমূলায় অবগুষ্ঠন
করিয়া দেবতার শরীরে বড়কলান করিবে। তৎপরে রং এই মন্তে বেস্কুন্
মুদ্রার অমৃতীকরণ করিয়া পরমীকরণ মূলায় পরমীকরণ করিবে। তৎপরে
প্রাণ্ডেতিটা করিয়া যোড়শোপচারে পূজা কবিবে। প্রথমতঃ রজতানিনির্মিত আসন লইয়া মূলমন্ত্র উচ্চারণপূর্বাক ইদ্মাননং অমৃকদেবতারৈ
নম: এই বলিয়া নিবেদন করিবে। তৎপরে অমৃক দেব স্থাগতত্তে, এই

ভিরীতম। অর্ঘ্যং স্বাহা ইতি গন্ধপুপ্পাক্ষত্যবকুশাগ্রতিল-मर्मभृद्वी चाक भर्गाः भिविम ममा। विकार कू व्यर्गानि-क्रायरिवर (परायिति वपश्चि। जानीवर्यक्रकालाञ्चक्याह-भनीयः बन्दन नन्ता । अधागद्य वन्दन नन्तान्विभनीयकः ইত্যত্র স্থাপাঠং কুর্ববন্তঃ স্থাশব্দস্থামূতবাচকত্বাদমূতশব্দস্থ জলবাচক হাদিদমাচমনীয়ং বমিতি বদন্তি। তথাচ-মধুপর্কং ততো দদ্যাজ্জলমন্ত্রেণ দেশিকঃ ইতি বচনাৎ। ন চ মধুপর্ক-মাত্রবিষয়মিদৎ স্থাত্মনা ততঃ কুর্য্যাম্মধুপর্কং মুখামুজে। তেনৈব মন্থনা কুর্য্যাদন্তিরাচমনীয়কম্ ইতি বচনাৎ। তথা— বারুণেন চ মস্ত্রেণ দদ্যাদাচমনীয়কং। এতদ্বচনং শূদ্রবিষয়-কমিতি কেচিৎ। বস্ততম্ভ ইচ্ছাবিকল্পঃ। মৈথিলাম্ভ স্বধা-পাঠৎ কুর্ববন্তি ন হুধেতি বকারস্থ ত্যাগাবোধকত্বাৎ। কিঞ ত্যাগার্থকস্বাহাশব্দেনার্ঘ্যদানবিধানাৎ। তৎসমভিব্যাহ্যতা-চমনীয়দানে ত্যাগার্থবাধকত্বেন স্বধামন্ত্রো যুজ্যতে নতু বমিতি। তথাচ--নমঃ স্বাহাস্বধাবষট্বৌষড়িতি যথাক্রমাভি-

বলিয়া স্বাগত প্রশানন্তর মূলমন্ত উচ্চারণপূর্বক এতৎ পাদ্যং অমুক্দেবতারৈ লম: এই মন্ত্রে দেবতার পাদপদ্যে পাদ্য প্রদান করিবে। 'পরে গন্ধ, পূপা, তঞুল, যব, কুনাগ্র, তিল, সর্বপ ও ছ্র্মান্তক অর্ঘা মূলমন্ত্র উচ্চারণকরিয়া অমুক দেবতারৈ স্বাহা, এই মন্ত্রে নিবেদনকরিয়া দেবতার মন্তকে দিবে। কেছ কেছ বলেন, বিষ্ণু পূজাতে অর্ঘাদি ক্রমে আর্চনা করিবে। তৎপদ্রে জাতীফল, লবল ও ক্রোল মিশ্রিত জলম্বারা স্বধানত্রে দেবতার বদনে আ্চমনীর দিবে। স্বধানত্রে দেবতার আচমনীর দিবে, এই বচনে স্বধা শক্ষা স্থানে কোন কোন গ্রন্থকার স্বধা পাঠ করেন। তাহারা এই রূপ স্থাবা করিয়া থাকেন, স্বধা শক্ষে ক্রতরাং জন মন্ত্র অ্বানে মূলমন্ত্র দিবে। অত্রবৈ তাহাদের মতে আচমনীর প্রদানে মূলমন্ত্র

ধানাৎ জলমন্ত্রে দেশিক ইতি বচনং প্রমাণশূন্যমিতি তান্ত্রিকাঃ। তেনাচমনীয়ং স্বধেতি। তথা—স্বধেত্যাচমনীয়ঞ্চ

কারার: মুখপঙ্কজে। স্বধেতি মধুপর্কশ্ধ পুনরাচমনীয়ক্ষিতি
সোমশন্তুধৃতবচনাং। একে পুনর্জলমন্ত্রেণ দেশিকঃ বারুণেন
চ বীজেন ইত্যত্র নহার্থে তৃতীয়াং বদন্তঃ ইদমাচনীয় বং
অমুকদেবতায়ৈ স্বধেতি মহ্যন্তে। ততো মধুপর্কঃ স্বধা ইতি
মধুপর্কং দদ্যাং। আজ্যং দধিমধ্নিশ্রং মধুপর্কং বিদ্বর্ব্ধাঃ।
এবং পুনরাচমনীয়ং স্বধেতি। ততঃ স্নানীয়ং নিবেদয়ামি ততো

উচ্চাবণ কবিয়া ইদমাচনীয়ং अभूकामवङारेय यः এই क्रांभ वाका आयाश क्रिक्ट इरेटि। इन मर्स मधुभर्क श्राम क्रिटि, এই वहनहें डेक मर्छन माधक। खनगद्ध मधुभर्क श्रान कतिरव, এই वहनती रक्वन मधुभर्क ऋत्न গ্রাহ্ন, এই রূপ বলা যাইতে পাবে না, কারণ হুধা মন্ত্র উচ্চারণ করিয়া দেবতার মুখে মধুপর্ক দিবে এবং এই মন্ত্রেই জলহারা আচমনীয় প্রদাম कतित धहे त्रभ वहन कछ। छ एक निश्चि चाहि। (कह (कह वलन, च्रधामछ चाठमनीत्र पिटव, এই वहन मृद्धित्र शक्क नाधात्रत्वत्र शक्क नार्थ। बार्खिक हेम्हाविक्झ वर्षार व्याहमनीय व्यथा ७ वर এहे देखरात मधा " यौरात्र (यक्रभ अधिकृति छिनि (महेक्रभ विषयिन। देमथिनी(यत्रा आहम-नीय यथा পाঠ করেন, সুধা পাঠ করেন না। কারণ সুধাশকপ্রতি-পাদ্য बकाद्रित्र ज्ञागरवाधकच नारे। ज्ञागार्थरवाधक चारामसदात्रा चर्चात्र विधान (इक् छ ९ मरक्र आहमनीय मान्त छा। शार्थ (वाधक चारा) भन आया। করা যুক্তিসিছ। অভএব বং এই মত্রে আচমনীয় প্রদান করা উচিত নহে। তান্তিকরা বলিয়া থাকেন যে, নম: স্বাহা, স্থা, বষট্ ও বৌষট্ এই সকল माञ्जत क्रमण कर्षन रूष्ट्र क्रममाञ्च चाहमनीय मिर्व, क्रहे वहन श्रमाणम् । चार विश्व चार्य निवास क्षा भार्य कर्ता कर्त्त्वा। च्या मा प्राप्त क्षेत्र म्थ-भक्टक जिन्दात जाहमनीम निर्द वर यथा मा मा मधुभक छ भून बाहमनी ब , व्यानान कतित्व। এই সোমশস্থ্যত্বচনাসুসাবে স্থামত্তে আচমনীয় প্রদান

বস্ত্রবজ্ঞাপবীতানি দদ্যাৎ। ততঃ আভরণং নমঃ এষগম্বে।
নমঃ দ চ গদ্ধশ্চ দনকর্প্রকালাগুরুভিরীরিতঃ। ততো মস্ত্রপুটিতমাত্রকাবর্ণেন তত্ত্র্যাদস্থানানি পুজয়িষা এতানি পুজ্পাণি
বৌষট্। ততঃ আবরণপূজা দর্বত্রে দানে মূলমস্ত্রোচ্চারণং।
ততো গুগ্তস্বগুরুণীরশর্করামধূচ দনরতাত্মকং ধূপং দদ্যাৎ।
তথাচ সারদায়াং—গুগ্তস্বগুরুণীরশর্করামধূচ দনঃ। ধূপব্যেদাজ্যসংমিশ্রেনীতৈর্দেবস্তু দেশিকঃ। বিশেষস্তু তত্ত্বেব—
দিতাজ্যমধূসংমিশ্রং গুগ্তস্বগুরুচন্দনং ষড়ঙ্গপুপ্রেতজ্বু দর্বনব্রেপির্থ দদা। রোগরগহররোগদকেশাঃ স্বরগুরু-

मर्स्यामिमग्रेष्ठ। द्याम द्यान शहकात वर्णन, जनमस्य वाहमनीत्र श्रमान क्रिय्त, हेजामि वहत्नत्र क्रम्मराज्य महिङ এইक्रम् व्यर्थ। काँहारम्ब्र मराङ हैममाठमनीयः वः अमूक (मवडादेव चाहा, এইक्राप वः व चाहा এই উভव माज चाहमनीत्र अलान कर्ता कर्ड्या। चाहमनीत्रत्र भन्न चर्षा এই माज मध्नक श्राम कतिरव। एड. मधि अ मध् धरे मकन खवा धक्छ मिश्रिड कत्रिल ভाহাকে পভিতগণ মধুপর্ক বলিয়া থাকেন। তৎপরে স্বধা এই মঞ পুনরাচ্যনীর ও নিবেদ্যামি এই মল্লে স্থানীর প্রদান করিয়া বস্তুষ্ট্রোপ-वीलामि निर्वाम कतिरव। जमनसत्र नमः এই मस्त्र आलत्र । अति निर्व। शक्तावा सथा-- हमान, कर्ण्य ७ कालाखक এই मकल शक्तवा कथिङ चाहि। তৎপরে মূলমন্ত্রারা পুটিত মাতৃকামন্ত্রে মাতৃকান্তাদের ততঃস্থানে পূজা कत्रिया এতানি পূজাণি অমুকদেবতামৈ বৌষট, এই বলিয়া পূজা প্রদান कतित्। उपनयत चारत्रभूका कतित्। मर्वस्र वापान मृणमञ्ज डेकात्रभ कत्रा कर्डवा। ७९९८त श्वश् श्रम्, पश्चन, पश्चन, पश्चा, मम्, हमान ७ एउ এই मकल ज्वा এकब किन्ना धूनश्रान किन्दि। मान्नाज्य ं निथिज चाट्ह (य, উक्त जकन स्वापात्रा (पवजात्र निर्मेश्रीपटम पूर्ण निट्ड क्हे(क। अर्कत्रा, इड, मधू, खन्धन् व्यक्त व हमन वह मनन व्यवादक

अञ्चलप्रविदिश्वाः । वक्वविविक्किवाितिक्रमुका ध्रुपविविद्विद् अविक्वाः । अञ्चार्थः कूष्-रतीक्वी-श्रुष्-किवाारमी-एनविष्ठाः क्ष्र्-अश्वन्न-एक्ष्रप्रवा-मत्न-नथी-मूर्याः । उथा — श्रुश्वन्नः मत्रमः मान्नः श्रुष्टः अष्टः मर्क्कत्रमः पानः । रतीक्वीः नथीः वाक्षाः किवााःमीकः रेगलकः । स्त्रीक्वीः नथीः वाक्षाः किवााःमीकः रेगलकः । साष्ट्रमान्नः विद्वश्वाः नथीः वाक्षाः किवााःमीकः रेगलकः । स्त्रमुखः विद्वश्वाः विद्वश्वाः रेगलकः । मत्रमः विद्वश्वाः विद्वश्वः विद्वश्वः विद्वश्वः विद्वश्वः विद्व

यफ्रभ्भ वर्ण, এই वृभ मर्सरावशित । क्ष्ण, हतीजकी, खफ, किरामानी, रिन्माक, नाक्षा, क्षक्षक, रिक्मित, महलकार्क, नशी छ मूथा এই मकल क्ष्रा हात्रा वर्षि श्रञ्ज कित्रा धृभ श्रामान कित्रित । खग्छम्, महला हिं, रिन्माक, रिक्सित, क्ष्मा, खान किर्माक किर्मा किर्माक किर्मा किरमा किरम

মধ্যমানামিকাস্ট্র রঙ্গাত্রেণ পার্কতি। দদ্যাক্ত বিমলং গদ্ধং মূল্মন্ত্রেণ সাধকঃ। অনুষ্ঠতর্জ্জনীভ্যান্ত চক্তে পূষ্পং নিবেদয়েৎ। যথা গদ্ধং তথা দেবি ধূপং দদ্যাদ্বিচক্ষণঃ। মধ্যমানামিকাভ্যান্ত মধ্যপর্কিণি দেশিকঃ। অনুষ্ঠাত্রেণ দেবেশি ধূত্বা ধূপং নিবেদয়েৎ। উত্তোলনং ত্রিধা কৃত্বা গায়ত্র্যা মূল্লেরাগতঃ। তত্ত্বাখ্যমুদ্রয়া দেবি নৈবেদয়েছ নিবেদয়েৎ। মূলেনাচমনং দদ্যাৎ তাম্বুলং তত্ত্বমুদ্রয়া। ধূপভাজনমক্ত্রেণ প্রোক্যাভ্যর্ক্তা ফ্লামুনা। অন্ত্রেণ পূজিতাং ঘণ্টাং বাদয়ন্ গুণ্গুলুং দহেৎ। ততঃ সমর্পয়েরুপং ঘণ্টাবাদ্যজযন্ত্রীরাতে। অভর্ক্তা বাদয়েদঘণ্টাং অধূপৈ ধূপয়েত্রতঃ। তত্ত্বে—ন ভূমো বিত্রেক্বপং নাদনে ন ঘটে তথা। তথাচ গৌতমীয়ে—উত্যার্ম্য

কথিত হইতেছে। সাধক মধামা, অনানিকা ও অসুষ্ঠ এই অসুনিত্ররের অগ্রভাগ দারা মৃল্মন্তে বিমলগদ্ধ প্রদান করিবে। এবং অসুষ্ঠ ও তর্জনী অসুনিদ্বারা পূলা দিবে। যেরূপ মৃদ্রাতে ধূপ দিতে হইবে, তাহা এই—মধামাও অনামিকালুলির মণাপর্ক ও অসুষ্ঠের অগ্রভাগদারা ধূপ দারেণ করিবা তিনবার উত্যোলন করত গায়ত্রী ও স্লমন্তে ধূপ নিবেদন করিবে। ওত্মুদ্রাভারা বিদেশ প্রদান করিতে হয়। মূল্মত্রে আচমনীর প্রদান করিবা তব্যুক্রাহারা ভাষ্ল নিবেদন করিবে। ধূপপ্রাদানের বিশেষ নিম্ন এই—ফট্ এই মত্রে অর্চনা করিরা দাই বিশেষ করিবে। তৎপরে ফট্ এই মত্রে ঘণ্টার পূজা করিরা দাই বিশেষ করিবে। তৎপরে ফট্ এই মত্রে ঘণ্টার পূজা করিরা ঘণ্টাবাদন করতঃ ওগ্ ওলু দয় করিবে। তৎপবে ঘণ্টাবাদ্য ও অয়লস্থল পূর্কিক ধূপ সমর্পণ করিবে। অথবা ও অরক্ষনি মন্ত্র মান্তঃ স্থাহা, এই মন্ত্রারা ঘণ্টারা ঘণ্টারা ঘণ্টারাদ্যকরওঃ উত্তম ধূপদ্বারা দেবতাকে ধূশিত কবিবে। তত্রে বিধিত আছে বে, মৃত্তিকাতে কি আন্সনে বা ঘটে রাবিরা ধূপ প্রদান করিবে না। গৌত্রীরতত্রে লিধিত আছে বে. দেবভার দৃষ্টি-

দৃষ্টিপর্যন্তং ঘণ্টাং বামদিশি ছিতাং। বাদয়ন্ বামহন্তেন দক্ষহন্তেন চার্পয়েৎ। এবং দীপদানেপি ঘণ্টাবাদনং। জামলে—
নিবেদয়েৎ পুরোভাগে গন্ধং পুষ্পঞ্চ ভূষণং। দীপং
দক্ষিণতো দদ্যাৎ পুরতো বা ন পৃষ্ঠতঃ। বামতন্ত তথা
ধূপমগ্রে বা নতু দক্ষিণে। নৈবেদ্যং দক্ষিণে বামে পুরতো বা
ন পৃষ্ঠতঃ। বামদক্ষিণভাগন্ত দেবতায়া এব ন তু সাধকন্ত।
ধূপদীপো হুভোজ্যঞ্চ দেবতাগ্রে নিবেদয়েৎ ইতি দর্শনাৎ।
মৃতযুক্তং দক্ষিণে তৈলযুক্তং বামে। এবং সিতাবর্তিশ্চেদ্
ক্ষিণে রক্তা চেঘামে। দম্মুথে তু ন নিয়মঃ। পক্ষ
দেবতাবামে আমামকৈব দক্ষিণে। তথাচ—পুরশ্চরণচক্তিকায়াৎ দক্ষিণন্ত পরিত্যজ্য বামে চৈব নিধাপয়েৎ।
অভোজ্যং তদ্ভবেদনং পানীয়ঞ্চ হুরোপমং। ইতি সাম্প্রদায়িকাঃ। তথাচ জামলে—দীপং মৃত্যুতং দক্ষে তৈলযুক্তঞ্চ
বামতঃ। দক্ষিণে চ সিতাবর্তিং বামতো রক্তবর্তিকং। পকা-

পকবিধানেন নৈবেদ্যেখিতি তৎ স্থিতিঃ। পুরতো নিয়মো
নাস্তি দীপনৈবেদ্যয়েঃ কচিৎ। ততো বন্দনং ততোহফোঁজরসহস্রং শতং বা সংজ্ঞপ্য গুহ্মাতীত্যাদিনা জ্ঞপং সমর্পয়েৎ।
ততো মন্ত্রস্থ দশসংস্কারান্ কৃত্বা পূর্বোর্ট্টেন প্রকারেণ গুরুঃ
শিষ্যমানীয় বৌষড়িতিমন্ত্রেণ শিষ্যনেত্রং বস্ত্রেণাচ্ছাদ্য শিষ্যাঞ্জলিং পুলেঃ পূর্য়িত্বা গুরুঃ স্বয়মেব মন্ত্রমুচ্চরন্ কলসে
দেবতাপ্রীত্যৈ ক্ষেপয়েৎ। ততো নেত্রবন্ধনং দূরীকৃত্য দর্ভাস্তব্রে আসীনং স্বকৃতপূজাক্রমাছূতগুদ্ধ্যাদিকং বিধায় তত্তমন্ত্রোক্তন্তাসান্ শিষ্যদেহে কুর্যাৎ। কুস্তস্থাং দেবতাং পুনঃ
পঞ্চোপচারৈঃ সংপূজ্য অলঙ্কতং শিষ্যমন্ত্রিয়মুপ্রেশয়েৎ।

ৰামভাগে রাখিয়া নিবেদন কবিবে, সম্মুখে কোন নিয়ম নাই, অর্থাৎ সর্ক্রভাষার প্রদীপই সম্মুখে নিবেদন করিতে পারে। পকার দেবতার বামে এবং
আমায় দেবতার দক্ষিণে স্থাপন করিয়া নিবেদন করিবে। পুরশ্চবণচ ক্রিকার
লিখিত আছে যে, দক্ষিণভাগ পরিত্যাগ করিয়া যদি বামভাগে অল্লাদি
সংস্থাপন করে, তাহা হইলে অল্ল অভোজা ও পানীয় মদিয়া তুলা হয়।
তৎপরে অতিপাঠ ও নমস্বার করিয়া মূলমন্ত্র অটোভরসহত্র অর্থবা অটোভর
শতবার কপ করিবে এবং গুছাতি ইত্যাদি মল্লে জপ সমর্পণ করিবে।
তৎপবে দেয়মন্ত্রের দশসংস্থাব করিয়া পুর্কোকে প্রকারে গুক্ শিষাকে
সম্মুখে আনিবে। বৌষট্ এই মল্লে শিষোর নেত্রবন্ধ বস্ত্রবারা আচ্ছাদন
করিয়া পুশাছারা শিষোর অঞ্জলি পূরণ করিবে। তৎপরে গুরু মন্ত্র উচ্চারণ করিবে এবং শিষা সেই পুশাঞ্জলি দেবতার প্রীতি হেতু কলস
মধ্যে ক্ষেপণ করিবে। তৎপরে শিষ্যের নেত্রবন্ধন দ্র করিয়া ও দর্ভাসনে শিষ্যকে উপবেশন করাইয়া ভৃতগুদ্ধি পূর্কক শিষ্যদেহে গুলুমান্ত্রোক্র
ভাগ করিবে। তদনন্তর কুল্ক দেবতাকে প্রকাপচারে পূলা করিয়া
সলঙ্কত শিষ্যকে অঞ্জানে উপবেশন করাইয়া রাথিবে। তৎপরে ততো মঙ্গলাচারপূর্বকং কুস্তং সমুজ্ত্য তন্মুখন্থান্ হ্যরক্রম-রূপান পল্লবান্ শিষ্যত্য শিরসি নিধায় মাতৃকাং মনসা জপন্
মূলেন সাধিতৈতোরের্বশিষ্ঠসংহিতোক্তাভিষেকমন্ত্র স্তমভিবিক্ষেৎ। শিষ্যঃ অবশিক্তজ্পলেনাচম্য বাসদী পরিধায় গুরোঃ
সন্ধিবপুর্বিশেৎ। ততন্তামের দেবতাং শিষ্যসংক্রান্তাং
তয়োরৈক্যং সম্ভাবয়ন্ গন্ধাদিভিঃ পূজ্য়েৎ তত ওঁ সহস্রার
হুঁ ফড়িতি শিষ্যশিখাং বদ্ধা সংরক্ষ্য শিষ্যশারীরে কলাত্যাসং
কুর্যাাৎ। তদ্যথা—কুশত্রয়েণ পাদতলাজ্জামুপ্র্যান্তং ওঁ
নির্ত্ত্য নমঃ জানুনোর্নাভিপ্র্যান্তং ওঁ প্রতিষ্ঠাইয় নমঃ।
নাভেরাকঠং ওঁ বিদ্যাহয় নমঃ। কঠাদাললাটং ওঁ শান্ত্যে
নমঃ। ললাটাদ্ ক্লরদ্ধান্তং ওঁ শান্ত্যকীতায়ৈ নমঃ। পুনর্ব্র ক্লরদ্ধাদাললাটং ওঁ শান্ত্যতীতায়ৈ নমঃ। ললাটাদাকঠং
ওঁ শান্ত্যে নমঃ। কঠালাভিপ্র্যন্তং ওঁ বিদ্যায়ি নমঃ।

মললাচরণ পূর্পক কলগ উক্ত করিয়া তন্মুখন্থ করব্দশন্ধপ পরবদকল শিষ্যের মন্তকে রাথিয়া মাতৃকাবন্ধ মনে মনে শারণ করত মূলমন্ত্রে অভিমত্রিত কলন্বারা বিশিষ্ঠগংহিতোক্ত অভিষেকমন্ত্রে শিষ্যাকে অভিষেচন ন রিবে। শিষ্যা অবশিষ্ট জলন্বারা আচমন করিয়া বল্লযুগল পরিধান পূর্পক গুরুর গরিধানে উপবেশন করিবে। তৎপরে সেই দেবতাকে শিষ্যাগংক্রামিত করিয়া ভালাদের ঐক্যক্তানে গন্ধাদিলারা পূজা করিবে। এবং "ওঁ সহস্রার হুঁ ফট্" এই মত্রে শিষ্যের শিথাবন্ধন ও শিব্যাশরীরে কলান্তান করিবে। তিনটি কুশপত্রনারা এই ন্তান করিতে হইবে। পাদতল হইতে আমুপর্যান্ত ওঁ নির্হত্তা নমঃ জালু হইতে নাভিপর্যান্ত ওঁ প্রতিষ্ঠাইয় নমঃ, নাভি হইতে কঠ পর্যান্ত ওঁ বিদ্যাব্যে নমঃ, কঠ হইতে ললাট পর্যান্ত ওঁ শাক্তির নমঃ, ললাট হইতে ব্রন্থরের পর্যান্ত ওঁ শাক্তিগীতারৈ নমঃ, এইরপ ক্রান্থ করিয়া প্রকারি এক্রের হইতে ললাট পর্যান্ত ওঁ শাক্তিরীতারৈ

নাভের্জামুপর্যান্তং ওঁ প্রতিষ্ঠায়ে নয়ঃ। জামুনোঃ পাদপর্যন্তং ওঁ নির্ত্তিয় নমঃ। ততঃ শিষ্যক্ত শির্দি হস্তং দল্ধা দেশ্বমন্ত্রমন্টোভরশতং জপ্ত্ব। অমুক্যন্ত্রং তেহহং দদামীতি শিষ্যহত্তে জলং দদ্যাৎ। ততো দদ্যেতি শিষ্যো জয়াৎ। তথাচ
বাশিষ্টে—ততন্তৎশির্দি সহস্তং দল্ধা শতং জপেৎ। অফোতরং ততো মন্তং দদ্যাদমুকপূর্বকং। আব্য়োস্তল্যফলদো
ভবদ্বেন্মুদীর্বেৎ। ততঃ ঋষ্যাদিসংযুক্তং মন্ত্রং গুরুর্দ্দিশাকর্ণে ত্রিঃ প্রাব্য়েরা বামকর্ণে দক্তৎ প্রাব্য়েৎ। তথাচ গোতমীষে—আদ্রালং তক্ত দেহে গুরুঃ সংক্তম্ব যত্রতঃ। দক্ষকর্ণে
বদ্দেশন্ত্রং ত্রিবারং পূর্ণমানসঃ। দক্ষে ইতি দ্বিজাতিবিষয়ং।
তথাচ তত্ত্বে—দক্ষকর্ণে ত্রিশোবিদ্যাৎ একোচ্চারেণ চোচ্চরেৎ। এবং বিধিদ্বিজাতীনাং স্ত্রীশ্রাণাঞ্চ বামতঃ। ক্রদ্রুজামলে—গুরুস্ত প্রাগ্রুথেক্ত্রা শিষ্যঃ প্রাচীমুথন্থিতঃ।
ত্রিবারং দক্ষিণে কর্ণে বামে চৈব তথা সক্ত্ব। বিপরীতং

শান্তাভী স্থাবৈ নমঃ, ললাট হইতে কণ্ঠপথ্যন্ত ওঁ শাব্যৈ নমঃ, কণ্ঠ হইতে নাভি পথ্যন্ত ওঁ বিদ্যাবৈ ননঃ, নাভি হইতে আমুপর্যন্ত ওঁ প্রতিষ্ঠাবৈ নমঃ, জামু হইতে পাদতলপর্যন্ত ওঁ নির্বৈত্য নমঃ, তৎপরে শিব্যের মন্তকে হন্ত দিয়া দেয়মন্ত্র অষ্টোতরশভবার জপ করিয়া অমুকমন্ত্রং তেইহং দনামি এই বলিয়া শিষাহন্তে জল দিবে, শিষা দদস্য এই বাকা বলিবে। তৎপরে শুরু শ্ব্যাদিসংযুক্ত মন্ত্র দক্ষিণকর্ণে তিনবাব এবং বামকর্ণে একবার প্রবণ ক্ষাইবেন। ত্রাহ্মণ, ক্ষত্রিয় ও বৈশ্ব ইহাদিগের দক্ষিণকর্ণে তিনবার ও বামকর্ণে একবার মন্ত্র বলিবে। ক্ষত্রভামলে লিখিত আছে যে, গুরু পূর্বমুথ হট্মা পশ্চমাভিমুথ শিষ্যের দক্ষিণকর্ণে তিনবার এবং বামকর্ণে একবার মন্ত্র

ততো জেয়ং স্ত্রীশূদ্রাণাঞ্চ বাযত:। ততো গুরুচরণে পতিত **এव जिर्छिर। षर्थमामाम्हर (मव क्रजक्राजा)श्या मर्व्हा**। याग्राग्रज्यस्थानाविम्दकाशिया निर्वाशिया ह। इंडि वरम् । ততো গুরুঃ। উত্তিষ্ঠ বৎস মুক্তোহসি সম্যগাচারবান ভব। कीर्दिशिकाखिश्रकायुर्वनार्तागाः मनाख ए । इंडि उथा-পয়েৎ। * विश्वमाद्य--- मक्क कर्ष वरमग्राञ्चः श्वामिक ममश्रिजः। তথা তিমান্ কণে দেবি জপেমান্তং শতাফকং। সারদায়াং— खतार्नकाः পরাং বিদ্যামফকুত্রে। জপেৎ স্থীঃ। छक्रमञ्ज-দেবতানামৈক্যং সম্ভাবয়ন্ ধিয়া। এতদ্বচনং ততন্তাবনাপর-জপবিষয়ং। গুরুঃ সশক্তিরকার্থং সহস্রং শতং বা জপেৎ। <u>जन्नाख्यत्— गंजः जाल्यदमा पू निकर्षे जिमिनः वरम् ।</u> নোচেৎ সঞ্গারিণীশক্তিগুরুমেতি ন সংশযঃ। বিশ্বসারে— অফাধিকসহস্রং বা শতং বাপি বিধানতঃ। স্বশক্তিরক্ষণার্ধায় खक्र्यातः भंजः जित्र। जांगलि—मेवा मेकः जित्रिकि শতমটোত্রং ততঃ। ততঃ শিষ্যঃ কুশতিলজলাখাদায় ও মদ্য কৃতৈতদ্মুকদেবতায়া অমুকমন্ত্রগ্রহণপ্রতিষ্ঠার্থং मिक्किगिमिषः ञ्चर्वाः कांक्षेन र वा विक्टिपवजः ज्यूकरणां जाया-मिकिनकर्त् अक्रांत्र। जर्भात्र भिषा अक्रहत्रण भिष्ठ इरेगा उँ पर्शामा-मानहः त्वव हेलामि मञ्ज भाठं कतिरव। खक्र उँ खेखिर्व वरम मुरकारिन जर्ने मञ्ज পঠि করির। শিষ্যকে উত্থাপিত করিখেন। এই বিষয়ে বিশ্বসারতক্ষের निश्चित्र मृत्न ऐक् जार्ह मात्रगान्छ निश्च चार्ह (म, खक हरेटि প्रय विमा लाफ कतिया ७३०, मञ्ज ७ (म्याजात क्रेका क्रांत्म काहेगांत कान कतिएक इंहेर्टा। श्वक की प्रमश्कि तकार्थ के मज महस्रवांक कान कदिर्दिन, ङञ्जाखरद लिथिङ चार्ट्स रा, निवा खक्रव मनूर्थ धक्रमें बाद्र, मञ्ज ज्ञा किनिवित्र शक्त निकंष वांत्र कतित्व। उर्शाल भिवा कूल,

মুকদেবশর্মণে গুরবে তুভ্যমহং সংপ্রদদে। শরীরমর্থং প্রাণাং
শ্চ সর্বাং তথ্য নিবেদয়েও। ততঃ প্রভৃতি কুর্বীত গুরোঃ
প্রিয়মনন্তাধীঃ। যদ্যদিউতমং লোকে গুরবে তমিবেদয়েও।
স্বতন্ত্রতন্ত্রে—দক্ষিণানিয়মো যথা—গুরবে দক্ষিণাং দদ্যাৎ
প্রত্যক্ষায় শিবাত্মনে। সর্বস্বস্থা তদর্জং বা তদর্জং বা
তদাজ্জয়া। নোচেও সঞ্চারিণী শক্তিঃ কথমস্ত ভশিষ্যতি।
কুলায়তে—বিভ্রশাঠ্যং পরিত্যজ্য সর্ববিশ্বাণি সাধয়েও।
বিভ্রশাঠ্যং নিহন্ত্যান্ত পুত্রানায়ুর্যশোধনং। গুরুদেবং
বঞ্চয়িত্বা যঃ কুর্যাদ্ধনসঞ্চয়ং। তেন তভুজ্যতে নৈব
ত্রীয়তে রাজতন্তরিঃ। আসনং গুরবে দদ্যাদ্ককন্মলমেব
চ। হারাদ্যাভরণংদদ্যাদ্গাশ্চ দদ্যাৎ পয়্রস্থিনীঃ। ভূমিং
স্বত্রিকরীং দদ্যাৎ পুত্রপোল্রামুগামিনীং। তথা—গ্রবে
দক্ষিণান্দদ্যাৎ স্থাং বস্ত্রসমন্বিতং। গুরুদজ্যেষমাত্রেণ দৃষ্ট-

তিল ও জল গ্রহণ করিয়া স্বর্ণ কিয়া কাঞ্চন বিধিবোধিত বাক্যে উৎসর্গ করিয়া গুককে দান করিবে। এবং শরীর, অর্থ ও প্রাণ গুরুকে নিবেদন করিতে হইবে। সেই দিন হইতে অনক্তমনে গুরুর প্রিরকার্য্য করিবে। সংসারে বে যে বস্তু প্রিরকম, তৎসমুদার দ্রবা গুরুকে প্রদান করা কর্ত্রবা। সংজ্ঞাতন্ত্রে লিখিত আছে যে, গুরুর আজ্ঞাক্রমে সর্বস্থ কিয়া তদর্দ্ধ গুরুকে দক্ষিণা দিবে। কুলামূতে লিখিত আছে যে, স্বীরবিত্রের শঠতা পরিত্যাসকরিয়া গুরুর সর্বার্য্য সাধন কবিবে। বিত্তের শঠতা করিয়া কার্য্য করিলে পুত্র, আয়ু, যশ ও ধন এই সমুদার নই হয়। যে ব্যক্তি গুরুদেবকে বঞ্চনা করিয়া যে কিছু ধনসঞ্চয় করে, সেই ধন তাহার ভোগ হয় না, রাজ্যা ও তয়রগণ তাহা হরণ করিয়া লয়। গুরুকে জাসনার্থ রক্তক্ষল, আহারসামগ্রী, আভরণ, ভ্রম্বতীগান্তী ও পুত্রপোত্রাদিক্রমে ভোগ করিতে পারে, এইরূপ ভূমি প্রদান করিবে। স্বর্ণ ও বয়্রস্তুক দক্ষিণা গুরুকে দিবে। গুরুর সঞ্জোষ

মন্ত্রোহপি দিন্ধাতি । অন্তথা নৈব দিন্ধিঃ স্থাদভিচারার কয়তে। দীক্ষাগ্রহণসামগ্রীং গুরবেহথ নিবেদয়ে । অন্তাংশ্চ ব্রাহ্মণাংস্তত্র যত্নতঃ পরিতোষয়ে । ততাে মিন্টামপানাদিনা ব্রাহ্মণান্ পরিতোষ্য স্বরং ভূঞ্জীত । তথাচ নিবন্ধে—ব্রাহ্মণান্ ভোজয়ে পশ্চাদিবিদ্দীক্ষিতাে নরঃ । বিপ্রেভ্যাে দক্ষিণাং দদ্যাৎ স্বরং ভূঞ্জীত বাগ্যতঃ । দীক্ষাদিবসে গুরুশিষ্যয়ারক্ষণাদিবসে যার্কি ব্যাগিনীতক্ত্রে—মন্ত্রং দত্তা গুরুশিষ্যয়ারক্ষণাচরে । মহাহ্মকারে নরকে ক্রিমির্ভবতি নাত্যথা । দীক্ষাং ক্রিয় যদা মন্ত্রী উপবাসং সমাচরে । তত্তা দেবঃ সদা রুক্তঃ শাপং দত্তা ব্রজেৎ পূরং । যদ্যত্র হোমঃ ক্রিয়তে তদা তদ্বিধানং বক্ষ্যামঃ । ইতি কলাবতীদীক্ষাপ্রয়োগঃ ॥

অথ পঞ্চায়তনী দীক্ষা। জামলে—ভবানীস্ত যদা মধ্যে ঐশান্তামচ্যুতৎ যজেৎ। আগ্নেয্যাং পাৰ্বতীনাথং নৈখত্যাং

আমলে লিখিত আছে যে, পঞ্চায়তনী দীক্ষাতে মধ্যস্থলে শক্তিদেবভার যন্ত্র নির্দাণ করিয়া ভাষাতি ভবানীর পূজা করিবে, ঐ যন্ত্রের চতুপাথে মহাদেব, গনেশ, বিষ্ণু ও সুর্য্য এই সকল দেবভার যন্ত্র নির্দাণ করিয়া ভাষাতে

গণনায়কং। বায়ব্যাং তপনকৈব পূজাক্রম উদান্ততঃ। যদা
তু মধ্যে গোবিন্দমৈশান্তাং শক্ষরং যজেৎ। আমেয়াং গণনাথক
নৈঞ্চত্যাং তপনন্তথা। বায়ব্যামিষিকাকৈব ভোগমোকৈকভূমিকাং। শক্ষরক যদা মধ্যে ঐশান্তমচ্যতং যজেৎ। আমেয়াং
তপনকৈব নৈঞ্চত্যাং গণনায়কং। বায়ব্যাং পার্বিতীকৈব
স্বর্গমোক্ষপ্রদায়িনীং। আদিত্যক যদা মধ্যে ঐশান্তাং শক্ষরং
যজেৎ। আমেয়াং গণনথাক নৈঞ্চত্যাং কেশবং যজেৎ।
আমেয়ামীশরকৈব নৈঞ্চত্যাং ভপনন্তথা। বায়ব্যাং পার্বিতীকৈব পুজয়েশোক্ষসাধনীং। স্বন্থানবর্জিতা দেবা তৃঃখশোকভয়প্রদাঃ। তথাচ—গণেশবিমর্ষিণ্যাং—শস্ত্রো মধ্যগতে হরীনহরভূদেব্যো হরো শক্ষরেভাস্তেনাগস্থতা রবো হরগণেশাজাম্বিকাঃ স্থাপিতাঃ। দেব্যাং বিফুহুরকদন্তরবয়ে। লম্বোদরে-

के ठिकि दिन्द होत श्रमा कि कि दिन । भिणान दिन् , चिक् कि दिन । स्वारित । भिणान दिन् , चिक कि दिन । स्वारित । कि निक कि दिन । स्वारित होति । स्वारित । स्वार

ইজেষরে নার্ব্যাঃ শক্ষরভাগতোহতিহ্বখনা ব্যস্তান্ত তে হানিদাঃ।
রামার্কনচক্রিকারাং গেতিনীয়ে চ—যদা তু মধ্যে গোবিন্দৰামেয্যাং গণনায়কং। নৈঋত্যাং হংসমভ্যর্ক্য বায়ব্যামার্কয়েচিহ্নবাং। ঐশার্যাং শক্ষরকৈব ভোগনোক্ষকলাপ্তয়ে। ইতি
যদকে দেবতায়াঃ পূজনে আয়েয্যাদে গণেশাদিপূজনয়ূত্রুৎ
তদ্রামগোপালবিষয়মিতি কেচিৎ। বস্ততো বৈকল্লিকমিতি
সাম্প্রদায়িকাঃ। এতেয়াং পূজনস্ত গোতমীয়ে—গদ্ধাদিভির্বপাভ্যর্ক্য বড়ঙ্গার্কনমাচরেৎ। বিংশক্ষে জপেমন্ত্রং নমস্কত্য
সমাপয়েৎ। অঙ্গদেবতাপূজাকালস্ত পীঠদেবতাপূজানস্তরং।
তথা চ সনৎকুমারতক্রে—পীঠস্যার্কনমঙ্গদেবযজনং প্রাণপ্রতিষ্ঠা ততঃ। আহ্বানং নিজমুদ্রিকাবিরচনং ধ্যানং প্রভাঃ
পূজনং। যত্ত্ব—দেবে পুপ্রাঞ্জলিং দত্তা অঙ্গদেবান্ সমর্কয়েৎ।

তত্ত্ব প্রতিতিত্বজ্ঞাদিবিষয়ং। যন্ত্রাতিরিক্তাধারে প্রদেশ ভূ
কুলাবল্যাং—একপীঠে পৃথক্ পূজাং বিনা যন্ত্রং করোতি য়ং।
অঙ্গান্তিয়ং পরিত্যজ্য দেবতাশাপমাধুয়াং। সর্বেষামঙ্গমন্ত্রাণাং নিদ্ধাদিবিচারো নান্তি। অথাচ—দিন্ধাদিশোধনং
নৈষামঙ্গত্বে সতি রাজবং। শ্রামাদেশ ভূ পঞ্চায়তশীভাবং।
তথাচ রুজ্জামলে—শ্রামায়াং ভৈরবীতারাছিন্নমন্তাহ্ম ভৈরবি।
মঞ্জুঘোষে তথা রোদ্রে পঞ্চাঙ্গং নেয়তে বুধৈং। উপবিদ্যাস্থ
সর্বাহ্ম ঘট্কর্মাদিয় সাধনে। নাত্র দীক্ষাদ্যপেক্ষান্তি
নাত্রাঙ্গাদিপ্রপালর সাধনে। নাত্র দীক্ষাদ্যপেক্ষান্তি
নাত্রাঙ্গাদিপ্রপালরং। তত্ত্বসারে—উপবিদ্যান্ত্র সর্বাহ্ম তথা
প্রয়োগসাধনে। দীক্ষাং বিনৈব কর্ত্তব্য উপদেশঃ সদৈব হি।
অথ সংক্ষেপদীক্ষা। মূহুর্ত্তে সর্বত্যভিত্রে নবং কুস্তং
নিধায় চ। সোদকং গদ্ধপুল্পাভ্যামর্চিতং বন্ত্রসংযুতং।

कित्रा कामरानवात श्र्मा किवरित। यद्यावितिक काम क्यांसर श्रमाख क्यांसर श्रमाख क्यांसर विशिष्ठ वाह्न, वाहा किथि हरेटहरूह. এक शीर्ठ काम-रानवा कित्र श्र्म रानवात श्रम कितरित काम कितरित रानवात भाग खाश हत। कामामित्तववात मत्र मिकाम श्रमामाण किथि काह्न र कामा, श्रमामाण किथि काह्न र कामा, रेकिनी, वाता, हित्तमका, मञ्जूषाया व क्रमाज এই मक्य मज्रमीकाम शिक्षकान शिक्षकान श्रमामाण किथि काह्म करति ना। मर्स कामज्ञ केशविष्ठा व विश्व काह्म हेशा किथि काह्म काल्य श्रमामाण किथि काह्म केशा कार्य काल्य क

সর্বেষিধিনবরত্বপঞ্চশানবদংযুতং। ততো দেবার্চনং কৃষা হনেদকীতরং শতং। পঞ্চপারহমিতি পনসামাশখন্টন-কুলানি। তথাচ বাশিষ্ঠে—পনসাম্রং তথাস্বখং বটং বকুলমের চ। পঞ্চপারহমিত্যুক্তং মুনিভিন্তন্ত্রবেদিভিঃ। নবরত্বানি—মুক্তামাণিক্যবৈদ্ব্যুগোমেদো বক্তবিক্রমো। পদ্মরাগং মরকতং নীলঞ্চেত যথাক্রমাৎ। নিবন্ধে—শিষ্যং স্বলঙ্কতং বেদ্যায়ুপারিশ্বেশয়েৎ। মন্ত্রিকৈঃ প্রোক্রণাতায়েঃ শান্তিকুম্বজনৈতথা। মূলমন্ত্রেণাক্তশক্তিতরভিষেচয়েৎ। অক্তশক্তঃ আটোত্তরশক্তিঃ। অথ সংপাদয়েশন্ত্রং হন্তং শিরসি ধার্যন্। নমোন্ত্রিকুক্তান্দদাভিতঃ শিষ্যোহর্ক্তয়েদ্গুক্তং। যদা দীক্ষান্তরং। শক্ষমভ্যক্তা সাক্ষতং তদমুনাভিষিচ্যাক্টবারং মূলেন শিরসি করং নিধায়াকৌ বারান্ কর্পে জপেৎ। তথাচ—ত্রোপ্যশক্তঃ কশ্চিক্রেদজ্বসভ্যক্তা সাক্ষতং। তদমুনাভিষি-

চ্যাফীবারং মুলেন কেবলং। নিধায়াটো জন্তপৎ কর্ণে উপ-, দেশে ত্বয়ং বিধিঃ। ইতি সংক্ষেপদীক্ষা।

উপদেশান্তরমাহ বিশ্বাসারে—চন্দ্র্যাগ্রহে তীর্থে সিদ্ধ-ক্ষেত্রে শিবালয়ে। মন্ত্রমাত্রপ্রকথনমুপদেশঃ স উচ্যক্ত। বিশ্বসারে—মহাদীক্ষা তথা দীক্ষা উপদেশস্ততঃ পরং। যুগে যুগে চ কর্ত্তব্য উপদেশঃ কলো যুগে।

বশিষ্ঠদংহিতোক্তাভিদেক মন্তঃ। ওঁ হুরান্থা মভিষিঞ্জ ব্রহ্মবিষ্ণুশিবাদয়ঃ। বাহ্নদেবো জগন্নাথ তথা সন্ধর্ষণঃ প্রভুঃ। প্রভুঃন শ্চানিক্রদ্ধশ্চ ভবস্ত বিজয়ায়তে। আখণ্ডনোহয়ি-র্ভগবান্ যমো বৈ নিখাতিত্তথা। বরুণঃ পবনশ্চৈব ধনাধ্যক্ষতথা শিবঃ। ব্রহ্মণা সহিতঃ শেষো দিক্পালাঃ পাস্ত তে সদা। কীর্তির্লক্ষী র্ম তির্মেধা পুষ্টিংশ্রদ্ধা ক্ষমা মতিঃ। বুদ্ধির্লজা বপুঃ কান্ডিঃ শান্ডিঃ পুষ্টিশ্চ মাতরঃ। এতান্থা মভি-যিঞ্চন্ত ধর্মপত্মঃ সমাগতাঃ। আদিত্যশ্চন্দ্রমা ভৌমো বুধজীব দিতার্কজাঃ। গ্রহান্থা মভিষিঞ্জ বাহুঃ কেতৃশ্চ তর্পিতাঃ। দেবদানব গন্ধর্কবিষক্ষরাক্ষপপন্নগাঃ। ঋষয়ো মুনয়োগাবো দেব মাতর এবচ। দেবপড়্যো গ্রুবা নাগা দৈত্যাশ্চাপ্রসাং

चामक रहेला चामजयुक मध्य चर्छना कत्रिय । छक्र मियाक म्मयख चाचित्रिक कत्रिया चष्ठेवात्र मियाकर्ल উপদেশ कत्रियन ।

Ā

গণাঃ। অন্ত্রাণি সর্বশ্রাণি রাজানো বাহনানি চ। ঔষ-ধানি চ রত্নানি কালন্তাবয়বাল্চ যে। সরিতঃ সাগরাঃ শৈলা স্তীর্থানি জলদা নদাঃ। এতে তা মতিবিঞ্জ ধর্ম কামার্থ-সিদ্ধয়ে। ইতি।

অথ সামান্তপ্জাপদ্ধতিঃ। তত্র ব্রাক্ষ্যে মৃহুর্ত্তে উত্থায়
মৃক্তস্বাপঃ রাত্রিবাসন্ত্যক্ত্বা শিরসি সহস্রদলকমলাবস্থিতঃ
শেতবর্ণং দিছুজং বরাভয়করং শেতমাল্যামুলেপনং স্বপ্রকাশরূপং স্বরামন্থিতস্থরক্তশক্ত্যা স্বপ্রকাশস্বরূপয়া সহিতৎ গুরুং
বিভাব্য মানসোপচারেরারাধ্য নমস্ক্র্যাৎ। যথা অথগুমগুলাকারং ব্যাপ্তৎ যেন চরাচরং। তৎপদং দর্শিতং যেন তথ্য
শ্রীগুরবে নমঃ॥ অজ্ঞানতিমিরাদ্ধস্থ জ্ঞানাঞ্জনশলাকয়া।
চক্ষুরুশ্মীলিতং যেন তথ্য শ্রীগুরবে নমঃ॥ ততো মূলাদিব্রহ্মরন্ধান্তং মূলবিদ্যাং বিভাবয়েৎ। মূলবিদ্যাৎ কুগুলিনীং।

সামাত পূজার প্রণালী কথিত হইতেছে—ব্রান্ধ্য মৃহূর্দ্ধে পালোখানপূর্বকে নিজা পরিভাগে করিয়া রাজিবাস পরিভাগে করিবে। তৎপরে পিরোদেশে সহস্র দল কমলস্থিত খেতবর্ণ, বিভূজ, বরাভয়প্রদ খেত মাল্য ও খেত চলান ধারী, শীয় প্রভায় দীপ্রিমান, স্ববামভাগন্থিত রক্তবর্ণ শক্তির সহিত বিদ্যমানা শুক্রদেনকে চিক্তা করিয়া মানসোপচারে শুক্রর অর্চনান্ধে নমন্থার করিবে। সমত্ত ব্রহ্মান্ত ইরিয়া মানসোপচারে শুক্রর অর্চনান্ধে নমন্থার করিবে। সমত্ত ব্রহ্মান্ত ইরিয়া স্বর্গন বিনি ক্রান্তর লগৎ ব্যাপিয়া রহিয়াছেন, বিনি ব্রহ্মান করেন, সেই শুক্রদেবকে নমন্থার করি। খিনি ক্রান্তর শুক্রমান শ্রামান তিনিয়ে শব্দ ব্যক্তির চক্ষ্ উন্মীলিত করেন, সেই শুক্রমান শ্রামান তিনিয়ে শব্দ ব্যক্তির ক্রিয়া অর্থভয়গুলাকারণ ইত্যাদি মন্ত্র্য পাঠপুর্বক শুক্রকে নমন্থার করিতে হইবে। তৎপরে মুলাধার ইত্যাদি মন্ত্র্য পাঠপুর্বক শুক্রকে নমন্থার করিতে হইবে। তৎপরে মুলাধার শ্রহতে ব্রহ্মের পাঠপুর্বক শুক্রবে নমন্থার করিতে হইবে। তৎপরে মুলাধার শ্রহতে ব্রহ্মের পাঠপুর্বক শুক্রবে নমন্থার করিতে হইবে। তৎপরে মুলাধার শ্রহতে ব্রহ্মের পাঠপুর্বক শুক্রবে নমন্থার করিতে হইবে। তৎপরে মুলাধার শ্রহতে ব্রহ্মের প্রত্তির মুল্বিন্যা কুলকুগুলিনীকে ভাবনা ক্রিবে। বিনি

তথাচ যোগিনীহদয়ে—বিদ্যা কুগুলিনীরূপা মণ্ডলত্রয়ভেদিনী। অশুত্রাপি—ধ্যায়েৎ কুগুলিনীং দৃক্ষাং মূলাধারনিবাসিনীং। তামিউদেবতারূপাং সার্দ্ধিত্রবলয়ামিতাং।
কোটিসোদামিনীভাসাং স্বয়ভূলিসবেষ্টিতাং। ভামুখায়
মহাদেবীং প্রাণমস্ত্রেণ সাধকঃ। উদ্যদ্দিনকরদ্যোতাং যাবচহ্বাসং দৃঢ়াসনঃ। অশেষাশুভশান্ত্যর্থং সমাহিত্রমনাঃ শিবং।
তৎপ্রভাপটলং ব্যাপ্তং শরীরমপি চিন্তয়েৎ। তশু নিত্যয়মাহ
গোতনীয়ে—ইদানীং পুর্বাক্তয়ঞ্চ প্রাঙ্গাহ কথয়ামি তে। ঘৎ
কুত্বাধিকারিতাং যাতি মন্ত্রযন্ত্রার্জনাদিয়ু। যেন বিনা ন সিদ্ধিঃ
স্থান্তরকঞ্চ প্রপদ্যতে। জামলেজু—প্রাতঃ কৃত্যমকৃত্রা তু
যোদেবীং ভক্তিতোহর্জয়েৎ। নিম্মলা তশ্ব পুজা স্থাচ্ছোচহীনা যথা ক্রিয়া। লক্ষীকুলার্গবেপি—সন্ধয়াতু বিহীনো যো
ন দীক্ষাফলমাপুয়াৎ। ইতিবচনাত্রস্থাবশ্যকত্বং বৈদিকসন্ধ্যা-

অতি পুলা, মূলাধার-নিবাসিনী স্বীয় ইউদেবতা রূপে সান্ধিত্তিত বৈষ্টনে স্বান্ধ্ লিজকে বেউন করিয়া রহিয়াছেন, কোটি বিহাতের স্থায় বাহার দেহ-কাজি; সাধক এবস্তুতা কুলকুগুলিনী শক্তিকে হংস: এই মন্তে প্রবাধিত স্বাস্থ্যমনপূর্কক একাগ্রমনে ধান করিবে এবং উদয় কালীন দিনকরের স্থার দীপ্তিমতী কুলকুগুলিনীর দেহপ্রভাগ পরিব্যাপ্ত এই শরীর চিন্তা করিবে। প্রতিদিন এইরূপ প্রাত:ক্লত্য করিতে হইবে। গৌতমীয়তত্ত্ব মহাদেব পার্ক্তীর নিকট বলিয়াছেন যে, এইকণ প্রায়ল্জমে ভোমার নিকট পূর্বকৃত বলিতেছি। যে বাজি প্রাত:ক্লত্য করিয়া দাধন করে, সেই বাজি তন্ত্র বলাদি অর্চনার অধিকারিত। লাভ করে। প্রাভঃক্লত্য না করিয়া দেবার্চনাদি কার্যা করিলে দিন্ধি লাভ করিছে পারে না, প্রত্যুক্ত নরক ভোগ হইরা থাকে। জামলে লিখিভ আছে যে, প্রাত:ক্লত্য না করিয়া ভক্তি-পূর্কক দেবীর অর্চনা করিলেণ, অন্তটি বাজির জিয়ার ক্লায় ভাছার-সেই অর্চনা বিকল হয়। ললীকুলার্ববে লিখিভ আছে যে, সন্ম্যাহীন দীকা

নন্তরং তান্ত্রিকসম্ব্যা কর্তব্যা। ততুক্তং বৈদিকী তান্ত্রিকীলক্ষ্যা যথাসুক্রমযোগতঃ।

অধ সন্ধ্যাপ্রয়োগঃ। তত্ত্ব শক্তিবিষয়ে—ওঁ আত্মতন্ত্রায় স্বাহা ওঁ বিদ্যাতন্ত্রায় স্বাহা ওঁ শিবতন্ত্রায় স্বাহা ইত্যাচামেৎ অন্যত্রাচমনমাত্রেং। তথাচ স্বতন্ত্রতন্ত্রে—আত্মবিদ্যাশিবৈতির রর্ক্চয়েৎ সাধকাগ্রনীঃ। বহ্নিজায়াং তত্তোদন্ত্রা শুদ্দেম পাথসা প্রিয়ে। মালিনীতন্ত্রে—আচামেদাত্মতন্ত্রাদিনা তীর্থমাবাহ্ম মূলেন কুশেন ত্রিবারং ভূমো জলং ক্ষিপেৎ। তত্ত্ব ষড়ঙ্গত্যাসং কৃষ্ণা বামহস্ততলে জলং নিধায় দক্ষিণহন্তেন জল মাচ্ছাদ্য হং যং বং লং রং ইতি ত্রিবারমভিমন্ত্র্য মূলমুচ্চরন্ গলিতোদক-বিন্দুভি স্তত্বমুদ্রেয়া মূর্দ্ধনি সপ্তধাভ্যুক্ষণং কৃষ্ণা শেষজলং দক্ষিণ-

কোন ফল প্রদান করিছে পারে না, ভাতএব অবশ্য সন্ধা করিছে হইবে। বৈদিক সন্ধার পর ভাত্তিক সন্ধা করা কর্তব্য।

শহা ও বিদ্যাত্রার স্বাহা ও শিব চ্বার স্থাহা এই মন্ত্রে আচমন করিবে।

আন্তরে দেবতা বিষয়ে মন্ত্রবৃতিরেকে কেবল আচমনমান্ত্র করিলেই হইবে।

সভন্তন্তে ও মালিনীতত্রে ইহার যে প্রমাণ আছে, তাহা মূলে দৃষ্টি করিলেই

কেবিতে পাইবেন। তৎপরে গলে চ যমুনেচেব ইত্যাদি মন্ত্রে তীর্থ আবাহন

করিরা মূল্যত্রে কুশপত্রত্রেহারা জল তিন বার ভূমিতে নিক্ষেপ করিরা

সপ্তবার মন্তকে দিবে। তৎপরে যভ্জন্তাস করিয়া বামহন্ততলে কিঞিব

কল লইরা দক্ষিণ হন্তবারা আচ্ছাদন করত হং বং বং লং রং এই মন্ত্র তিন

বার স্থপ করিয়া মূল্যত্র উক্চারণ কবত ত্র্যুত্রার গলিত জলবিদ্রারা

সপ্তবার মন্তকে অত্যুক্ষণ করিয়া শেষ জল দক্ষিণ হত্তে আনিয়া তেলোরপ

रुख मयानाम्न एउ का क्रांका रेए माक्रा एक एक लागिर श्रकाला कुरवर्वर् उड्डलर भाभक्रभर शांचा भित्रलया विद्युष्ठा পুরঃকল্পিতবজ্ঞশিলায়াৎ ফড়িতি মজেণ পাপপুরুষরূপং তজ্জলং ক্ষিপেদিত্যঘমর্ষণং। তথাচ গৌতমীয়ে—অচম্য विधिवगानी छटो प्राप्त ह मश्विरम् । जटम मश्द्यांना ভীর্থানি ত্রিবারং মুলমন্ত্রতঃ। কিপেছুমৌ কুপাত্রেণ সপ্তধা मूर्कि (महरा९। उद्याखर्त-श्नताहमा विग्रम् सङ्क्रमि धर्मावि । वामश्र जल गृश् गलि जान विन्तु छि । मथ्या (প্রাক্ষণং কৃত্বা মূর্দ্ধি মন্ত্রং সমুচ্চরন্। অবশিষ্টোদকং দক্ষ-रुख मःगृश् दक्षिमान्। हेज्यांक्षा प्रशुखः कालिङः পाপ-मक्षयः। कृष्कवर्गः जञ्चमकः मक्षनाणा वित्रिष्ठिय्। मक्षश्रस् তু তন্মন্ত্রী পাপরূপং বিচিন্তা চ। পুরতো বজ্রপাঘাণে নিক্দি-পেদন্ত্র-মুচ্চরন্। অন্যত্রাপি—যড়ঙ্গন্যাদ্যাদ্য্য বামহন্তে জलः ७७:। गृशीषा निकारिनय मःशूष् कात्रायुख्छः। শিववाशुक्रमः १ श्रीविक्वीरेक श्रिश श्रनः। অভিমন্ত্র্যাচ মূলেন मथ्या उत्तर्म्या। निकिला उज्जल सूर्कि लियः मरक निधाय ह। भन्नीतास्त्रः व्हिटः পाशः कानएय माधका श्रीः। ততো হতৎ প্রকাল্যাচম্য হ্রী হং সঃ ওঁ ঘূণি সূর্য্য আদিত্য

धान कंत्रजः थे जन वामनामात्राता चाकर्षण कित्रया (मर्मधानेज नान क्षण्यान्य कित्रया प्रक्रिया प्रक्रिया प्रक्रिया मिन्निनामा- जात्रा विद्युष्ट कित्रज्ञ कित्रण विद्युष्ट कित्रण कित्रया प्रक्रिया कित्रया प्रक्रिया कित्रया कित

ইতি মন্ত্রেণ বা সূর্ব্যায়ার্ঘ্যং দদ্যাৎ। তথা সংমোহনতত্ত্বে—
শিববীজং বহিন্দংশ্বং বামনেত্রবিভূষিতং। বিন্দুনাদাম্বকং
দেবি হংসঃ পদমথো লিখেৎ। অনেন মন্থনা মন্ত্রী ভাকরস্থ
প্রিয়েণ ভূ। অর্ঘ্যং দদ্যাদিতি শেষঃ। বিশেষস্ত স্নানপ্রকরণে
বক্তব্যঃ। ততঃ ওঁ সূর্য্যমণ্ডলস্থায়ৈ অমুকদেবতায়ৈ নমঃ
ইত্যানেন তদ্গায়ত্র্যা ত্রিবারং জলং নিক্ষিপ্য তত্তদ্গায়ত্রীং
জপেৎ। তথাচার্ঘ্যানন্তরং জ্ঞানার্থবে—তত্রণ্ড প্রজপেদ্ধীমান্
গায়ত্রীং পরমাক্ষরীং। গায়ত্রী তু স্নানপ্রকরণে বক্তব্যা।
নিদ্দেকশ্বরসংহিতায়াং—যাবন্ধ দীয়তে চার্ঘ্যং ভাকরায় মহায়্মনে। তাবন্ধ পূজয়েদ্বিফুং শঙ্করং বা মহেশ্বরীং। গৌতমীয়ে—এবং তে কথিতা মন্ত্রা সন্ধ্যামন্ত্রফলাপ্তয়ে। ন কুর্য্যাদ্
যদি মোহেন ন দীক্ষাফলমাপ্রয়াৎ। সন্ধ্যাত্রয়ং যথা কুর্য্যা-

স্থ্য আদিতা ইত্যাদি মন্ত্রে স্থ্যদেবকৈ জগদারা অর্থ্যপান করিবে।
সংমাহনতত্ত্বে ইহাব প্রমাণ আছে। ইহার বিশেষ বিষয়ণ স্থানপ্রকরণে
কণিত হইবে। তংপবে ওঁ স্থ্যমণ্ডলহারৈ অমুকদেবতারৈ নমঃ এই
মন্ত্রপাঠ পূর্বক ভলদেবতাব পারত্রী দারা তিনবার জল দিরা তন্তদেবতার
পারত্রী জপ করিবে। জ্ঞানার্থির ইহার প্রমাণ আছে। স্থানপ্রকরণে
গারত্রী কথিত হইবে। নন্দিকেশরতত্ত্বে লিখিত আছে বে, যাবংকাল
মহাত্রা ভাস্করদেবকে অর্থাপ্রদান না করিবে, তাবংকাল বিফু, মহাদেব,
কিছা শক্তিদেবতার পূজাতে অধিকার হর না। গৌতমীরতত্ত্বে লিখিত
আছে যে, এইরপে মন্ত্র সকল কথিত হইল, সন্ধ্যাকলপ্রাপ্তির নিমিত্র উক্ত
মন্ত্র সকল পাঠ করিতে হইবে। ইদি মোহবশতঃ সন্ধ্যানা করে, তাহা হইলে
সেই ব্যক্তি দীকাকল লাভ করিতে পাবে না। আন্ধণ বিধিপূর্কক প্রাতঃকালে, মধ্যাতে ও সারাকে তিন বার সন্ধ্যা করিবে। আন্ধণাদি ব্রশ্তিরে

দ্বাক্ষণো বিধিপূর্বকং। তন্ত্রোক্তবিধিপূর্ববন্ধ শুদ্রঃ সন্ধ্যাং সমাচরেৎ। সংক্ষেপসন্ধ্যামথবা কুর্য্যামন্ত্রী হৃশক্তিতঃ। সায়ং প্রাক্তক মধ্যাহে দেবং ধ্যাত্রা মনুং জপেৎ। সন্ধ্যায়াং পতি-তায়ান্ত গায়ত্রীং দশধা জপেৎ।

অথস্নানবিধিঃ॥ নদ্যাদে বৈদিকস্নানং কৃত্বা তান্ত্রিকস্নান্যাচরেৎ। তথাচ গোত্রমীয়তন্ত্রে—অথ স্নানং তথাকুর্য্যাদ্যথাশান্ত্রবিধানতঃ। মলপ্রকালনং স্নানং স্বশাথোক্তং
সমাচরেৎ। মন্ত্রসানং ততঃ কুর্য্যাৎ কর্ম্মণাং সিদ্ধিহেতবে।
তদ্যথা—ওঁ অদ্যেত্যাদি অমুকদেবতাপ্রীতয়ে স্নানমহং
করিষ্যে।ইতি সঙ্কল্লং কুর্য্যাৎ। তথাচ কুলচূড়ামণোঁ। তাত্রপাত্রণ সদূর্ব্বঞ্চ সতিলং সজলং তথা। গৃহীত্বামুকদেবত্য প্রীতয়ে
স্নান্মাচরেৎ। ততঃ ষড়ঙ্গতাসপ্রাণায়ামোঁ কৃত্বা ওঁ গঙ্গে চ

বৈদিক ও ভাগ্রিক উভয়প্রকাব সন্ধা করিবে, শুদ্র কেবল ভাগ্রিক সন্ধা। করিবে। উক্ত সন্ধায় অশস্ত হইলে সংক্ষেপ সন্ধা। কবিবে, সংক্ষেপ সন্ধা। ষথ — প্রাভ:কালে মধাক্ত সময়ে ও সায়ংকালে দেবভাকে ধ্যান কবিয়া মূলমন্ত্র জপ কবিবে। যথা সময়ে সন্ধা। না করিলেই সন্ধা। পতিত হয়, সন্ধ্যা পতিত হইলে দশবার গায়ন্ত্রী জপ কবিয়া পুনর্কার সন্ধা। করিবে।

অনন্তর স্থানবিধি কথিত হইতেছে। নদ্যাদিতে বৈদিকস্থান করিয়া তান্ত্রিকস্থান করিবে। গৌত্রমীয়তন্ত্রে লিখিত আছে যে, শাল্ত্রাক্রবিধানে স্থান করা করিব। অত্যে গাত্রের মলপ্রক্ষালনার্থ স্থান করিয়া স্থাধানুসারে মন্ত্র্যান করিবে। মন্ত্রসানে সকল কার্য্য সিদ্ধি ইয়ে। মন্ত্রসানে যে রূপ সম্প্রান করিতে হইবে, তাহা মৃশ্ল লিখিত আছে। কুলচুড়ামণিতে লিখিত আছে যে, জল, তিল ও দুর্বাযুক্ত ভাত্রপাত্র গ্রহণ করিয়া দেবভাব প্রীতি কামনায় স্থান করিবে। তৎপবে বড়ক্তাস ও প্রাণায়াম করিয়া গলে চ ব্যুনেটের ইভাদি মন্ত্রে অন্ত্রশন্ত্রা হারা স্থ্যমণ্ডল হইতে ভীর্থ আবাহন ব্

यगूरन চৈব গোদাবরি দরস্বতি। নর্মদে দিকু কাবেরি জলে श्चिन् मिनिधिः कूकः। ইত্যাননাকুশমুদ্রয়া সূর্য্যমণ্ডলাভীর্থ-यावाञ् विवि (धनुयुप्रया व्यव्ही कृष्ण कवरहनाव्यर्थ व्यक्त मर्तका यूटलरेनकामभशाजियका मूर्याजियूथर घामभ वाति-थाताः निकिभा जित्रिविछेएनवजाठतभातिकनिःश्टज जल्ल जिनिंयजा (नवजाः धारान् मूलयखः यथानिक जभन् जेयाजा উদকেন ত্রিবারজপ্রেন কলসমুদ্রগা ত্রিবারমণ্ডল মভিষিচ্য रिविकिमक्यां किकर कृषा मूर्यार्घार पद्मा তाखिकाचमर्यशानि वातिधातान्तः कर्या कूर्गाए। यथा जामल-धाना जना-क्षनीन् किथा जर्राप्तिष्ठिप्तिकाः। जब क्रमभार जं দেবাংস্তর্পয়ামি ঋষীংস্তর্পয়ামি পিতৃংস্তর্পয়ামি ইতি সম্ভর্ণ্য গুরুং পরমগুরুং পরমেষ্টিগুরুঞ্চ তর্পয়েৎ। তথাচ—দেবান্ খাষীন্ পিতৃংশৈচব তৎকল্পোক্তবিধানতঃ। গুরুপঙ্কিং পুরাতর্প্য তর্পয়েদিফদেবতাং। বৈষ্ণবে তু বিশেষঃ। নারদং পर्विजः जिक्षः निশर्छाज्ञवनात्रकः। विश्वक्रमनश्र रिमरनशः कतिया तः এই মল্লে ধের মুদ্রায় অমৃতীকরণ, কবচ মুদ্রায় অবগুঠন এবং क है । अहे मात्र मश्तक प्रतिक प्रभाव मुल्म स स्व क्र कि इस । अख्यिति क्रिति व्यर क्यां जिम्रथ चामभ जनभाता निक्ति कतिया हेहेरमवजात हत्नात्रिक नि: एड कटन जिनवांत्र निमग्न रहेशा (पवडांत्र धान केवड यथान कि मून मञ्ज क्रश कतिरव। ७९ पर्व कलम मूर्जाबात्रा किनवात्र श्रीत्रमञ्जल काशियक कित्रा रिविक मक्तानस्त्र प्र्यार्था श्राम शूर्वक डासिक अध्वर्मान अन-धात्रा मानोख ममख कर्षा कतिरव। छৎপরে দেব, ঋষ, শিষ্ঠ, গুরু, পরম গুরু, ७ পর্মেষ্টিগুরুর তর্পণ করিবে। বিষ্ণু বিষয়ে নারদ, পর্মত, জিফু, নিশহ, छक्रव, बावक, विश्वकरमन, देनरात्र, ७ छक्र धरे मकरणव প্রভাকে जिनश्रम , कतिया छर्पन कतिरव। छर्परत यूगमत उछात्रन पूर्वक अयुक रमवछार

গুরুঞ্ তর্পয়েজিশঃ। বাক্যম্ভ ওঁ নারদং তর্পয়ামি ইত্যাদি-क्राया श्री । ততে। मृलयूक्तांग व्ययूक्रापव । वर्षायि नमः ইতি বিষ্ণুবিয়ং। তথাচ গৌতমীয়ে—আদৌ মন্ত্ৰং मगूकार्या श्रीपूर्वरः कृष्धिमिতाि । তর্পয়ামি পদক্ষোক্তং নমো-২ন্তং তর্পয়েক্ততঃ। অন্যত্র মূলমুচ্চার্য্য অমুকদেবতাং তর্পয়ামি। তথাচ—তর্পয়ামিপদং যোজ্যং মন্ত্রান্তেম্বেরু নামস্থ। দ্বিতীয়া-স্তেষু চেত্যেবং তর্পণস্থা মনুর্শ্মতঃ। শক্তিবিষয়ে পুনঃ। मृलमूकार्या व्यमुकरपवीः তপ্য়ামি স্বাহা। হোমতর্পণয়োঃ স্বাহেতি তত্ত্ৰসন্ত্ৰবচনাৎ। তথাচ নীলতন্ত্ৰে—মন্ত্ৰান্তে নমঃ উচ্চার্য্য তর্পয়ামি ততঃপরং। স্বাহান্তং তর্পণস্তেবং পঞ্চবিংশতি-मः थाया। विশু क्षियत— विमाः পूर्वर ममूकार्या जनस्य দেবতাভিধাং। তর্পয়ামীতিদ°পোজা সাহান্তস্তর্পণো মতঃ। পঞ্চবিংশতিসংখ্যা বা দশধা বা ত্রিধাপি বা। মূলমন্ত্রং সমু-চ্চাৰ্য্য শ্ৰীকৃষ্ণং তৰ্পয়েৎ স্থধীঃ। ইতি গৌতমীযাৎ পঞ্চবিংশতি-वातः দশধা ত্রিধা বা সন্তর্পয়েৎ। অত্র শ্রীকৃষ্ণমিত্যুপলক্ষণং। শক্তিবিষয়ে ত্রিধা তর্পণং। স্নানকর্মণি সংপ্রাপ্তে মূর্দ্ধি, মন্ত্রী

ভর্মানি নম: এই বলিয়া তর্পণ করিবে। শতা দেবতা বিষয়ে মৃলমন্ত্র উচ্চারণ করিয়া অমুক দেবতাং তর্পয়ামি এই বলিয়া তর্পণ করিবে। এই সকল কার্যোর প্রমাণ গৌতমীয়ভত্র ও জামলাদিতে লিখিত আছে। নীলভদ্রে লিখিত আছে যে, প্রথমতঃ মৃলমন্ত্র তৎপরে দেবতার নাম ও ভংপরে ভর্পয়ামি স্বাহা এইরূপে পঞ্চবিংশতিবার ভর্পণ করিভে হইবে। বিশুদ্ধেশ্বর তন্ত্রে লিখিত আতে যে, উক্তরূপে পঞ্চবিংশতি অথবা দশবার ভূর্পণ করিবে। প্রীকৃষ্ণ ও শক্তি বিষয়ে ভিনবার ভর্পণ করা বিধেয়। কুলামুভে লিখিত আছে যে, স্থানকার্যা সমাপন করিয়া মন্তব্যে জলাঞ্জনি

जलाञ्जलिः विमायाथ जिनः कूर्या। शृजाञ्च जित्रभः भिरवर। তর্পণঞ্চ ত্রিধা ভূয়ন্ত্রিধা চ প্রোক্ষণং তনোরিতি কুলায়ত-वहनाए। তত আবরণদেবতাং প্রত্যেকেন সক্তপ্যেৎ। একৈকমঞ্জলিং তোয়ং পরিবারান্ প্রতর্পয়েং। তত্তাশক্ত-(ण्ड्या लयज्ञ मूठार्या इकेट पवर्ण याजः मखर्शियः। उथा ह— অশক্তো মূলমুচ্চার্য্য দেবীমাত্রৎ প্রতর্পয়েৎ। ততো জলা कूथाय (धोठवाममी পরিধায়াচম্য হ্রী হংদঃ ইদমর্ঘ্যং সূর্য্যায় স্বাহা। তারাদৌ তু হ্রীঁ হংসঃ মার্ভণ্ডভৈরবায় প্রকাশশক্তি-সহিতায় ইদমর্ঘ্যং স্বাহা। তন্ত্রান্তরে দূর্য্যমন্ত্রং সমুচ্চার্য্য মার্ত্তও-ভৈরবায় চ। প্রকাশশক্তিসহিতায় ইদমর্ঘ্যং ততঃ পঠেৎ। श्वाद्यां अञ्चन्न व्याद्याः पद्या क्रियान् । श्रीविषाविषयः তু। এঁ ব্রী শ্রী ব্রা ব্রী সঃ মার্ভিভেরবায় প্রকাশশক্তিসহি-তায় গ্রহরাশিনক্ষত্রতিথিযোগকরণপরিবারসহিতায় ইদমর্ঘ্যং স্বাহা ইত্যর্ঘ্যং দত্তা তত্তদেবতাগায়ত্রীং শতধা দশধা বা জপেৎ। তথাচ তন্ত্রান্তরে—অফোত্তরশতার্ক্ত্যা গায়ত্রীং প্রজ-

দিয়া তিনবার জলপান করিয়া তিনবার তর্পণ করিবে এবং তিনবার জললারা দরীর প্রোক্ষণ করিবে। তৎপরে আবরণ দেবতার প্রত্যেকে এক এক
বার তর্পণ করিবে। অনম্ভর জল হইতে উথিত হইয়া ধৌত বস্তুদ্ধ পবিধান
পূর্বক হী হং সঃ ইদমর্ঘাং শ্রীস্পাগির স্বাহা এই মন্ত্রে অর্ঘ্য প্রদান করিবে।
ভারাদি দেবতা পক্ষে হী হং সঃ মার্তগুলুরবার পকাশশক্তিসহিতায়
ইদমর্ঘাং স্বাহা, এই বলিয়া অর্ঘ্য প্রদান করিতে হইবে। শ্রীবিদ্যাবিষ্ধে

ঐ হী শ্রী হাং হীং হং সঃ মার্তগুলুরবায় প্রকাশশক্তিসহিতার গ্রহরাশি
নক্ষরে বোগ করণ পরিবার সহিতায় ইদমর্ঘণ স্বানা। এই মন্ত্রে অর্ঘ্য প্রদান করিবে। ভ্রান্তরে লিখিত স্বাহে বে, দশধা

পেৎ স্থাঃ। মহাপাতকযুক্তোপি প্রজপেদশধা যদি। সত্যং সত্যং মহাদেবি মুক্তো ভবতি তৎক্ষণাৎ। ইতি শক্তাশক্ত-ভেদেন গাযত্রীজপানস্তরং তর্পণং বা। তথাচ সূর্য্যমণ্ডল• वामिरिश दिवारेश उठः शतः। वर्षामञ्जलिमानाम शायाजा বা ত্রিরুৎক্ষিপেৎ। যথাশক্তি জপেদেবীং গায়ত্রীং পরমা-ক্ষরীং তর্পণার্থং সমাচ্য্য প্রাণানায্ম্য সাধকঃ। ধ্যাত্রা জলাঞ্জলিং ক্ষিপ্তা তর্পয়েদিফদৈবতাং। ইতি জামলবচনাৎ। व्यथ भाग्रकी श्रक्तवरः। जिल्लाकारमाष्ट्रनाम विवाद काम-দেবায় ধীমহি তমো বিষ্ণুঃ প্রচোদয়াৎ। ইতি বিষ্ণুগায়ত্রী। নারায়ণায় বিদ্মহে বাস্থদেবায় ধীমহি তমো বিষ্ণুঃ প্রচোদয়াৎ। ইতি নারায়ণগায়ত্রী। বজ্জনখায় বিদ্মহে তীক্ষ্ণংফ্রায় ধীমহি তনো নরসিংহঃ প্রচোদযাৎ ইতি নৃসিংহগায়ত্রী। বাগীশ্বরায় বিদাহে হয়গ্রীবায় ধীমহি তলো হংসঃ প্রচোদয়াৎ। ইতি र्यञीवशायजी। त्शां शालशायजी कू — क्रकां य विषाद मात्यां प-রায় ধীমহি তমো বিষ্ণুঃ প্রচোদয়াদিতি। দশরথায় বিদ্মহে সীতাবল্লভায় ধীমহি তমোরামঃ প্রচোদয়াৎ। ইতি রাম-গায়ত্রী। তৎপুরুষায় বিদ্মহে মহাদেবায় ধীমহি তমোরুদ্রঃ প্রচোদয়াৎ। ইতি শিবগায়ত্রী। তৎপুরুয়ায় বিদ্মহে বক্ত-ভুণ্ডায় ধীমহি তমোদন্তী প্রচোদয়াৎ। ইতি গণেশগায়ত্রী। मिक्निगार्ख्या विचार भागशां भीमिह जिल्लाभीमः श्रीमार हैि पिक्णां मूर्तिभाग्राकी। व्यापिकां म विमार्ट मार्क्शां धीयदि जबः मूर्याः প্রচোদয়াৎ। ইতি দূর্য্যগায়জী। কাম-

^{*} शांत्रजी खा कतिता महाशांखकरूक वाकि। साम शां शांख किए शांत्र, हैज: शतं नामा (प्रकास शांस्की दनिक्कि।

(पर्वाय विवाद शूष्ट्रीवानाय वीमहि ज्याश्नकः श्राटानयार । इंडि कामामवर्गायुक्ती। मर्तिमः स्याहिरेश विद्याद विश्वजनरेश ধীমহি তন্নঃ শক্তিঃ প্রচোদয়াৎ। ইতি শক্তিগায়জী। স্বরি-তारिय विचार महानिजारिय धीमहि ज्यापिती প্রচোদয়াৎ। हेि इतिङाशायुक्ती। के याशीयरिंग विषार की कारमथरिंग धीयि (मोखनमिकिः প্রচোদয়াৎ ইতি বালাভৈরবীগায়জী। के जिथुवारेय विषार की कारमधर्या धीमहि मोछनः क्रिय প্রচোদয়াৎদিতি ত্রিপুরাস্থ দরীগায়জী। ত্রিপুরায়ে विषार रेजतरेग धीयरि जामारिकी थाजामग्री कि टिज्रवीशांश्रेली। यहार्रिदा विमार पूर्गरिय शीमहि তলোদেবী প্রচোদয়াৎ। ইতি তুর্গাগায়ত্রী। নারায়ণ্যৈ বিদাহে তুর্গায়ে ধীমহি তন্নো গৌরী প্রাচাদয়াৎ। ইতি जय्रज्ञां शाखी। यहालरेका विषाद यहा खिरेय धीयहि जमः है। अकामग्रार। ইতি लक्षीगांग्रेकी। वाग्रिपरेग विन्नार्ट् कामताङ्गाय धीमिट् ज्यापिती थ्राप्तामग्राद। देजि मत्रश्वीभाशकी। नातायरेग विषार पूर्वत्न रेग्र वीमहि जसारमयी थाछामग्रामिकि जूरानश्रतीभाग्रजी। जभरोका विषाद गादिश्रां धीगिर जाताश्वर्ण श्रामिशा है जि व्यम्भूनी भाषा । यश्यम किंद्रिया विषाद पूर्णी देश थीयशि जिल्ली-(मवी প্রচোদয়াৎ ইতি মহিষমর্দিনী গায়ত্রী। বৈরোচিত্যৈ विद्याद् इिम्नयङादेव शीयदि उसा प्रिती প্रচোদয়ा पिछि इन-यखागायुक्ती। कालिकारेय विद्यार भागान्वामिरेण धीयहि जिसा रिचारत थरिनमार । देजि कालिकां भाराजी। जातारेय विद्यार गरहा शारिय थीमहि जसा दिवी প্রচোদয়াৎ। ইতি

তারাগায়ত্রী। গরুড়ায় বিদ্মহে স্থপর্ণায় ধীমহি উন্নো গরুড়ঃ প্রচোদয়াৎ। ইতি গরুড়গায়ত্রী।

ধ্যানাস্ত প্রতিঃ উদ্যদাদিত্যসঙ্কাশাং পুস্তকাক্ষকরাং স্মরেৎ। কৃষ্ণাজিনধরাং ব্রাক্ষীং ধ্যায়েত্তারকিতেহ্সরে। মধ্যাহ্নে শ্রামবর্ণাৎ চতুর্বাহ্ণ শঙ্খচক্রলসৎকরাং। গদা-পদ্মধরাৎ দেবীং সূর্য্যাসনক্তাশ্রয়াং। সায়াহে বরদাং দেবীং গায়জ্রীং সংস্মরেদ্যতিঃ। শুক্লাং শুক্লাম্বরধরাং রুষাদন-কৃতাশ্রাং। ত্রিনেত্রাং বরদাং পাশং শূলঞ্চ নৃকরোটিকাং। मृर्याम अनमश्राष्ट्राः था सन् (पर्नीः ममजारमः। जिनूतार्पो ध्यानिति । यथा - প্রাতরাধারকমলে ত্তভুগ্ন ওলোপরি। वाश्राक्रक्रभार विमागाविद्याद्वर्थनञास्र । भूष्भवार्षक्र-কোদগুপাশাঙ্কুশলসৎকরাং। স্বেচ্ছাগৃহীতবপুষীং গুরুবিদ্যা-कतां विकार। यथारक क्षयां खाक कर्निक मूर्याय अला। कामवीकािकाश (पवीमलककत्रमाञ्चलाः। अमृनवािभूए कू চাপপাশাঙ্কুশান্বিতাং পরিতঃ স্বাত্মমুখ্যাভিঃ ষট্তিংশভত্ব-শক্তিভিঃ। সায়মাজ্ঞাসরোজত্বে চন্দ্রে চন্দ্রসমত্যুতিং। माधक चौम (मन्डाव भाग्रजो छा किवमा (मन्डान धान किरिय। खाडःमस्राट्ड উদয়কাদীন স্ণোর ভাষ বর্ণবিশিষ্টা পুস্তক ও জপমাল-थातिणो कुक्षवर्ण हम्प পরিধানা বাদ্ধী শক্তিকে চিন্তা করিবে। অতি প্রত্যুষে অর্থাৎ আকাশে নক্তরসত্তে প্রতিঃসন্ধ্যা করা কর্ত্তব্য। স্থ্যান্তকালে খ্রাম-वर्ग हकूका एवं जा महा, हक, भना ७ भन्न छ। प्रवीत भाग कतित्व। मानः-कारण वत्रवा, गांत्रजीक्रेशा, खक्रवर्ता, खक्रवज्ञभविशाना, व्याक्रका, जिनत्रना, वत्र, भाष, णूण ও नत्रकशालशात्रियी स्यायश्वनमश्राहा (पदीत्र शान कतिरव। এইक्रम जिमका। भृषक् भृषक्करण रमवर्णात्र धानि कतिरा इकेरव।

काणी जातामि मकल (प्रवांत भएकरे अरेक्स भाग कतिरु, जिल्दा-

শক্তিবীজাত্মিকাং চাপবাণপাশাস্থ্যান্বিতাং। যুগনিত্যাকরাকারাং ঝটিকাবরণান্বিতাং। চিন্তমিন্ধা ভগবতীং
নিত্যাভিঃ পরিবারিতাং। তারাদে তু। ব্রী হংসঃ ইতি
সূর্য্যার্ঘ্যং দক্তা তাত্রাদিপাত্রে চন্দনার্ককৃষ্ণমাপরাজিতাপুন্পাণি
নিঃকিপ্য উদ্যাদাদিত্যমণ্ডলমধ্যবর্তিকৈ নিত্যচৈতভোদিতায়ৈ
শ্রীমদেকজটায়ৈ স্বাহা ইত্যর্ঘং দক্তা গায়ন্ত্রীং জপেদিতি
বিশেষঃ। তত্রকং নীলতন্ত্রে। উদ্যাদাদিত্যমণ্ডলমধ্যবর্তিকৈ
চ সমুন্ধরেৎ। নিত্যচৈতভোদিতায়ৈ স্বাহেতি চ মনুং স্মৃতঃ
অন্যত্র কালিকামন্ত্রে একজটাপদস্থানে কালিকাপদপ্রয়োগঃ।
ততঃ সূর্য্যমণ্ডলে দেবতাং বিভাব্য মূলমন্ত্রং যথাশক্তি জপ্ত্রা
সংহারমুদ্রয়া দেবতাং স্বন্ধ্রমানীয় তীর্থং নমস্কৃত্য বাসন্থানমাবিশেদিতি স্নানবিধিঃ।

ততঃ मार्गानगर्धाञ्चाभनामि जामत्नाभरवभाखः मीकाभन्न-

স্পরীদেবীর সন্ধাতে ধ্যানের যেরপ পার্থক্য আছে, ভালা মূলে দৃষ্টি করিলেই জানিতে পারিবেন। তারাদি দেবভার সন্ধাতে ব্রাঁহং সং এই মন্ত্রে স্থার্ঘ্য প্রদান করিয়া ভাষাদি পাত্রে রক্তন্সন, মাকলপুপা ও অপরাজিতা পুপা নিক্ষেপ করিয়া উদাদাদিত্যমগুলমধ্যধর্তিলৈ নিভাইচত্ত-জোদিতারৈ শ্রীমদেকজটারৈ স্বাহা, এই বলিয়া অর্ঘা প্রদান করিয়া গায়জী জণ করিবে। এই বিষয়ের প্রমাণ হাহা নীলভত্ত্রে লিখিত আছে, ভাহা এই স্লে উক্ত করা হইরাছে। কালিকামন্ত্রে একজটাপদন্ধানে কালিকাশ্য উক্ত করা হইরাছে। কালিকামন্ত্রে একজটাপদন্ধানে কালিকাশ্য প্রয়োগ করিবে। তৎপরে স্থামগুলে দেবভারপ চিন্তা করেছ হথা-শক্তি মূলমন্ত্র জপ করিবে, অনন্তর সংহার মূদ্রাহারা স্থীয় শ্রুদরে দেবভা স্থান পূর্বক ভীর্থ নমস্বার করিয়া স্থাহে গমন করিবে।

ज्रणात मीकाभक्षित श्रामीकारम मामाग्राधी श्रामनामि जामस्मानः. रमनास कर्य ममाभन कतित्रा वामज्ञारा व श्रक्राणा नमः, भन्नसङ्ग्रहणा ভুক্তং (৭৯পৃষ্ঠা) কর্ম সমাপ্য বামে ওঁ গুরুভো নমঃ ওঁ পরম-গুরুভো নমঃ ওঁ পরাপরগুরুভো নমঃ দক্ষিণে ওঁ গণেশায় নমঃ মৃদ্ধি, মৃলমুক্তার্য্য অমুকদেবতায়ৈ নমঃ। তথাচ গৌতমীয়ে—কৃতাঞ্চলিপুটো ভূত্বা বামে গুরুত্রয়ং যজেৎ। গুরুক্ষ পরমাদিক্ষ পরাপরগুরুত্তথা। দক্ষপার্যে গণেশক্ষ মৃদ্ধি, দেবং বিভাবয়েৎ। ততঃ ফড়িতিমন্ত্রেণ গদ্ধপুষ্পাভ্যাৎ করো সংশোধ্য উর্দ্ধোদ্ধতালত্রয়ং দত্ত্বা ছোটিকাভির্দশদিয়দ্ধনং কৃত্বা রমিতি জলধারয়া বহ্নিপ্রাকারৎ বিচিন্ত্য ভূতশুদ্ধিৎ কুর্য্যাৎ। (৮০ পৃষ্ঠা) ততো মাতৃকান্যাসং (৮৮ পৃষ্ঠা) প্রাণায়ামং (৯৪ পৃষ্ঠা) পীঠন্যাসং (৯৬ পৃষ্ঠা) ঝ্রাদিন্যাসং (৯৭ পৃষ্ঠা) (অঙ্গন্যাসঞ্চ (৯৮ পৃষ্ঠা) কুর্য্যাৎ।

ততস্ততৎকল্পোক্তমুদ্রাৎ প্রদর্শ্য ধ্যানং কৃষা মানদৈঃ সংপূজ্য শহ্বস্থাপনং কুর্য্যাৎ। (১০০পৃষ্ঠা) তথাচ সনৎকুমার তন্ত্রে—অকৃষা মানসং যাগৎ নকুর্য্যাদ্বহির্চ্চনং।

নম:, পরাপর গুরুত্যো নম:, দক্ষিণে ওঁ গণেশায় নম: মধ্যে মৃলমন্ত উচ্চা-রণ করিয়া অমৃকদেবতারৈ নম:, এই রূপে নমস্কার করিবে, এই বিষরের প্রমাণ গৌতমীয়তত্ত্বে যাহা লিখিত আছে, ভাহা এইস্থলে উদ্ভূভ আছে। তৎপরে ফট্ এই মস্ত্রে গদ্ধপুলারা করশোধন, ক্রমত উদ্ধি ভালতার্থনিন করিয়া ছোটিকাম্দ্রায় দশ্দিথদ্ধন পূর্দ্ধক রং এই মদ্রে জলধারা বারা বেষ্টন করত চতুর্দ্ধিকে বহিনয় প্রাকার চিন্তা করিয়া ভৃতভাদ্ধি করিবে। তৎপরে মাতৃকান্তাস, প্রাণারাম, পীঠভাস, ঋষ্যাদিতাস ও অল-ভাস করিবে। এই সকল ভাগ দীকা প্রকরণে উক্ত হইয়াছে।

এইরপে গ্রাসাদি করিয়া ভত্তদেবতার মুদ্রা প্রদর্শন পূর্বক ধ্যান ও .তদতে মানস পূজা করিয়া শতাহাপন করিবে। সনৎকুমার তত্তে লিখিত ভাতে বে, মানস পূজা না করিয়া বাহ্ন পূজা আরম্ভ করিবে না।

অথ মানসপুজা। অমদাকয়ে—হৎপদ্মমাদনং দদ্যাধ্বন সহস্রারচ্যতামৃতং। পাদ্যং চরণয়ো দদ্যাৎ মনশ্চার্য্যং নিবেদয়েৎ। তেনামৃতেনাচমনং স্নানীয়ন্তেন চ স্বৃতং। আকাশতত্ত্বং বস্ত্রং স্থাৎ গদ্ধৎ স্থাদ্ গদ্ধতত্ত্বকং। চিত্তং প্রকলমেৎ পুল্পং ধূপং প্রাণান্ প্রকল্লয়েৎ। তেজস্তত্বক দীপার্থং নিবেদ্যং স্থাৎ স্থাস্থিঃ। অনাহতক্ষনিং ঘণ্টাং শন্তত্ত্বক গীতকং। নৃত্যমিদ্রিয়চাঞ্চল্যং বায়ুতত্বক চামরং। সহস্রারং ভবেৎ ছত্রং হংসং স্থাৎ পাছকাদ্বয়ং। স্থমেখলাং পদ্মালাং পুল্পুং নানাবিধং তথা। অমায়াদ্যৈভাবপুল্পেরর্জয়েতাব গোচরাৎ অমায়ান্মনহক্ষার-মরাগমদমন্ততঃ। অমাহক মদস্তক্ষ অন্বেঘাক্ষোভকো ততঃ। অমাৎসর্য্যমলোভক্ষ দশপুল্পং বিছুর্ধাঃ। অহিংসা পরমং পুল্পং পুল্পমিদ্রিয়

অনন্তর মানসপুরা বিবৃত হইতেছে। অয়দাকরে লিখিত আছে যে,
সাধক আপন হৃদয়পয়কে আসন রূপে করন। করিয়া তাহাতে অভীই
দেবতাকে উপবেশন করাইবে এবং সহলার বিগলিত অমৃত পাদ্যরূপে
অর্পন করিবে, অর্থাৎ সহলারবিগলিতামৃতহারা দেবতার চরন হয় প্রকালন
করিতে হইবে। তৎপরে আপন মনকে অর্থারূপে প্রদান করিয়া পুর্কোক্ত
সহলারামৃত আচমনীর ও সানীয় রূপে প্রদান করিবে। অনন্তর আপন
শরীরস্থ আকাশ তত্তক বল্ল, গ্রন্তত্তক গন্ধ, চিতুঁকে পূপ্য এবং প্রাণকে
ব্রন্তবিধা করিয়া দীপার্থ তেজন্তব্ অর্থাৎ আপন শরীরের তেজ
এবং নৈবেদারূপে স্থাসাগর নিবেদন করিবে। তৎপরে ঘণ্টা বাদ্য রূপে
অনাহত্তক্র অর্থাৎ হৃদয়স্থ ঘাদশদলপলে ধ্বনি করিবে। অনন্তর গীত
রূপে শক্তব্ স্তারূপে ইল্লিয়চাঞ্চল্য নিবেদন করিয়া বায়্তত্তকে চামর,
সহলারকে ছল্ল, হংসঃ অর্থাৎ খাসপ্রখাসকে পাছকা এবং বিচিত্র পল্মালা
ও দশবিধ পূপ্য নিবেদন করিবে। অর্থাৎ অ্যায়া, অনহত্বার, অরাগ, অম্বর্দ,
আমোহ, অদন্ত, অত্বেদ, অক্লোভ, অমাৎগর্য্য ও অলোভ ইহারাই দশবিধ

নিগ্রহং। জ্ঞানপুষ্পং দয়াপুষ্পং ক্ষমাপুষ্পং তথৈব চ।
ইতি পঞ্চদশৈর্ভাবপুষ্পৈঃ সংপ্রু রেচিছ গং। অধাস্থাইং
মাংসদৈলং মহস্ত শৈলং তথৈবচ। মুদ্রারাশিং অভক্তঞ্চলতং পরমান্ধকং। কুলামুতঞ্চ তৎপুষ্পংপঞ্চত কালনোদকং। ভূমো স্বর্গে চ পাতালে গগনে চ জলান্তরে। যদ্ধ্র প্রময়হ তহুস্করং জুনুবেদ্যার্থং প্রকল্প রেহে। কামক্রোহেণ ছাগবাহো বলিং দত্তা জপেত্ততঃ। পাতল-ভূতল-ব্যোমচারিণো বিশ্বকারিণঃ। তাংস্তানপি বলি ভা নির্দ্ধি জপমারতেহ।
মালা বর্ণমন্ত্রী জ্ঞেয়া সূত্রং শক্তিশিবাস্থাকং। গ্রন্থিঃ মূলমন্ত্রহং
মাল্য বর্ণমন্ত্রী ক্রেয়া সূত্রং শক্তিশিবাস্থাকং। গ্রন্থিঃ মূলমন্ত্রহং
সমুচ্চরেহ। অথবা চিত্রিণাদূত্রং জ্ঞানরূপং পরাহপরং। অকারাদিলকারান্তামনুলোমবিলোমিকাং। মালা শত্মন্ত্রী প্রোক্তা
বিন্দুরুক্তাক্ষমালিকা। অকার। দিলকারান্ত শ্বন্থনাম ইতি

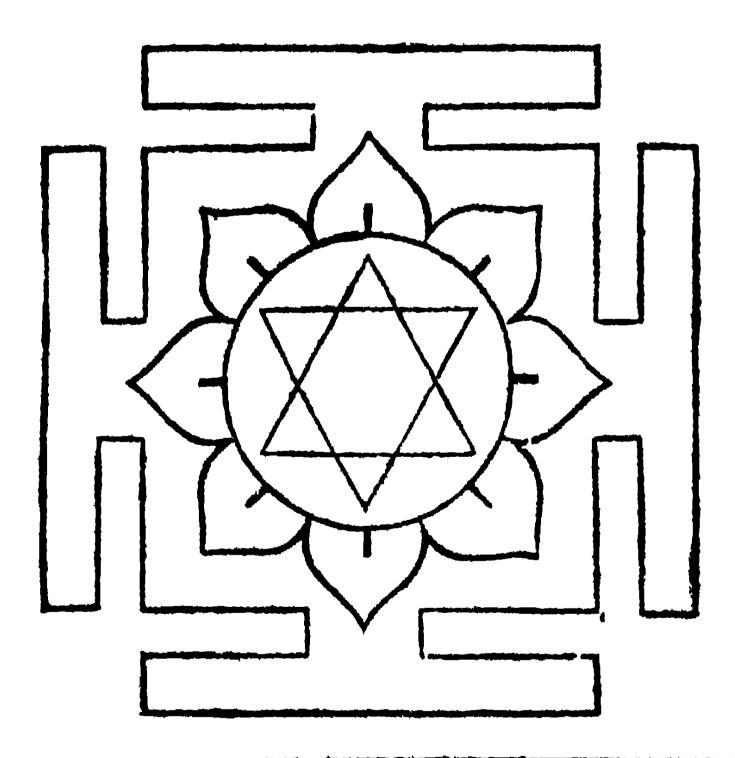
পূলা। আর অহিণ্যা ও ইন্তিয়নিএছকা পরম পূলা এবং জ্ঞান, দয়া ও কমা এই পঞ্চপুলা প্রদান করিতে হইবে। এই প্রকার পঞ্চলশ ভাবপূলাভারা অভীপ্রদেবকে পূজা করিবে। অনস্তব স্থাসাগরকে মাংস ও মংস্তপর্কত রূপে নিবেদন কবিয়া মুদ্রাসকলকে স্থাক অর ও মৃতাক পরমাররূপে নিবেদন করিবে এবং পৃথিবীতে, স্বর্গে, পাতালে, আকাশে ও জলমধ্যে
যে যে বস্তু আছে সেই সম্পার নৈবেদ্য রূপে নিবেদন করিবে। তৎপরে
ভামকে ছাগ ও ক্রোধকে মহিব কপে বলিপ্রদান করিয়া জপ করিবে।
আর পাতালে, ভূতলে ও আকাশে যে সকল হিংল্ল জন্তু বিচরণ করে
ভাহাদিগকেও বলিপ্রদান করিয়া নির্দা্দ ইইয়া জপ আবম্ব করিবে।
এই জাণে অকারাদি বর্ণকলকে শিবশক্তিরপ স্ত্রে গ্রন্থন করিয়া জপমালা
করিবে, অথবা চিত্রিণী নাড়ীকে স্ত্রে এবং অকারাদি ক্ষরায়ন্ত বর্ণ সকলকে
ভাস্লোম ও বিলোমে মালা রূপে করনা করিয়া এই শতমালা যুক্ত অক্ষসালার জপ করিবে। অকারাদিবর্ণে বিন্দুর্ক্ত করিয়া লইবে। অকারাদি

ততঃ পীঠন্তাসক্রমেণ শরীরে ধর্মাদিপূজা। তথাচ সারদায়াৎ—ত্যাসক্রমেণ দেহের ধর্মাদীন্ পূজয়েততঃ। পুলাদিঃ
পীঠমন্বতং তিমিংশ্চ পরদেবতাং। ইতি দর্শনাৎ শরীরে পীঠপূজাং
কুর্য্যাৎ পীঠন্তোতরে গুরুপঙ্কীঃ পূজয়েৎ। যথা বায়ব্যাদীশপর্যান্তং ওঁ গুরুভ্যোনমঃ ওঁ পরমগুরুভ্যোনমঃ ওঁ পরাপরগুরুভ্যোনমঃ ওঁ পরমেষ্টিগুরুভ্যোনমঃ। ত্রিপুরাদৌভূ
বিশেষগুরুপূজা তত্রামুসদেয়য়া। পীঠমধ্যে ওঁ আধারশক্তয়ে
নমঃ এবং প্রকৃতয়ে কুর্মায় শেষায় পৃথিব্যৈ ক্ষীরসমুদ্রায়
শেতদ্বীপায় মণিমগুপায় কল্পর্কায় মণিবেদিকাব্য রত্নসিংহা-

লকারাস্ত বর্ণে অনুলোম এবং লকারাদি অকারাস্ত বর্ণে বিলোম, এইরপে শত মালা হর। ক্ষকারকে পৃথক মেক্ষররপ জ্ঞান করিয়া শতবার জপ করিবে এবং অষ্টবর্গের আদি অষ্ট বর্ণে অষ্টবার জপ করিশেই এক শত আটবার জপ হয়। এইরপে জপ করিয়া জপ সমাপন পূর্বক নমস্থার করিবে। মাতঃ! তুমি সকলের অস্তরাদ্বার আপ্রর ও জ্যোতিঃস্করপ, ভোমাকে নমস্থার করি। এই মত্তে পঞ্চাক নমস্থার করিবে। এই প্রকারে অস্তর্গাগ করিয়া বাছ পূজা করিবে।

তৎপরে পীঠন্তাসক্রমে দেবশরীরে ধর্মাদির পূজা করিবে। সারদাতিলকে
লিখিত আছে যে, পীঠন্তাসক্রমে পূজাদিদারা দেবশরীরে পীঠদেবতার পূজাকরিবে। তৎপরে পীঠপূজা করিতে হইবে। পীঠপূজার পূর্বে শুরুপংক্তিপূজা করিবা। তিপুরাস্ক্রমীর পূজাতে গুরুপুলার বাহা বিশেষ আছে,তাহা

मनाम खिंदिकार भर्जाम निक्ष जिवायी मार्तम् छानः देवागाः क्षेत्रम् भृक्षद्म । उठः भृक्षाितिष्कः खर्माछानादेवागाः-देन्पर्यान् भृक्षद्म । मर्था खनस्मित द्वी छानान्यत्न नमः हेठासः मःभृका(> • २) भृक्षिित्व मर्द्रम् उठ्दक्षाक भीठमकीः मःभृका मर्था भीठममः ध्रमृक्षद्म । जात्राितित्वाात्मे इ विरम्म छेकः । भृक्षिितिष्ठ नियमस कामर्ग — भूका भृक्षक द्यार्म्मधाः थाठी कि कथा द्व वृदेशः । उक्त किनः पिक्तनः खालामः दिविना मस्ति भूक्षाः (छात्रः मर्व्यक्षेत्रः थर्याक्षद्म । ज्यन्न विधिना मस्ति भृक्षात्मे भूक्षाः प्रवृद्धः । ज्यित्यः यद्यनियमस्ति मर्ममृद्क — खन्नक दक्ष यस्ति विरथे भन्नः प्रति प्रकार म्हार्के ।



ত্রিপুরাদেবীর পূজা প্রকরণে দ্রন্তবা। পীঠপুজার পদ্ধতি মূলে স্পন্তরূপে লিখিত আছে। তারাদি দেবতার পূজাতে বাহা বিশেষ আছে, তাহা সেই সেই পূজাপদ্ধতিতে অনুসদ্ধান করিবে। যামলে যেরূপ পূর্বাদি দিত্রিরম লিখিত আছে, তাহা এই ;—ভঙ্গাত্তমতে পূজা ও পূজকের মধ্যন্তলে পূর্ব্ব, ভাহার দক্ষিণ, ভছাবে উত্তর এবং তৎপৃষ্ঠে পশ্চিম জ্ঞান করিয়া

ষট্কোণকণিকং তত্র বেদৰারোপশোভিতং। ততঃ পুনর্থান্তা আবাহনাদিপ্রাণপ্রতিষ্ঠান্তং কর্ম কুর্য্যাৎ। আবাহনে
তু বিশেষোযথা—আগমকর্মজ্রমে—মূলমন্ত্রং সমুক্তার্য্য
স্থম্মাবর্তমনা স্থবীঃ। আনীয় তেজঃ সম্থানামাসিকারদ্ধ
নির্গতং। করম্থে মাতৃকান্তোজে চৈতত্যৎ পুষ্পদঞ্চয়ে।
সংযোজ্য পুষ্পমধ্যে তৎ সংস্থাপ্যাবাহয়েকতঃ। ততঃ ষোড়শোপচারৈঃ পঞ্চোপচারের্বা পূজ্যেৎ। ষোড়শোপচারনিয়মস্ত—আসনং স্থাগতং পাদ্যমর্য্যমাচমনীয়কং। মর্পর্কাচমনস্নানং বসনাভরণানি চ। স্থান্ধিস্থমনোধ্পদীপনৈবেদ্যবন্দনং। প্রয়োজ্যেদর্জনায়ামুপচারাংস্ত যোড়শঃ। অথবা
এযামভাবে পঞ্চোপচারান্ কল্পয়েৎ। গন্ধাদয়েনিবেদ্যান্তা

পূজা করিবে। সকল পূজাতেই এইরপ নিয়ম জানিবে। উক্ত নিয়মে রিঙ্নির্বি করিয়া পূজাদি করিবে। সামাস্ত পূজাতে বেরপ যন্ত্র করিয়া পূজা করিতে হয়, ঐ যন্ত্র নির্মাণের প্রমাণ যাহা মংস্তস্কে উক্ত আছে তাহাতে জানা যায় বে, যে স্থানে যন্ত্রের বিশেষ উক্ত নাই, সেই স্থলে মউ্টেলা বিশিষ্ট কর্ণিকা অন্ধিত করিয়া ভাষার বহির্ভাগে অইনল পদ্ম, তথাছে চতুর্জার অন্ধিত করিয়া স্থাভাল বল্ধ অন্ধিত করিয়া প্রান্তর করিছে হইবে। অনক্তর পূন্র্বার ধ্যান ও আবাহনাদি কার্য্যকল করিয়া প্রাণপ্রতিষ্ঠাপর্যান্ত কর্ম্ম করিবে। আগমকরক্রমে আবাহনের বাহা বিশেষ আছে, তাহা বলিতেছেন, মূলমন্ত্র উক্তাবণ পূর্বাক স্থল্মাবন্ত্রে স্থান হইতে তেজ আনয়ন করিয়া নাসিকারক্রে নির্গত করত কর্মস্তিত পূজানক্রে সংস্থাপন পূর্বাক আবাহম করিবে। অনক্তর বোড়শোপচার কিছা প্রোণ্ডাগালার গ্রান করিবে। বোড়শোপচার ঘণা—আানন, স্থান্তপ্রশ্ন, পাদ্য, অর্য্য, আচমনীর, মধুণ্রক্, সানীর, বল্প, অলহার, গন্ধ, পুন্প, ধুণ, দীপ, নৈবেদ্য ও নমন্তার এই নকল উপ্টারের অভাবে প্রণাণচারে পূজা করিবে। গ্রুত্ব উপ্টারের অভাবে প্রেণাণচারে পূজা করিবে। গ্রুত্ব উপ্তানির অভাবে প্রেণাণচারে পূজা করিবে। গ্রুত্ব উপ্তানির অভাবে প্রেণাণচারে পূজা করিবে। গ্রুত্ব উপ্তানির অভাবে প্রেণাণচারে পূজা করিবে। গ্রুত্ব অভাবে প্রেণাণচারে পূজা করিবে। গ্রুত্ব অভাবে প্রেণাণচারে পূজা করিবে। গ্রুত্ব উপ্তানির অভাবে প্রেণাণচারে পূজা করিবে। গ্রুত্ব উপ্তানির অভাবে প্রেণাণচারে পূজা করিবে। গ্রুত্ব স্থান, গ্রুত্ব উপ্তানির অভাবে প্রেণাণচারে পূজা করিবে। গ্রুত্ব স্থান, গ্রুত্ব উপ্তানির অভাবে প্রেণাণচারে পূজা করিবে। গ্রুত্ব স্থান, গ্রুত্ব স্থাকি,

পূজা পঞ্চোপচারিকা ইতি। বিষ্ণুবিষয়ে তু অর্ঘাদ্যাঃ পঞ্চ পঞ্চৈব গদ্ধাদ্যা ইতি ভেদতঃ। প্রয়েজয়েদর্ভনায়ামুপচারান্দশ জমাৎ। ততঃ পুষ্পপর্যান্তমুপচারং তত্তমজেদ দত্তা ষড়সেন পূজয়েং। পুষ্পদানে তু বিশেষঃ। পুষ্পং বা ষদি বাপত্রং সর্বাং নেইমধামুখং। তুঃখদং তৎ সমাধ্যাতং যথোৎপন্ধং তথার্পনং। অধামুখং ফলং নেইং পুষ্পাঞ্জলিবিধে ন চ। ততামুর্জয়দ্ভয়পাদসর্বাসকেয় মুলেন পঞ্চপুষ্পাঞ্জলীন্ দত্তা তত্তৎকল্লোক্তাবরণপূজাং ক্র্যাৎ। তথাচ—পঞ্চ পুষ্পাঞ্জলীন্দত্তা পরিবারার্চনং চবেদিতি ভট্টঃ। ততাে ধুপদীপো দদ্যাৎ। তদ্যথা—জয়ধ্বনিমন্তমাতঃ স্বাহেতি পুষ্পাক্ষতির্ঘণ্টাং সংপূজ্য বামহস্তেন তাং বাদয়ন্ তত্তমস্ত্রেণ নীচৈ ধূপং দদ্যাৎ। দৃষ্টি-পর্যান্তং দিপঞ্চ দদ্যাৎ। ততে।মুলেন পুষ্পাঞ্জলিত্রয়ং দত্তা

मीन, अ देनदिना এই नकि विध जनादक निकानित वना यात्र । विकृतियद कर्या, काठमनीत्र, मधुनक, काठमनीत्र, ज्ञानीत्र, नक्ष, भून्न, धून, मीन अ देनदिन अहे महानाठाव अन्छ । हिन्द ठात्र मृज्य अप्नानशास केन्छ । अपित क्षित्र मृज्य अप्नानशास केन्छ । अप्रान्त विद्या क्षित्र नित्र अवे — भून्न अन्य कर्या पूर्व कि त्र । भून्न अन्य कर्या पूर्व कि त्र । भून्न अन्य कर्या पूर्व कि त्र । मित्र क्षित्र विष्य कर्या कर्य । भून्न, क्ष्म, अन्य नित्र क्ष्म क्ष्म क्ष्म क्ष्म क्ष्म अप्तान क्ष्म क्ष्म क्ष्म अप्तान अहे नित्र क्ष्म क्ष

নেবেদ্যমানীয় কড়িতি সংশ্রোক্ষ্য চক্রমুদ্রয়া অভিরক্ষ্য তহুপরি
মূলমন্টনা জপ্তা ধেনুমুদ্রা অয়তীকতা মূলমুচ্চার্যা নৈবেদাং
দদ্যাৎ। যতােরমর্ফপাত্রপ্য তমিধায় নিবেদ্যেৎ। অক্যতে। যৈর্বন্ধ্রপ্যত্তির বিষ্টার্যা নিবেদ্যেৎ। অক্যতে। যৈর্বন্ধ্রপাত্রিকি বিষ্টার নিবেদ্যেৎ। অক্তর্যেন
বিধিশতৈরপি। ইতি বচনাদ্যাবত্রপচারমর্যাপা মন্থললেনোৎস্ক্র্যা দদ্যাৎ। ততঃ পুনরাচমনীয়ং দত্তা তাম্বাং দদ্যাৎ।
বৈষ্ণবে তু নৈবেদ্যে বিশেনোব্যক্তব্যঃ। ততঃ সপরিবার্দেবতাং
গন্ধাদিভিরভার্চ্য নৃত্যগীতৈর্দেবীং সন্তােষ্য জ্ব জ্বেত্যুক্তা
বিশেষর্য্যাং দত্তা পুল্পাঞ্জলিং দদ্যাৎ। দানে তু—আদ্যে
মূলং ততােদ্রব্যান্ত্রেখং ততঃ সংশ্রাদন তত্ত্যাগার্থকপদ্মিতি
সর্বত্তে। তথাচ ক্লা-বি —অদ্যে মূলং ন্যুচ্চার্য পশ্চাদ্দেযমূদীরয়েৎ। সংপ্রদানং তদত্তে তু ত্যাগার্থকপদন্ততঃ। এবং
ক্রমেণ দেবেশি উপচারান্ প্রকল্গনেং। মন্ত্রান্তে কর্ম্মদিনি-

পরে পুলাঞ্জিতিয় প্রদান কবিয়া নৈবেদ্যানয়ন পূর্ব্বক কট্ এই সংশ্ব

জলাভাকণ করিয়া চক্রমুদ্রা প্রদশনদ্বাবা সংবক্ষণ করিবে এবং নৈবেদ্যের
উপরি অইবাব মূলমন্ত্র জপকরিয়া ধেলমুদ্রাম অমুলীকরণ পূর্ণক মূলমন্ত্রে
নৈবেদ্য নিবেদন কবিবে। এইরূপ যত প্রবা নিবেদন করিছে ইইবে,
সকল দ্রেন্ত্রই অর্থাপাত্রত জলদ্বারা প্রোক্ষণ কবিয়া নিবেদন করি। বিশ্বেম।
অন্ত জল্বারা শতবাব প্রোক্ষণ কবিলেও ভালা দেবভার গ্রহণ হয় না।
তৎপরে পুনবাচমনীয় প্রদান পূর্বক ভালুল নিবেদন করিবে। বিফুবিরয়ে
নৈবেদ্য নিবেদনের মাহা বিশেষ নিয়ম আছে, তাহা বিফুপ্লা বিধিতে
কথিত হইবে। অনশ্বর গরাদি উপচারে পরিবার স্থিত পেবভার পূজা
করিয়া নৃত্যগীভাদিদ্বারা দেবভাব সজোষ স্থেন পূর্বক জ্বা ধ্বনি করিবে
এবং বিশেষার্ঘ্য প্রদান পূর্বক পূলাঞ্জিল প্রদান কবিতে হইবে। দেব

ভাব উপচার প্রদান ব্রম্ম এই বে, প্রথমে স্লম্ব উভারণ পূর্বক

পাতইতি ভাষাক। ততশ্বুক্লোদকমাদায় ইতঃ পূর্বাং প্রাণবৃদ্ধিদেহধর্মাধিকারতোজাগ্রৎস্বপ্রথয়বদাস্থ কর্মণা মনসা বাচা হস্তাভ্যাৎ পদ্ভ্যামুদরেণ শিশা যথ স্মৃতং যত্নজং যৎকৃতং তৎসর্বাং ব্রহ্মার্পণং ভবতু স্বাহা মাং মদীয়ং সকলং সম্যগম্কদেবতায়ৈ সমর্পয়ামি ওঁ তৎসৎ। নমস্বারানম্ভরং বা। ততোহন্টোত্তরসহস্রং শতং বা জপ্ত্বা ওঁ গুছাতিগুছ্-গোপ্তা বং গৃহাণাশ্রৎকৃতং জপং সিদ্ধির্ভবতু মে দেব স্বৎ-প্রসাদাৎ স্থা স্থিতে। সভ্যত্র গোপ্তী দেবীতি বিশেষঃ। ইতি জপং মমর্প্য স্থভাফাসপ্রণামং কুর্যাৎ। অফাঙ্গপ্রণামো-যথা—পদ্ভ্যাং করাভ্যাং জানুভ্যামুরমা শিরমা দৃশা। বচসা মনসা চৈব প্রণামোহন্টাঙ্গ-স্বরিতঃ। বাহ্ভ্যাঞ্বৈ জানুভ্যাং শিরমা বচসা দৃশা। পঞ্চাস্কোহ্যং প্রণামং স্থাৎ পূজান্থ প্রবরা-বিমো। ভূমো নিপত্য যঃ কুর্যাৎ কৃষ্ণেহন্টাঙ্গাং নতিং

জবোর নাম উচ্চারণ করিবে, অনস্তর যে দেবতাকে নিবেদন করিবে, সেই দেবতার নাম উল্লেখ করিয়া নমঃশক্ত প্রভিত ত্যাগার্থক শক্ষ ধারা নিবেদন করিবে। এইরপ দ্রব্য নিবেদনের নিয়ম কুলার্গবে লিখিত আছে। অনস্তর গতৃষ পরিমিত জলগ্রহণ করিয়া ইতঃ পূর্বং ইভ্যাদি মূলের লিখিত মত্রে দেবতাকে আত্মসমর্পণ করিতে হইবে। তৎপর সাধক অন্তাল প্রণাম করিবে। পাদধর, হত্তধর, জাহুদ্দ, বক্ষঃ, মন্তক, চক্ষ্, বাক্য ও মন এই আইাল্যারা যে নমন্থার করা যায়, তাহাকে অন্তাল নমন্তার করে। বাদ্ধর, জাহুদ্দ, মন্তক, চক্ষ্, বাক্য ও মন এই আইাল্যারা যে নমন্থার করা যায়, তাহাকে অন্তাল নমন্তার করে। বাদ্ধর, জাহুদ্দ, মন্তক, নাক্ষা ও চক্ষ্, এই পঞ্চাল্যারা যে নমন্থার করে, তাহাই পঞ্চাল নমন্তার, পুজার অত্যে এই উভারবিধ নমন্তারই প্রশাস্ত। যে ব্যক্তি ভূমিতে নিপত্তিত হইরা দেবতাকে আইাল নমন্তার করে, সেই স্থাক্তি পূক্তন সহত্য জন্মার্কিত পাপ ইইতে পরিত্রাণ পাইরা বৈকুঠেবামে গমন করিয়া থাকে, আর বেদবিদ্ ব্যক্ষণের উদ্ধেশে ভূমিদান করিলে

ত্বী:। সহত্রজন্মজং পাপং ত্যক্ত। বৈকুঠমাপুয়াৎ। তথাচ বেদ-विष्ठा। धताः पदा य कलः लज्ज नतः। ज कलः लज्ज ভক্তা कृर्य कृषा প্রদক্ষিণং। कृष-ইত্যুপলক্ষণং। বিশ্বসারে---मधरुएसन मर्वा पिका भिन्न भिन्न विकिश । निविदि भश्य कायल-जिकागकाता मर्वज निष्ः भारकः मगीतिषा। मिकिनाबार्यीः गदा मिनखपाक नाख्यीर। उउन्ह मिकनः গছা নমস্বারস্ত্রিকোণবৎ। অর্দ্ধচন্দ্রৎ মহেশস্ত পৃষ্ঠতশ্চ मगीतिङ। सिर्यानिकर्ण मञ्जी अर्काटनकर्मण पू। मवामिवाक्रायश्विव मियमूकः न नद्यास् मियमूकः कलिन्धनत्रवाकानः। धानाया पिक्तिनः इष्टः समः नञ्जिनिताः-श्रूनः। प्रभाषामा किनः भार्यः यनमाभि छ पिकनः। जिधा **ठ (विशेर्या मग्राश् (**पविशास श्री श्री श्री । अकर्ख्य श्री मण्ड धकः वाभि श्रमिकः। यकाल मर्गनः विस्थिरिख भूगाः (यस्त भूगामक क्य, अमिकिन कतिया जिलिभूक्त पार्वात अगाम করিলেও দেই রূপ স্কৃতি জনিতে পারে। বিখসার তল্পে লিখিত আছে যে, हाएक महा शहन कतियो (कर्जाटक श्रामिन कतिर्व। या गाम राज्ञभ नम-कारतत्र नित्रम निथिज चाटक, जनस्मारत नमकात कतिरम विराध एन क्षेत्रा थाएक। भक्ति मिवजात नगन्नात्रकारम जिएकानाकारत श्रामिकन कतित्रा नमकात कतिएक इटेरव। अर्णाए त्यवात्र मिक्निमिक इटेरक बांच (कांव नशास गमन कविया जेनानरकारण गमन कविरम, धनसव वांबुरकांव मित्रा मिक्निमित्क कामित्व, এই ज्ञान कित्रिक् विकागोनात्त्र क्षामिन इत्र। स्विथानामकारण व्यक्षित्याकारत द्यानिकन कतिया नमकात कतिरन, कि 'जान निर्मयन ञ्चान नक्यम कतिर्दयम। चार्मान (प्रयोग नमकात कारन। मिक्निक्क व्यमादिष्ठ कतिया निस्निद्य पित्र पित्रिन्शिक्ष न्याने कत्र छिन्दात्र मिर्गिक (यष्टेन कतिया क्षानिक कतिए इहेर्द। (य वाकि मिर्गिक अक्ट्रें नमकात, अथवा अक्वांत्र क्षांतिक करत, अर्थवा (य वाकिः अकारम

পুরা কৃতং। দেবতাকে আবরণদেবতা বিলাপ্য ক্ষমন্থেতি বিদর্জনং কৃষা সংহারমুদ্ররা তত্তেজ্ঞঃ পুল্পৈঃ সার্জং সহলয় মানণে । তথাচ—নিধার দেবতাং পশ্চাৎ স্থারন্থ্যরন্ধরন্দর—সীক্ষতে প্র্রাবন্ধনা পুপনাদ্রাহ্যান্যযেরাস্থেত্তঃ। ততঃ ঐশান্তাং তিকোণমণ্ডলং কৃষা নির্মাল্যশেষং দদ্যাৎ। বৈফলে তু ওঁ বিশ্বনার নমঃ শক্তো ও শেবিকারে নমঃ শৈবে ওঁ চণ্ডেম্বরায় নমঃ দুর্য্যে ওঁ তেজশ্চণ্ডায় নমঃ গণেশে ওঁ উচ্ছিট্ট-গণেশায় নমঃ। কালিকাদো ওঁ উচ্ছিট্টচণ্ডালিন্তৈ নমঃ। তথাচ—বিশ্বক্সেনঃ স্মৃতো বিফো স্তেজশ্চণ্ডো বিবস্বত ইত্যাদি। তথাচ নিক্রে — দ্র্য্যে গণপতারুগ্রে শাক্তে শৈবেহণ নৈক্রনে। তেজশ্চণ্ড মথে, ছিল্ট সোজ মুচ্ছিট্টপুর্বিকাং। চাণ্ডালিনীঃ শেষিকাঞ্চ বিশ্বক্সেনং ক্রমাণ্যজেৎ। সোজ ইতি উনা শন্তুনা সহ বর্ত্তেইতি সো হুর্গা তজ্জো গণেশঃ। তত্য পাদোদকং পীয়া নৈবেদ্যং কিঞ্চিৎ স্বীকৃত্য

বিষ্ণু দর্শন কবে, ভাহাব পূর্দ প্রনাজিত সমস্ত পূণা বিনাশ পায়।
এই মপে নৃদয়াবাদ ক বিয়া দেবতাব শবীরে আবরণ দেবতা বিলীন করিষে
এবং ''ক্ষমশ্ব'' এই বাকো দেবতাকে বিসর্জন করিছে হইবে। আনস্তর
সংহার মুদ্রাখাবা পূলা দ্রিহিত দেবতাব তেজ স্বীয় হাদরে আনিয়ন করিয়া
ঈশানকোণে ত্রিকোণ মণ্ডলোশরি নির্মাল্য শেষ স্থাপন করিবে। পরে
বিষ্ণু পৃজনে ও বিশক্ষেনায় নমং শক্তিপুজাতে ও শেষিকারে নমং শিষ্
পূজাতে ও কডেখবার নমং, ক্র্যু প্রাতে ও তেজকণ্ডার নমং, গশেশ
পূজাতে ও উডিইগেণেশার নমং, কালিকাদি শক্তিপুলাতে ও উলিইটাঞাগিইল্ল নমং এই মন্ত্রে পূজা কবিবে। নিবরাদি গ্রন্থে কর্মাণ
লি বিভ আছে, সেই সকল প্রমাণ মূলে উষ্ঠ হইয়াছে। তৎপরে দেবভাব পাদোদক গ্রহণ করিয়া কিঞ্ছিং নৈবেদা গ্রহণ পূর্মক স্থান বিহার

অবশিষ্টং যোগ্যায় দত্তা যথান্তথং বিহরেদিতি। মৎস্থানুক্তে—
অনিবেদ্যং ন ভূঞ্জীত মৎস্থাশংসাদিকক্ষ যং। অন্নং বিষ্ঠা পয়ো
মুত্রং যদ্ধিকোর নিবেদিতং। বিক্ষোরিতি দেবতাপরং। তথাচ
তৈরবতন্ত্রে—হৃদয়ে চ বহিদ্দেবীং সমপ্য বিধিবততঃ।
নির্মাল্যক্ষ শুটো দেশে নৈবেদ্যং ভক্ষয়েৎ স্থাঃ। তন্ত্রান্তরে—
নির্মাল্যং শিরসা ধার্যং সর্বাঙ্গে চাতুলেপনং। নৈবেদ্যং
চোপভূঞ্জীত দত্তা তদ্ধক্তশালিনে। দেবতার্চাবশিষ্টং যৎ
সলিলং শন্তমধ্যগং। অঙ্গলগ্রং মনুষ্যাগাং ব্রহ্মহত্যাং ব্যপোহতি। ইতি সামান্যপূজাপদ্ধতিঃ॥

করিবে। মৎস্তস্তে লিখিত আতে বে, মৎস্থমাংসালি যে কোন বছ ভোজন করিবে। তাহার কোন জবাই দেবতাকে নিবেদন না করিরা ভোজন করিবে না, দেবতার জনিবেদিত জন বিষ্ঠা এবং পানীয় জলাদি মৃত্রতুলা জ্ঞান করিবে, মর্থাৎ জনিবেদিত জন ভোজন, অথবা জলপান করিলে বিষ্ঠা মৃত্রভোনের প্রায় চিত্ত করিতে হয়। ভৈর্বতন্তে লিখিত আছে যে, পবিত্র স্থানে বেবতাকে বিধিপূর্নক নৈবেদ্যা নিবেদন করিয়া প্রাণাদীক্ত নৈবেদ্য ভোজন করিবে। অন্তর্জ্ঞ প্রমাণে জানা যায় যে, নির্মাল্য পূলাদি মন্তকে ধারণ করিয়া সর্বাজে নিবেদিত লেপন করিবে। জনস্তর দেবভক্ত আন্ধাদিনকৈ নৈবেদ্য প্রদান করিয়া স্থাং নৈবেদ্য ভক্ষণ করিবে। দেবতার পূজাবিদিই শুলামধান্থিত জল অন্ধে সংলগ্ধ, হইলে অন্ধৃত্যাদি জনিত পাপ তৎক্ষণাৎ বিনাশ পাইয়া যায়। এইরপে সামান্ত পূজা প্রাণালী কথিত হইল। এই প্রশালীতেই সকল দেবতার, পূজা করিতে হইবে, যে দেবভার পূজাভে বাহা বিশেষ আছে, ভাহা সেই সেই দেবভার পৃশ্বভিতে জম্পন্ধান করিবে।

वाथ वियुष्ट शुक्ता वाष्ट्रां ।

यथ वरका गहामञ्चान् विरक्षाः मर्वमङ्किमान्। यश्च मः प्रत्रभाद मरखा ভবাকেः পার্মাঞ্জাः॥

অথ বৈষ্ণবাচমনং গোঁতমীয়ে—কেশবালৈ দ্রিভিঃ পীশা বাজ্যাং প্রক্ষালয়েৎ করোঁ। বাজ্যামোণ্ডোঁ চ সংমৃত্যা ঘাজ্যাং মৃজ্যামুথং ততঃ। একেন হস্তং প্রক্ষাল্য পাদাবপি তথৈ-কতঃ। সংপ্রোক্ষ্যকেন মৃদ্ধানং ততঃ সক্ষর্ষণাদিছিঃ। আশ্রানাসাক্ষিকর্ণাংশ্চ নাজ্যরস্কং ভূজো ক্রমাৎ। স্পৃশোদেবং ভবেদাচমনস্ত বৈষ্ণবাহয়ে। এবমাচমনং কৃত্যা সাক্ষান্নায়নণেতবেৎ। কেশবাদয়স্ত—কেশব-নারায়ণ-মাধব—গোবিন্দ বিষ্ণু-মধুস্দন-ত্রিবিক্রম-বামন-শ্রীধর-হ্যীকেশ-পদ্মনাভ-দামো-দর-সক্ষর্ষণ-বাস্থদেব-প্রত্নানিক্রদ্ধ-পুরুষোভ্রমাধোক্ষক্ত-নৃসিৎহা

এইক্ণণে সর্বাসমৃদ্ধিপ্রাদ বিষ্ণুমন্ত কথিত হইতেছে, এই মন্ত্র স্মান্তর সাধুগণ সংসারসাগরের পার হইতে পারে।

विक्षृत পृषाट दिक्कवाठमन कति हम, छाहा धरे—

टिक्कवान नमः, नातान्नशान नमः, माध्यात नमः, धरे जिम

माद्ध जिनवात क्रमभान कति । त्या क्रिया नमः, विकाद

माद्ध जिनवात क्रमभान कति । त्या क्रिया नमः, विकाद

माद्ध हम्प्रध्यान्तन, मध्यम्म नमः, जिनिक्षमान

नमः, धरे मद्ध अष्ठेषत मार्क्षन धरी क्रमान नमः कर्षे मद्ध स्व

भवान्तान नमः धरे मद्ध भाग्न भाग्न क्रिया छ० भद्ध

माद्यानन्नान नमः धरे मद्ध भाग्न क्रिया च्या

क्रमान्तान नमः धरे मद्ध भाग्न क्रिया च्या

क्रमान्तान नमः धरे मद्ध भाग्न क्रिया वाक्रमवान ममः

क्रमान्न ममः धरे मद्ध क्रमानिका क्रमान्न नमः भूक्रवान

क्रमान्न नमः धरे प्रहे मद्ध क्रमानिका क्रमान्न नमः भूक्रवान

क्रमान्न नमः धरे प्रहे मद्ध क्रमानिका क्रमान्न नमः भूक्रवान

क्रमान्न नमः धरे प्रहे मद्ध क्रमानिका क्रमान्न नमः भूक्रवान

क्रमान्न नमः धरे प्रहे मद्ध क्रमानिका क्रमान्न

क्रमान्न नमः धरे प्रहे मद्ध क्रमानिका

क्रमान्न नमः मुनिरहान नमः

্রিত-জনার্দন-উপেক্স-ছরি-বিষণ্ডঃ। বাক্যন্ত ওঁ কেশবায় নমা ইত্যাদি। তথাচ-সচতুর্থীনফোহতৈতে নামভির্বিশ্বসেৎ হথীঃ। মন্ত্রান্ত-তারং নমঃ পদং জয়ায়রো দীর্ঘসমিবিতো। প্রনোনায়মজোয়ং প্রোক্তো বস্বক্ষরঃ পরঃ।

অন্ত পূজাপ্রয়োগঃ। প্রাতঃকৃত্যাদি সানান্তং কর্ম কৃত্ব পূজামগুপমাগত্য বৈষ্ণবাচমনং কুর্যাৎ। ততঃ সামান্তার্ঘাদি মাতৃকান্তানান্তং কর্ম বিধায় (৭৯পৃষ্ঠা) কেশবকীর্ত্যাদিন্তাসং কুর্যাৎ।

অথ কেশবকীর্ত্যাদি ত্যাসঃ তত্র প্রথমং ঋষ্যাদিত্যাসঃ।
শির্দি প্রজাপতয়ে ঋষয়ে নমঃ। মুখে গায়ত্রীচ্ছন্দদে
নমঃ। হৃদি অর্জলক্ষীহরয়ে দেবতায়ৈ নমঃ। ততঃ করাঙ্গ-

এই ছই মন্ত্রে ছই কর্ণ, অচ্তার নগঃ এই মন্ত্রে নাভি, জনার্দ্রনার নগঃ এই মন্ত্রে বক্ষঃস্থল, উপেক্রায় নগঃ এই মন্ত্রে মন্তক এবং হরবে নগঃ বিশুবে নগঃ এই ছই মন্ত্রে ভ্রম্বয় প্রাণ করিবে। বিশুপ্রাণিতে এইরপ আচমন করিলে সেই ব্য ক্র সাক্ষাৎ নারায়ণত্ল্য হয়। এই আচমনবিষ্যে যে সকল প্রমাণ অঞান্ত তত্ত্বে লিখিড আছে, সেই সকল বচন এইস্থলে উদ্ভ আছে। নারাম্বার মন্ত্র ক্রিতেছে—নমো নারায়ণায় এই অটাক্ষর মন্ত্রে নারার্দ্রির পূজাণি কবিবে॥

छक महत्र পृद्धाक्तम এই — क्षाश्य क्षाङ:कृष्ठा मिन्नानास कर्य करिया পূक्षामखल गमन পृद्धक भूटकाङ देवस्थ वाहमन कदित्व। छ १ शरत माना-स्थार्था मःस्थानन পृद्धक माकृकान्नास कर्य कदित्व।

वरेक्य (कमयकीकां। ति छात्र कथिछ ०३ छिट्छ। बरे छात्रित थयां ति वरे—भित्रित ध्वाभडाव थयात्र समः, मृत्य शामकीकल्यात भमः, चित्रिक वर्षणकी०न्य त्यकारेन नमः। बरेकाल थयां विद्याम करियां

यारमी--शैं अत्रृष्ठां जार नमः हेजामि এवः क्षमग्नामियुं। जशांक গোতমীয়ে—ঋষিঃ প্রজাপতিশ্ছনো গায়ত্রী দেবতা পুনঃ। व्यक्तिकारितः (প্राक्तः वीवीर्णन यपुत्रकर । ততো धानर--উদ্যৎপ্রদ্যোতনতক্ষচিং তপ্তহেমাবদাতং পার্ষদ্বন্দ্বে জলধি-হত্যা বিশ্বধাত্রা। চ জুফং। নানারত্নোল্লসিতবিবিধাকর্ম-याशीजवस् विष्टु॰ वत्म मत्रकयन को यामकी ठक्र भागि ॥ এবং ধ্যাত্ব। অথাচ ক্রমদীপিকায়াং—বর্ণাস্ক্র मार्काञ्चान हेजाि पर्मना मर्वक मानूषा वः। वर किमवाय कीर्रिंडा नरमा ललारि । जार नाताय्याय कारेखा नरमा मूर्थ। है भाषवाय कूरिका नत्मा नकत्नत्व। के त्माविकाय भूरिका नरमा वामरनर्छ। मर्वछ ७व९। छ९ विकार धरेका मक-कियारिय मक्तनामाशूरि । श्रं९ वामनाय मयारिय वामनामा-शूटि। ७९ जीवताय (यवादिय मक्कनट्छ। ३१ क्षिरिकभाय इशिरेय वामगर्छ। এ९ প्रामाजाय आकारिय उर्छ। और

করাসন্তাপ করিছে হইবে। শ্রী অসুষ্ঠান্তাং নমং। শ্রী তর্জনীতাং আলা। শ্রী মধামালাং ব্যট্। শ্রীং অনামিকালাং হং। শ্রীং কনি-ষ্ঠালাং বৌষট্। শ্রীং করত লপ্ষ্ঠালাং ফট, এইরপ কর্ত্তাস করিরা শ্রীং স্থার নমং ইভাালিরপে স্থানিতে ষড়স্কলাস করিবে। তৎপরে ধ্যান করিতে হইবে। উদয়শীল শত সুর্গাব জার ডেজস্বী, প্রতিপ্ত স্থবর্ণবিৎ দেহ-কান্তি, সূই পার্শ্বে লক্ষা ও ব্রুমতী বিদামান আছেন। নানাবিধ র্ফুভূষণে বিভূষিত এবং পীত্রস্তাপরিধান, এইরপ শন্তা, চক্র, গদা ও পল্পধারী বিফুকে বন্দনা করি এই প্রকারে ধান করিয়া অং কেশবায় কীটের্ডা নমং ইত্যাদি কল্পে জাস করিবে। এইরপ অন্ত জ্বানে ল্পাস করিবে, বে বে স্থানে ও ল

मार्यामनाग्न मञ्जारेम व्यथरत । ७१ राष्ट्रप्रवाग्न सरिका विक्-पखनश्टकी छेर मक्सनां मत्रयरिंग व्यापानखनश्टको। व्या প্রভাষায় প্রীত্তা মন্তকে। অঃ পনিরুদ্ধায় রতিতা মুখে। कः छक्तित क्रयारिय थर गितिन छूर्गरिय गर मान्नित প्रकारिय घर थिकात मजारिय ६९ मिखित ठछारिय मकक्ष्रगूनभक्ता-श्रादक्षु। हर इलिया वारेण हर मूयलिया विलामिरेश कर मूलित्न विजयारेय वार भागित्न वित्रजारेय धार पाक्रिनित्न विश्वादेश वामक त्रमूल नक्षा शत्क्यू। छे श्रुक्तां विमन देश रे नम्बार ञ्नमिरि छः निम्ति श्रेण एः नद्वार श्रेका १९ नत्रकिष्ठ मश्रेका नक्षभानगृलमका श्रेक्य। ७९ इत्रस क्षित्र थः कृष्णात्र जिल्ला मः मन्त्राय तूरिका धर माजुनाय मरेजा नर भौतरम कमारेग वामशानमुलमका धरकसू। शः भूताम वः कुधवाय क्रिकिटिश शृष्टि। ज् विश्वमूर्ज्य क्रियारिय नार्जा। यर रेवकुश्रीय वद्यमरिय छेमद्र । यः दशाद्यात्म श्रूक्रसाख्याय वञ्चभरिय क्रि। दः अरुगाश्राप्त विलात भद्रारिय मकाः भा लः मार्माञ्चात्म वलान्युकां स्र श्री स्थारिय ककू मि। यः याना-ज्ञादन वालाय मृक्यादेय वामाः । भः ज्ञाजादन व्यज्ञाय मकारिय क्रमानिनककरत। यः मञ्जाशान द्याय श्राधारिय क्रमामि वामकदत। मर एका श्राप्त रःमाग्र প্रভारिय क्रमामि-मक्रिशास्त्र । इः श्रांशाखारन वताद्यं निभारेय क्रमामिवायशारम ।

य (य मात्र काम कतिएक इहेर्य, जाहा मूर्ण म्लिहेन मिथिक चाहि, मृष्टि कितिएक महस्त वाभगमा इहेर्य। क्लियापि এक এकि एवकान मार्म, अव की कि शक्ति अक अकि मिकिन मार्म हेर्स्य कित्रमां अहे काम कितिएयं,

लः जीवाज्ञात्व वियमाग्र व्याचारेग्र क्रमानि जेनरत्। कः क्यांथायान नृतिरहाय विद्याजारेय समामियूरथ । देखि। क्यां-वानियार नात्रनात्राः -- किनवनात्रात्रन्याधवदशाविकविकवः। यथूमुमनमः(छार्याः याखिविक्यवायाना । भीशत्रक क्षीरिक नः পদ্মনাভন্ততঃ পরঃ। দামোদরোবাহ্নদেবঃ সক্ষর্যণ ইতীরিতঃ। প্রদ্রাহ্মন্টানিরুদ্ধন্ট স্বরার্ণমূর্ত্রঃ স্মৃতাঃ। পশ্চাচ্চক্রী গদী भार्जी थड़शी भाषी इली शूनः। मूमली मृलिमः एकार्गः भागी यापकूनी भूनः। युक्त्नानम्पाकानमी नद्रानत्किकतिः। কুষঃ সত্যঃ সাত্ততঃ স্থাৎ শৌরিঃ শুরোজনার্দনঃ। ভূধরো-विश्वमृर्खिक देवकुर्भः शुक्ररमाज्यः । वली वलागूरकावारला-रलाः। किनवामा देय श्रामाः नष्ठकलम् कताः। कीर्छिः কান্তিস্তৃষ্টি ধৃতিঃ শান্তিঃ জিয়া দ্য়া। মেধা সহর্ষা শ্রন্ধা স্থাল্লজা লক্ষী দরস্বতী। প্রাতীরতিরিমাঃ প্রোক্তাঃ ক্রমেণ স্বরশক্তয়ঃ। জয়া তুর্গা প্রভা সত্যা চণ্ডা বাণী বিলাসিনী।

करें सक्च देशत (कनविशे शिक्ति क्रांत करें नाम हरेगा । (कनवाि यथा— (कनव, नातायन, माधव, ताविक, विक्रू, मधूरतन, विविक्रम, वामन, क्रीधत, क्रिक्ष, नणानांक, नातायन, वास्तिन, मद्दीन, श्रिक्ष, श्रिक्ष, नणानांक, नातायन, वास्तिन, मद्दीन, श्रिक्ष, श्रिक्ष, नणानांक, नातायन, वास्तिन, श्रिक्ष, न्या, म्या, न्या, न्या, न्या, न्या, न्या, न्या, व्या, क्रिक्ष, न्या, व्या, व्या, क्रिक्ष, व्या, व्या,

বিজয়া বিয়য়া বিখা বিনদা হ্লনদা স্থৃতিঃ। ঋদিঃ দয়্দিঃ
ভাদিঃ ভাদ্ভজিকৃদির্শতিঃ কমা। রমোমা রেদিনী ক্লিয়া
বহুদা বহুধা পরা। তথা পরায়ধা দূক্ষা সন্ধ্যা প্রভা প্রভা
নিশা। জমোঘা বিছাতা চেতি কীর্তাদ্যাঃ দর্বকামদাঃ।
এতাঃ প্রিয়তমালের নিময়াঃ দিয়তাননাঃ। বিছাদামদমাভাঃ
হ্যঃ পক্ষজাভয়বাহবঃ। গোতমীয়ে—কেশবাদিরয়ং ভাসোভাসমাত্রেণ দেহিনাং। জচ্যুতত্বং দদাত্যেব সত্যং সত্যং
ন সংশয়ঃ। মাতৃকার্থ সমুক্রার্য্য কেশবায় ইতি স্মরেং।
কীর্ত্রো নমঃ সমাযুক্তমিত্যাদিন্তাসমাচরেং। আগমকল্লক্রমে—
আদিক্ষান্তান্ বিন্দুয়ুক্তান্ মাতৃকার্থান্ যথাক্রমং। ওেন্তং দেবং
তথা শক্তিং পশ্চায়ম ইতি ক্রমঃ। কেশবায় ততঃ কীর্ত্রো
কারিয় নাবায়ণত্ম চ। ইত্যাদ্যগন্ত্যদংহিতাবচনাদয়ং ক্রমঃ।
নত্ন কেশবকীর্ত্রভাং নমঃ ইত্যাদি। তথা ভুক্তিয়্তিমিছতা

বিজয়া, বিয়য়া, বিয়া, বিনদা, য়নদা, য়ৃতি, ঋজি, সমৃজি, শুজি, ভুজি, বৃজি, মতি, য়মা, বমা, উমা, ক্লেদিনী, ক্লিয়া, বহুদা, বহুদা, পরা, পরারণা, স্ল্লা, সন্ধ্যা, প্রজা, প্রভা, প্রভা, নিশা, অমোঘা, ও বিজ্বতা এই পঞ্চানিংশং হলমুর্ত্তি। সমৃদায়ে একপঞ্চাশং। এই সকল মূর্ত্তি সর্বকামফলপ্রাদ, ইহারা স্বীয় পতির অলে নিবিষ্টা, হাত্তবদনা এবং বিজ্বতের ভায় কান্তি-বিশিষ্টা, ইহাদের হন্তে পল্ল ও অভয়মুদ্রা আছে। গৌতমীয়ভয়ে লিখিত আছে বে, এই কেশবকীর্ত্ত্যাদিল্লাস করিবা মাত্র মনুবাগণ বিষ্ণুপন লাভ করে। এই ভ্লাস করিতে প্রথমে অকারাদির এক একটি বর্ব। তংপরে কেশবাদি এক একটি নাম ও কীর্ত্ত প্রভাত ও ক একটি নাম এবং অস্তে নমং শন্ত্র উল্লেখ করিরা মন্তর্জাদি পরীরের একপঞ্চাশং স্থানে ভ্লাস করিতে হইবে। আগসকরজন্ম ও অগস্তাসংহিত্যাদি গ্রন্থে ইহার প্রমাণ লিখিত আছে। এই ভ্লাহস সংক্রেমান কীর্ত্তাদি গ্রন্থে ইহার প্রমাণ লিখিত আছে। এই ভ্লাহস সংক্রেমান কীর্ত্তাদি গ্রন্থে ইহার প্রমাণ লিখিত আছে।

আয়ং তাদঃ কর্ত্তব্যঃ শ্রী নিজাদিকঃ। যথা—ওঁ শ্রী অং কেশ বায় কীর্ত্তা নমঃ ইত্যাদি। তথাচ—প্রণবং পূর্বমূচার্য্য শ্রীজং তদনন্তরং। মাতৃকার্ণং ততোত্ততেদ্ বক্ষ্যামি তং-প্রকারকং। বাগ্তবাদ্যং ততোততেদ্ বক্ষ্যামি তং-প্রকারকং। বাগ্তবাদ্যং ততোততেদ্ বক্ষ্যামি তং-ধানাকং। বাগ্তবাদ্যং ততাততেদ্ বক্ষ্যামি তং-ধানাকং তাতিবাদ্যং ততাতিকালা বাগীশন্তমবাপুয়াৎ। যদ্ধান্যং তত্তিবাদ্যং তত্তিকালা কল্পনিতি গোতিমীয়াৎ। এবং প্রবিত্তদেশ্ল্যাদং লক্ষ্মীবীজপুরংসরং। স্মৃতিং ধৃতিৎ মহালক্ষ্মীং প্রাপ্যান্তে হরিতাং ব্রজেৎ॥

ততত্ত্বভাসঃ। মাদিকান্তানথার্নাংশ্চ বীজান্তেকৈকশো বদেৎ। নমঃ পরায়েক্যুচ্চার্যা ততন্ত্বাত্মনে নমঃ। ইতি গোতমীয়াৎ সর্বত্র তত্ত্বপদপ্রযোগঃ। যথা মং নমঃ প্যায় জীবতত্ত্বাত্মনে নমঃ। ভং নমঃ পরায় প্রাণ-তত্ত্বাত্মনে নমঃ। এতদ্ব্যৎ সর্ব্বগাত্তে। বং নমঃ পরায় মতিতত্ত্বাত্মনে নমঃ। ফং নমঃ পরায়াহংকারতত্ত্বাত্মনে নমঃ। পং নমঃ পরায় মনস্তত্ত্বাত্মনে নমঃ এতজ্ঞিয়তৎ হৃদি।

কবিয়া ক্রাস কবিবে, কিন্তু অং কেশবকীর্ত্তিভাং নম:, এইকপ একবিভক্তি ধোণ কবিয়া স্থাস কবিবে না। ভ্রুমুক্তিকামীবা ওঁ ছীঁ অং কেশবায় কীর্ত্তা নম: এই কপে নাাস করিবে, আর ওঁ এঁ কেশবায় কীর্ত্তা নম: ইত্যাদিকপে বাগীজাদিক্রাস করিবেও বাগীশহ লাভ হয়। যথন বে বীজ আদিতে যুক্ত কবিয়া স্থাস কবিবে, তথন সেই বীজ্বারা অলন্যাস করিতে হইবে। এই স্থাস করিলে শ্বরণশক্তি, ধৈর্যা, গুণ ও মহালক্ষ্মী লাভ হয় এবং অন্তক্তালে বিষ্ণুপদ্রোপ্তি হয়।

তংশব তবজাদ করিতে হইবে। এই স্থাদের মন্ত্র প্রণালী মুলে স্পষ্টবপে লিখিত আছে, দৃষ্টি কবিলেই বোধগদা হইবে। এই স্থাদের প্রমাণ
, গৌতমীয়তম্বে লিখিত আছে। মূলের লিখিত মন্ত্রে তত্তাদ করিরা
প্রাণায়াম হ'ববে।

नः नमः भेतास भक्जकाषात्न नत्यां मख्तक। यः नमः भन्नीस ञ्लान नियामूर्थ। मः नमः প्राप्त तल्खल्या नरमाञ्चि। थः नमः পরায় রসভত্যাতানে নমোগুছে। তং नमः পরায় গন্ধতত্ত্বাত্মনে নমঃ পাদয়োঃ। ৭ং নমঃ পরায় জোত্রতভাষানে নমঃ কর্ণয়োঃ। ডং নমঃ পরায় ত্ব্তভাষানে नमः एि। ए९ नमः পরায় नেত্রতত্ত্বাত্মনে নমোনেত্রয়োঃ। ঠং নমঃ পরায় জিহ্বাতজাত্মনে নমোজিহ্বায়াং। টং নমঃ পরায় ত্রাণতত্ত্বাত্মনে নমোত্রাণয়োঃ। তাং নমঃ পরায় বাক্-তত্ত্বাত্মনে নমঃ পাণ্যোঃ। জং নমঃ পরায় পাদতত্ত্বাত্মনে नयाश्वर्थ। हः नमः প्राय উপস্তজ্যपान नया निका ঙং নমঃ পরায় আকশিতত্তাত্মনে নমোমুদ্ধি। ঘং নমঃ পরায বায়ুতত্ত্বাত্মনে নমোমুখে। গং নমস্তেজস্তত্ত্বানে নমো क्ति। थ९ नमः পर्ताय कल्जज्ञाञ्चात्न नत्मा लिक्रम्रल । क९ नमः পরায় পৃথিবীতভাত্মনে नमः পাদয়োঃ। তথাচ দীপি-কায়াং--ইত্যুচ্যতীকৃততমুর্বিদ্ধীত তত্ত্ত্থাদং মপূর্বকপবা-ক্ষরনভ্যুপেতং। ভূয়ঃ পরায় চ তদাহ্বয়মাত্মনে চ নত্যন্ত-युक्तत्रकू उजुत्रयून् क्रात्यन। मकलवश्रीय क्रीवः श्रान्यारयांका यक्षा नामजू यिजयहरकातः यनत्नि यञ्जी। क्यूथझनश्र-श्वर्यात्व ष्राथा गक्त शूर्वर श्वनं नमथ कर्ना निष्ठि ए खां जिश्वर । वांशाविखियवर्गगाञ्चान नरमाकां नाश्रवं भाग मुक्तार्थ समस्य শিরে চরণয়োহ্ন ৎপুগুরীকং হৃদি॥ শং নমঃ পরায় হৃৎপুণ্ড-त्रीकङ्खाद्यात्न नत्यां कृषि। इश्नयः भत्रां प्रमानकलावाां ख-मृश्रम छल उद्योगात्न नत्यां कृति। मर नमः भवाग्र त्यां ज़नकनाः. वाा श्रमायम छल उद्योषार्यः नरमा कृषि। तः नमः भवाम

দশকলাব্যাপ্তবহিদশণুলততাত্বানে নমো হাদি। ষং নমঃ পরায় विञ्चलवांग्र প्रदम्पष्टि ज्छ। जात्न नमः भिन्निति। यः नमः भन्नां পুরুষতভাতানে সক্ষরণায় নমো মুখে। লং নমঃ পরায় বিশ্বতভাজানে প্রভাষায় নমো হৃদি। বং নমঃ পরায় নির্তি-তত্ত্বাজ্বনে অনিরুদ্ধায় নমোলিঙ্গে। লং নমঃ পরায় সর্বন-তত্ত্বাত্মনে নারায়ণায় নমঃ পাদয়োঃ। কেণিং নমঃ পরায় কোপতভাজানে नृ সিংহায় नगः সর্বাগাতে। তথাচ গৌত-भीरा-भः वीकर ऋर्श्वतीकज्जुः ऋषि প্রবিনাদে। रः वीकः मूर्यामधन उत्रः कि श्रिवनारम्। तः वीकः विक्मि अल जब्द । ज्ञ नारम । यर वीकः প्रतमष्टिज्बः वाञ्च एतवक मूर्किन। यः वीक्रमथ श्रुः खदः मक्षर्यभाषा मूर्थ। लः वीजः विश्व छक्ष श्रद्धान्नक कृषि नारम्। वः वीजः नितृ द्विङ वृक्ष व्य नितृष्क्ष भू भए ए । ल श श भर्ति द भ भ ए । नाताग्रगः नारमः। (क्योः वीजः (काशठख्यः नृमिः इः मर्व-গাত্রকে। এবং তত্ত্বানি বিন্যস্ত প্রাণায়ামং সমাচরেৎ। कलक्ष ठरेजन-ठबुनामि ठठः कूर्या माधकः मिक्रिट्-তবে। কুতেন যেন দেবস্থা রূপতামেব যাত্যসৌ। ততো यथाविधि व्यनाग्रामः कूर्याए।

ততঃ পীঠন্যাসং (৯৬ পৃষ্ঠা) বিধায় কেশরেষু পূর্বাদিদিকু প্রাদক্ষিণ্যেন মধ্যে চ ওঁ বিমলায়ে এবং উৎকর্ষিণ্যৈ জ্ঞানায়ে ক্রিয়ায়ে যোগায়ে প্রহৈষ্য সত্যায়ে ঈশানায়ে অনু-গ্রহায়। তত্নপরি ওঁনমো ভগবতে বিশ্ববে সর্বভূতাত্মনে

[&]quot; उर्लात नीर्रेशांन कतिया (कनारत न्कांतिक स्टेड धार्मिक अस्म अवर माधा उ विमनारेत नमः देखामि म्नात निविद्य माध्य भूजा

विक्रित्रवीत्र मर्थविष्यभरयोभिरयोभभाभीठोषात्व नमः। उथिष्ठ नियदक-विमदलां कि सिंगी खाना जिंशा त्यांगा ह भे खारा। প্রস্থী সত্যা তথেশানাসুগ্রহা নবমী স্মৃতা। নমো ভগৰতে क्रमामिकटवथ भार वटमर। मर्व्यकृजाम्नाम वाञ्चलवादम् श्राप्त रुपरखार्यः मञ्जखातापिका रुतः। ७७: धारापि-नामः। जन्यथा – भित्रमि माधानाताय्याय श्याः नगः। मूर्थ (परीशायजीष्टः रम नमः। क्रिम श्रीविक्षरव (पर्वजरिय नमः। তথাচ-- माधानातायणः (প্রাক্ত ঋষিশ্ছন উদাহতং। মন্ত্রস্থা দেবী গায়ত্রী দেবতা বিষ্ণুরব্যয়ঃ। ততঃ করাঙ্গ-नारिन। ज्रुकाकाय जक्षां जाः। यहाकाय जक् नीजाः यादा। वीताकाय मधामाजाः वषष्। जजुकाय অনামিকাভ্যাং হুঁ। সহস্রোক্ষায় কনিষ্ঠাভ্যৎ ফট্। এবং रुमग्रामिश्र। তথাচ প্রপঞ্চনারে—ক্রুদ্ধোন্ধায় হৃদাখ্যাতং মহোক্ষায় শিরঃ স্মৃতৎ। বীরোক্ষায় শিখা প্রোক্তাত্মায় কবচং স্মৃতং। সহজোকায় সংযুক্তমঙ্গকুপ্রিরিয় মতা। ততো মজেণ ষড়ঙ্গন্যাসৎ কুর্য্যাৎ। ওঁ হৃদয়ায় নমঃ নং শিরদে স্বাহা মোং শিখায়ে ব্যট্ নাং ক্বচায় হুঁ রাৎ নেত্র-खग्नाम दोष । यश व्यक्षां य करे। नार नत्या मक्त नार्ष ग्रर नत्या रामभाद्ध। তथाठ ভূয়োবর্ণের্মনোঃ ষড়ভিঃ ষড়ঙ্গানি

कतिए इहेर्द। এই বিষয়ে যে সকল প্রমাণ নিবস্থ ছো গিথিত আছে সেই সকল বচন এই হুলে উজ্ত আছে। তৎপরে ধাষানিভাগ করিয়া করাজভাগ করিষে। ও জুছোহার অনুষ্ঠাভ্যাং নমং, ইত্যাদি •
কংশ করাজভাগ করিয়া পুনসার ও হুদ্যায় নমং ইভ্যাদিরণ

সমাচরেং। অবশিকৈঃ পুনর্বার্থিকিন্যসেং কুজিপার্থ য়োঃ।
ততঃ ওঁ নমঃ স্থাপনায় অন্ত্রায় ফট্ ইতি মক্রেণ দিথকনং কৃষা
মন্ত্রন্যাসং কুর্যাং। তথাচ—মন্ত্রন্যাসং ততঃ কুর্যাং সর্বার্ণ কামফলপ্রদং। যং বিনা নৈব তং সম্যুপাস্থবং নিক্ষলং
ভবেং। তদ্যথা আধারে ওঁ নমঃ ছদি নং নমঃ বক্ত্রে মোং
নমঃ দোযুগলে নাংনমঃ রাং নমঃ পাদয়োঃ য়ং নমঃ পাং নমঃ
নাভৌ য়ং নমঃ। এবং কণ্ঠে নাভৌ হাদি কুচয়োঃ পার্শয়োঃ
পৃষ্ঠে চ। মূর্দ্ধ্রি আস্থে নেত্রয়োঃ প্রবণয়োঃ ভাগয়োঃ।
হস্তয়োঃ সদ্ধ্যক্রলীয়ু। পাদয়োঃ সন্ধ্যক্রলীয়ু। হৃদয়ে সপ্তধাত্রা
ধাতুরু প্রাণেয়ু। ধাতবস্তঃ—ত্বগস্ত মাংসমেদোক্রমজ্জাভক্তানি ধাতবঃ। মূর্দ্ধ্রি নেত্রে আস্থে হাদি কুক্রেণ উর্বোঃ।
জক্তারোঃ পাদয়োর্গগুয়ো রংশয়োঃ। উর্বোঃ পাদয়োশ্চক্রে

মত্তের অক্ষরতারা বড়ক্সান করিয়া দক্ষিণপার্থে গাংনমঃ, বামপার্থে রং নমঃ
এই মন্ত্রে ন্যাস করিতে হইবে। তৎপরে ও স্থাপনির অস্তার ফট্ এই মন্ত্রে
দিখন্ধন করিয়া মন্ত্রনাস করিবে। এই মন্ত্রনাস সাধককে স্বাক্তামফল
প্রাদ্ধান করে। এই ন্যাস না করিয়া বিশুপুলা করিলে সেই পুলা অসুরভোগ্য ইইয়া নিশ্চল হয়। ন্যাসের নিরম এই ও নমঃ এই বলিয়া মূলাথারে ন্যাস করিয়া নং নমঃ বলিয়া জনয়ে, মোং নমঃ মুথে, দক্ষিণবাছতে
নাং নমঃ, বামবাছতে রাং নমঃ, দক্ষিণপালে য়ং নমঃ, বামপাদে গাং নমঃ,
নাভিতে য়ং নমঃ, এইরপে ভাস করিতে হইবে। এইরপ কঠে, নাভি, স্বলম
ভানতার, পার্থ বয়, পৃষ্ঠ; মতাক, মুথ নেএছয়, ও নাসিকাছয়; দক্ষিণহত্তের
সন্ধিরম ও পঞ্চাকুলী; বামতারের সন্ধিত্রর ও পঞ্চাকুলী; দক্ষিণপদের সন্ধিন
ত্রের ও পঞ্চাকুলী; বামপাদের সন্ধিত্রর ও পঞ্চাকুলী; হাদর এবং চর্ম্ম, রক্ত
মাংস, মেদ, অহি, মজ্জা ও গুরু এই সপ্তধাকু; মন্তরক, নেএলয়, মুথ, স্থাদ
উদ্ধান, উক্তর ; জ্বতার্ছয়, পাল্বয়, গগুর্ম ও স্কর্ম : উক্তরম, পাল্বয়,

भर्ष गर्माग्नार भरम ह विमारमर । उथाह मियरक--यक्रिक्ट प्रकारका मजर्मि खटनी नारमद। जाशित स्मरम रहा स्माः शम्य दाखिक। कर्छ मार्छ। समि क्रू लाए (माःभामभाजुनीय थाज्थार्वय क्रव्याम। मूर्फक्रवाय-(भाज्ञभरमयु छ। भाषाज्यकामारखाजभारमध्यविर्छ। नारमर। **ততো** यूर्विभक्षत्रन्तामः—ललाएँ ७ जः किनवाय भारत नमः कूटको नः चाः नाताग्रणाग् वर्षाट्य नगः। शि ताः रः याथवाय यिखाय नयः। शलकृत्थ ७१ मेर त्शिविनाय वर्ष्णाय नयः। मक्तभार्यं ११ छे विखर्व व्यर्भरव नयः। मक्तिगार्र वर छर मधुमुमनाय जगाय नमः। गममिक्न निर्मा धः जिविक्यां विवयर्ष नमः। वामभार्य वाः धेर बाबनाय हैकाय नबः। वाबाः भ छः ७ की धताय शूरक ननः। গলবামভাগে দেং উৎ হৃষীকেশায় পর্যাণ্যায় নমঃ। शुट्ठ वार षार शवानां जोय षट्डे नमः ककृषि गर षार मार्याम् विकास निमः। भित्नि चामभाकत्रमञ्जू मारमः। ততো वकायां कती वेयखा वा वा वक्तामः कूर्याः।

ज्थां निवदक-लगाउँ किनवर थां के क्रिको नातां स्थ श्रमः। व्यर्गाञ्चा छिन भिट्छ । याधवः कर्श्वटमण्डः। वदः एन ह भाविषाः श्वर्किकिनभार्यक । जर्धना विक्रुमर्टन छार जर्मन मध्-मृतन । গলে বিবস্বতা যুক্ত তিবিক্রমমনন্তর । বাম-পাर्षस्मित्किन वामनाथामथार्भारक। श्रुका श्रीधत्रनामामर গলে পর্যাণাদংযুত্থ। হ্যাকেশাহ্বয়ৎ পৃষ্ঠে পদানাভং ততঃ পরং। एछो দামোদরং পশ্চাদ্বিষ্ণুন। ককুদি ন্যাসেং। ছাদ-শার্ণ ততো মূর্দ্ধি মন্ত্রৎ মন্ত্রী প্রবিন্যদেৎ। ততঃ কিরীট-মন্ত্রেণ ব্যাপকং বিন্যদেত্তঃ। গৌতমীয়ে—দ্বাদশাক্ষরং मञ्जवतः विनारमञ्जातका क। वाञ्चरमर्वा ভবেৎ माकाषाणि-তম্ভ তেজদা। ত্রিমাতৃকং দমুস্কৃত্য নমো ভগবতে লিখেৎ। বাস্তদেবং চতুর্থ্যা তু মস্ত্রোহয়ং স্থরপাদপঃ। অস্থ বিজ্ঞান-मार्जिन विद्यम्बः প্रकाय्टि। ততোহমুৎ मञ्जर পঠে । চৈতন্যায়ত্বপুর্ককোটিতেজদা মুদ্ধি স্থো বপুর্থিলং স বাহ্নদেবঃ। উধস্থাং স্থবিমলপাথদীব দিক্তং ব্যাপ্নোতি প্রক-টিতমন্ত্রবর্ণসঙ্কীর্ণং। ন্যাসফলন্ত—তন্মুর্তিপঞ্জরন্যাদোভিহিতঃ। পরমেষ্ঠিনা। সক্ষ্যাসান্তবেশ্মন্ত্রী বিষ্ণুমূর্ত্ররতুত্যঃ। মূর্তি-

कतियां वााणकनाम कतित्व। এই नाम विषय निवस्त त्य मकल श्रीमा निश्च आहि, मिट मकल वहन এই इत्ल मृत्ल छेक् आहि। त्यां की प्रकार निश्च आहि त्य, अ नत्मा क्यवत्व वाक्य त्यां में का महि। त्यां की प्रकार नाम कि वित्य, त्यां वाक्य करणां वाक्य त्यां क्यां में का महि वाक्य करणां का महिल करणां वाक्य वाक्य वाक्य करणां में का महिल करणां का महिल महिल महिल महिल महिल कर्मा का वित्य । का का वित्य करणां के कि विश्व महिल कर्मा का विवास कर्मा का का विवास करणां के कि विवास करणां करणां के कि विवास करणां कि विवास करण

পঞ্চরন্যাসন্ত বহুধা। ওঁ আং ধাতৃসহিতকেশবায় নমঃ ইতি
কৈচিং। ওঁ আং কেশবধাতৃত্যাং নমঃ ইত্যন্যে। ওঁ আং
কেশবসহিতধাত্রে নমঃ ইত্যপরে। তম বাহ্ণদেবমনোরেকং
বর্ণং ক্লীববিবর্জিতং। স্বরৈকং বিন্দুসংযুক্তং চতুর্থ্যা কেশবাদিকং। তথা ধাত্রাদিকঞোক্তা নমো ন্যাস উদাহতঃ।
ইতি নারদীয়বচনাং ওঁ আং কেশবায় ধাত্রে নমঃ ইতি বদন্তি।
ততঃ ওঁ কিরীটকেয়ুরহারমকরকুগুলশন্যচক্রগদান্তোজহস্তপীতাদ্বরধর-শ্রীবংসান্ধিতবক্ষঃস্থল-শ্রীভূমিসহিতাত্মজ্যোতির্দ্বয়দীপ্তকরায় সহস্রাদিত্যতেজদে নমঃ। ইতি মদ্রেণ ব্যাপকন্যাসং
কুর্যাং। তথাচ প্রপঞ্চসারে—কিরীটকেয়ুরহারপদান্যাভাস্থ
মন্ত্রবিং। মকরান্তে কুগুলঞ্চ শন্মচক্রগদাদিকং। পদ্মহস্ত-

শরীর সাক্ষাৎ বাস্থ্যেবমৃতি স্থলপ হয়। মৃতিগঞ্জরন্যাস নানাবিধ আছে, কৌন মতে ও অং ধাতৃসহিতকেশবায় নমঃ, মতাস্তরে ও অং কেশব-ধাতৃভাঃ নমঃ, অনা মতে ও অং কেশবসহিতধাতো নমঃ ইত্যাদি। উক্ত তিবিধন্যাসের মধ্যে একটিও শাল্রসঙ্গত বলিয়া বোধ হয় না, নারণীর বচনে জানা বায় বে, ও নমো ভগবতে বাস্থ্যেবায়, এই দানশক্ষর মল্লের এক একটি অক্ষর এবং ঋ ৠ, ৯ ঃ ভিল্ল স্ববর্ণের এক একটি বর্ণে বিন্দ্রোগ করিয়া তৎপরে চতুর্থী বিভক্তিয়ক্ত কেশবাদি এক একটি নাম তৎপরে চতুর্থী বিভক্তিয়ক্ত কেশবাদি এক একটি নাম তৎপরে চতুর্থীবিভক্তিয়ক্ত ধাত্রাদি এক একটি নাম ও অত্যে নমঃ শল্প বোগ করিয়া বর্ধান্থানে নাগ্র করিবে। অতএব ও অং কেশবায় ধাত্রে নমঃ এই প্রস্কার নাগ্রই শাল্রসিদ্ধ। তৎরে কিরীট কেয়ুর ইত্যাদি মূলের লিখিত মল্লে ব্যাপক্ষাণ করিতে হইবে। এই মল্লোদ্ধানের প্রমাণ বাছা প্রপঞ্চশারে লিখিত আছে, ঐ সক্ষর বচন এইত্বে উক্ত আছে। এই ব্যাপক্র নাগ্র প্রেক্ত করিয়া পরে মুল্লাপ্রম্বর্ণনপূর্বক ধ্যান করিবে। দেবতার প্রাণ করিবে। দেবতার প্রাণ করিবে। দেবতার প্রাণ করিবে। দেবতার প্রাণ করিবে। দেবতার প্রস্কার এইরপ—উদ্ধানীল কোটি দিবাক্রের ন্যায় দেবকান্তি; শন্ধ, গদা,

शमः (প্রাক্তা শীতামরধবেতি চ। ত্রীবৎসান্তিমাভাস वकः चनम्या वरमर। शिष्ट्रामिन्छः जाजारकग्राहिर्मत्रनम् राष्ट्र। मीखमूक्ना कतारम्भक मङ्बामिकारककरम। समस्र लावामिः जाद कितीविमियमुख्यः। এवः गामः भूता कृषा धारिस्रमात्राय्य शतर । ততো মুদ্রাঃ প্রদর্শন ध्रानः কুর্য্যাৎ। खँ छिमा ए का विभिन्न कि वा कमिन निष्य भाषा भाषा भाषा भाषा । বিভ্রতমিন্দিরাবস্থমতীসংশোভিপাশ দরং। কোটিরাজদহার-কুগুলধরং পীতাম্বরং কৌস্তভোদীপ্তৎ বিশ্বধরৎ স্ববন্দসি লসৎ-শ্রীবৎসচিহ্ণং ভজে॥ এবং ধ্যাত্বা মানদৈঃ সংপূজ্য (১৪৭পৃষ্ঠা) শঙ্খস্থাপনং কুর্য্যাৎ (১০০পৃঃ)। তত্র বৈষ্ণবপাত্রস্ত গৌতমীয়ে— তাত্রপাত্রন্ত বিপ্রধ্যে বিষ্ণোবতিপ্রিয়ং মতৎ। তথৈব সর্ববিপা-ত্রাণাং মুখাং শত্তাংপ্রকীর্তিতং। মুৎপাত্রগ তথা প্রোক্তং সৌবর্ণং রাজতন্তথা। পঞ্চপাত্রৎ হরেঃ শুদ্ধ, নান্যত্ত্র নিযোজয়েৎ। निद्वमामार्गकु विद्भवः। यद्व वा ভाख्यभारक वा द्वीरभा वा भक्रफ परल ইত্যाদि। আগমকল্লफ মে— হৈরণ্যং রাজতং কাংশ্যং তাত্রং মুগায়মেববা। পালাশং শ্রীহরেঃ পাত্রং নৈবেদ্যে

পদা ও চক্রধারী। শন্ধী ও বহুসতী কর্ত্ক পার্মবার শোভমান। ইন্দ্রনীল-মণি, অলদ, হার ও ক্ওলধারী, পীতবন্ত্র পরিধান, কৌস্তভ্রমণিবারা উদ্দীপ্ত এবং বক্ষংশ্বলে শ্রীবংস চিহ্ন আছে। এইরূপে ধ্যান করিরা মানসোপচারে পূদ্ধা ও শল্পাপন করিবে। বিফুপুজাতে যে যে পাল ব্যবহার করিতে হইবে, ভাহা লিখিত হইতেছে, গৌতমীর তন্ত্রে লিখিত আছে বে, ভাত্র-নির্দ্ধিত পাত্র বিফুব কতি প্রিয়। অস্তান্য সকলপ্রকার পাত্রমধ্যে শল্পাক্র প্রধান। মুংপাত্র, শ্বর্ণপাত্র ও রক্ষতপাত্রও বিফুপুলার প্রশন্ত, পূল্পার নেবেদা দানে স্বর্ণপাত্র, ভাত্রমণাত্র, রৌগ্যপাত্র ও পশ্বপত্র এই সকল প্রশন্ত। আগ্রমক্তর্কমে বিধিত লাছে বে, স্বর্ণপাত্র, রক্ষতপাত্র, কাংশ্বন

कझरसब्धः। जथां प्रश्नाम् प्रश्नामिकासार्--- त्मावत् सामर् रेत्राजा हेजानि। ততো विभनामिन किमहिजनीर्गुकाः कृषा श्चर्याचा मूटमन कक्रिङ्ग्र्डायायांच्नामिशकश्चिमान-পर्याखः विधाय वावित्रगेशृकामात्राखं जम्यंथा व्यवित्कार्ग छ क्राक्षां क्रमग्राय नमः। निभाष्ठ मष्ट्राक्षां नियम यादा। वाद्युकारण वीरताकांत्र णिथारेग्न वष्ठे। जेणारम अञ्चाक्षात्र करावात्र क्या निक्न महत्याकात्र व्यापात्र करे। ততঃ কেশরেষু পূর্বাদি ওঁ নমঃ নং নমঃ মোং নমঃ নাং नगः तार नगः ग्रर नगः नार नगः ग्रर नगः जरा परमयू পূर्वाि पिक्कू उँ वाञ्च प्रवाश नगः उँ मक्स्वााश नगः उँ প্রস্তান্ত্রায় নমঃ। ওঁ অনিক্ষায় নমঃ আগ্লেয়াদিকোণদলেশু मलार अयू शूर्वा मिनिकू उँ ठाका य नमः धवः मधाय भनारेय পचाय कोञ्जनाय मूयलाय थर्गाय वनमालारेय। जबहित्रध खँ शंक्षणां नगः पिक्टि खँ मधानिधरः नगः वारम खँ भग्न-निश्राय नमः পশ্চিমে उँ ध्वकाय नमः व्यायिकार वै विश्वाय नमः निश्र एक उँ वार्गाय नमः वायु कार्ण उँ प्रगरिय नमः जेगात ७ (मनारेना नमः। जनशितिकामीन् तक्रामी९ क

भाज, मृन्यभाज, ७ भगामभाज जीरिवत रेनर्वापारन वावरात कतिरव । जर्भात विमगापिमिक्किमरिक भीर्भभा कित्रा भूनर्वात थान कितर्व, कन- कत्र मृणमर्घ कित्र मृर्किट वावारमापि भक्षभूभा कित्र कित्र कित्र । व्यापित कित्र कित्र कित्र कित्र कित्र कित्र कित्र कित्र कित्र । व्यापित कित्र क

সংপূজা ধূপদীপোঁ দন্ধা নৈবেদ্যং দদ্যাৎ। তদ্যথা—নৈবেদ্যমানীয় দেবান্ন মূলেন পাদ্যার্য্যচমনীয়ং দন্ধা ফড়িতি মন্ত্রেণ
নৈবেদ্যং সংপ্রোক্ষ্য চক্রমুদ্রয়া অভিরক্ষ্য যং ইতি মন্ত্রেণ
দোষসমূহং সংশোধ্য রমিতি দোষং সক্রমু হিমকরসৌধধারাভিঃ পূর্ণং রমিত্যমৃতীরুতং বিভাব্য মূলমক্টধা জপেৎ।
ততো ধেনুমুদ্ররা অমৃতীরুত্য গন্ধপূজ্পাভ্যাং নৈবেদ্যং সংপূজ্য
দেবায় মূলমন্ত্রেণ পূজ্পাঞ্জলিং দন্ধা কৃতাঞ্জলিঃ সন্ হরিং
প্রার্থয়েং। অত্য মুখতোমহঃ প্রসবেদিতি বিভাব্য স্বাহান্তং
মূলমুক্তার্য্য নৈবেদ্যে জলং দদ্যাং। ততো মূলমুক্তার্য্য এতমৈলেদ্যং অমুকদেবতায়ে নমঃ। ততো নৈবেদ্যমৃদ্ধৃত্য তঁ
নিবেদ্যামি ভবতে জুবাণেদং হবিহ্রে ইতি নৈবেদ্যং সমর্প্য
অমুকদেবতায়ৈ এতজ্ঞলং অমৃতোপস্তরণমসীতি জলং দত্যা

विद्यानि चारतात शृक्षा कितिया धृशनी श्रामानास्त्र देनदिना चानतान कितिया दिन कारक भूनमर प्रभाग, चार्य, चानमनी कु श्रामान कितिया कि जुने मर प्रमास श्रामान कितिया कि जुने मर प्रमास कि या जुने कि या ज

বামহত্তে গ্রাসমূলাং প্রদর্শ্য দক্ষিণহত্তে প্রাণানিমুদ্রাঃ প্রদর্শনে । যথা ওঁ প্রাণায় স্বাহা ইতি কনিষ্ঠানামিকে অকুষ্ঠেন স্পূদেং। ওঁ অপানায় স্বাহা ইতি তর্জনীমধ্যমে অকুষ্ঠেন স্পূদেং। ওঁ ত্যানায় স্বাহা ইতি মধ্যমানামিকে অকুষ্ঠেন স্পূদেং। ওঁ উদানায় স্বাহা ইতি তর্জনীমধ্যমানামা অকুষ্ঠেন স্পূদেং। ওঁ সমানায় স্বাহা ইতি সর্ব্বাস্থার ক্রির কুষ্ঠেন স্পূদেং। ততাহঙ্গু ছাভ্যামনামিকাগ্রং স্পূদান বৌং নমঃ পরায় সর্ব্বাস্থানে অনিক্রায় নৈবেদ্যং কল্পয়ামি ইতি নৈবেদ্য মুদ্রাং প্রদর্শ্য গ্রামন্ত্রার্থ অমুকদেবং তর্পয়ামি ইতি চতুর্জা সন্তর্গ্য অমুকদেবতায়ে এতজ্জলং অমৃত্যাপিধানমনীতি জলং দত্যা তত্তেকা দেবতামুথে স্থাপয়িত্বা আচমনীয়াদিকং দদ্যাদিতি। বৈষ্ণবে তু সর্ব্যন্ত নিবেদ্যদানে অয়ং ক্রমঃ। ততঃ সামান্যপদ্ধতিক্রমেণ বিসর্জনান্তং কর্ম্ম সমাপয়েং। (১৫৩পৃঃ)

তংশরে এতজ্ঞনং তমৃতোশতরণমিন, এই মন্ত্রে জল প্রদান পূলক বাম হতে প্রাসমুলা ও দক্ষিণ হতে প্রাণাদি পঞ্চমুলা প্রদর্শন করিবে। প্রাণাদিমুলা এই—ও প্রাণায় স্বাহা এই মন্ত্রে বুজালুলীদারা কনিষ্ঠা ও অলামিকালুলীল্লাল করিবে। এই এপ বুজালুলীদারা ও অপনায় আহা, এই মন্ত্রে ভর্জনী ও মধ্যমাকে, ও বাংনার স্বাহা, এই মন্ত্রে মধ্যমা ও অনামিকাকে, ও উদানাম স্বাহা, এই মন্ত্রে ভর্জনী, মধ্যমা ও অনামিকাকে এবং ও সমানার স্বাহা, এই মন্ত্রে সকল অলুলীল্লাল করিবে। তংপরে বৃদ্ধালুলীদ্বারা অনামিকার অগ্রভাগল্লাল করেছঃ বৌ নমঃ, ইত্যাদি মন্ত্রে নৈবেদ্যে মুলা প্রদর্শন ও ও নমো নারারণার এতজ্ঞনং অমৃত শিধানমিন, এই মন্ত্রে জলপ্রদান পূর্বক পূর্বাক্রেণ্ড ক্রেণ্ড দেবতার মুধ্ব স্থাপন করিবে। স্বর্গ্রেকাব বিফুপুজাতেই এইবংশ নৈবেদ্য নিবেদন করিত্রে। তংপরে সামাল পূর্বা পদ্যতি, ক্রেণ্ডাবে বিন্তুলাতেই

वाज भूत्रक्तव्रशः (साङ्गमक्षक्षभः। उथाठ—विकात्रक्षः शक-भ्याकूरम्भः ममाहिङः। उपनाः भः मत्रमिरेकक् स्त्राम्बर्-नाभूरेङः॥

অথ শ্রীকৃষণদ্রাঃ। গোপীজনপদস্তান্তে বল্লভায় বিঠাবধিঃ।

অয়ং দশাক্ষরো মন্ত্রো দৃষ্টাদৃষ্টফলপ্রদঃ। অয়ং মন্ত্রঃ কামবীজাদিঃ। রাশিনক্ষত্রাদিচক্রবিচারে পুনব্বীজরহিতেন বিচারঃ।

বীজপুর্বোজপশ্চাস্ত রহস্তং কথিতং মুনে। লুপ্রবীজস্বভাবদ্বাদ্দশাক্ষর ইহোচ্যতে। ইতি গৌতমীয়াৎ। তথাচ রহদ্গৌতমীয়ে—ভোগমোকৈকনিলয়ো লুপ্রবীজো দশাক্ষরঃ।
উদ্ধরেত্ব পৃথক্ত্বন কামবীজং মহামুনে। তদ্যোগাৎ ফলদো
মন্ত্রো নাম্যথা সিদ্ধয়ে ভবেৎ॥

অশু পূজা। বিষ্ণুমন্ত্রোক্ত বৈষণ্ডবাচমনং কৃত্বা প্রাতঃ-কৃত্যাদি তত্ত্বভাদান্তং কর্ম বিধায় (১৫৮ পৃষ্ঠা) প্রাণায়ামং এই মান্তর প্রশ্চরণ হয়। এই প্রশ্চরণে জপের দশাংশদংখ্যায় স্বত্ত, মধু ও শর্করান্তিত পদ্মপুল্যারা হোম কবিবে॥

डेक मदत्रत्र भूकाविधि धरे—श्रीविक्षमद्रांक देवकवाहन क काछ:-

ক্রীৎ। তথাচ গোতনীয়ে—এবং তত্ত্বানি বিক্তস্ত প্রাণায়ানং
শনাচরেৎ। কামবীজন্ত্রকবারজপেন দক্ষিণনাসয়া বায়ুং
রেচয়েৎ। পুনঃ সপ্তবারজপেন বামনাসয়া বায়ুং প্রয়েৎ।
ততাে নাসাপুটো গ্রত্বা বিংশতিবারজপেন বায়ুং ক্স্তয়েৎ।
পুনর্বামনাসয়া রেচয়েৎ দক্ষিণেন পূরয়েৎ উভাভ্যাং
ক্স্তয়েৎ। পুনর্দক্ষিণেন রেচয়েৎ বামেনাপূর্য্য উভাভ্যাং
ক্স্তয়েৎ। তথাচ—একেন রেচয়েৎ কামবীজেনৈব পৃথক্
পৃথক্। প্রয়েৎ সপ্তজপ্রেন বিংশতাা তেন ধারয়েৎ। সর্বেয়্
ক্ষমত্রেয়ু বীজেনানেন বা জপেৎ। যত্বা মুলেনেব মস্ত্রেণ
সর্বত্র প্রাণায়ামঃ। তত্তক্তং ক্রমদীপিকায়াং প্রনসংঘ্রমনন্ত্রন্য চরেৎ যমিহ জপুমসৌ মন্ত্রমিছতি। যদি দশাক্ষরং জপতি
তদা দশাক্ষরেণ চেতত্র চান্টাবিংশতিবারং রেচয়েৎ। প্রয়েন্
ভ্রামতস্তত্বদ্ধারয়েত্রপ্রমাণতঃ। প্রাণায়ামোভবেদেকা রেচ-

ন্তুতাদি তবন্তাসান্ত কর্ম কবিয়া প্রাণায়াম করিবে। ক্লা এই মন্ত্র এক বার জপ করিয়া দক্ষিণ নাগাবারা বায়ুণেচন করিবে, তৎপবে সপ্রবার জপবারা বামনাগার বায়ু পূরণ করিয়া ঐ বীজ বিংশতিবার জপ করত নাগাপূট্রয় ধারণ করিয়া গায়ুব কুন্তক করিবে। পুন পার একণার জপে বামনাগায় বায়ু রেচন, সপ্রবার জপে দক্ষিণ নাগায় বায়ু পূরণ ও বিংশতিবার
জপে উজর নাগাধারণ করিয়া বায়ুর কুন্তক করিবে। তৎপরে ঐ মন্ত্র একবার
জপরারা দক্ষিণনাগায় বায়ুরেচন, সপ্রবার জপরার। বামনাগায় পূরণ এবং
বিংশতিবার জপরারা উভয় নাগাধারণ করিয়া বায়ুর কুন্তক করিবে। স্বর্বপ্রকার ক্ষক্ষমন্ত্র ক্লা এই বীজে প্রাণায়াম করিবে। মৃত্যায়ের প্রাণায়াম
করিতে পারে। ক্রমনীশিকার গিথিত আছে বে, বে ব্যক্তি রে মন্ত্র জপ
করিবে, সেই ব্যক্তি সেই মন্ত্র প্রাণায়াম করিবে। যদি দশাক্ষরমন্ত্র জপ করে,
ভবে দশাক্ষরমন্ত্র প্রাণায়াম করিবে। যদি দশাক্ষরমন্ত্র জপ করে,

পূরককুষ্ঠকৈঃ। অফাদশাক্ষরেণ চেদ্ধাদশৈবং সমাচরেৎ।
অথবাত্তমমুভির্ববর্ণামুরূপমিত্যুক্তম্বাৎ। তত্তমন্ত্রবর্ণসংখ্যকৈরেচকাদিত্রয়ং কুর্য্যাৎ। রেচয়েশ্মারুতং দক্ষরা দক্ষিণং সাধকঃ।
পূরয়েদ্বাময়া নাড্যা পুনর্জাধয়েদিত্যাদি। এতত্ত্ব শ্রীকুঞ্জমন্ত্রবিষয়ং নাত্তত্ব। ততং পীঠন্তাসং বিধায় (৯৬ পৃঃ) কেশরেষু
মধ্যে চ বিমলাদিপীঠমন্বতং বিভাত্ত ঋষ্যানিন্তাসং কুর্য্যাৎ।
তদ্যথা শিরদি নারদঋষয়ে নমং মুখে বিরাইছন্দদে নমং ছদি
শ্রীকৃষ্ণায় দেবতায়েনমং গুছে র্লা বীজায় নমং পাদয়োং স্বাহা
শক্তয়ে নমং। মল্রাধিষ্ঠাত্দেবতায়ে তুর্গায়ে নমং ইতি তুর্গাং
নমস্কুর্যাৎ। ততং প্রণবপুটিতং মূলমন্ত্রং করয়ের্দ্রাথ্যে পৃষ্ঠে
পার্শে চ ত্রিশো বিভাত্তা প্রণবপুটিতান্ সবিন্দৃন্ মূলবর্ণান
অঙ্গুলীনাং পর্বহু নমোহস্তান্ ভ্রমেণ্ড । তদ্যথা দক্ষিণাঙ্গ্রে

পুরণ ও কুজক করিতে হইবে এবং অন্তাদশাক্ষরমন্ত্রপ্রপে হাদশবার জপে রেচন, পূরণ ও কুজক করিবে। একবার রেচন, পূরণ ও কুজক করিলে এক প্রোণায়াম হয়, এই প্রকার তিনবার প্রাণায়াম করিবে। অন্তান্ত মন্তে মন্থ-বর্ণ সংখ্যায় রেচন, পূরণ ও কুজক করিতে হয়। প্রাণায়মের যেরপে নিয়ম লিখিত হইল, এই জন কেবল প্রীক্ষমন্ত্র জানিবে। জন্ত দেবতাবিষ্বে এই নিয়মে প্রাণায়াম করিবে না। তংপরে পীঠন্তাস করিয়া কোণে ও মধ্যে বিমলাদি পীঠ্মন্ত ন্তাসকরিয়া ঝ্যাাদিন্তাস করিবে। ঝ্রাাদিন্তাসে মন্ত্র ও জন মূলে প্রতিরমা ঝ্যাাদিন্তাস করিবে। ঝ্রাাদিন্তাসের মন্ত্র ও জন মূলে প্রতিরমণে লিখিত আছে, দৃষ্টি করিলেই সহজে বোধগমা হইবে। তংপরে মন্ত্রাণিটাত দেবতাবৈ হুর্গারে নমঃ এই মত্রে হুর্গার লমস্কার করিবে। জনজর ও গোপীজনবল্লভার স্বাহা, ও এই মন্ত্র কর্ববের নধ্যে, পূর্ভে ও পার্ম্বে তিন ভিন বার ন্তাস করিয়া গোলীজন বল্লভার স্বাহা, এই মন্ত্রগত প্রত্যেক বর্ণের ছালিতে ও এবং জন্তে ও নমঃ, এই শন্ধ বেশে করিয়া উভয় হজের প্রত্যেক অসুসীর তিন তিন পর্কদ্বিতে

ত্রিষু পর্বাহ্ম ওঁ গোঁ ওঁ নমঃ। দক্ষিণতর্জ্জনাং ওঁ পাঁ ওঁ নমঃ।
দক্ষিণমধ্যমায়াং ওঁ জং ওঁ নমঃ। দক্ষিণজনামিকায়াং ওঁ
নং ওঁ নমঃ। দক্ষিণ কনিষ্ঠায়াং ওঁ বং ওঁ নমঃ বামকনিষ্ঠায়াং
ওঁ লং ওঁ নমঃ। বামজনামিকায়াং ওঁ ভাং ওঁ নমঃ। বাম
মধ্যমায়াং ওঁ য়ং ওঁ নমঃ। বামতর্জ্জনাং ওঁ স্বাং ওঁ
নমঃ বামাঙ্গুতে ওঁ হাং ওঁ নমঃ। অয়ং স্প্রিন্তাসঃ।
এবং দক্ষিণাঙ্গুতপূর্বনা বামকনিষ্ঠান্তা হিতিঃ। সংহৃতিশ্চ
বামাঙ্গুতিদি-দক্ষিণাঙ্গুতানা। পুনঃ স্প্রিন্থিতীতি পঞ্চধা
কুর্যাৎ। তথাচ গোঁতমীযে—সংহৃতির্দ্দোষসংঘানাং হারিনী
পরিকীর্তিতা। বিদ্যাপ্রদশ্চ স্ট্যন্তো বর্ণিনাং শুদ্ধতেলাং।
ছিত্যন্তঃ স্থাদ্গৃহস্থানাং ত্রযং কামাকুরপতঃ। সহজানো
বাণপ্রস্থে স্থিত্যন্তং কশ্চিদিছতি। সংহারান্তো মুনীনাঞ্চ

এক এক বর্ণ তিন তিনবার স্থাসকরিতে হটবে। এই স্থাস করিতে দক্ষিণ হণ্ডের অসুষ্ঠ হটতে আবন্ত করিয়া কনিষ্ঠা পর্যান্ত এবং বাবহুত্তের কনিষ্ঠা হইতে আরম্ভ করিয়া অসুষ্ঠা পর্যান্ত জ্ঞাস করিবে। ইহার নাম স্প্রীন্তাস, এই স্থাসে কোন্ কোন্ অসুলীতে কোন্ কোন্ বর্ণ প্রাস্থ করিছে হইবে ভহ্মির মূলে স্পর্টরূপে লিখিত আছে, দৃষ্টি করিলেই হিজে ব্যান্তে পারিবেন। উক্ত স্প্রীন্তাস দক্ষিণ হত্তের অসুষ্ঠ হইতে আরম্ভ করিয়া বাম হত্তের অসুষ্ঠাদি কনিষ্ঠাপর্যান্ত শেষ করিলে স্থিতিভাস হয় এবং বাম হত্তের অসুষ্ঠ হইতে আরম্ভ করিয়া দক্ষিণ হত্তের কনিষ্ঠাদি অসুষ্ঠপর্যান্ত শেষ করিলে সংহার ভাস হইয়া থাকে। এই প্রকার স্পর্টভাস, ন্তিভিন্তাস প্রার্থে সংহারভাগ এই জিবিধ স্থাস করিয়া প্রস্কার স্প্রীন্তাস ও স্থিতিভাস করিবে। এইরুপে পঞ্চবিধ ভাস করিছে হইবে। গোত্রমীয়তন্তে লিখিত আহে বে, সংহারভাসে সমস্ত ধোষ নিবারণ করে এবং স্প্রী ও স্থিতিভাস করিবে বিদ্যা লাভ হয়। উক্ত পঞ্চবিধ ভাসের মধ্যে ব্রাক্ষণণ স্থাই, ছিতি, সংহতি ও স্থাই এই চতুর্নিধ ভাস, গ্রহন্ত ও সন্থীক বাণপ্রান্থ ব্যক্তি

বিরক্ত চ সর্বিণঃ। অশক্তন্তেদেকমাত্রং কুর্যাৎ। তথাচ
ভাসত্রয়ং সদা কুর্যাদশক্তাবেক এবহি ইতি গৌকমীয়াৎ।
ততঃ স্থিতিক্রমেণাঙ্গুলীয়ু দশাক্ষরাণি বিন্তুদেৎ। তদ্মধা—
প্রণবপুটিতং সর্বত্র। গোং নমো দক্ষাস্থুছে। পীং নমস্তজ্ঞভাং। জং নমে৷ মধ্যমায়াং। নং মমোহনামিকায়াং।
বং নমঃ কনিষ্ঠায়াং। লং নমো বামাঙ্গুছে। ভাং নমো বামতর্জ্ঞভাং। য়ং নমো বামমধ্যমায়াং। স্বাং নমো বামানামিকায়াং। হাং নমো বামকনিষ্ঠায়াং। ততঃ করয়োরঙ্গুলিয়ু
পঞ্চাঙ্গুলাসঃ। যথা আচক্রায় স্থাহা অঙ্গুছাভ্যাং নমঃ। বিচক্রায়
স্থাহা তর্জ্জনীভ্যাং স্থাহা। স্থচক্রায় স্থাহা মধ্যমাভ্যাংবয়ট্।
ত্রেলোক্রক্ষণচক্রায় স্থাহা অনামিকাভ্যাং হুঁ। অস্তরাস্তকচক্রায় স্থাহা কনিষ্ঠাভ্যাং ফট্। ততো মূলমন্তপুটিতান্ সবিন্দৃন্ মাত্কাবর্ণান্ মাত্কাস্থানেয়ু নমেৎ। ততঃ প্রণবপুটিতং

সৃষ্টি স্থিতি, সংক্ষতি, সৃষ্টি এবং তিতি এই প্কবিধ নাল; ম্নিগণ সৃষ্টি, ছিতি ও সংকৃতি এই ত্রিবিধ নাল এবং বিরাগী বাক্তি উক্ত পঞ্চবিধনাল করিবে। উক্ত পঞ্চবিধ নালে আশক্ত বাক্তি একবারমান্ত নাল করিবেও পূলা দিছ হইবে, এই বিষয়ের প্রমাণ ঘাহা গৌভমীয়তন্তে লিখিত আছে দেই প্রমাণ এইস্থলে মূলে উক্ত হইয়াছে। তৎপরে করন্ত্রের দশাসুলীতে স্থিতিভাসক্রমে মন্ত্রের দশাক্ষরনাল করিয়া করন্ত্রের অসুলীতে পঞ্চাপন্তাল করিবে। এই উভন্ন নাল মূলে স্পষ্টরূপে লিখিত আছে, সৃষ্টি করিলেই সহলে জানিতে গারিবেন। তৎপরে বিন্দুস্ক অকারাদি প্রত্যাক্ষ মাতৃকাবর্ণের আদিতে ও অস্তে মূলমন্ত্র যোগ করিরা মাতৃকাভাসোক্ত স্থানে জাল করিবে। অথাৎ বজারন্তে গ্রামিকবর্তার স্থাহা আং গোপীজনবর্তার স্থাহা এবং মূথে গোপীজনবর্তার স্থাহা আং গোপীজনবর্তার স্থাহা, ইত্যাদি প্রকারে মাতৃকাভাগেক্তিক সকল স্থানে ভ্রানকরিতে স্ইইবে। স্থনস্থ

বৃত্তমন্ত্রং আকেশাদাপাদং আপাদাদাকেশং ক্রমাজ্রিবারংবিভান্ত সংহারস্প্রিভেদেন দশতস্থানি বিভাসেৎ। তথাচ
ক্রমদীপিকায়াং সংহতাবসুগতো মসুবর্যঃ। স্প্রিবর্মনি
ভবেৎ প্রতিযাতঃ। তদ্যথা—পাদয়োঃ গোং নমঃ পরায়
পৃথিবীতবাল্পনে নমঃ। লিঙ্গে পীং নমঃ পরায় জলতবাল্পনে
নমঃ। হৃদি জং নমঃ পরায় তেজস্তবাল্পনে নমঃ। হৃদি জং নমঃ পরায় তেজস্তবাল্পনে নমঃ। পরায় বায়তবাল্পনে নমঃ। শিরদি বং নমঃ
পরায়াকাশতবাল্পনে নমঃ। ল্লং নমঃ পরায়াহকারতত্যাল্পনে
নমঃ ভাং নমঃ পরায় মহতবাল্পনে নমঃ। এতদ্বয়ং হৃদি
ভাল্তমিতি। য়ং নমঃ পরায় প্রকৃষতবাল্পনে নমঃ।
বাং নমঃ পবায় পুরুষতবাল্পনে নমঃ। হাং নমঃ পরায়
পরতবাল্পনে নমঃ। এতজ্ঞিতয়ং সর্বগাত্তে ইতি সংহার
ভাসঃ।

কেল হইতে পাদপর্যান্ত এবং পাদ হইতে কেল পর্যান্ত ওঁ গোপীক্ষনবল্লভাষ
খাহা ওঁ, এইমন্ত্রে তিনবার জ্ঞাস করিবে। তৎপরে সংহার ক্ষ্টিংজনে দশভ্রম্ব
ক্রাস করিতে হইবে। এই দিবিধ ক্যাসবিব্যান্ত ক্রমদীপিকায় যে সকল
প্রান্থাণ লিখিত আছে, সেই সকল প্রমাণ ও তৎপ্রমাণাসুযায়ী ক্যাসপ্রণালী
মূলে ম্পাইরূপে লিখিত আছে। এইম্পণ স্ট্যাদি ক্যাসের অঙ্গুলী নিরম
ক্ষিত্ত হটতেছে, মন্তকে মধামাস্পীদারা ন্যাস করিবে এবং চক্তে মধামা
ও তর্জনীদারা; কর্ণে তর্জনী, সধামা, অনামিকা ও কনিষ্ঠা এই চারি
অঙ্গুলীদারা; নাসিকাতে অঙ্গুলী ও অনামিকাদারা, সুথে সর্কাস্পীদারা
ফ্রন্থে অঙ্গুলী ও তর্জনীদারা, নাভিতে অঙ্গুল ও মধামাদারা, লিলে ও
আত্ততে হর্জনী, মধামা, অনামিকা ও কনিষ্ঠা এই চারি তঙ্গুলীদারা এবং
পাল্পন্থে সর্কাস্থীদারা জাস করিতে হইবে। এই সকল জাসের প্রণাদী ও ও
ক্রেন্ ক্রেন্ স্থানে কোন্ কোন্ কোন্ কোন্ কোন্ কেন্ত্রান্ত করিতে

অথ স্ষ্টিভাসঃ। হাং নমঃ পরায় পরতত্তাত্মনে নমঃ। স্বাং নমঃ পরায় পুরুষতত্ত্বাতানে নমঃ। য়ং নমঃ পরায় প্রকৃতিতত্ত্বাত্মনে নমঃ। এতজিতয়ং সর্বাগাত্তে क्रि जिश् नगः পরায় মহততাত্মনে नगः। हार नगः পরায় অ-হঙ্কারতভাত্মনে নমঃ। শিরসি বং নমঃ পরায়াকাশতভাত্মনে নমঃ। মুখে নং নমঃ পরায় বায়ুতত্তাতানে নমঃ। হৃদি জং नमः পরায় তেজস্তত্বাত্মনে नमः। लिक्न পীৎ नमः পায় জলতত্ত্বাত্মনে নমঃ। পাদয়োঃ গোং নমঃ পরায় পৃথিবীতত্ত্বা-षात नमः। ইতি সৃষ্টিगामः। সৃষ্ট্যাদিগাদে অঙ্গুলি निय़ स्था निवक्त-- भित्रिम विश्वि यथा रमवाक्रि उर्जनी কান্বিতা। শ্রবদি রহিতান্ত্রপ্তা জ্যেষ্ঠান্বিতোপকনিষ্ঠিকা नि। वनत्न मर्काः मङ्गायमी रुपि उर्जनी। প্रथमयूजा यशया नार्छ। व्याष्ट्री विश्वि लिख। जा धवाञ्चलरमा कार्याः मात्रूष्ठाञ्च পদদ্ধয়। তদ্যথা শিরদি গোং নমঃ মধ্যমাপ্লল্যা। নেত্রয়োঃ পীং নমন্তর্জনীমধ্যমাভ্যাং। কর্ণয়োঃ জং নমঃ অঙ্গুষ্ঠরহিতাভিরঙ্গুলীভিঃ। ত্রাণে নং নমোহস্বুষ্ঠানা-মিকাভ্যাং। মুখে বং নমঃ দর্বাঙ্গুলীভিঃ। হুদি লং নমো-रुश्रुष्ठे छर्जनी जार। नार्ज जार नगः जाश्रुष्ठे मधामा जार। निस्त्र यः नत्यार्श्वष्ठतरिতाजितश्रुलीजिः। जाञ्चाः साः नत्यार्श्वष्ठ-রহিতাভিরঙ্গুলীভিঃ। পাদয়োঃ হাং নমঃ সর্বাঙ্গুলীভিঃ ইতি रुष्टिक्यः। অথ স্থিতিক্রমঃ। হৃদি গোং ন্যোহসুষ্ঠতর্জ-

হইবে তাহা বিশদরূপে মূলে লিখিত লাছে, দৃষ্টি করিলেই সহজে বোষগম্য হুটবে। পুনর্বার মূলের লিখিত হুষ্টি ও স্থিতি ন্যাস করিতে হুইবে। অস্তান্ত তম্ত্রে লিখিত আছে যে, সৃষ্টিস্থিত্যাদি ন্যাসে, স্থান ও বর্ণের বিনিম্ম

नीजाः। नाजि शेर नयाश्त्र्ष्ठेयश्याजाः। लिस् जः नयार्ष्क्षत्रिवाचित्रश्रूणीिं । जायूर्नाः नः नयार्ष्क्रुष्ठ-শিরদি ল্লং নমো মধ্যময়া। নেত্রয়োঃ ভাং নমো মধ্যমাতর্জ-नीजार। कर्नयाः यः नत्यार्श्वष्ठतिकाजितश्रुमीजिः। खार्ष स्राः नत्यारश्रुष्ठीनाभिकाजाः। मूर्ण दाः नमः मर्वाञ्रुलीजिः। অथ সংহারক্রমঃ। পাদয়োঃ গোং নমঃ সর্বাঙ্গুলীভিঃ। জামুনোঃ शीः नमः অঙ্গু छेत्र हि जा जित्र क्र ली जिः। लिस्त कः नरगोरुक् छेत्रिका जित्रक लीजिः। नार्जो नः नरगोरुक् छेकर्ज-नीजार। क्रिन रः नर्यार्क्ष्रकेकर्जनीजाः। मूर्थ झः नगः मर्खान्नु लीजिः । खार्ष जाः नरमारुन्नु ष्ठानामिकाजाः । कर्नराः यः नरमारुश्रू छेत्रिङा जित्रश्रू लीजिः। त्नवर्याः श्राः नया यथायाञ्जनीञ्राः। यृषि शः नया यथायात्र्वा ইতি সংহারক্রমঃ। পুনঃ সৃষ্টিস্থিতী বিশ্যদেৎ। তথাচ— श्वानार्गरार्विनिगरा। नात्रुलीश्वानराः किए। विन्यार्थी बक्काठात्री ठ थूनः एष्टिः मगाठत्त्र । गृश्यून् थूनः एष्टिः স্থিতিং কুর্য্যাদ্বিশেষতঃ। যতির্বৈরাগ্যযুক্তশ্চ সংহারান্তং শুদেভতঃ। এতেন বিদ্যার্থিব্রহ্মচারিণাং চতুর্দ্ধা গৃহস্থাদীনাং পঞ্চা। यতিবিরক্তাদীনাঞ্চ ত্রিধা শ্রাসঃ। তথাচ নিবন্ধে— স্থাসঃ সংহারাস্তোমস্করিবৈখানদেয়ু বিহিতোহ্যং । স্থিত্যস্থো कत्रित, किन्छ अञ्चली वा छात्नित विनिमन्न कत्रित्व ना। विनाधी बक्कारो गांकि रहि, दिनि । मः हात्र नाम कतिया भूनकात रहिनाम । श्रिष्ठिकाम कतिरव। এবং যতি ও বৈরাগাযুক্ত ব্যক্তি স্থাষ্ট, স্থিতি॰

ও সংহার ক্রাদের ক্ষিকারী। স্থতরাং বিদাগী ব্রহ্মচারী বাজি

हर्ज़िय, गृर्ख्यांकि शक्षिय, यांक ध्वः विज्ञांगी वांकि दिविध

গৃহমেধির স্ট্রান্ডা বর্ণিনামিতি প্রাক্তঃ। বৈরাগ্যযুক্তি
গৃহদ্বে সংহারান্ডং কেচিদাহুরার্যাঃ। সহজানো বনবাসিনি
ছিতিঞ্চ বিদ্যার্থিনাং স্থান্তং। কেচিতু ভাসত্রয়ে বিপর্যাসমামনন্তি তেন সর্বৈরেব ত্রিধা ছাসঃ কর্ত্তন্যঃ॥

অথ বিভূতিপঞ্জরতাদঃ। নিবন্ধে—বচ্যুপরং তাসবরং
ভূত্যভিধং ভূতিকরং। মন্ত্রদশার্তিময়ং গুপ্ততমং
মন্ত্রিবরৈঃ। তদ্যথা—আধারে গোং নমঃ লিঙ্গে পীং নমঃ
নাভৌ জং নমঃ হুদি নং নমঃ গলে বং নমঃ মুখে
লং নমঃ অংশযোঃ ভাং নমঃ য়ং নমঃ উর্বোঃ স্বাং নমঃ
হাং নমঃ। কন্ধরাযাং গোং নমঃ নাভৌ পীং নমঃ কুকৌ
জং নমঃ হুদি নং নমঃ স্তন্যোঃ বং নমঃ লং নমঃ পার্বয়োঃ
ভাং নমঃ য়ং নমঃ ভ্লোণ্যোঃ স্বাং নমঃ হাং নমঃ।

 निर्वाम त्यार यूर्य भी त्वज्ञाताः कः न कर्तााः यर सः नामाभुद्राश्चाः छार सर करभानायाः स्थार रा । এतः पिक्न-क त्र भ मृत्रमञ्जा अदक्षू शक जनम लीयू शक। वागक वम् वागक। एक्सू श्रक उम्मूलोसू श्रक। अवश्मिक्शशाम्यूल्यमा एक्सू लक उनम् लोयू लक । यांमलाणग्लमका प्राक्ष् लक उन्म तीयु शक। मुकि त्था जरशत्वि शा जकिया ज जरशिक्तम नः उज्राह्य व मृति, मकरम सः भूमर्गा । । र प्रेर्याः यार शा। भिवमि लीः द्वाद्याः भी, भूरण क का, अ मः क्षि व॰ कोटव हार मुलाभारव ७१९ लिएक रा॰ टाब्यूबर थां भाषरगाः का। देवा भेटन, देशा करणाता हो। या लद्रमा देन कथाता। ना भागीता ने निक्य हार उर्दियाः अ शानिताः । पार्माः त्रा ाना । वनानि नास्या । एत । एक कारा। १९१ हमोद्य-इस्थन्ति करें गालानिया । १०१ १% खाइ। काल गामार का गर रखे कि का महा कर, धर्नतम् दिभक शिम । ३००१ म् अविभागतमा एष्टि-ब्रिडो। डिटिडो ४०।३४ २०।३४९।। अर्थ्य, -क्रांप त्रीः

শিরদি পীং শিখায়াং জং দর্বাঙ্গে নং দিক্ষু বং দক্ষপার্থে লাং বামপার্থে ভাং কটিদেশে য়ং পৃষ্ঠে স্বাং মৃদ্ধি হাং ততঃ পঞ্চাঙ্গতাদঃ। যথা আচক্রায় স্বাহা হৃদয়ায় নমঃ। বিচক্রায় সাহা শিরদে স্বাহা স্লচ্জায় স্বাহা শিরদে স্বাহা স্লচ্জায় স্বাহা। শিখায়ৈ বয়ট্। তেলোকারক্ষণচক্রায় স্বাহা কবচায় হুঁ। অস্থরাস্তক্রচায় স্বাহা অস্তায় ফট্। ততো নারায়ণমজ্যেক্ত কিরীটকেয়্রেত্যাদিমন্ত্রেণ ব্যাপকং বিধায় বেণ্বিলাদি মুদ্রাং প্রদর্শ্য ওঁ নমঃ স্থদর্শনার অস্তায় ফড়িতি মজ্রেণ দিখন্ধনং ক্র্যাৎ। কিরীটাদিন্যাসস্ত সর্বত্র বিষ্ণুমন্ত্রে। তেগোরাদেং পুর্ণুরিকাক্ষং গোপকতাঃ সহস্রশঃ। আয়নোবদনাজ্যেকে প্রেরিকাক্ষং গোপকতাঃ সহস্রশঃ। আয়নোবদনাজ্যেকে প্রেরিকাক্ষং গোপকতাঃ সহস্রশঃ। আয়নোবদনাজ্যাকে প্রেরিকাক্ষিধ্রতাঃ। পীড়িতাঃ কামবাণেন চির-মায়েয়ণণেৎস্থকাঃ। মৃক্রাহারলসৎপানত্রস্থকনভ্রানতাঃ।

ও পঞ্চাঙ্গ ন্যাদ মৃলে স্পতিরপে লিখিত আছে। তংপরে ও কিবটি-কেয়ুবহাবমকরক্ ওলশভাইজগদান্তোজহন্ত শ্রীবংশবক্ষঃস্থল শ্রীভূমিদহিভায়্মজ জ্যোতির্ঘদীপ্তকরায় সহস্রাদিষ্যতেজদে নমং। এই মন্ত্রনার ব্যাপক-ভাস করিয়া বেণুবিল্লাদি মুদ্রাপ্রদর্শনপূদক ও নমঃ স্থদশনায় জন্ত্রায় ফট, এই মন্ত্রে দিয়ন্ধন করিয়া ধানে করিবে, দক্ষপ্রকাব বিফুমন্ত্রেই কিরীট-কেয়ুব ইত্যাদি মন্ত্রে ব্যাপক্সাদ করা বিধেয়। দেশভার আকার এইরপ—মনোইর ব্যাবন স্থানে পৃগুরীকাক্ষ প্যোবন্দ সহস্র দহস্ত্র গোপক্সাকে মোহিত কবিতেছেন। ঐ সকল গোপ্রালিকারা শ্রীক্রফের বদনক্মলে স্থীয় নয়নস্বরূপ ভ্রমরগণকে প্রেরণ কবিতেছে এবং তাহারা কামবাবে গীড়িত ও শ্রীক্রফের আলিসনে সাতিশয় সমুৎস্থকা। তাহাদের স্থল উচ্চতর স্তনোপরি মৃক্তাহার লম্বমান আছে এবং গুনভাবে গোপিকারা কিঞ্চিৎ নম্রভাবে দণ্ডায়মানা রহিয়াছে। তাহাদের পরিধেয় বদন ও

শ্রস্থানিলাবসনা মদশ্বলিতভাষণাঃ। দন্তপঙ্কিপ্রভারতি বিশ্বলিতভাষণাঃ। দন্তপঙ্কিপ্রভারতি বিশ্বলিতভাষণাঃ। দন্তপঙ্কিপ্রভারতি বিশ্বলিতভাষণাঃ। বিলোভয়ন্তী বিবিবিধ বিজ্ঞানৈতি কাৰ্যানিকিকৈ কাৰ্যানিকিকে কাৰ্যানিকিক কাৰ্য

কবরীবন্ধন বিগলিত হইতেতে এবং মদভরে বাকাদকল অলিত প্রায়।
দক্তপংক্তিপ্রভা অবরে পতিত হইয়া অধরের শোভা ১৯তি করিতেছে।
গোপীগণ বিলাদপূর্ণ বিবিধ ভাবভঙ্গীপ্রারা জ্রীকৃষ্ণকে জালোভন দেখাইতেছেন । প্রক্ত্র ইন্দাবরের নাায় জ্রিক্ত্রের দেহকান্তি, চক্রের নাায়
শোভাপূর্ব বদন, শিরোদেশ ময়্রপ্রভঙ্গণে বিভূষিত, বক্ষঃতলে জ্রীবংদ
চিহ্ন কঠে কৌস্তভমনি, পরিধান পীতবন্ধ। গোপীদিগের নম্নোংপল
ছারা দক্ষশরীর অর্চিত এবং গো ও গোপগণে পার্বত, করেতে বেণু এবং
সেই বেণুবাদনে তিংপর, তাহার সন্ধশবীর দিব্য অলক্ষারে বিভূষিত।
শোবিন্দের এইকপধ্যান করিয়া মান্দোপ্রারে পূজা ও শুজাপুণ করিবে।
তৎপরে বিজ্মপ্রোক্ত পীঠপুলা করিয়া পুনস্কার বান্ন ও আবাহনাদি পঞ্চপুল্বান্ধনিল্পর্যন্ত সমস্ত কল্ম করিবে। অন্তর্ম নেবশরীরে স্ক্রে, তিতি, ক

চলনপ্রিলাং রক্ততুলদীং মূলেন দক্ষিণবানপার্শয়েদিদ্যাৎ
এবং হৃদয়ে কর্মীরহয়েন মৃদ্ধি বামদক্ষিণভেদেন পদাহয়েন
তথা তুলদীহয়ং কর্মীরহয়েন মৃদ্ধি বামদক্ষিণভেদেন পদাহয়েন
তথা তুলদীহয়ং কর্মীরহয়ং পদাহয়ক শিরসি দদ্যাৎ। দর্বং
বা শিরসি দদ্যাৎ। তথাচ গোতমীয়ে—দক্ষিণে বায়দেবাখাং
সক্ষং চৈতভামব্যয়ং। বামে চ ক্রমিণী রক্তা নিত্যা রক্তাতথায়িতা। তুলদীয়্গলং পার্মহয়ে গন্ধয়য়ায়িতং। হয়ারিয়ুগলং পার্মহয়ে দক্ষিণবামকে। পদাপুষ্পং মৃদ্ধি দেশে
মূলেন দক্ষবামকে। মড়ভিঃ দর্বতনো দদ্যাৎ পুনঃ শিরসি
সর্বতেঃ। ততঃ দর্বাণি দর্বতনো দদ্যাৎ। তত আবরণং
পূজয়েৎ। পুর্বের ওঁ দামায় নমঃ দক্ষিণে ওঁ স্থদামায় নমঃ
পাশ্চমে ওঁ বায়্রদেবায় নমঃ উত্রে ওঁ কিঞ্কিন্য নমঃ কেশরেয়
অয়্যাদিকোণে ওঁ আচক্রায় স্বাহ। হদয়ায় নমঃ নৈক্তিও ও

লিখিত মন্ত্রে পূলা করিবে। তৎপব প্নন্ধার পঞ্চপুশাঞ্জলিদান করিয়া দেশভাব দিনিগপার্থে খেতচন্দনযুক্ত খেতত্লদা ও বামপার্থে রক্তচন্দন কুক্ত গ্রন্ত করিবীপুল্পদ্ব এবং মন্তকের বাম দল্পিণ ভাগে পদ্মপুলার অর্পন করিবা শিরোদেশে হুইটি তুলদীপত্র, ছুইটি কর্মীরপুলা ভুইটি পদ্মপুলা প্রদান করিবে, অথবা উক্তপুশাদি দকল কেবল মন্তকে দিবে। এই বিষয়ে গৌভমীরভয়ে দে দকল প্রমাণ লিখিত আছে, দেই দকল প্রমাণ এই হলে উক্ত আছে। তৎপরে দেবের সর্বাদ্ধীরে সর্বাহ্র পূলা অর্পণ করিয়া আবরণপুলা করিতে হুইবে। আবরণপূলার দেবতা ও তৎক্রম মূলে স্পত্তরণে লিখিত আছে, দৃষ্টি করিলেই বোধগমা হুইবে। সমন্ত আবরণপূলাভে অলক্ত হুইলে অক্সপূলা ও ইক্তাদির এবং বল্লাছের পূলা করিবে, এই বিষয়ের প্রমাণ গৌভমীরভয়ে লিখিত আছে। দেবল পূলার দ্বিনা আবরণপূলাভ আছে হুইলে অক্সপূলা ও ইক্তাদির এবং বল্লাছের পূলা করিবে, এই বিষয়ের প্রমাণ গৌভমীরভয়ে লিখিত আছে। দেবল পূলার দ্বাণাণী লিখিত হুইল, এইরনে জ্বিকের অর্কনা করিলে সাধ্যক কাম ও

विष्ठानाम यादा निवरम यादा वाष्ट्रकारन छ छहानाम याद्या निर्धारिय वयषे जिनात्न उँ दिवादनाकात्रक्र कार्य याद्या কবচায় হুঁ চতুদ্দিকু ওঁ অহ্নান্তকচক্রায় স্বাহা অস্ত্রায় कहे। ज्ञ भाषा भूका मि उँ क़िया नगः जर मजा-जागरिय नाग्रिकरिंजा ञ्चनमारिय मिजिनिमारिय ञ्चनकर्गारेय जानू-रिंडा ञ्गैलारेश পতাতোষু পূर्वािन उँ राञ्च परा नमः धरः (मबरेका नमाग्न यर्गामारेश वलज्जांश ञ्चजारेश शार्थजाः (গাপীভাঃ। ডৰাছে মধ্যে চ পূৰ্বাদিক্ৰমেণ ওঁ মন্দারায় নমঃ এবং সন্তানায় পারিজাতায় কল্লর্ফায় হরিচন্দনায় जनार्थ हेन्सामीन् वङ्गामीश्रम शृक्षाय् । जजः कृष्णास्कान् शृक्षरां औक्षां नमः जय वाञ्चा प्रविकासनां । নারায়ণায় যত্নশ্রেষ্ঠায় বাঞ্জে য়ায় ধর্মসংস্থাপনায় অস্থরাক্রান্ত-ভারহারিণে দর্বতা প্রণবাদিনমোত্তেন পূজয়েৎ। অশক্তশ্চেদ সেন্দ্রবজ্ঞাদীংশ্ট পূজ্ঞায়েৎ। তথাচ গৌতমীয়ে—অথবাঙ্গৎ मिक्পि जिज्जि पि क्षिर्य । ध्वय जिम्ह क्ष कामनारकाः म जाजन । अञ्चयजनानाकान्द्र कृष्णाचित्रन পুজয়েৎ। ততা ধূপাদিবিসর্জনান্তং কর্ম্ম সমাপয়েৎ। অস্থ পুরশ্চরণং দশলক্ষজপঃ। তথাচ—দশলক্ষমক্ষয়ফলপ্রদৎ यसूर প্রতিজ্প্য নির্মালমতিদিশাক্ষরম্। জুহুয়াৎ সিতাজ্য-यधुत्रभू रैं ठर्न रेवत्रक्षणा भूरे कर्छ जानात मनायुक्श । यथ अवित-यूगलवर्गः (ठमामूर পঞ্চলক প্রজপেত্র জুত্য়াচ্চ প্রোক্তক

শক্তি ভাজন হয়। এইরাপ স্জাতে অশক্তব্যক্তি কেবল রুফাইকের পূজা। করিলেও তাহার পূজাসিদ্ধি হউষে। তৎপরে ধূপাদি বিসর্জনাত কর্ম ° সমাপন করিয়া পূজাসাঞ্চ করিবে। দেশলক লপ ও স্বত, মধু, শর্করাযুক্ত

প্রার্দ্ধকং। অমলমতিরভাবে পায়দৈরমুজানাং সহিতম্ভ-স্থানিকৈরারভেদ্ধোমকর্ম॥

অথ ত্রয়েদশাক্ষরমন্তঃ। দশাক্ষরাদো শ্রীমারাকামঃ
মায়াশ্রীকামঃ কামমায়াশ্রীক্রিবিধন্তয়োদশাক্ষরে। ভবতি।
তথাচ শ্রীশক্তিমারপূর্বকেচ শক্তিশ্রীমারপূর্বকঃ। কামশক্তি
রমাপূর্বেরা দশার্গোমনবন্তয়ঃ। ইতি সনৎকুমারকয়ে।
এতেয়াং পূজাপ্রয়োগঃ। প্রাতঃকৃত্যাদিবৈক্ষবোক্তপীঠ
ন্যাসান্তং কর্মা বিধায় (৯৬ পৃষ্ঠা) ঋষ্যাদিন্যাসং কুর্যাৎ।
তদ্যথা—শিরসি নারদঋষয়ে নমঃ মুথে বিরাজ্গায়ত্রী
চহদদে নমঃ হৃদি শ্রীকৃষ্ণায় দেবতায়ে নমঃ। ভতঃ
করাঙ্গন্যানো আচক্রায় দাহা অঙ্গুটাভ্যাৎ নমঃ এবং
আচক্রায় স্বাহা হৃদয়ায় নমঃ ইত্যাদি দশাক্ষরবিদ্বন্যদেও।
ততঃ ফলার্থী চেদ্দশতত্তমুর্ত্তিপঞ্জরো ন্যদেও। (১৮১।১৬৯ পৃ)

অনপ্তর ত্রাদেশাক্ষর মন্ত্র ও তংপৃদ্ধাদির ক্রম কথিত হইতেছে। ব্রী ক্রী গোপীজনবল্লভার স্বাহা, ব্রী ব্রী ক্রীং গোপীজনবল্লভার স্বাহা, এই ক্রিবিধ ক্রোদেশাক্ষর মন্ত্র। করং ক্রমারকল্লে ইহার প্রমাণ আছে। এইক্ষণ উক্ত তিনপ্রকার মন্ত্রের প্রাপ্রধানী কথিত হইতেছে। অত্রে প্রাতঃক্রতাদি বিষ্ণুমন্ত্রোক্তপীঠন্তাদান্ত কর্ম্ম করিলা ধ্রাদিক্তাস ও করাক্তাস করিবে। ধ্রাদিক্তাস মূলে শিথিত আছে, করাক্তাস এই—আচক্রার স্বাহা অস্টাত্যাং নমঃ। বিচক্রার স্বাহা ওর্জনীস্তাৎ স্বাহা, স্বচক্রার স্বাহা মধ্যমান্তাং ব্রই। কৈলোক্যরক্ষণচক্রার স্বাহা মধ্যমান্তাং ব্রই। কৈলোক্যরক্ষণচক্রার স্বাহা মধ্যমান্তাং ব্রই। কৈলোক্যরক্ষণচক্রার স্বাহা দিরসে স্বাহা, স্বচক্রার স্বাহা শিথারৈ ব্রই। ক্রেলোক্যরক্ষণচক্রার স্বাহা দিরসে স্বাহা, স্বচক্রার স্বাহা শিথারৈ ব্রই। ক্রেলোক্যরক্ষণচক্রার স্বাহা করিলা ক্রমান ক্রিলার ক্রমার কট্

त्रक्र श्राष्ट्रात्रा এक लक्ष हाम क्रिल এই म्लाक्त मस्त्रत्र श्राण्डर इस ।

ততঃ কিরীট্রক্সেণ (১৭১পৃ) ব্যাপকং বিধায় যথাশক্তি মুদ্রাং প্রদর্শ্য ওঁ নমঃ স্থাদশির অস্ত্রায় ফড়িতি দিয়য়নং বিধায় ধ্যায়েং। আদের মনৌ দশাক্ষরবদ্ধ্যানং দিতীয়ে রয়াভিষেক বং।তৃতীয়ে তু ধ্যানং—শঙ্খাচক্রধসূর্ব্বাণপাশঙ্কশধরোহরুণঃ। বেণুং ধমন্ মতোদোর্ভ্যাং ধ্যেয়ঃ ক্ফোদিবাকরে। গৌতমীয় মতে তু অত্রাপি দশাক্ষরবদ্ধ্যানং। তথাচ—রমাদিকামাদিমন্ত্রয়মধিকৃত্য অনয়োর্মন্তরয়ের্মন্ত্রী আচক্রাদৈরঃ ষড়ঙ্ককং। ক্র্যাদ্দশার্ণবং সর্ববং ধ্যানপূজাদিকং স্থাঃ। এবং ধ্যায়া মানসৈঃ সংপূজ্য (১৪৭ পৃ) শঙ্খন্থাপনং ক্র্যাৎ। (১০০ পৃ) ততোবৈষ্ণবোক্তপীচপূজাং বিধায় পুনর্ধ্যায়া আবাহনাদি পঞ্চপ্রস্থাঞ্জালানপর্যন্তং পূর্ব্বোক্তবেণাদিপূজনঞ্চ বিধায় আবরণপ্রসামারভেৎ। অস্থাবরণানি অঙ্গেন্দ্রজাদীনি। ততঃ কৃষ্ণাইকান্ সংপূজ্য ধূপাদিবিসর্জ্রনান্তং কর্ম্ম সমাপয়েৎ। এত্যাৎ

মৃত্তিপঞ্জান্তান করিবে। তৎপরে বিক্নন্ত্রাক্ত কিরীট ইত্যাদি মল্লে ব্যাপকভাস করিঘা যথাশক্তি মূলা প্রদর্শনপূষক ও নমঃ ভদশনায় অস্তার ফট্
এই মল্লে দিয়ন্ধন করিয়া ধ্যান করিবে। প্রথম মল্লে পূজা করিতে হইলে
পূর্বকথিত দশাক্ষরমন্ত্রেকে ধ্যান করিবে। ঘিতীয় মল্লে রল্লাভিয়েকি ধ্যানে
পূজা করিবে। ভূতীর মল্লের ধ্যানে দেবতার আকারে এইরূপ—প্রীক্লফ শন্ত্র,
বাল, পাশ ও অভ্শধারী এবং অকণবর্ধ,ইনি চুইহন্তে বেলু ধারণকরিয়া
বাদন করিতেভেন। এইরূপে প্রীক্লফের ধ্যান করিবে। গৌতমীরমতে এই
মল্লেও দশাক্ষর মল্লোক্ত ধ্যান করিবে। এইপ্রকারে ধ্যান করিয়া মানসোপ্রায়ে পূজা ও শন্ত্রাপ্র ধ্যান করিবে। তৎপরে বিক্রমন্ত্রোক্ত পাঠ পূজা
করিয়া প্রশাক্ত বেলু প্রভৃতির পূজাপূর্বক আবরণ পূজা আরম্ভ করিবে।
এই মল্লের আবরণ পূজাক্তে কেবল অঙ্গপূজা ও ইপ্রাদি এবং বক্সাদির পূজা

পুরশ্চরণং পঞ্চলক্ষজপঃ। তথাচ—পঞ্চলক্ষং, জপেন্তারদযুক্তং পায়দেন চ। জুত্য়াৎ সংস্কৃতে বহেন মন্ত্রী সর্বার্থসিদ্ধয়ে ॥

মন্ত্রান্তরং। কৃষ্ণায়পদমাভাষ্য গোবিন্দায় ততঃপরং।
গোপাজনপদভান্তে বল্লভায় বিঠাবধিঃ। কামবীজাদিরাখ্যাতো
মনুরকীদশাক্ষরং॥ অন্ত পূলাপ্রয়োগঃ। প্রাভঃকৃত্যাদি বৈষ্ণবোক্তপীঠমন্বন্তং বিভ্যন্ত (৯৬প) ঋষ্যাদিন্তাসং কুর্যাৎ।
যথা—শিরদি নাবদপ্পবয়ে নমঃ মুখে গায়জীচ্ছন্দদে নমঃ ছদি
শীকৃষ্ণায় দেবতায়ৈ নমঃ গুছে ক্রী বীজায় নমঃ পাদয়োঃ
বাহা শক্তয়ে নমঃ। ততঃ প্রণবপুটিতং মন্তং জিশঃ করয়োব্যাপয়্য করাঙ্গন্যাদো কুর্যাৎ। ক্রীং কৃষ্ণায় অঙ্গুভাভ্যাং
নমঃ। গোবিন্দায় তর্জ্জনীভ্যাং স্থাহা। গোপাজন মধ্যমাভ্যাং
বষট্। বল্লভায় অনামিকাভ্যাং হুঁ। স্বাহা কনিষ্ঠাভ্যাং
ফট্। এবং ছদ্যাদিষু। ততো মুলেন মুর্দাদিপাদপর্য্যন্তং

করিতে হয়। তৎপরে পূর্ণোক্ত রফাষ্টক পূজাকরিয়া ধূপাদিবিস্বর্জনান্ত কর্ম সমাপন করিবে। পঞ্চলফ জ্বপ ও পায়সম্বারা পঞ্চাশং সহজ্র হোম করিলে উক্তিতিবিধ ত্রংয়াদশাক্ষরমন্ত্রের পুশ্চরণ হয়।

এইক্রণ প্রীক্ষের অন্তাদশাকর মন্ত্র ও তৎপূকাদি কথিত হইতেতে।
ক্রী ক্ষায় গোণিলায় গোপীজনবল্লভার স্বাহা। এই অন্তাদশাকর মন্ত্রে
প্রিক্ষের পূকাদি করিবে। এই মন্ত্রের পূজাপ্রধাপ এই—প্রথমতঃ প্রাক্তঃক্রাদি বিক্রমন্ত্রোক্ত পীঠন্তাদ করিবে। তৎপরে ও ক্রী ক্ষায় গোলকরিয়া করাজন্তাদ করিছে গাহা ও এই মন্ত্রে ভিনবার করম্বয়ে স্তাদ করিয়া করাজন্তাদ করিছে হইবে। ক্রী ক্ষায় অসুষ্ঠান্তাং ননঃ ইত্যাদি মৃক্তের লিখিত প্রথানীতে করন্তাদ ক্রিয়া ক্রী কৃষ্ণায় জন্মায় নমঃ, গোবিলার দিবদে স্থানা, গোপীজন শিখারে বষ্ট, শল্লায় ক্রিয়া ক্রী কৃষ্ণায় ইত্যাদি পূর্ব্ব-

জিলোব্যাপয় প্রণবেন দক্ষ্যাপয় মন্ত্রন্যাদং কুর্যাৎ। মুর্দ্ধনি ললাটে জনধ্য কর্ণয়েশ্চক্ষ্বোত্র গিয়োর্ব্বদনে গ্রীবায়াং ক্ষদি নাভৌ কটাাং লিঙ্গে জামুনোঃ পাদয়োঃ এয়ু স্থানেয়ু প্রত্যেক-মন্ত্রবর্ণান্ নমোহস্তান্ ন্যসেৎ। ততো নয়ন-মুখ-হলয়-গুহাজিয়ু মন্ত্রস্থা পদপঞ্চকৎ নমোহস্তং ন্যসেৎ। পদপঞ্চক চতুশ্চ-তৃষ্ঠথা দয়ং। ততোহঙ্গন্যাদং কুর্যাৎ। ক্রী কৃষ্ণায় হলয়য় নমঃ গোবিন্দায় শিরদে স্বাহা। গোপীজন শিখায়ৈ বষট্। বল্লভায় কবচায় হুঁ। স্বাহা অস্ত্রায় ফট্। তথাচ—চত্যুং-করণবেদারিনেত্রসংখ্যাক্ষরিঃ ক্রমাৎ। য়ড্সানি মনোঃ কুর্যানান্ত্রবিজ্জাতিসংয়ুতৈঃ। নমঃ-সাহা-বষড্-বৌষট্-হুঁ-ফড্সান্চ জাতয়ঃ। ততো দশতয়ুয়ুর্ত্তিপঞ্জর্ম্যাদৌ (১৮১) ১৬৯ পু। বিধায় কিরীটমন্ত্রেণ ব্যাপকৎ কৃষ্ণা (১৭১) যথাশক্তি মুদ্রাং বদ্ধা ওঁ নমঃ স্থদর্শনায় অস্ত্রায় ফড়িতি

লিখিত ম্লমন্তে মন্তক হইতে পাদপর্যন্ত তিননার এবং ও এই মত্তে আর একবার ব্যাপকভাদকরিয়া মন্তভাদ করিবে। যথা—মন্তকে ক্রীনমঃ,ললাটে ক্রং নমঃ, জমধ্যে ফাং নমঃ কর্ণবৃদ্ধে মং নমঃ ও গোং নমঃ, চক্ষুবৃদ্ধে বিং নমঃ, জমধ্যে ফাং নমঃ কর্ণবৃদ্ধে মং নমঃ ও গোং নমঃ, মুথে পীং নমঃ, গ্রীবাতে কং নমঃ, হাদরে নং নমঃ নাজীতে বং নমঃ, করিতে লং নমঃ, লিক্ষে ভাং নমঃ, জাভুতে মং নমঃ, পাদপত্মে সাং নমঃ, হাং নমঃ। এই প্রকাশে মন্তভাদ করিয়া মন্তকে ও নমঃ এই বলিয়া ভাদ করিবে। তৎপরে নেত্রন্থ ক্রী কৃষ্ণার নমঃ, মুথে গোবিলায় নমঃ, হাদরে গোপীজন নমঃ, গুক্থে বলভায় নমঃ, পাদর্বরে আহা, নমঃ, এই ভাদ করিয়া পুনর্বার অকতাদ করিবে। তৎপরে দশাক্ষমন্ত্রাক্তদশতত্মাদ ও মৃত্তিপঞ্জরভাদ করিয়া পূর্দালিখিত কিরীটকেষ্ব ইত্যাদি মন্তে ব্যাপকভাদ করিবে। অনতর যথালিখিত কিরীটকেষ্ব ইত্যাদি মন্তে ব্যাপকভাদ করিবে। অনতর যথালি স্তাবিক ক্রার্থিক প্রকিক

দিখদ্ধনং কৃষা দশাক্ষরেকিং ধ্যাষা মানসৈঃ সংপ্রা (১৪৭ প্) শশ্বাস্থাপনং কৃষা (১০০প্) বৈশ্ববোক্তপীঠমবন্তাং পীঠপুজাং বিধায় পুনর্ধ্যাষা আবাহনাদি পঞ্চপুজ্গাঞ্জলিদান-পর্যান্তং বিধায় ক্লীমিত্যাদ্যক্ষরৈন্তভদঙ্গের ভাসক্রমেণ সংপ্রা ক্লীং কৃষ্ণায় হৃদয়ায় নমঃ ইত্যাদিনা অঙ্গমন্ত্রেণ সংপ্রা চ পুনঃ পঞ্চপুজ্গাঞ্জলিং দদ্যাৎ। ততোবেণ্যাদি প্রজনং কৃষা ধুপাদিবিসর্জ্জনান্তং কর্ম সমাপয়েৎ। অস্থ পুরশ্চরণং দশাক্ষ-রপটলোক্তং॥

মন্ত্রান্তরং। শক্তিশ্রীপূর্বকশ্চাফীদশার্ণোবিং শদক্ষরঃ। অস্ম পূজাপ্রয়োগঃ। প্রাতঃকৃত্যাদি বৈষ্ণবোক্তপীঠমম্বন্তং পীঠ-স্থাসং বিধায় (৯৬পৃ) ঋষ্যাদিন্যাসং কুর্যাাৎ। শিরসি ব্রহ্মণে

দশাক্ষরমন্ত্রেক্ত অরেছ্নাবনে রম্যে ইত্যাদি ধ্যান করিতে হইবে। তৎপরে
মানসোপচারে পূজা ও শল্পাপন করিয়া বিষ্ণুমন্ত্রোক্তপীঠপুজা এবং পুনকর্মার ধ্যান আবহাদি পঞ্চপুজাঞ্জলিদানপর্যান্ত সমস্ত কার্য্য করিবে। অনন্তর
উপরিলিখিত মন্ত্র্তাসক্রমে তত্তংস্থানে মন্তর্বাক্ষরদারা পূজা করিয়া ক্লী
ক্রক্ষার হৃদয়ায় নমঃ, গোবিন্দায় শিরসে স্বাহা, গোপীক্রন শিথারে বয়ট্,
বল্লভায় কবচায় হু, স্বাহা অস্তায় ফট্, এই বলিয়া দেবশরীরে পূজা করিবে।
তৎপরে পুনর্কার পঞ্চ পূজাঞ্জলি প্রদানপূর্কক বেণ্ডে নমঃ ইত্যাদি দশাক্ষর
মন্ত্রোক্ত আবারণদেবতাগণের পূজান্তে ধৃণাদিবিস্ক্রনান্ত সমস্ত কার্য্য সমাপন
করিবে। ত্রই অন্তাদশাক্ষর মন্ত্রের পুরশ্চরণে দশাক্ষরমন্ত্রোক্ত জল ও হোমাদি
করিতে হইবে।

এইকণ বিংশতাক্ষর মন্ত্র ও তৎপূজাদি কথিত হইতেছে। ব্রী শ্রী ক্রী কৃষণান্দ গোবিন্দার গোপীজনবন্নভার স্থাহা, এই বিংশতাক্ষর মন্ত্রে শ্রীকৃষ্ণের পূজাদি করিবে। এই মন্ত্রের পূজাক্রম এই—-জত্রে সামান্ত পূজাপদ্ধতি ক্রুমে প্রাতঃকুড়াদি করিয়া বিষ্ণুসন্ত্রোক্ত পীঠন্তাস পূর্মক ধ্রাাদিক্রাস ৮

श्राष्ट्र नमः मूर्य भाष्ठिष्टिन्दम नमः रुपि श्रीकृष्ठाय दमवजारेय नमः खट्य की वीकाय नमः भाष्ट्याः सारा भक्ट्य नमः। <u>ज्ञः क्वाक्रगामा । द्वीँ भीँ कीँ जक्र्</u>षाणाः नगः। क्रुकाग्र उर्जनीजार कारा। (शाविनाय यथायाजाः वयते। (शाभी-জन बनायिकाजाः छ। वझजाय कनिष्ठाजाः वोषष्। स्राष्ट्रा कत्रजलপृष्ठाजाः करे। धवः क्रमग्रामिष् । ততো म्रामन गामकर कृषा मञ्जभूषिणान् माण्कावर्गान् जल्दसान्य অদেৎ। ততো দশতত্ত্বানি বিশুস্থ পুনর্মাূলেন ব্যাপকং कूर्गाए। ততো मञ्जामः। मृक्ति द्वीँ नमः ललाए औँ नमः জ্রমধ্যে ক্লী নমঃ নেত্রয়োঃ কৃৎ নমঃ কর্ণয়োঃ স্থাং নমঃ নসোঃ य़ नमः वमत्न लाः नमः চिवूक वि नमः कर्ण नाः नमः (मार्च्युत्न य़९ नमः क्रिंग शार्शनमः छेमदा शीर नमंः नाट्डी জং नमः लिष्टि नः नमः वाधाति वः नमः किराः ह्वर नमः জাষোঃ ভাৎ नमः জজ্ময়োঃ য়ং नमः গুল্ফয়োঃ সাং নমঃ পामरशाः हार नमः। ইতি সৃষ্টিः। क्रिन द्वीँ উদরে শ্রীँ नाट्नी क्री लिएक कुर वाधारत खार कछेतर यर कारबाः रगार

कखरायाः विश् शन्यर्याः नार् भाषरयाः सर् युक्ति तार कभारन भीः क्रमार्था कर निखामा नः कर्गमा वर निमा कर नामा कर नामा णाः **विद्**रक याः कर्छ याः मार्याल हाः। ইजि विशिष्टः। পাদয়োঃ द्वी छन् कर्याः भी जख्याः की जार्याः कः किंग्रार कार वाधादत ग्रर लिएक लाए नाटने विर छेमदा नार कृषि यः (पार्या ला शार कर्छ भीः विदुक्क कः वषरन नः नरमाः वर कर्नरब्राः ह्नार निक्राः । । । । । अगर्था यर निनारि सार मस्टरक हार। मर्वा नरमार्खान् नारमर। हेि मर्श्वनामः। পুনঃ স্ষ্টিষ্তী কৃষা মূর্তিপঞ্জরং বিশ্বস্থা (১৮১পৃ) মূর্তিপঞ্জরস্থ স্প্রিস্থিতী বিশুস্থ ষড়ঙ্গানি ন্যাসেৎ। হ্রী শ্রী ক্লী হাদয়ায় नभः। कृष्धाय भित्रम स्राष्ट्रा। शाविन्नाय भिश्रारेय वष्ट्र। গোপীজনকবচায় হুঁ। বল্লভায় নেত্রতাভ্যাং বৌষট্। স্বাহা অস্ত্রায় ফট্। তথাচ—স্ষ্টিস্থিতী চ বিশ্বস্থ ষড়ঙ্গানি সমা-চরেए। গুণাগিবেদকরণকরণাদ্যক্ষরৈশ্মনোঃ। ততঃ পূর্ব-न्यू जा निमर्गनः निभक्षनक कृषा किती है भए छ । वा निम स युक्तार यका शाराय । जन्यथा—न्वातावजार महत्वार्कणायरैत-

পূর্বক মৃলের লিখিত প্রণাণীতে মন্ত্রতাদ করিবে। স্টে, স্থিতি ও সংশ্বতি ক্রমে এই ক্রান করিয়। পুনন্ধার স্টে স্থিতিক্রমে মন্ত্রতাদ করিয়ে। তৎপরে স্টি স্থিতিক্রমে মৃতিপঞ্জরজ্ঞাদ করিয়। ছীঁ প্রী ক্রমান্তরাম নমঃ ইত্যাদি ক্রমে বড়দভাদ করিবে। অনস্তর যথাবিধি মৃদ্যাপ্রদান, ও স্পর্দনান্ত অন্তর্ম ফট, এই মত্রে দিগজন, কিরীটকেয়্র ইত্যাদি মত্রে ব্যাপক্ষাদাও মৃদ্যাজ্বন পূর্বক ধ্যান করিবে। দেবতার আকার এইরূপ—মারারতী নগরীতে দহল স্থাকিরণে সমুক্ষণ গৃহ ও বছল কয়য়য়ক্রে পরিমেটিড মণিনির্মিত মণ্ডপ আছে, ঐ মণ্ডপ্র তন্ত্র, মার, তোরণ ও ভিতি সকল সমুক্ষণরত্বনিন্মিত। ঐ মণ্ডপ্র তন্ত্র, বিভাবের

ড়বনোতনৈঃ। অনক্রৈঃ করার্কেন্চ পরীতে মণিমগুপে।

ছলদ্রসময়ন্তভ্রারতোরণকুড়াকে। ফুল্লশুন্তলদ্ভিত্রবিতানালখিনোক্তিকে। পামরাগছলীরাজদ্রনদ্যোন্চ মধ্যতঃ।

অনারতগলদ্রধারত স্বরেরেরঃ। রত্নদীপাবলীভিন্দ প্রদীপিতদিগভরে। উদ্যদাদিত্যসন্ধানানিংহাসনামুজে।

সমাসীনোহচাতো ধ্যেয়ো ক্রুতহাটকসমিভঃ। সমানোদিতচক্রার্কভড়িৎকোটিসমন্তাভিঃ। সর্বাসম্বন্দরঃ সোম্যঃ সর্বাভরণভূষিতঃ। পীতবাসান্দক্রশম্খাদাপদ্যোক্ষলমুজঃ। অনার
তোচ্ছলদ্রখারোযকলসং স্পুশন্। বামপাদামুজাগ্রেণ কৃষ্ণতাপল্লবচ্ছবিং। রুক্রিণীসত্যভামে রে মূর্দ্ধির রক্ষেদধারয়া।
সিঞ্চন্ত্যো দক্ষবামন্থে স্বদোঃস্থকলদোখ্যা। নাগ্রজিতী স্থনদা
চ দিশন্ত্যো কলসো তয়োঃ। তাভ্যাঞ্চ দক্ষবামন্থে মিত্রবিদ্যান্থলক্ষণে। রত্ননদ্যোঃ সমৃদ্ধ্ ত্য রত্নপূর্ণো বিটো তয়োঃ।

চতুপার্থে প্রস্কৃতিগ্রপ্রালা ও মুক্তানাম লবিত হইছেছে। ঐ মঞ্জণ রত্মর নদীবরের মধাবরী, ঐ নদীর ভট্ডর পল্রাগ্রমণিময়, উক্ত মঞ্জণ দেওকর নিয়ে বিরাজিত আছে। ঐ তর্ক হইতে জনবরত রত্বধারা বিগলিত হইতেছে, চতুপার্থে রত্বদীপাবলীবারা দিগন্তর প্রদীপ্ত হটরাছে, এই রূপ মঞ্জপমধ্যে উদর্গামী আদিত্যের ক্রায় মণিমির্ন্নিত নিংহাসনন্থিত পল্লোপরি অধিষ্ঠিত নারারণ বিরাজমান আছেন, তপ্রভাকনের ক্রায় উহার দেবকান্তি এবং কোট কোট চক্ত, পূর্বা ও বিহাতের স্থাম শনীরের আভা। ইতার সর্বাল অভি ক্রমর, ইনি সৌর্যুর্ভি, সর্বাদ ভরণে বিভ্বিত, পীতবল্রপরিধান এবং শঝ্য, চক্র, গদা ও পল্লধরী। ক্রিনিন্দির সভ্যভামা বক্ষিণে ও বাবে মঞ্জারমানা থাকিরা স্বহন্তম্বতকলনোখরম্বধারার মন্ত্রেক অভিযান করিতেছেন। নার্যজ্বিতী ও ক্রমনানামে ছই রুব্বী ক্রিনিন্নী ও সভ্যভামারের কল্যী প্রদান করিতেছে। ভাহাদিগের দক্ষিণে শিক্রবিন্দা

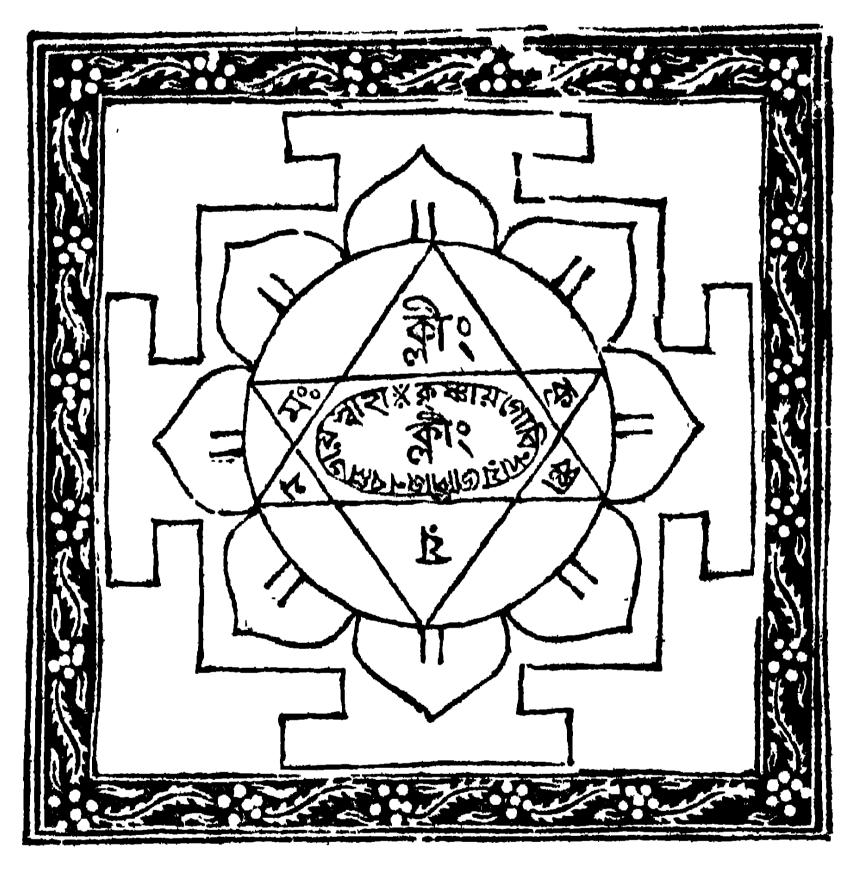
जायुवको स्थीला ह मिनएस्रो मकवांगरकः। विहःसांस्थ সাহস্রাসং খ্যাতাঃ পরিতঃ প্রিয়াঃ। ধ্যেয়াঃ ক্ষকরত্বৌঘ-थातासूकलामाञ्चलाः। जविष्णाकिनियगः शृततरखायरेमर्यताः। यानिटमः मःशृङ्य (১৪৭) শः अञ्चार्याभनः कूर्यार। (১००) ष्य शृ शृ श्रायक्षः। य वे एका गम के न न भागः विनिधा उ: निर्वे के সপ্তদশভির্বেষ্টয়েৎ। ততঃ ষট্কোণস্থ প্রাগ্রকো-श्निल्कार्वाषु भीवीकः निष्ठेषु जूवत्नधतीः निष्थं। ততঃ ষট্দি স্বিষ্ ক্লী কৃষ্ণায় নমঃ ইতি ষড়্বৰ্ণান্ লিখেৎ। ততঃ কেশরেষু কামদেবায় বিদ্যাহে পুষ্পবাণায় ধীমহি তলোহনঙ্গঃ প্রচোদয়াৎ। ইতি গায়জ্যান্ত্রীণি ত্রীণ্য-ক্ষরাণি পূর্বাদিক্রমে বিলিখেৎ। ততঃ পজেষু পূর্বাদি ও বামভাগে স্থলকণা নামে এই রমণী রতুনদী হইতে রত্ন উচ্ত করিয়া घछषप्र পূर्व कतिरहार । जासून जी ७ स्मीना नाम्य त्रमीच । मिल्ल ७ वास्य व्यविष्ठ इन्द्रेश ज्ञाशामिश्य व्यापन क्रिएल्स इन्हामिर्गत नन्धासार्ग (वाफ्नमञ्च त्रमणी हर्ज़िक तक्षाताबिक वर्षकनमी रूख कतिमा मधात्रमाना

ঘটনা পূণ কারতেছে। জাধুনতা ও সুশালা নামে রমণান্ধ দাক্ষণে ও বামে অবস্থিত ইয়া তাহাদিগকে আদেশ করিতেছে। ইহাদিগের পশান্তাগে বোড়শগহল রমণী চতুর্দিকে রম্পারায়িত অর্কলগী হতে করিয়া দণ্ডায়মানা রহিয়াছে। তাহাদের বহিভাগে অইনিধি রম্বারা ধরা পূর্ণকরিতেছে। তহহি ভাগে বৃক্ষিগণ উপবিষ্ট আছে। এইপ্রকারে ধ্যান ও মানগোপচারে পূকাকরিয়া শুজাপন করিবে। শুকুক্ষের পূজায়ন্ত বর্ণিত হইছেছে। প্রথমতঃ বট্কোণ অন্ধিত করিয়া তহাছে অইদলপত্ম লিখিবে। যট্কোণ-সধ্যে করী সাধাং" এই মন্ত্র লিখিয়া রুফার গোবিকার গোণীক্ষনবন্ধভার আহা, এই সপ্রধাক্ষমন্ত্রবারা নেইন করিবে। তৎপরে ঐ ঘট্কোণের পূর্কা, নৈশ্বতি ও বাহুদিক্ষিত কোণজনে শ্রী এবং অবশিষ্ট কোণজনে ত্রী এই বীক্ষ লিখিয়া ঘট্সন্ধিতে ক্লী ক্র, ফা, ন, মঃ এই ছন্ন অক্ষর লিখিবে। তৎপরে ভাম-কোন বিশ্বহে পূর্ণাবাণায় ধীমহি ওলোহনকঃ প্রচোদ্যাৎ এই গান্তার তন

चक्त अक अक (क्षाद लिथिया अर्था अर्था अक अक शर्व नमः काम-

नमः कामाम्याय मर्ज्यक्रनिध्याम मर्ज्यक्रनम्यार्गाय कल कल श्यम मर्नकन्य समग्र यम यमः क्र क्र क्र यात्रा है कि यानायज्ञ यहे यहण्डानि पंत्नयु विनिध्थि। यानायज्ञयाह मात्रमाग्राः--नरमाश्टख कामरमवाग्र वरमए मर्वकनखकः। श्रियाय मर्ववर्गाए जनमत्याद्नाय ह। जनवयः श्रक्नाखर यालायसुद्रयक्षकिष्ठातिः শতिकाकदेतः। उदाद्य याञ्करा मः (विषेश्वर । ততো ভূবিষে দিক্ষু তীবীজং বিদিক্ষু চ মায়া-वीकः विलिथ्। उदाद्य यस्वकानि। उथा — विलिभा ममाधाः তত मगाथः। निरिष्ठेखः मश्रमणित्रकरित्रद्विराः यातः। প্राधिकाश्निलिकार्षिषु श्रिष् निष्धेषु 'मिषिषः। ষড়করৎ ষট্সিষয় কেশরেষু ত্রিশস্ত্রিশঃ। বিলিখেৎ স্মর-शांग्रकीः यानांयकः पनाकरिक। यहे भः मर्निथा छवारश् (वक्टरामाक्काक्देतः। कृविषक लिएथमार्थ क्रीमार्य निधिन-

দেবার ইভালি মালা মন্ত্রের ছয়ট করিয়। অক্ষর লিখিতে ১ইবে। উক্ত মালা মন্ত্র ও মন্ত্রোদ্ধারের প্রমাণ মৃলে লিখিত আছে। পল্লের বহিভাগে অক্যাদি ক্ষপর্যান্ত একপঞালং মাতৃকাবর্ণদারা বেইন করিবে। তৎপরে চত্রপ্র অক্ষত করিয়া পূর্বা, দক্ষিণ, পশ্চিম ও উত্তর এই চতুর্দিকে শ্রী এই বীজ এবং অগ্নি, নৈর্বাত, বায়ু ও ঈশান এই চতুন্ধাণে দ্রী এই বীজ্ লিখিবে। চত্রপ্রের বহিলেশে অইদিকে অইব্ছ অভিত করিয়া যন্ত্র প্রস্তুত করিবে। চক্ষনপদ্ধারা লেপন করিয়া যন্ত্র লিখিতে হইবে। এই যন্ত্রের প্রমাণ বাহা অভ্যান্ত তত্ত্বে লিখিত আছে, সেই সকল প্রমাণ এইপ্লে শ্বৃপি। তৃগৃহং চতুরত্রৎ স্থাদফবজ্রবিভূষিতং। এতদবস্ত্রমন্তাদশাক্ষর-দ্বাবিংশত্যক্ষর-দ্বাদশাক্ষর-চতুর্দশাক্ষর-একাদশাক্ষরাগামিতি। যতু প্রথমন্তপলাশস্ত চতুরত্রং স্থলক্ষণং।
চতুদ্ধারদমাযুক্তং কামগর্ভিতকর্ণিকং। সামাস্থমজ্রমুদ্ধিন্তমন্তাদশাক্ষরে শৃগু। চতুরত্রং চতুর্দ্ধারং পদ্মমন্তদলান্বিতং।
বট্কোণ-গর্ভকামাখ্যং সপ্তদশার্ণবৈস্থিতং। বড়ক্ষরং মন্ত্ররং



ও একালশাক্ষর মন্ত্রারা প্রাদি করিতে হইলে উক্ত প্রকার যন্ত্রের প্রাদ্ধিক বাবি । অক্সপ্রকার যন্ত্র কথিত হইতেছে। অস্তদলপত্ম অন্ধিত করিরা ভরাছে চতুর্দ্ধার ও চতুরপ্র অন্ধিত করিতে হইবে। পত্মের কর্ণিকামধ্যে ক্লী এই বীশ্র লিথিয়া যন্ত্র করিবে। সাধরণ মন্ত্রারা পূজাদি করিতে এই যন্ত্র লিথিয়া পূজাদি করিবে। অস্তাদশাক্ষর মন্ত্রের বিশেষ যন্ত্র এই—চতুরপ্র ও চতুর্বার অন্ধিত করিরা তন্মধ্যে অস্তদশপত্ম ও পত্মমধ্যে বট্কোশ লিথিবে। তৎপরে ষট্কোণের মধ্যে ক্লী এই বীজ লিথিয়া ক্লকায় সোৰ্বার পোপীজনবল্লভার আহ্য, এই সপ্তর্মশাক্ষরমন্ত্রারা বেইনক্রিবে।

ষট্ কোনে বিলিখেওতঃ। ইতি সোঁতমীয়ে। অন্তাদশাক্ষর-দশাক্ষয়য়ার্যনিশেষমুক্তং তদশক্তবিষয়ং। অন্তথা তাপিতাদি-বিরোশঃ তাৎ। ততঃ পূর্বোক্তপীঠমন্বতাং পীঠপুজাং বিধায় পূর্ব্যাদ্বা আবাহনাদি-পঞ্চপুজাঞ্জলিদানপর্য্যন্তং বিধায় সৃষ্টিং ক্রিকং বড়সক সংপূজ্য ওঁ কিরীটায় নমঃ এবং কুগুলাভ্যাং চক্রায় শন্ধায় গদায়ে পদ্মায় বনমালারে প্রীবৎসায় কৌস্তভায় সর্বত্র প্রণবাদি-নমোন্তেন পূজয়েৎ। পুনঃ পঞ্চপুজাঞ্জলিং দন্ধা আবরণপূজামারভেৎ। ষট্ কোণে ব্রী প্রী ক্রী ক্রদয়ায় নমঃ। কৃষ্ণায় শিরসে স্বাহা ইত্যাদিনা ষড়ঙ্গানি পূজয়েৎ। ততোদিক্পত্রত্য মূলে বাস্তদেবায় নমঃ এবং সন্ধর্বণায় প্রত্যন্ত্রায় অনিক্রনায় প্রণবাদি নমোহন্তেন পূজয়েৎ। এবং বিদিক্পত্রত্য মূলের প্রাইত্য নমঃ এবং প্রিয়ৈ সরস্বত্য রত্যে। পত্রেয়ু

এবং ষট্কোণে ক্লাঁ. ক্ল, কা, য়, ন, মঃ, এই তম বর্ণ লিথিয়া যন্ত্র প্রতি করিছে হইবে। প্রীক্ত করিয়া লইবে। তৎপরে বিকৃমপ্রোক্পীঠপুলা করিয়া পুনর্কার ধানে ও আবাহনাদি পঞ্চপুলাঞ্জলিদানপথান্ত সমস্ত কাই্য করিবে। অনস্তর সৃষ্টি ভিতি ক্রমে পূলা ও ষড়ল পূলা করিয়া ও কিরীটায় নমঃ ইত্যাদি মূলের লিথিত দেবতাগণের পূলা করিবে। তৎপরে পুনর্কার পঞ্চপুলাঞ্জলি প্রদান পূর্কক আবরণদেবতার পূলা করিবে। যহন্ত ষট্ কোণের অমিকোণ হইতে আরম্ভ করিয়া ছী প্রীন ক্রী জনয়ায় নমঃ, ক্রফায় লিয়নে খাহা, গোবিন্দায় লিখায়ৈ বষট্ গোপীজন কবচায় ছা, বল্লভায় নেত্র লামায় বিয়মা পূর্কায়ি চতুর্কিগ্রতী প্রচত্তীরের মূলে বাস্তদেবায় নমঃ, সম্বণায় নমঃ প্রভায়ার নমঃ এবং অনিক্রায় নমঃ এইপ্রাক্ত করিবে। তৎপরে ক্রেরায় নমঃ, বির্দেশিয় নমঃ, বিজ্ঞায়ার নমঃ এবং আনিক্রায় নমঃ এইপ্রাক্ত করিবে। তৎপরে ক্রেরায় চতুর্কোগ্রিভ প্রচত্তীরের সূলে শালৈয় নমঃ, শ্রেরার নমঃ, প্রিরৈ নমঃ,

পূर्वािम পূर्वविक्विगामाः পृष्ठाः । व्या स्वािम्न स्टामहिशे छा नमः । उद्देश পূर्वािम स्टानिधः नीमिशिः
मुकूनिधः मकतिशः वानमिनिधः कक्रशिनिधः भणनिधः
मधिनिधिः मकतिशः वानमिनिधः कक्रशिनिधः भणनिधः
मधिनिधिः भृष्ठाः । उप्वितिकािने व्यािनेः भृष्ठाः ।
उट्टा धृभािमिक्जनािखः कर्मा ममाभराः । व्या भूतम्बतः
प्रकृतकाशः । उथाप्त-धारिष्वः भत्राावानः विः भठार्भः
मञ्रः जर्भः । उथाप्त-धारिष्वः भत्राावानः विः भठार्भः
मञ्रः जर्भः । प्रकृतकः स्तािकान्धाितः भद्मस्यकः ॥

মন্ত্রান্তরং। বাগ্ভবং কামবীজঞ্চ কৃষ্ণায় ভুবনেশ্বরী।
গোবিন্দায় রমা গোপীজনবল্লভঙেশিরঃ। চতুর্দশস্বরোপেতো
ভৃগুঃ দর্গী তদুর্দ্ধতঃ। দ্বাবিংশত্যক্ষরোমন্ত্রো বাগীশত্বপাযুকঃ। অস্থ পূজাপ্রয়োগঃ। প্রাতঃকৃত্যাদি বৈষ্ণবোক্তপীঠমন্বন্তং পাঠন্থাসং বিধায় অফীদশাক্ষরবদ্য্যাদিন্থাসং করাঙ্গ-

সরশ্বতা নম: এই চারি দেবতার পূজা করিয়া পত্রমধ্যে পূর্বাদিক্রমে পূর্বাক্ত ক্ষ্মিণ্যাদির পূজা করিবে। অনস্তম ঐ পত্রে ষোড়শসহত্র মহিবীভোনম: এই মন্ত্রে পূজা করিয়া পত্রের বহির্ভাগে পূর্বাদিক্রমে ইক্রমিধি প্রভৃতি মূলের লিখিড দেবভাগণের পূজা করিবে। তছহির্দেশে ইক্রাদি ও বজ্রাদির পূজা করিয়া ধুপাদি বিসর্জনাস্ত কর্ম সমাপন করিবে। এই মন্তের পূর্ণচরণে চারিলক্ষ জপ ও চল্লীশ সহত্র হোম ক্রিতে হয়।

অনন্তর জীক্ষের বাবিংশতাক্ষর মন্ত্র ও তৎপূর্বাদি কথিত হইতেতে।
সোঃ ঐং ক্লী ক্ষার হীং গোবিন্দার জীং গোপীক্ষনবল্লভার স্বাহা। এই বাবিংশতাক্ষর মন্ত্র সাধককে বাগীশত প্রদান করে। এই মন্ত্রের পূজা প্রদান এই—প্রথমতঃ সামান্ত পূজা পদ্ধতির ক্রমানুসারে প্রাভঃক্রডাদি করিবা দশক্ষর মন্ত্রোক ধ্রাদিন্তাস ও করাক্তাল করিব। যথাবিধি মুদ্রান্ধন পূশক ধ্যান করিবে। এই ধ্যানে দেবতাকে চতুত্ব চিন্তা করিকে। এই গানে দেবতাকে চতুত্ব চিন্তা করিকে। এই গানে দেবতাকে চতুত্ব চিন্তা করিকে। এই গানি হতের বাম্বিকের উর্জ্বতে পূতক এবং দক্ষিণ ভাগের উর্জ্বতে

जार्जो विश्वास स्क्रांनि निधक्षनक कृषा शारित । वारार्षिक्र स्व निगानक्ष्य पुरु कर । व्यक्रमालाक निकार्ष क्यां कि कि स्व क्षि स्व क्ष स

মন্ত্রান্তরং। বাগ্ভবং কামবীজঞ্চ মায়ালক্ষ্মীমনন্তরং।
দশার্ণোমসুবর্য্যন্চ ভবেচ্ছক্রাক্ষরোমসুঃ। ব্রহ্মসংহিতায়াং—
বাগ্ভবং ভুবনেশানীং শ্রীবীজং কামবীজকং। দশার্ণ ইত্যাদি।

অইকণ প্রীক্তকের চতুর্দশাক্ষর মন্ত্র ও তৎপূজাদি কথিত হইতেছে। ঐ ক্রী ব্রী প্রী গোপীজনবল্লভার স্বাহা। এই চতুর্দশাক্ষর মন্ত্রে প্রীক্তকের পূজাদি করিবে। এই মন্ত্রোদ্ধারের প্রমাণ ব্রহ্মসংহিতার লিখিত আছে। উক্ত .
মন্ত্রের পূজা প্রবােগ এই—প্রথমে সামান্ত পূজাপদ্ধতিক্রমে প্রাতঃক্ষতাগদি

জতা পূজাপ্রয়োগং। প্রাতঃকৃত্যাদি—বৈষ্ণবোক্তপীঠতাদং
কৃত্বা ঋষ্যাদিতাদং কুর্যাৎ। শিরদি ব্রহ্মণে ঋষয়ে নমঃ
মুখে গায়লীচ্ছন্দদে নমঃ হৃদি শ্রীকৃষ্ণায় দেবতায়ৈ নমঃ।
জত্তা ত্যাসপূজাজপহোমাদি সর্বাং দশাক্ষরবং। ধ্যানে
তু বিশেষঃ। ধ্যায়েদৃন্দাবনে রম্যে কাঞ্চনীভূমিমধ্যগে।
নানাপুপ্লভাকীর্ণে রক্ষষভৈশ্চ মণ্ডিতে। কলাট্রীতলে
সম্যক্ শ্রীমন্মাণিক্যমণ্ডপে। নারদাদ্যৈশুনিশ্রেষ্ঠিঃ স্তুতিভিঃ



করিয়া বিশ্বমন্ত্রোক্ত পীঠকাস পূর্বক থাবাদিন্যাস করিবে। থাবাদিকাস
মূলে স্পাইরণে নিখিত আচে, দৃষ্টি করিলেই বোধগমা হইবে। এই মারের
ক্রাস, পূজা, জণ ও হোমাদি সমস্ত কার্যাই দশাক্ষর মার্যােক পূজা পদ্ধতি
ক্রমণারে করিবে, কেবল ধ্যানের বিশেষ আছে। তালা এই—রমণীর
বিশ্বিত কল্ল বৃক্ষতলে মাণিকানিস্থিত মণ্ডপ আছে। নাম্বাধি সূদ্ধণ

পরিবারিতে। রক্নসিংহাসনে ধ্যায়েত্পবিষ্টং কজোপরি।

সজলজলদশ্যানং রক্তপদ্মায়তেক্ষণং। রক্তপদ্মশ্যুরৎপাদপাণিভ্যাং পরিমণ্ডিতং। নবরত্বসমারকভ্ষণৈঃ পরিভূষিতং।

শীষ্ক্তবক্ষসি ভাজৎকোস্তভোদ্ভাষিতাম্বরং। তারহারাবলীরম্যং শীবৎসান্ধিতক্ষসং। রোচনাতিলকপ্রান্তকুন্তলভ্রমরায়িতং। কন্দর্পচাপসদৃশচিল্লিমানবিরাজিতং। অনেকরক্সশংযুক্তশ্যুরন্মকরকুণ্ডলং। বর্হিবর্হকৃতোত্তংশং সর্বজ্ঞাং
সর্ববেদিভিঃ। উপাসিতং মুনিগণৈরুপতিঠেন্দরিং সদা।

ইতি॥

অথৈকাক্ষরী। কামাক্ষরং ধরাসংস্থৎ কান্তিবিন্দ্বিভূষিতং। ত্রৈলোক্যমোহনোবিষ্ণুঃ কথিতন্তব যত্নতঃ॥ অস্থা পূজা-প্রয়োগঃ। প্রাতঃক্যাদি-বৈষ্ণবোক্তপীঠশক্তিপর্যান্তঃ বিন্যস্থ

ন্ত্রিপাঠপূর্মক চত্র্দিকে বেষ্টন করিয়া বহিয়াতেন, মধ্যস্থলে র্ত্রসিংহাসনোপরি পদান্তিত অলপূর্ণ অলধরের ন্তার শ্রামল, রক্তবর্ণ পদাপত্রের
নায় বিস্তৃতনয়ন হবি দণ্ডারমান আছেন। তাঁহার হস্ত ও পদবর্ম
রক্তপথ্যের ন্তায় হরি নানাবিধ রত্ননির্দ্ধিত ভ্ষণে পরিভ্বিত। বক্ষঃস্থলে
উজ্জল কোস্তুত্রনির্দ্ধিত ভ্রত্তেতে এবং শ্রীবংসচিক্ত বিরাজন্মান আছে। রোচনানির্দ্ধিত ভিলকের প্রাস্তভাগে কৃষণ সকল শ্রমরের
ন্তায় দৃষ্ট হইতেছে। কামধনুর ন্তায় ক্রম, কর্পে নানাবিধ রত্নসংখুক্ত
মকরাকৃতি কৃত্তল এবং ময়ুরপুক্তনির্দ্ধিত শিরোভ্রণ আছে। মুনিগণ
উক্তরণ সর্ব্ধিত হিরকে উপাসনা করিতেছেন। এইরপ ধ্যান করিয়া
পূর্বলিধিত নশাক্ষরমন্ত্রাক্ত পৃদ্ধাপ্রশালীক্রমে পূলা করিবে।

धनस्त श्रीकृष्णत अवाकत्रमञ्ज ७ उर्श्यामि कथित दरेए छ। क्री अदे अवाकत यञ्ज कथ कतिया जिल्यम भावित कतिए भारत। अदे मह्मकः भूमाकम अदे— शथगतः मामालभूकाभक्तिकस्म आजःक्रामि कतिमा তত্নপরি পক্ষিরাজায় স্বাহেতি পীচমমুৎ অসেৎ। তত शासामिकामः। उप्यथा भिवमि मत्याह्नश्राद्य नयः मूर्यः शांग्रकीष्ट मरम नमः क्षि किलाकामस्याक्नांग्र विकाद नमः। তত্বতং—ঋষিঃ সম্মোহনশ্বশো গায়ত্রী পরিকীর্তিতং ৷ ত্রৈ-लाकात्याहरनाविक्टर्फवण मयूमीतिण। ७७: कत्राक्रणात्मी क्राँ षत्र्ष्ठानाः नमः देनामि क्राँ समग्राय नमः देनामि । जशाह निवक्त-मीर्घषष् क्यूकारनन कामवीरक्षन कन्नरश्र । ততো वान-न्यामः। व्यत्रुष्ठि छाः भाष्यवागाय नगः। ठर्कत्नाः जी (याद्यवागाय नमः। यथायायाः क्रीं मन्तीश्यवागाय नमः। व्यनामिक द्याः तूँ जाभनवाशाः नमः। कनिष्ठद्याः मः मामन-वानाय नमः। তथा मखकमूथक्षमय्थक्षणापम् नारमः। তथा निवक्त-जामानाः भाषाः शूर्वः जीमानाः यादनः उठः। मन्ती भना थार क्री मानार तू मानार जाभनर भूनः। मर्शाख छ थना ভূয়ো মাদনং পঞ্চমং ন্যাসেৎ। ততো খ্যায়েৎ। ভগ্নবিদ্রু-মদস্কাশং দর্বতেজোময়ং বপুঃ। কিরীটিনং কুণ্ডলিনং কেয়ুর

বিষ্ণুমন্ত্রোক্তপীঠশক্তিপর্যান্ত পীঠন্তাস পূর্মক ধাবাদিন্তাস করিবে। এই ধাবাদিন্তাস মূলে লিখিত আছে। তৎপরে করালন্তাস করিবে; বর্ণা ক্লাঁ তর্জনীত্যাং খাহা. র্লু মরামাত্যাং বর্ষট্, র্লে অনামিকান্ত্যাং হঁ, র্লে কনিষ্ঠান্ত্যাং কেট্ এই বলিয়া করন্তাস করিবারীই হলমার নমঃ কীং শিরুসে খাহা ইত্যাদিরপে অল্পাস করিবে। এই করালন্তাপের যে প্রমাণ নিবন্ধগ্রন্থে লিখিত আছে. সেই প্রমাণ এখনে উদ্ভ আছে অনন্তর মূলের লিখিত প্রশালীক্রেমে বালন্তাস করিবে, এই স্থাসবিষরে যে সকল প্রমাণ নিবন্ধগ্রন্থে লিখিত আছে, সেই সকল প্রমাণ মূলে লৃষ্টি করিলে দেখিতে পাইবেল। উল্লেখ্যাস করিবার ধ্যান করিবে। ব্যেখ্যার আকার এইরূপ। প্রবালের ভার ইহার দেহবর্ণ, স্কাভেলোমর,

বলরাখিতং। মুক্তাসদ্রেশ্বসমন্ত্রণাকে। নানালক্ষারন্ত্রণং পীতাম্বরম্পার্কং। গরুড়োপরি সমন্ধং রক্তপক্ষরন্ত্রণং । উত্তপ্তহেমসন্ধাশং লক্ষ্মীং বামোরুসংম্বিতাং।
সর্বালক্ষারন্ত্রতাং শুরুবাসোযুগার্কাং। সকামাং লীলরা
দেবং মোহয়ন্তং পুনঃ পুনঃ। শত্যক্রগদাপদ্যপাশাদ্র্শধন্তুংশরান্। ধারয়ন্তং জগন্ধাথং রক্তপদ্যারুদেশকাং। এবং ধ্যাম্বা
মানসৈঃ সংপ্রা শত্যমাপনং বিধায় ন্যাসক্রমেণ পীঠপুজাং
কৃষ্মা পুনর্ধ্যানাবাহ্নাদি-পঞ্চপুস্পাঞ্জলিদানপর্যন্তং বিধায়
য়ড়ক্ষানি সংপ্রা ন্যাসক্রমেণ শরীরে পঞ্চবাণান্ সংপ্রা
উত্তি করীটায় নমঃ এবং কুগুলায় শন্ধায় চক্রায় গদায়ে পদ্মায়
পাশায় অকুশায় ধনুষে শরায় ইতি হস্তের্ পূজয়েৎ। স্তনোর্জ্ব

নেবের মন্তকে মুক্ট, কর্ণে কুণ্ডল হল্ডে কেয়ুর ও বলয়া এবং পাদপদ্ম ছয়ে মুক্তা ও নানাবিধ রত্নযুক্ত নৃপুর আছে. ইনি নানাপ্রকার অলল্পারে বিভূষিত, পীতবন্ত্রন্ধ পরিধান, গকড়োপরি রক্তপদ্মের মধাবতী, উত্তপ্ত ক্রবর্ণের জায় লরীরের আভা। লন্ধীদেবী বাম উক্লেশে উপবিটা আছেন, ভিনি সর্ব্যান্তর্যান বিভূষিতা ও গুরুবর্ণবন্ত্রযুগলে আর্তা। হার লন্ধীদেবীকে লীলালারা বারলার মোহিত করিতেছেন। জগলাপ লন্ধ, চক্ত্র, গলা, পদ্ম, পাল, জঙ্কণ, ধন্ম ও শর ধারণ করিয়াছেন, ভালার চক্ত্র: রক্তপদ্মের ক্রায় অকণবর্ণ। এইপ্রকার ধানি করিয়া মাননোপচারে পূজা ও শন্ধান্থান করিয়া মাননোপচারে পূজা ও শন্ধান্থান করিয়ে, তৎপরে পীঠকাসক্রমে পীঠপুলা করিয়া পুনর্ব্যার ধানি আবাহনাদি পঞ্চপুলাঞ্জনিদানপর্যান্ত সমন্ত কার্যা করিবে। অনজর ক্লাং হলদ্বায় নমঃ, ক্লী পিরলে আলা ক্লু পিথালৈ ব্যট্ ক্লৈং কবচার হুঁ, ক্লোং নেজ্রয়ায় বৌষট্ ক্লং অল্লায় কট্ এইরূপ বড়লপুল। করিয়া মন্তকে জাং লোহণবাশান্ধ নমঃ, মুন্বে জীং মোহনবাশান্ধ নমঃ, হল্লে ক্লীং নমঃ, ব্রু জাণনবাশান্ধ নমঃ, পালে গং মাননবাশার নমঃ, এইপ্রকারে স্বেলনীরে

শ্রীবৎসায় কোস্কভায় গলে বনমালারৈ নিত্ত পতিবসনায় বামাঙ্গে শ্রী লক্ষ্যে নমঃ। সর্বত্র প্রণবাদি-নমোন্তেন পূজরেৎ। ততঃ কেশরেষু অ্য্যাদিকোণেষু মধ্যে দিক্ষ্চ ক্রাঁ হলয়ায় নমঃ ক্রাঁ শিরসে স্বাহা। ইত্যাদি ষড়ঙ্গানি পূজরেৎ। ততঃ পূর্বাদিদিক্ষু চতুরোবাণান্ সংপূজ্য কোণেষু পঞ্চমং বাণং পূজরেৎ। পত্রেষু ওঁ লক্ষ্যে নমঃ। এবং সরস্বত্যৈ রত্যে প্রতিয় কর্তিয় কর্ত্ব কর্মাদিপূজা নাস্তি অনুক্তত্বাৎ। ততো ধূপাদিবিসর্জ্জনান্তং কর্ম্ম সমাপয়েৎ। অস্থ পুরশ্চরণং দ্বাদশলক্ষজপঃ। অথাচ—রবিলক্ষং জপেন্মন্ত্রং জুভ্যাতদ্দশাংশতঃ। অমৃতত্রয়সিক্তেন পায়সেন বিধানবিৎ। অথবা রবিসাহস্র্যং ভ্নেতাব্দে তর্পয়েৎ॥

মন্ত্রান্তরং। কামবীজং হৃষীকেশায় হৃদ্মন্ত্রোহ্নীক্ষরঃ
পরঃ। তথাচ—হৃষীকেশপদং ডেন্ডং নমেহিন্তঃ কামপূর্বকঃ।
পঞ্চবাণ পূলা করিবে। তংপরে কিরীটার নমঃ ইত্যাদি মূলের লিথিত
ভাবরণপূলা ও অগ্যাদিকোণে, মধে। এবং দিক্চত্ইরে ক্লাং হৃদয়ায় নমঃ
ইত্যাদি উপরিলিখিত ষড়ঙ্গপূলা করিতে হইবে। তৎপরে পূর্বাদি চারি
দিকে জাং শোষণবাণার নমঃ ইত্যাদি পূর্বলিখিত বাণচতুইয়ের পূলা করিয়া
কোণচতুইরে সং মাদনবাণার নমঃ এই বলিয়া পূলা করিতে হইবে। তৎপরে
পত্তে ও লক্ষো নমঃ ইত্যাদি মূলের লিখিত আবরণপূলা করিবে। এই
পূলাতে ইক্রবজ্ঞাদির পূলা করিবে না। অনস্তর ধূপাদিবিসর্জনান্ত সমস্ত
কর্ম সমাপন করিয়া পূলা সাজ করিবে। এই মন্তের পূরণচরণে ভাদখলক্ষকর্ম সমাপন করিয়া পূলা সাজ করিবে। এই মন্তের পূরণচরণে ভাদখলক্ষকর্ম সমাপন করিয়া পূলা সাজ করিবে। এই মন্তের পূরণচরণে ভাদখলক্ষকর্ম সমাপন করিয়া পূলা সাজ করিবে। এই মন্তের পূরণচরণে ভাদখলক্ষকর্ম সমাপন করিয়া পূলা সাজ করিবে। এই মন্তের পূরণচরণে ভাদখলক্ষকর্ম সমাপন করিয়া পূলা সাজ করিবে। এই মন্তের পূরণচরণে ভাদখলক্ষকর্ম সমাপন করিয়া পূলা সাজ করিবে। এই মন্তের প্রশ্বের বিংশতিসংস্ত হেমে ক্রিবে।

श्रीकृष्णित करोकत्रमञ्ज ७ ७९ शृक्षापि कथि ७ इरे एए छ । क्री क्रियोज क्षीत्र नमः এই क्रियोक्स्त्रमञ्ज नर्समञ्ज्ञान । এই मञ्जून नाम ७ शृक्षापि

वाका कामगुकाषिकः मर्याः शृक्याः । नक्षीक्षां वाक्योकः (उत्यः क्यानार जर्भा। सारहित मजतारकार्यः जवलार स्त्रभाषभः। षण भूकाश्रारांगः। श्राज्यक्रणापि-देवक्षद्यांक-<u>शीठमचन्द्रः विकाल समामिलामर कूर्यार । यथा भित्रमि नात्रम-</u> सायरत नगः। गूर्थ जानूकी शृङ्गरम नगः। कृषि शिक्तकात (मवजारेय नयः। ७७: कतात्रचारमी। क्राः वात्रवाजार नमः हेजापि धवः ऋाः सपयाय नमः हेजापि। ज्ञां शानः কলায়কুত্বমশ্রামৎ বুন্দাবনগতং হরিৎ। গোপগোপীগবাবীতং शीखवळायूगाव्छः। नानालकातञ्च ७१९ कोखर ভाराधिवकमः। मनकाषिमूनि (अर्छेः मरञ्जू अत्या मूमा। नेषाठकानमश्राद्धः (तर्वृश्ंखनरम्त्रिकः। এवर धाषा यानरमः मरशुका मध्याभनः भूक्ति वानित्य। श्रीकृत्कत्र अक्षयकात्र अक्षाक्तत्र मञ्ज এहे—श्री: त्रीर कुळात चांग, এই चडोक्त मन्त्राक कहानुक्यक्रम, এই मस्त्र कक्षम। कतिरम मापरकत्र मर्वा थका इकामना शतिशूर्व हत्र । धहे मस्तित्र श्वाखारमान धहे-व्यथम इः मामा अर्था भव विकास व्याष्टः कृष्णा कि क्रिया विक्रम खाक भी केश म कतिरव। उर्পति म्लान निथिज प्राणीरज समापिश्वाम कतिना कत्राणशाम कतिरव। क्राः चक्र्षांचाः नमः, क्रीः छर्जनीखाः चादा, क्रः मधामाखाः वषषे देक्रः सनामिकाछाः रुः, क्रोः कनिष्ठाष्ठााः वोषषे क्रः कत्रजनपृष्ठाष्ठाः करें धरेक्टण कत्रकाम कत्रिया क्रांक्षत्राय नयः, क्रीं नित्रम चारा, क्रूं निवादेश वयहे, देश कवहात्र हं, दशे निवादात्रात्र (वोषडे, क्रः कत्रजन-शृशेष्णाः करे। अरेक्रां अवकान कवित्य। छ । यह गान कवित्य, (च्रात्र काकार अहेक्य--क्राप्तक्क्ष्यम् काम क्राप्तक क्रिन (माम, (मामी ७ (मामरन मित्रुड रहेन। भीखर्नरक्षम्भम मित्रधान कत्रिवार्छन। किन नाना वश क्षणकारत विकृषिक धवर दकोश्वक्रमणि छै। हान वकः इन ममुब्बन क्रिट्ड । मनकानि श्रधान श्रधान मूनिनन मानक्रिए ।

ক্র্যাৎ। ততে। বৈশ্ববোক্তপীঠমনতং পীঠং সংপ্রা প্নর্যান্ত। আবাহনাদি-পঞ্চপুত্পাঞ্জলিদানপর্যন্তং বিধার আবরণপূজামারতেৎ। যথা কেশরের অগ্যাদিকোণের মধ্যে দিক্
চ। রাঁ ছদয়ায় নমঃ ইত্যাদি পূজয়েৎ। তমহিরিক্রাদীন্
বজ্রাদীংশ্চ সংপূজ্য ধূপাদিবিসর্জনান্তং কর্ম সমাপয়েৎ। অস্থ্
পূরশ্চরণং ছতুর্লক্ষজপঃ। তথাচ ধ্যাহৈবং পরমাত্যানং চতুলক্ষমন্ত্রং জপেৎ। দশাংশং জুত্রামন্ত্রী কৃষ্ণমৈর্জ ক্রা-

মন্ত্রান্তরং। শ্রীশক্তিমারকৃষ্ণায় গোবিন্দায় শিরো মসুং। অস্থ পূজাপ্রয়োগঃ। প্রাতঃকৃত্যাদি পূর্ব্বোক্তপীচমম্বন্তৎ পীঠন্যাসং বিধায় রক্সভিষেকবদৃষ্যাদিন্যাসং কুর্য্যাৎ। ততঃ

ध्वः चन्न हरे रुख त्वव् चाह्न । धरेशकात क्रिम क्रवं भान कि विद्रा मानत्माणहात पृक्षा ७ मध्य । भने कि ति । ७९ पत विक्रम द्वाक भीठे पृक्षा कि विद्रा प्रकार प्रांत थान चावार नाणि प्रक्षपृष्णा अणि मानप्रांत प्रमण्ड कार्या प्रमणामन पृक्षक चावत । प्रमणामन पृक्षक चावत । एक महान चित्र कि ति कि

कानसत विक्रस्थित बामभाकत्रमस ७ छ० शृक्षाणि कथिक इरेस्क्रस्थ हो। को महस्र को क्षान (भाविकान पादा, वेदावे श्रीकृत्कत बामभाकत मस्र। को महस्र शृक्षाक्रम करे—काथरम भागास्त्रशृक्षाक्ररम क्षाकः कृष्णाक्रिया विक्रमस्त्राक्ष-श्रीवृक्षाम शृक्षक त्रक्षाक्रियर काक्ष स्वयादिकाम क्रित्र । छ० शरत क्ष्राक्षकाम করাক্সানো যথা আ অকুষ্ঠান্ডাং নমঃ। ব্রী তর্জনীন্ডাং বাহা। ক্লী মধ্যমান্ডাং বষট্। কৃষ্ণায় অনামিকান্ডাং হাঁ। গোবিলায় কনিষ্ঠান্ডাং বোষট্। বাহা করতলপৃষ্ঠান্ডাং ফট্। এবং হৃদয়াদির আ হৃদয়ায় নমঃ ইত্যাদি। ততো মৃতিপঞ্জরস্থাসং বিধায় মুদ্রাদিদিগদ্ধনং বিংশত্যপোক্তং ধ্যাদ্বা তদিখানেন পূজায়ে । বিশেষস্ত সৃষ্টিস্থিতিক্রমেণ ন পূজারেৎ তত্তবার্ণান্ডাবাৎ। অস্ত পুরশ্চরণং জপহোমশ্চ তথা॥

মন্ত্রান্তরং। তারং হন্তগবতে রুশ্নিণীবল্লভায় স্বাহা।
তথাচ—তারো হন্তগবান্ ঙেহন্তাক্লিণীবল্লভাষণ । শিরোহন্তঃ বোড়শার্ণোহয়ং ক্লিণীবল্লভাহয়য়ঃ। অস্তপূজা—প্রাতঃ
কৃত্যাদিবৈশ্বব্যক্তপীঠমন্বন্তং পীঠন্তাসং বিধায় ঋষ্যাদিতাসং
কুর্যাৎ। শিরসি নারদখন্তরে নমঃ। মুথে অমুক্ত প্রদশনে
নমঃ হৃদি রুশ্নিণীবল্লভায় দেবতায়ে নমঃ। ততঃ করাঙ্গভাসো
ত অঙ্গুভাভাং নমঃ। নমন্তর্জনীভাং স্বাহা। ভগবতে
মধ্যমাভাং ব্যট্। রুশ্নিণীবল্লভায় অনামিকাভাং হুঁ। স্বাহা
ক্রিভাভাং ফট্। এবং হৃদয়াদিয়্। ততো ধ্যানং—

कविद्य। এই क्यान्नन्नारम्य व्ययानो मूल न्निहेन्नर्भ निथित जाए। जिल्लास्त्र मृहिनक्यकाम किन्ना मूलाव्यक्षेत । भिष्यत पूर्वक विश्वनान्त्र महाक्ष्य साल । अहे पूर्वा विद्यान किर्मा किर्मा क्या प्राप्त । अहे प्रवाद विद्यान किर्मा किर्मा किर्मा किर्मा किर्मा । अहे महान प्राप्त क्या किर्मा किर्

ত্তিকণ জীক্তকর বোড়শাক্ষর মন্ত্র কবিত হইতেতে। ও নমো তগবতে ক্ষিণীবন্তার স্বাহা। ই হাই প্রিক্তকের বোড়শাক্ষর মন্ত্র, এই মন্তের পূজাক্ষেণিবন্তার স্থাহা। ই হাই প্রিক্তকেমে বোড়শাক্ষর মন্ত্র, এই মন্তের পূজাক্ষেণিব এই--প্রথমে সামান্তপূজালদ্ধতিক্রমে ব্যাভঃক্ত্যাদি করিরা বিষ্মন্ত্রেক পীঠভাস পূর্মক মূলের লিখিত প্রশালীতে গ্র্যাদিভাস করিয়া ধানি

তাপিঞ্চছবিরঙ্গণাং প্রিরতমাং স্বর্ণপ্রভাষস্ক্রেণ্ডার স্বর্ণস্ক্র প্রান্ত্র কর্মালিয়ন্ সচিন্তা স্থা। লিয়ন্তীং স্বর্ণস্ক্রেণিল সহলোবর্ণবেত্র শিচরং পায়ায়ঃ শনদৃষ্ঠ পিত্র সন্দানা বিজু বো হরিঃ। এবং ধ্যায়া মানসৈঃ সংপূজ্য শহাসাপনং ক্রমা বৈশ্বব্যক্ত পীঠমন্বন্তাং পীঠপূজাং বিধায় পুনর্ব গ্রাম্বা আবাহনাদি পঞ্চপুত্রাপ্র লিদানপর্য্যন্তং বিধায়াবরণপূজামারভেও। যথা কেশরের অমিনিখ তিবায়ীশানকোণের মধ্যে দিক্র চ ওঁ হদয়ায় নমঃ। নমঃ শিরদে স্থাহা। ভগবতে শিখায়ে বয়ট্। রুলিগীবল্লভায় কবচায় হঁ। স্বাহা অস্তায় ফট্। ততাহন্টদলের পূর্বাদি ওঁ নারদায় নমঃ এবং পর্বতং জিমুহং নিশঠং উদ্ধবং দারুকং বিশ্বক্রেন্থ শ্রাদিবিস্ক্রনান্তং কর্ম্ম সমাপ্রের। অস্তা পুরুল্চরণং লক্ষজপঃ। তথাচ—

করিবে। দেবভার আকার এইরপ—শ্রীক্রণ্ণ তমালভকর স্থার শ্যানবর্ণ, ইহার বামান্তে স্বর্ণপ্রভা স্বীরপ্রিরা করিবী আছে, ঐ প্রিয়ার বামহত্তে একটি পদ্ম এবং দক্ষিণ হত্তবারা শ্রীকৃষ্ণকে আলিজন করিবা আছেন। শ্রীহরিও বামহত্ত হারা স্বীয় প্রিরা ক্ষিণীকে আলিজন করিতেতেন, তাঁহার দক্ষিণহত্তে হুবর্ণ বেত্র, শণুকুস্থমের জ্ঞার পীতবন্ধ পরিধান এবং নালাবিধ বিভ্যণে বিভ্বিত। এইপ্রকার রূপ চিন্তা করভঃ ধ্যান করিয়া মানসোপচারে পূলা ও শত্তবাপন করিবে। তৎপরে বিফুমনোক্রপীঠপূলা ও পুনর্কার ব্যান আরছেনালি প্রপুত্রাগ্রনিদানপর্যান্ত সমন্ত করি করিবা আবরণপূলা আরক্ত করিবে। আর্থানি চড়ফোণে, মধ্যে ও নিক্চডুইরে ও ক্যানার নমঃ ইত্যানি মুলের নিবিত্র ক্রেব্রান্ত প্রার্থান বিবিত্র ক্রেব্রান্ত বিব্রান্ত বিব্রান্ত বিব্রান্ত বিব্রান্ত বিব্রান্ত প্রার্থানি ক্রিরা ব্রানির প্রান্ত বিব্রান্ত বিব্রান্ত বিব্রান্ত বিব্রান্ত ব্যানির প্রান্ত বিব্রান্ত ব্যানির প্রান্ত বিব্রান্ত ব্যানির প্রান্ত ব্যানির প্রান্ত ব্যানির প্রান্ত ব্যানির ব্যানির প্রান্ত ক্রিরা ব্যানির প্রান্ত ব্যানির ব্যানির প্রান্ত ব্যানির ব্যানির ব্যানির প্রান্ত ব্যানির ব্যানির ব্যানির ব্যানির প্রান্ত ব্যানির ব্যানির ব্যানির ব্যানির ব্যানির ব্যানির প্রান্ত ব্যানির ব্যানির ব্যানির প্রান্ত ব্যানির ব্যানির

शरिवर समिनाकान्तर कार्यासकान्तर मन्। वागुकर जूक्यार भरिवासकरिकाम्बर्धस्य रिकः ॥

মন্ত্রানি। শ্রীশক্তিকামপূর্ব্বোহঙ্গজন্মশক্তিরমান্তিকঃ।
দশক্তরং সংগ্রবাদো স্থাৎ শক্তিরময়া যুতঃ। মন্ত্রো বিরুতিরব্যর্গাবাচক্রাদ্যঙ্গকাবিমো। অনয়োগ্র্যাদিপঞ্চাঙ্গানি দশাক্ষরবন্ধ্রা বিংশত্যর্গেক্তপূজাৎ কুর্য্যাৎ। ধ্যানস্ত — বরদাভয়হস্তাভ্যাৎ শ্লিষ্যন্তং স্বাঙ্গগে প্রিয়ে। পদ্মোৎপলকরে
তাভ্যাৎ শ্লিক্তং চক্রগদোজ্জলং॥ অনয়োঃ পুরশ্চরণং দশলক্ষজপঃ। আজ্যৈবাৎসহস্রহোমঃ। তথাচ দশলক্ষং
জপেদাক্ত্যৈত্বিংসহস্রকং। প্রণবং নম্সা যুক্তং কৃষ্ণগোবিন্দকো তথা। শ্লিপুর্বো ডেন্ডাবুচ্চার্য্য ভূঁ ফট্ স্বাহেতিবিসক্ত্রান্ধ কর্ম সমাপন করিবে। ত্রুই মন্ত্রের পুরশ্চরণে লক্ষণ ও মুত্র,
মন্ত্রান্ধ্র রক্তপন্ধান্তা দশসহস্রহোম করিতে হন॥

প্রাহার করার বর কথিত হইতেছে। প্রাই ক্রাঁ গোণীলনবরভার প্রাহা ক্রাঁ ব্রাং প্রাঁ। এবং হ্রাং প্রাঁ গোণীলনবরভার প্রাহা প্রাইং এই ছিনিধ মত্তে প্রক্রের প্রাদি করিছে হইবে। এই মত্তের প্রাদিতে দণাক্ষর মত্ত্রের ধ্রাদিল্লাস ও আচক্রার প্রাহা, ক্রমারনমঃ ইত্যাদি পঞ্চাল্লাদি করিয়া বিংশতাক্ষরমন্ত্রোক্তপদ্ধতিক্রমে পূলা করিবে। কেবল ধ্যামের বিশেষ আছে। ঐ ধ্যান মূলে দেবিতে পাইবেন। ইহাতে দেবকার এইরপ আকার ছিল্লা করিবে। এক হত্তে বরসূলা ও অভ হতে অভয়মূলা আছে। প্রাল-ছিত্র প্রীর প্রিরাকে স্থালিক্সন করিরা আছেন। অপর চুই হতে চক্রা ও গলা বিদ্যান রহিরাছে। প্রিরার হত্ত্বরে পল্ল ও উৎপল্ল, ভিনি প্রীয় প্রিরাক্তে ক্রমিল করিরা উপবিষ্টা আছেন। উক্ত ছিবিধ মন্ত্রের প্রক্তরণে দশকক্ষণ ও মৃত্ত্রারা দশসহল্রহান করিতে হয়। প্রিরুক্তের অভ বন্ধ গ্রহ্মান পোবিন্দার হাঁ কট্ পাহা। এই মন্তের প্রাাদিশ্রাণ ক্রিক্তে নার্রার পোবিন্দার হাঁ কট্ পাহা। এই মন্তের প্রাাদিশ্রাণ ক্রক্তেল নার্রার নার্রার বন্ধ্রের লয়, মূবে ক্রন্ত প্রক্রেন নার, ছিল প্রমান্ধনে

কীর্ত্তাতে। অস্থ নারদথবিরসূকী প্রদাণ পরমারী প্রিদেষতা আচক্রাদ্যৈরসকল্পনা। দশাকরবদস্থ পূজাজপহোমাদরং। বীজশক্তী চ তৎসমে।

অথ বালগোপালমন্তাঃ। চক্রী বস্তব্যাষ্থিতঃ নার্মী।
কৃষ্ণঃ। কামকৃষ্ণঃ। কামকৃষ্ণায়। কৃষ্ণায় নমঃ। কামঃ
কৃষ্ণায় নমোহতকঃ। কামঃ কৃষ্ণায় কামঃ। গোপালায়চন্দ্রয়ং
কামকৃষ্ণায় সাহা। কৃষ্ণগোবিন্দো ডেন্ডো। কামঃ কৃষ্ণায়
গোবিন্দায়। কামঃ কৃষ্ণগোবিন্দো ডেন্ডো কামঃ। দিভিক্ষণায় চন্দ্রং। স্থপ্রসন্ধাত্মনে হুৎ। কামঃ গোঁ কামঃ ভামলালার ছুৎ। বালবপুষে কৃষ্ণায় বহ্দিজায়া। রমা মায়া কামঃ
কৃষ্ণায় কামঃ। বালবপুষে ক্লী কৃষ্ণায় বহ্দিজায়া। তথাচ
গোত্মীয়ে নিবন্ধে চ—চক্রী বস্তব্যয়ুতঃ সর্গোকার্ণোমনুর্শ্বতঃ।

[,] इत्रत्म (प्रवेडारिय नमः, श्रांक की वीकाय नमः, भागर्याः श्वाहा भक्तत्र नमः। भरत श्राहकाय श्वाहा क्ष्याय नमः हेड्यापिकांभ स्वेद्या मभाक्यत्रपाक्षाकभूकांभकिकित्य उक्त यञ्जवात। भूका क्रिट्य এवः अहे यरञ्ज भूवन्द्रत्म वभाक्यत्रपञ्चाक भूवन्द्रवाविधि बस्मार्य कार्या क्रिट्य।

याद (अस्वार्यन्द्रकारः। वकार्यन्थन् याद कृष्णात् नम हेलाभि। म जव कामभूर्वरण्डर सङ्कत्रमसूर्भेजः। कृष्णादाजि त्राज्ञान्याद्याः शकाकतः शतः। त्राशानाग्राधिकामाखः यङ्कत्रमञ्जूषं छः। कृष्णं य कामरीकारमा विक्काशाखिरकार-शबः। कृष्धभाविकदको एडएडो मश्रार्वामगूक्षकमः। कृष्ध-(शाविक्तको (अरखो कामामा-ठाखेवर्गकः। जामाखकामवीक्रक नवाकत्र উদাহতঃ। দধিভক্ষণায় विश्विकाराखारुकेवर्गकः। ञ्थममाजात (थाका नगरेजाशतार्घकः। कामरीकर थदावीजः श्रूनः कामः ममुक्षद्वर । ग्रामनाक्रशमः ८५खः नया-२ खार्यः पनाकतः। निर्तारखावानवशूर्य कृष्णगारखामग्र-শ্রীশক্তিকামকৃষ্ণায় মারঃ সপ্তাক্ষরোমসুঃ। ° শিরো-खावालवर्ष्य कीँ कृष्धाय ग्राजावूरियः। এতে यार शृकायकः॥ ब्ख्यक्रिक्टः शक्षः पृत्रः ठकूर्वातः ब्रह्मधायः कामवीकः। তথাচ গোতমীয়ে—পদামন্তপলাশন্ত চতুরস্রং স্থলক্ষণং। **চতুর্দারসমাযুক্তং কামপর্ভিতকর্ণিকং।। এতেয়াং পূক্ষাপ্রায়োগঃ।**

প্রাত্ত্বি বৈশ্বেক পীঠনানং বিশার শ্বাহিন্তানং ক্র্যাৎ। যথা—শিরসি নারদখনমে নমঃ। মুখে গায়কী-ফল্সে নমঃ। ছদি প্রীকৃষ্ণায় দেবতারৈ নমঃ। ভতঃ করাল্লাসোঁ লাং অস্ঠাত্যাং নমঃ। দ্লীং ভর্জনীক্ষাং সাহা। দুং মধ্যমাত্যাং বষট। দ্লেং অনামিকাত্যাং হাঁ। ক্রেং মধ্যমাত্যাং বষট। দেং অনামিকাত্যাং হাঁ। ক্রেং করিতলপৃষ্ঠাত্যাং ফট। ক্রেং করিতলপৃষ্ঠাত্যাং ফট। ক্রেং করিতলপৃষ্ঠাত্যাং ফট। ক্রেং হাদয়াদির দ্লাং হাদয়ায় নমঃ ইত্যাদি। ততঃ পূর্বাব্দ্মাদিকং প্রদর্শ্য ধ্যায়েং। অব্যাদ্যাকোষনীলামুক্ত কির্দ্ধান্তোহমূলস্থা বালোজজ্ঞাকটীরস্থলকলিতরণংকিন্তি নাম্কৃন্দঃ। দোর্ভ্যাং হৈয়ন্ত্রনীনং দধদতিবিমলং পায়সং বিশ্ববন্দ্যে। গোগোপীগোপবীতোকক্রনথবিলসংকঠত ভ্রন্দিরং বঃ। এবং ধ্যাত্বা মানদৈঃ সংপূজ্য শব্দমাপনংক্র্যাং। ততো বৈশ্ববোক্তপীঠমন্বন্তাং পীঠপুজাং বিধায় পুনর্ধ্যাত্বা আবাহনাদি পঞ্চপুষ্পাঞ্জলিদানপর্যন্তং বিধায়াবরণ-

এই—প্র গামান্তপ্রাপর্জক্রের প্রাভঃক্তাাদি করিয়া বিষ্ণুমন্ত্রাক্তণীঠন্তাস পূর্বক ধ্রাদিন্তাস করিবে। তৎপরে মূলের লিখিত প্রণালীতে
করাজন্তাস করিয়া পূর্ব্বোক্তম্ত্রা প্রদর্শন পূর্বক ধ্যান করিবে। বেবজার
আকার এই—বিকসিত নীলপন্থের ন্তার পোপালের হেহকান্তি, রক্তপন্থের
ন্তার নম্বন, ইনি পল্পোপরি অবস্থিত। ইহাম চরণে ও কটালেশে শব্দাম্বর্ধন
কিছিণী, এক হত্তে নবনীত ও অপর হত্তে পারস আছে। জগব্দা
বালকরণী পোপাল গো, গোপ ও গোপীগণে পরিবৃত্ত। তাহাম কর্ত্তদেশ
ক্রুক্র (ব্যান্তবিশেষ) নথবিশিষ্ট নানাবিধ বিভ্বণে নিভ্বিত। এইপ্রকারে
ধ্যান ও করিয়া মানগোপচারে পূরা ও শথভাপন করিবে। তংপরে
বিক্র্মন্ত্রোক্রপীঠন্বস্ত পীঠপুরা করিয়া প্রস্থার ধ্যান ও আবাহনাদি পঞ্চপুশান্তিদানপর্যান্ত সমস্ত কর্ম করিয়া আবরণপুরা আরত্ত করিবে।

शृक्षांबादरखर । यथा त्कर्णस्त्र व्यागितिकार्ग्य प्रारा निक् हा । क्रार क्षमयाय नमः रेंड्यानिना यफ्कर मर्श्का उपिति-खानीन् वक्षानीरक शृक्षस्त्र । उर्जा ध्रानिविमर्कनास्त्र कर्म मर्वाभरत्र । এতে वार श्रुक्तिकार लक्ष्क्रभः । उथाह— धारिषवरमवरमा ख्यार लक्षर क्षभामान् उठः मर्भिः मिर्डा-शारिषवरमवरमा क्ष्म व्याप्त क्ष्म क्षभामान् उठः मर्भिः मिर्डा-शारिषवरमवरमा क्ष्म व्याप्त क्ष्म क्ष्म व्याप्त विका रहार मन्नाः क्रमः थाया ॥

মন্ত্রান্তরং। উর্দ্ধনন্তযুতঃ শাঙ্গী চক্রী দক্ষিণকর্ণমূক্। মাংস নাথায় নত্যন্তো মূলমন্ত্রোহন্টবর্গকঃ। ঋষিত্র ক্ষাস্থা গায়জ্ঞী চহলঃ ক্ষম্পন্ত দেবতা। বর্ণযুগ্নিঃ সমন্তেন প্রোক্তং স্থাদঙ্গ-পঞ্চকং। ধ্যানন্ত—পঞ্চবর্ষ-মতি-দৃপ্ত-মঙ্গনে ধাবমানমতি চঞ্চলেক্ষণং। কিঙ্কিণীবলয়হারনূপুরেরঞ্চিতং নমত গোপ-

কেশরে ও অগ্নি, নিথাতি, বায় ও ঈশান এই চতুজোণে, মধ্যে এবং পূর্বা, দক্ষিণ, পশ্চিম ও উত্তর এই চারিদিকে ক্লাং হাদয়ায় নমঃ ইত্যাদি বড়জপূজা করিয়া তথাছে ইন্রাদি ও বজ্ঞাদির পূজাপূর্বাক ধূপাদিবিসর্জ্ঞানান্ত কর্মা সমাপন করিবে। এই সকল মন্ত্রের প্রশচরণে লক্ষজপ এবং গুড় ও সিভোপল অর্থাৎ মিছরী মিশ্রিত পার্যবারা দশসহস্র হোমকরিতে হয়, এবং হোমসংখ্যার তর্পণ করিবে।

यान त्रांशाल प्रवास्त क्षिण व्हेल्ल्ल, त्रीर क्र नर नाथाय नयः व्यक्ति व्यक्ति

বালকং॥ ধ্যা ছৈবং প্রজপেদফলকং তাবৎসহক্রকং।
জুহুয়াদ্রক্ষরকোত্বসমিতিঃ পায়সেন বা। প্রাসাদে স্থাপিতং
কৃষ্ণমত্না নিত্যমর্চয়েৎ। দ্বারপূজাদিপীঠান্তং ক্র্যাৎ
পূর্বেজিমার্গতঃ। মধ্যেইচ্চয়েদ্ধরিং দিক্ষু বিদিক্ষানি
বৈ ক্রমাৎ। বাহ্নদেবঃ সক্র্যবিঃ প্রত্যহ্মশ্চানিরুদ্ধকঃ।
রুক্মিণী সত্যভামা চ লক্ষণা জান্মবত্যপি। দিখিদিক্ষ্চয়েনদেতান্ ইন্দ্রবজ্ঞাদিকান্ বহিঃ। যোহমূৎ মন্থং জপেমিত্যৎ
বিধিনাভ্যর্চয়ন্ হরিং। স সর্বসম্পৎসম্পূর্ণো নিত্যং শুদ্ধং
ব্রজেৎ পদং॥

मजाखतः। कांगरयात्रस्वक्ष्यभाः मुद्धः ममुश्यन्थमः।

এইরপ—োপাল পঞ্চবর্ষরয়, অতি চঞ্চলম্বভাব, অলনে ধাব্যান, চঞ্চল-লোচন এবং কিরিণী, বল্য, হার, পুপ্রাদি নানাবিধ বিভ্বণে বিভ্বিত ও গোপবালকরপী। এই প্রকার রূপ চিন্তা করতঃ ধ্যান করিয়া পূজা করিবে। এই মন্ত্রের প্রশ্চরণে অইলক্ষজপ ও পলাশবৃক্ষের সমিধ কিছা পারসম্বারা অইদহস্র হোম করিতে হয়। প্রাসাদে মূর্ত্তি স্থাপন করিয়া উক্ত মন্ত্রে পূজা করিবে। এই মন্ত্রের পূজাতে বাহা কিছু বিশেষ আছে, ভাহা লিখিত হইল, অন্ত পীঠন্তা সাদি সমত্ত কার্য্য পূর্ব্বোক্ত বিধানে করিবে। এই মন্ত্রের পূজার আবরণপূজা এই—মধ্যে ওঁ হররে নমঃ, এইরূপ পূজা করিরা চতুদ্দিকে গোং কুং হৃদ যায় নমঃ ইত্যাদি রূপে পঞ্চার পূজার নিহে। তৎপরে জার্যাদি চতুদ্দাণে ওঁ বাস্থাদেবার নমঃ ওঁ সম্বর্ধণার নমঃ, ওঁ প্রক্রিয়া নমঃ, ওঁ আন্তর্মায় নমঃ, ওঁ আন্তর্মায় নমঃ, ওঁ আন্তর্মায় নমঃ, ওঁ ক্রির্ণা নমঃ ওঁ সকল পূজা করিয়া ভ্রাহে ইক্রাদি ও বজ্রাদির পূজা করিবে। যে ব্যক্তি উক্তমন্ত্রে হরির জর্চনা করে সেই ব্যক্তি বর্মা করিবে। যে ব্যক্তি উক্তমন্ত্রে হরির জর্চনা করে সেই ব্যক্তি বর্মা সম্পান্ত হারী হইরা ব্রন্ধপদ লাভ করে।

वान (गाणात्मत असमस कथित इहेटिहा की कथा है। এहें हर्ज़ समत

उथान निमारक्लक्षमः मक्षः तत्कर्गः । मः त्या-त्वामात्रयूपान्यः मः ख्रुक्षः भारत्म छ । ज्या भूकाव्यत्यागः । व्याजः क्रजामि रेवक्ष्रताक्षभीरुम्बदः भीर्रणामः विधाय भूक्त-त्वम्यामिणामकत्राक्षणात्मो । कृषा धार्यः । जीमः क्ष्रक्रम् यूलाम्माजकम्मलम् कर्मिनाः विरागः ख्रिष्टाय ख्रष्टाथालिष्टिभूत्रम-विमत्रममः धाजत्रक्षाण्यिकः । र्याणः ख्रव्यण्याणितिष्ठ्यम् मिनाः णायत् वाद्यत्पतः भाग्रादः भाग्रमात्मार्थनत्वजनवनीजा-म्यानीत्रमीमः ॥ व्यवः धाषा मानर्भः मः भूका मध्याभनः विधाय रेवक्षत्वाक्षभीर्वम्बद्धः भीर्यः मः भूका भूवद्यापा व्यावाद-नामि भक्षभूष्माञ्चलिमानभर्यादः विधायात्रव्यभूकामात्रत्वः । भूक्षवम्यानित्वात्व मर्था मिक्षू । क्ष्राः क्ष्मयाय नमः हेजामिना विक्षमानि मः भूका भरव्य भूक्षां विधाय विधाय नमः हेजामिना

দেখিতে পাইবেন। এই মন্তের পূজা পদ্ধতি এই—প্রথমতঃ দামান্ত পূজা পদ্ধতি ক্রমে প্রাতঃরুত্যাদি করিয়া বিষ্ণুমন্ত্রাক্ত পীঠনাাসপূর্কক পূর্বেলিক-প্রকারে থ্যাদিন্তাস ও করাল্ভাস করিবে। তৎপরে ধ্যান করিবে। দেবতার আকার এইরূপ—ইনি করবুক্ষের মৃশহইতে উথিত কমণের কর্ণিকামধ্যে সংস্থিত, এবং ঐ করবুক্ষের শাখাতে গছমান পল্মধ্য হইতে নিঃস্তুত অসংখ্য রন্ধারা অভিবিক্ত, স্বর্ণের ভার ইহার দেহ কান্তি, স্বীর শরীরের আভার ত্রিভ্বন আলোকিত হইরাছে। বাস্থদেব অনবরত পার্ম, নবনীত ও অমৃত ভোলন করিতেছেন, এইপ্রকারে রূপ চিন্তাকরতঃ ধ্যান করিয়া মানসোগচারে পূজা ও শন্ত্রাপনপূর্কক বিষ্ণুমন্ত্রাক্ত পীঠপুলা করিয়া প্নর্কার ধ্যান ও আবাহনাদি পদ্পুলাঞ্জলিদানপর্যন্ত সমস্তক্ষ্ম সমাপনাল্ডে আবরণপূজা আরম্ভ করিবে। অগ্নাদি চত্ছোণে মধ্যে এবং পূর্কাদি চত্র্কিকে ক্লান্ধ্রমার নমঃ, ক্লা শিরসে স্বাহা, ক্লং শিখানৈ ব্যট্ ক্লৈ ক্ব-চার্ম্ব ক্রেলির প্রকার করেবে। ক্রিয়া ক্রিয়া ক্রিয়া ত্রায়ে ব্রায়ার বেষ্টাই ক্লান্ধ্রমার করেবে। ক্রেলার করিবে পূজা করিরা তহাতে পূর্কাদি ক্রমে অইনিধির পূজা করিরা তহাতে ইক্রাদি

বজাদীংশ্চ সংপ্রা ধ্পাদিবিসর্জনান্তং কর্ম সমাপরেং। অক্ত পুরশ্চরণং চতুর্লক্ষরপাঃ। তথাচ ধ্যাধ্বিং প্রারক্ষাকৃত্বং জুত্বান্ততঃ। তিমধ্বকৈর্বিষ্ণ লৈশ্ডবারিংশংসহস্রকৈঃ ॥ অক্ত মন্ত্রক্ত কামবীজয়োর্লকারয়োরন্তে রেফশ্চেন্তদা মন্ত্রচ্ছান্যণিঃ। তথাচ নিবন্ধে—মারয়োরস্ত মাংসাধো রক্তশ্চেদপরো মন্তুঃ। কামবীজন্ত মাংসাধো লকারস্তাধোভাগে রক্তোরেক-শেতলা অরং মন্ত্রিত্যর্থঃ॥ অন্ত পূজা—পূর্ববিদ্য্যাদিন্তাসং কৃত্রা করাক্ষর্যাসো কৃর্যাৎ। যথা ক্লাং অকুষ্ঠাভ্যাং নমঃ ইত্যাদি। ক্লাং হদয়ায় নমঃ ইত্যাদি। অন্ত পূজাদিকং সর্বাং পূর্ববিৎ। ধ্যানে তু বিশেষঃ। আরক্তোদ্যানকল্পজন্ম-তলবিলসংস্থাদিলাধিরতং গোপীভ্যাং প্রেক্যমাণং বিক্রিত-নববন্ধ কৃষ্ণিন্দ রভাসং। বালং লোলালকান্তং ক্টিতটবিল-দংক্ষ্রেরণ্টাঘটাত্যং বন্দে শার্দ্ লকামান্থ্যলিলিতগণাকল্পনীপ্রং

ও বক্লাদির পূজা করিবে। অনস্তর ধূপাদিবিসর্জনান্ত কর্ম সমাপন করিয়া পূজা সাল করিবে। এই মন্ত্রের প্রশুরণে চারিলক্ষ জপ এবং মৃত, মধু, ও শর্করা-মিশ্রিত বিষদ্ধারা চল্লীশ সহল্র হোম করিতে হর। বাল-গোপালের জন্তাশুমন্ত্র এই—উক্ত ক্লাঁ ক্রফ ক্লাঁ এই বীজ্বরন্থিত লকার্থের করোভাগে রেক্যুক্ত করিলে বে মন্ত্র হয়, সেই মন্ত্র সর্বাধান। এই মন্ত্রের পূজাপদ্ধতি এই—পূর্ফোক্ত বিধানক্রমে ধ্ব্যাদিশ্রাস করিব। গুর্ফোক্ত বিধানক্রমে গুরুষায় নথঃ ইত্যাদি প্রকারে করাক্ষ্যাস করিবে। পূর্ফোক্ত বিধানক্রমে এই মন্ত্রের পূজা করিবে। কেবল ধ্যানের বিশেষ আছে। এ ধ্যান মূলে লিখিত আছে। কেবলার আকার এইরূপ—আরক্ত উদ্যানমব্যু কর্মুক্তের উল্লেখ্য করিবেছে, কর্মুক্তর উল্লেখ্য করিবেছিল। করিবেছিল। কর্মুক্তর ক্রিতেছে, ক্লিসিত মূতন বন্ধুক কুমুদ্দের প্রান্ত রক্তর্বর্ধ, বালক্রপী, গোলালের অলকাসক্ষণের প্রান্তভাগ চকল হইতেছে। কটাছে

युक्तः। शादिका पूर्वतीरिकानः ज्ञा तरकारभटिनारिका यथुक्तार्रिका वर्काराद भूर्ववक्तिः॥

कथ बाद्यस्वमञ्जः। धार्या क्रम्प्रवाक वाद्यस्वाम कीर्किकः। धार्यात देवक्टव कट्य मट्याक्यः इत्रभाषभः। क्रम शृक्षा—धाकःक्रजापि-शृद्वीक्रभीक्रमखः विश्वच भमापियामः क्र्यार। यथा नित्रमि ध्रकाभक्टम सम्म मूख भाग्नजीक्रम्पत्म नमः क्रम वाद्यस्वाम स्वयं नमः। क्रम भाग्नजीक्रम्पत्म नमः क्रम वाद्यस्वाम स्वयं नमः। क्रम क्रमार्था— उ व्यक्षिक्याः नमः। नमचर्कनीनाः याः। नगवक्रमार्था— उ व्यक्षिक्याः वयः। नमचर्कनीनाः याः। नगवक्रमार्थाः वयः। व्यव्यक्षिमानाः वयः। व्यव्यक्षिमानाः वयः। व्यव्यक्षमानाः वयः। व्यव्यक्षमानाः वयः। व्यव्यक्षमानाः वयः। व्यव्यक्षमानित् । कथाः निवयः—काद्यम क्रमाः ध्राक्षः वयाः । क्रमाः। क्रमाः।

क्ष घिका मकल निवध चाछ । এই ऋत्य शांन कतियां शृत्यां स्व विधारम भूका कतित्व । এই मह्द्रित भूतकत्वि भूतंवर ठाविणक चल ७ श्रुष्ठ, यथु, भक्तायुक्त तरकार्यनदात्रा कर्णव धनारम मरया। य द्वाम कतित्य ॥

खरेकन बाक्षरमन-मह ७ छर्भुक्षामि कथिङ इहेएछछ। छ मरबा छन्नदक बाक्षरम्बाद बहे बामभाक्षत मह कह्ननामन-पद्मन पर्धार वह मरहा क्ष्म भूकाक्षि कदिएम माधरकत मर्ककाम भून हहेन। बारक। छक्क मरहात भूकाक्षम बहे—भूर्काकि विधारम खाछः क्रजामि मीठेकामास क्षम कविहा बन्नाविक्षाम ७ क्षाविक्षाम कविर्द। बहे बन्नाविक्षाम छ क्षाविक्षाम भूरम म्मिडेकरम मिथिक चार्छ, छर्भुद्ध महामान कदिरव। वशा—मच्छरक छ नमः, क्यारम मर नमः, हक्ष्मर मः ममः, पूर्व छर् नमः, नरम भरः, बाङ्गर दर नमः स्वरत एकः नमः क्ष्मर वार ममः,

ধ্বজে জাকুষয়ে পাদয়য়ে তথা। স্বাদশাকরাণি বিনাদেং।
ততো মূর্ত্তপঞ্জরং বিনাস্থ কিরীটমন্ত্রেণ ব্যাপকং বিধার ধ্যায়েৎ
বিষ্ণুং শারদচন্দ্রকোটিসদৃশং শব্ধং রথাকং গদামস্ভোজং দশতং
দিতাজনিলয়ং কাস্ত্যা জগদ্মাহনং। আবদ্ধাক্দহারকুগুল্দমহামৌলিং ক্ষুরৎকঙ্কণং শ্রীবৎসাক্ষমুদারকৌস্তভধরং বন্দে মুনীলেঃ স্ততং॥ এবং ধ্যাত্বা মানদেঃ সংপূজ্য শব্ধস্থাপনং ক্র্যাৎ। ততো বৈষ্ণবোক্তপাঠপূজাং বিধায় পুনর্ধ্যাত্বা আবাহনাদি-পঞ্চপুম্পাঞ্জলিদানপর্য্যন্তং বিধায় আবরণপূজানারভেৎ। অগ্নিনিশ্ব তিবাধীশানকোণের মধ্যে দিক্ষু চ ওঁ হৃদয়ায় নমঃ ইত্যাদিনা পঞ্চাক্ষেন পূজয়েৎ। ততঃ পূর্ব্বাদিন্দলেরু শাস্ত্যাদিশক্তিসহিতান্ বাহ্মদেবাদীন্ কেশবাদীনিস্তাদীন্

নাভীতে সংনমং, লিলে দেং নমঃ, জাম্ঘ্যে বাং নমঃ, পাদ্যমে মং নমঃ। এইরূপে হাদশাক্ষরের স্থান করিবে। তৎপরে বিফ্নপ্রোক্ত মৃর্জিণঞ্জর-স্থান করিবে। করিরা কিরীট কেয়ুর ইত্যাদি মন্ত্রে ব্যাপকন্যান করিবে। তৎপরে ধ্যান করিবে, দেবভার জাকার এইরূপ—শরৎকালীন কোটিচক্রের ন্যার সমুক্তল দেহ, ইনি শঅ, চক্রে, গদা ও গদ্মধারী, চত্ত্র এবং খেত প্রোপরি উপবিষ্ট। ইহার দেহকান্তি কগৎ বিমোহিত করিতেছে। বাস্থ্যের জলদ, হার, কুগুল ও কম্বণাদি নানাবিধ বিভ্যুপে বিভ্যার । তাহার বক্ষঃদ্বলে ত্রীবংসচিল্ত, কঠে কৌজভ্রমণি বিদ্যানা জাছে। এই প্রকারে ধ্যান করিরা মানসোপচারে পূজা ও শঅ স্থাপন করিবে। জন জর বিক্সের্জেক পীঠপুলা করিয়া পুনর্বার ধ্যান ও আবাহনাদি পঞ্চ পুলাক্রিলান পর্যান্ত কর্ম্ম করিয়া আবরণ পূজা করিবে। জয়্যাদি চারিকোণে, মধ্যে এবং প্রকাদি দিক্চভুইরে ও স্বরায় নমঃ ইত্যাদি গঞাল পূজা করিয়া প্রান্ধি চারিদিকে বিক্সমন্ত্রেক্ত শাল্যাদি শক্তি সহিত বাস্থ্যবাদি ও কেশবাদি নামে পূজা করিতে হইবে। অনন্তর ইন্দ্রাদি দিক্পাল ও

বক্তাদীংশ্চ সংপ্তা ধূপাদিবিসর্জনান্তং কর্ম সমাপয়েৎ। অস্থ্য পুরশ্চরণং দাদশলকজপঃ। তথাচ—বর্ণলকং জপেমন্ত্রং দীকিতোবিজিতেন্দিয়ঃ। তৎসহত্রং প্রজুত্যাতিলৈ রাজ্য-পরিপ্লুতৈঃ॥

অথ লক্ষ্মীনারায়ণমন্ত্রাঃ। মায়াদ্বয়ং রমাদ্বয়ং লক্ষ্মীবাস্থদেবায় নমঃ। প্রণবাদিরয়ং মন্ত্রঃ। তৃথাচ নিবদ্ধে—
হল্লেখাবীজযুগলং রমাবীজযুগং পুনঃ। লক্ষ্যান্তে বাস্থদেবায়
হৃদন্তঃ প্রণবাদিকঃ। চতুর্দিশাক্ষরঃ প্রোক্তা মন্ত্রোহ্য়ং স্থরপাদপঃ। অস্থ পূজাদিকং বাস্থদেবমন্ত্রবং। ঋষ্যাদিস্থাদে
তু লক্ষ্মীবাস্থদেবোদেবতা। করাঙ্গন্তাসমন্ত্রপ্ত ওঁ ব্রীং ব্রীং
অঙ্গুচাত্যাং নমঃ। ওঁ প্রী প্রী তর্জনীত্যাং স্বাহা। ওঁ লক্ষ্মী
মধ্যমাত্যাং বষট্। ওঁ বাস্থদেবায় অনামিকাত্যাং হুঁ। ওঁ
নমঃ কনিষ্ঠাভ্যাং ফট্। এবং হৃদয়াদিষু। তথাচ—হৃদয়ং
শক্তিবীজাত্যাং রমাত্যাং শির ঈরিতং। লক্ষ্যা প্রোক্তা
শিখা বর্ম বাস্থদেবায় কীর্তিতং। নমদান্ত্রং সমুদ্দিক্তং সর্ববং
তারাদি কল্পয়েং। ততোধ্যানং। বিত্যচ্চক্রনিভং বপূঃ

वङ्गानि चारत्वत्र शृथा कतिए इहेर्य, भरत धुभानि विमर्कतास कर्ष मगामन कतिरय। এই महात्र श्रुकत्रण वान्य मभ मक्त करिया जिम मिक्षिक चुक वाता बान्य महत्व रहाम कतिरय।

कमलकारेतक्रुं रहारतक जाः श्रीखर स्वहतरमन त्रक्ष विलमप्षा-जतानक्ष छ । विमानक जमर्गान् मिन्या क्षः मिन्राक्षः क्षः मिन्राक्षः भाः भवाः छक्ष मम्नि विज्ञप्ति जाः क्षिणे छित्रः वः ममा॥ व्यक्ष भूतम्हत् वर छ्र्मक ज्ञाः ज्यो — वर्ग क्षः कर्ममञ्जर करम्बाः छ्रम् व्यक्षः मरताकरे । रामः क्र्राक्षिक मिरेडम् भूति वर्ग मर्यु दे । वर्ग क्षः वर्ग ममान्यः ।

অথ দধিবামনন্ত্রঃ। ওঁ নমো বিষণ্ডবে স্থরপতয়ে মহাবলায় ঠয়য়ং। তথাচ নিবস্ধে—তারে। হুদিফবে পশ্চাৎ
ডেন্তঃ স্থরপতির্ভবেৎ। মহাবলায় ঠয়ন্তুং মনুরফীদশাক্ষরঃ।
অস্ত পূজা—প্রাতঃকৃত্যাদি উং সোমমগুলায় ষোড়শকলায়নে
নমঃ ইত্যন্তং বিশ্বস্ত ঋষ্যাদিন্তাসং কুর্য্যাৎ। শির্সি ইন্দ্রশাষয়ে
নমঃ মুখে বিরাট্ছন্দসে নমঃ হুদি দধিবামনায় দেবতায়ৈ
নমঃ। তথাচ নিবন্ধে—চন্দ্রান্তে কল্লিতে পীঠে প্রাগুক্তেন
সমর্ক্রেৎ। ততঃ করাঙ্গন্তাসোঁ ওঁ অঙ্গুভাভ্যাং নমঃ।
নমস্তর্জনীভ্যাৎ স্বাহা। বিষ্ণবে মধ্যমাভ্যাং বষট্। স্থরপতয়ে

क महीत थाथ रहेशाहिन, উ इत्यहे विविध तक विक्षा विक्षित । जानीत रूख विद्या, भण, भणी, भणी, भणी, भणी, भणी, भणी अविश्व मिन्स कुछ चाहि कर वाक्षाप्त हर्ष भणा, भणी, ठक अ महा चाहि । कि भूजात कि भणा का विद्या भणात कि महि वाक्षाप भूजात नाम कि विद्या भूज महिला हरेत । कि बहात भूज महिला हाति वाक अप कर घुड, वश्रु, क मक्तायूक भणाषाता प्रभारण हा। कि विद्या ।

करेकन मधिनामन मञ्ज ७ जर्म् जानि कृषिण इरेट्डिंट। ७ नटमा निकार स्वत्र प्रश्तिमान पाना, करे क्षेत्रामाक्त मटक मधिनामरनत भूकाति कृषिर । भूकात अथरम आणः कृष्णानि छेः भागमञ्जान स्वाज्यक्ताकरः नमः करे भूकात जीवेगाम कृषिना मृत्वत्र विभिष्ठ मटक क्यानिनामः

अनामिकां छा । महावलाग किनिष्ठां छा दोष । साहा कत्रज्लशृष्ठां जार करे। जर क्रम्यां निष्र्। जशाह—ऋरमदकन শিরে। দ্যাভ্যাং শিখা তিভিরুদাহতা। কবচং পঞ্চভিঃ প্রোক্তং নেত্রং তাবন্তিরক্ষরৈঃ। দ্বাভ্যামস্ত্রমিতি প্রোক্তং প্রকারোহঙ্গস্থ শুরিভিঃ। ততো মন্ত্রন্যাসঃ শিরসি ভালে ठकूरगाः कर्नसार्वार्छ जानूरक वाङ्चस्य कर्ण इनस्य जेनस्त नाट्ने छट्य छेक्ष्वर्य जागूष्य जड्याष्ट्र यज्ञवर्गान् ग्राप्तर । জজ্মাদৌ দ্বাং বর্ণং। ততো মূর্ত্তিপঞ্জরাদিকং বিধায় ধ্যায়েৎ। युक्रारगीतः न गर्भानमम् कृष्णः एक्तमः यः कृष्णाकारेत्रतनक-निवरेदः (শाভिवकु। विकः। श्लाकाचाः कनकनमर् श्वकार्या जिथूर्वर निरामा जार कनक प्रकर भा तस्त छ र जा यह ॥ এवः धाका मानरिमः मरशृङा मधायाभनः कुर्यापि। उठम्हस মঙলাত্তং পীঠং সংপূজ্য পুনর্ধ্যাত্ব। আবাহনাদি পঞ্চপুজ্পাঞ্জলি मान भर्या उर विधा शावत १ भृषा १ क्या । व्या मिरकार १ मरधा कत्राक्रनाम क्रित्व । ज्यापद मधुनाम क्रित्त, मथा लिक्सि स नमः, ভाতा नः नगः ठक्षाय (गाः नगः। कर्षाय विः नगः, १८८ खः नगः, ङानु ७ (११ नमः, कर्ष्ठ छ्र नमः, नाल्प्रस्य त्र नमः, ज्नस्य पर नमः, छेन्द्र তং नगः नाजिए एकः नगः छ। इत्या नगः ऐत्या हाः नगः कार्यात्र वर नगः, कच्चावाय लार नगः, यर नगः পापवाय कार नगः र्राः नगः। ७९-পরে মৃত্রিণঞ্জরন্যাস করিয়া ধ্যান করিনে। দেবভার আকার এইরূপ---हेरात त्यह मुख्यात नगाग्र त्योत्रवर्ष जवर नवम्यानम् कृष्ण विकृषिष, मूज्यान ज्यवाकात जनकाममृह् जिल्मित (भाजमान। এक ठएउ एक अन्भूर्भ ख्यर्ग कनम, खनद्र एष्ड प्रभामभून ख्रिकिंश भाग भाव। এই द्राप द्राप िख। कतिया मामरत्राभारत भूका अ महा छ। भन कतिरत। छ० भरत भौते পূकां किया भूनर्यात सान उ कावाङनामि भक्ष भूष्णाञ्चलि मान भगाँ ह ममञ्ज कर्षा कविया बादद्र शृका कवित्। अधानि हावि काणि धवः

দিক্ষু চ ওঁ ছদয়ায় নমঃ ইত্যাদিনা পূজয়েৎ। ততো দিকলেয়ু বৈফবোক্তবাহ্মদেবাদীন্ শক্তিসহিতান্ ধ্বজাদীন্ তদগ্রে কেশবাদীন্ সংপূজ্য ইন্দ্রবন্ধাদীন্ ঐরাবতাদীন্ দিগ্রজান্ পূজয়েং। ওঁ ঐরাবতায় দিগ্রজায় নমঃ। ইত্যাদিক্রমেণ পূজয়েং। এবং পুগুরীকাদীন্ ততো ধূপাদিবিসর্জ্জনান্তং কর্মা সমাপয়েং। অস্থ পুরশ্চরণং লক্ষত্রয়জপঃ। তথাচ গুণলক্ষং জপেয়য়েং তদ্দশাংশং য়তয়ুতং। পায়সায়ং প্রজ্জয়াদ্দধ্যমন্যা যথাবিধি॥

অথ হরিহরমন্ত্রঃ। মন্ত্রদেবপ্রকাশিন্তাং তারো মায়া প্রাদাদং শঙ্করনারায়ণায় নমঃ প্রাদাদং মায়া তারঃ। অস্ত পূজাপ্রয়োগঃ—প্রাতঃকৃত্যাদি-বৈষ্ণবোক্তং শৈবোক্তং বা পীঠ-ন্তাদং বিধায় ঋষ্যাদিন্তাদং কুর্যাৎ শিরদি নারদঋষয়ে নমঃ মুখে অমুফুপ্ছদদে নমঃ হৃদি হরিহরায় দেবতায়ৈ নমঃ গুছে হোঁ বীজায় নমঃ পাদয়োঃ ব্লী শক্তয়ে নমঃ। ততঃ

পূর্বাদি চারিদিকে ও হাদয়ায় নমঃ ইতাাদি বড়ল পূজা করিয়া দশদলে বিফুমজ্রোক্ত শাস্তাদি শক্তি সহিত বাহ্ণদেবাদি নামে পূজা করিয়া ধ্বজাদি ও কেশবাদির পূজা করিয়া ইক্রাদি; ও বজ্রাদির পূজা করিয়া ও ওংপরে ও এয়াবতায় দিগ্গজায় নমঃ এইরূপ পূজা করিয়া উক্তপ্রকারে প্ওরীক, বামন, কুমুদ, অঞ্জন, পূজাদস্ত, সাবসভৌম ও অপ্রতীক এই সকল দিগ্গজের পূজা করিয়া ধূপাদি বিসর্জনান্ত কম্ম করিবে। এই সজের প্রশতরণে তিনলক জপ ও মৃত্যুক্ত পারসাল্ল কিয়া দধাল ছারা জিশহাজার হোম করিবে।

जिन्न इतिहत यन ७ छ० मूका श्रानी कथि उ इरेडिह के होर होर होर होर होर के नाम स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त कर्म किया हिन्द स्वाप्त स्वाप

कत्रात्रशारिश इँ। षत्र्ष्ठां छाः नमः हेणां नि यष् मीर्ययुक्ती स्कन्न विदः हमसापिय । ততा थानः—मृनः ठकः शाक्षकणम्बीिष्टः प्रवेदः । स्वयुक्षां ह्मनीनार्कत्मः हतिहतः चर्कः ॥ विदः थाषा मानतिः मःशृका मध्यश्वानः कृष्णाः । ততा तिकारवाकः रेगताकः वा शीर्रशृकाः विधास शूनर्थााषा व्यावान्त्रमिन् श्वशृक्षाक्षिनानश्यासः विधास शूनर्थापा व्यावान्त्रमिन् श्वशृक्षाक्षिनानश्यासः विधासवत्रशृक्षामातर्वः । त्रमत्त्रम्भामित्वार्णं मत्या मिक्कः विधासवत्रशृक्षामातर्वः । त्रमत्त्रम्भामित्वार्णं मत्या मिक्कः विधासवत्रशृक्षामात्रस्य । त्रमत्त्रम्भामित्वार्णं मत्याप्ते मत्रः हेणानिना शृक्षत्यः । ज्ञः श्वत्यं पृक्षति खं नत्रमा नमः विदः मत्रस्य विधासविद्यं विधासविद

অথ শ্রীভগবদর্চনসাহান্তাং। শ্রীকৃর্মপুরাণে। ন বিষ্ণাদ্রাধনাৎ পুণ্যং বিদ্যতে কর্ম বৈদিকং। তত্মাদনাদিমধ্যান্তং নিত্যমারাধয়েদ্ধরিং। তত্ত্রৈব ভ্র্যাদীন্ প্রতি সাক্ষাৎ শ্রীভগবদুক্তো। যেহর্চরিয়ান্তি মাং ভক্ত্যা নিত্যং কলিযুগে দিজাঃ। বিধিনা বেদদৃষ্টেন তে গমিষ্যন্তি মৎপদং। বিষ্ণুরহস্থে। শ্রীবিষ্ণোরর্চনং যেতু প্রকুর্বন্তি নরা ভূবি। তে যান্তি শাশতং বিষ্ণোরানকং পরমং পদমিতি। তত্ত্রৈব শ্রীভগবদুক্তো। ন মে ধ্যানরতাঃ সম্যাগ্যোগিনঃ পরিভ্রীভগবদুক্তো। ন মে ধ্যানরতাঃ সম্যাগ্যোগিনঃ পরিভ্রীজ্যবিষ্টে। তথা ভবন্তি দেবর্ষে ক্রিরা যোগরতা যথা।

ব্রহ্মবৈবর্ত্তে। স সমারাধিতো দেবো মুক্তিকৃৎ স্থাৎ ষথা তথা। অনিচ্ছয়াপি হুতভুক্ সংস্পৃষ্টো দহতি দ্বিজ। ধনবান্ পুত্রবান ভোগা যশস্বী ভয়বর্জিতঃ। মেধাবী মতি-

বিষ্ণুর আরাধনা করিলে বেরণ পুলা সক্ষয় হয়, এইরণ পুলা জনিতে পায়ে এমন কোন বৈশিক কর্মনাই, অভ এব নিয়ত অনাদি অনস্ত সনাত্ম হরির আরাধনা করিবে। হরি ব্যাং বলিয়াছেন যে, এই কলিযুগে ষে সকল ব্রাহ্মণ ভক্তিপুর্লক বেদোক্তবিধানে প্রতিদিন আমার আরাধনা করে, সেই সকল বিজ্ঞান নিশ্চয় আমার পদ লাভ করিতে পারে। শ্রীকৃষ্ণ আর বলিয়াছেন যে, পৃথিবীতে যে পকল মহুষা শ্রীবিষ্ণুর পূজা করে. ভাহারা বিষ্ণুপদ পাইয়া পরমানন্দ ভোগ করিতে থাকে। যে পূজাপরি-চর্যাদিতে নিজের পরিভূষ্টির ইড্ছা থাকেনা, এইরপ যোগই প্রকৃত ভক্তিযোগ, যোগিগণ এইরপ ভক্তিযোগে রত থাকিরা বিষ্ণুর সেবা করিবে।

ত্রশারৈবর্ত্তপুরাণে লিখিত আছে যে, যে কোন রূপে এরিকের আরা-ধনা করিলেও সাধক মুক্ত হইতে পারে, যদি কেত অনিচ্ছা ক্রমেও অগ্নি স্পর্ল করে, তাহা হইলেও অগ্নি সেই স্পর্লকের্তাকে দগ্ধ করিয়া থাকে। আর হরির আরাধনা করিলে সাধক ইহকালে ধনবান্, পুত্রবান্, ভোগবান্, যশসী, নিভাগ, সেধাবী, বুদ্ধিনান, ও প্রাঞ্চ হয়। ইন্পুরাণে লিখিত यान् প্রাজ্ঞে। ভবত্যারাধনাদ্ধরেঃ। স্কান্দে। সনৎকুমার-यार्क एखानचारिन। विभिक्तः नर्व्यभन्नाक धर्मा विक्षु र्कनः नुगाः। मर्वयञ्चलपादामङीर्यन्नारेनन् यएकलः। जर ফলং কোটিগুণিতং বিষ্ণুং সংপূজ্য চাপুয়াৎ। তত্মাৎ मर्वक्षयद्भन नाताय्रगिश्राष्ट्रिय । उरेज्य श्रीमिरवायाम-श्राप्त। यः প্রদদ্যাৎ श्रिष्डिना मर्त्वार प्रश्नाः ममागतार। অর্চয়েন্যঃ সকৃদ্বিষ্ণুং তৎফলং লভতে নরঃ। মাসার্দ্ধমপি (यारिक्टः नित्रखर्यान शृक्षाय । श्रूक्षाख्यः म विख्डार्या विश्व छ एक। न मः भं यः। स्थानिन न म्रां प्रां विश्व পরিপূজয়েহ। বস্তুপূর্ণমহীদাতু র্যহপুণ্যং তদবাপ্নয়াহ। প্রাত-রুখায় যো বিষ্ণুং সততং পরিপূজয়েৎ। অগ্নিষ্টোমসহস্রস্থ লভতে ফলমুত্তমং। যো বিষ্ণুং প্রয়তো ভূত্বা সায়ৎকালে ममर्फाराए। गवार स्मिथमा यक्तमा कल मास्यां जि जूल जर। এবং সর্বাহ্ন বেলাহ্ন অবেলাহ্ন চ কেশবং। সম্পূজয়মরো

আচে যে মন্ত্রেরে পকে বিফুপ্রা সর্ব ধর্ম হইতে শ্রেষ্ঠ। স্কাঞার যজ, তপস্থা, হোম, ও তীর্থস্থানে যেরপে স্কুল্ট জন্মে, কৈণল বিফুপ্রা করিলে ভালর কোটিগুল পুণা সঞ্চয় হইয়া পাকে। অভএব সর্বপ্রযক্তে নারায়ণের অর্চনা করিবে। উত্তম ব্রাহ্মণকে স্নাগরা পৃথিবী দান করিলে যেরপ পুণা জন্মে, কেবল ছরির পূজা করিলে সেইরপ স্কুল্ট লাভ করিতে পারে। যে ব্যক্তি অর্চ্জমাস পর্যান্ত নিরন্তর হরির অর্চনা করে, সেই বিফুল্ভক বাজিকে প্রথমের মন্যা জানিবে। দিবা ছিপ্রহরের সম্যা যে ব্যক্তি বিফুর পূজা করে, সেই বাজি রন্ত্রপূর্ণা পৃথিবীদানের ফল লাভ করে। প্রাত্তঃকালে গাজোখান করিয়া হরিব অর্চনা করিলে সহস্র অর্চাম যাগের ফল পাইরা থাকে। আর সায়ংকালে হরির অর্চনা করিলে হল্পভি, গোমের যতের কল পাইরা থাকে। আর সায়ংকালে হরির অর্চনা করিলে হল্পভি, গোমের যতের কল পাইতে পারে। এইরূপে তিকালে হরির অর্চনা করিলে স্কুলি

ভক্তা সর্বান্ কামানবাপ্নয়াৎ। কিং পুনর্যোহর্চয়েয়িত্যং সর্বদেবনমস্কৃতং। ধন্যঃ স কৃতকৃত্যশ্চ বিষ্ণুলোকবাপুরাৎ॥

অথ শিবমন্ত্রাঃ। অথ বক্ষ্যে মহেশস্ত মন্ত্রান্ সর্বসমৃদ্ধিলান্। যৈঃ পূর্বমৃষয়ঃ প্রাপ্তাঃ শিবসাযুজ্যমঞ্জসা॥ সান্তমৌকার সংযুক্তং বিন্দুভূষিতমন্তকং। প্রাসাদাখ্যা মন্তঃ প্রোক্তোভজতাং কামদো মণিঃ। অস্ত পূজা—প্রাতঃকৃত্যাদিমাতৃকান্যাস্থা বিধায় (৯৬প) প্রীকণ্ঠাদিন্যাসং মাতৃকান্থানের কুর্যাৎ তদ্যথা অং প্রীকণ্ঠপূর্ণোদরীভ্যাং নমঃ। নমঃ সর্বত্ত । আং অনন্তবিরজাভ্যাং ইং সূক্ষ্মশাল্মলীভ্যাং ঈং ত্রিমূর্ত্তিলোলাক্ষীভ্যাং উং অমরেশ্বরর্ত্ত্ লাক্ষীভ্যাং উং অর্ঘীশদীর্ঘযোণাভ্যাং ঝং ভারভূতিস্থদীর্ঘম্থাভ্যাং ঝং অতিথীশগোমুখীভ্যাং ৯ং স্থাভ্যাং এং তেতিকবিক্তমুখাভ্যাৎ ওং সদ্যোজাতন্ধান্মুখাভ্যাং ওং অনুরস্ত্রীন্থাভ্যাং ওং অনুরস্ত্রীলান্তাং অঃ মহাসেনবিদ্যামুখাভ্যাং কং ক্রোধীশসর্বসিদ্ধি

त्र भूका करत, ভाहात्र ए किक्रभ कन हहेत्रा बीटक, ভाहा व्यवक्रा। পরস্তু সেধনা ও কৃতকুত্য ছইয়া বিষ্ণুলোকে সমন করে।

यशकली जार थः इए एक मर्किम तय की जार शक प्रकासक-গোরীভ্যাং বং শিবোত্তমত্রৈলোক্যবিদ্যাভ্যাং ঙং একরুদ্রমন্ত্র-শক্তিভ্যাং চং কৃশ্মাত্মশক্তিভ্যাং ছং একনেত্ৰভূতমাত্কাভ্যাং জং চতুরাননলম্বোদরীভ্যাং ঝং অজেশদ্রাবিণীভ্যাং ঞং সর্বা-नागत्रीजाः ऐः मार्यभाष्यप्रतीजाः रः लाञ्चलियञ्जतीजाः एः দারুকরপিণীভ্যাং তং অর্দ্ধনারীশ্বরবীরিণীভ্যাং ণং উমাকান্ত-कारकामत्री जाः जः वाषा ि शृजना जाः थः मिछ ज का नी जाः मः অদিযোগিনীভ্যাং ধং মীনশন্থিনীভ্যাং নং মেয়গর্জিনীভ্যাং পং লোহিতকালরাত্রিভ্যাং ফং শিখিকুজিনীভ্যাং বং ছগলও-কপর্দিনীভ্যাং ভৎ দ্বিরণ্ডেশবজ্ঞাভ্যাং মং মহাকাল জয়াভ্যাং ত্বগাত্মবালিস্তমুথেশ্বরীভ্যাং রং অস্পাত্মভুজ্ঞসেশরে-বতীভ্যাং লং মাংসাত্মপিণাকীশমাধবীভ্যাং বং মেদঅত্মিখড়গী-শবারুণীভ্যাং শং অস্থ্যাত্মবকেশবায়বীভ্যাং ষং মজ্জাত্মখেত-রক্ষোবিদ্যারিণীভ্যাং সৎ শুক্রাত্মভূমীশসহজাভ্যাং হং প্রাণাত্মন-कूलीमलक्षी जार लश् वीका श्रामिवगा शिमी जार कर का धाश-সম্বৰ্ত্তকমায়াভ্যাং॥ সাহিত্যে দ্বিচনবহুবচনে দ্বন্দ্বসংগ্ৰাসো বেতি স্থায়াদবিরোধেন এবং বাক্যং। তথাচ নিবন্ধে—শ্রীকণ্ঠোহনন্ত-मृत्या চ जिमूर्वित्रमद्रियतः। अधीत्माजात्रकृतिन्हाजिथीमः স্থাণুকো হরঃ। ঝিণ্টাশোভৌতিকঃ সদ্যোজাতশ্চানু গ্রহেশ্বরঃ। অক্রশ্চ মহাদেনঃ ষোড়শস্বরমূর্ত্য়ঃ। ততঃ ক্রোধীশচত্তে-শপঞ্চান্তকশিবোত্তমাঃ। তথৈকরুদ্রকূর্টের্মকনেত্রাঃ সচতুরা-ननाः। অক্তেশः সর্বসোমেশন্তথালাকলিদারুকো। অন্ধ-

⁽करण मस्त्र श्रास्त चार्छ, छाराङ म्रण म्लाङेक्टल शिथिङ इरेबार्छ। এই साग विषय निवक्त शर्य श्रमाण ७ अरेक्टल म्रण छेक छ क्रा हरेबार्छ।

नातीश्वत्राका का कि का वा कि विद्या । अप्रविध्यान स्विधिक विश्व जन्हिनिशी ज्था। ছগলগুদ্ধিরেগেশৌ সমহাকালবালিনো। ভুজঙ্গেশঃ পিণাকীশঃ খড়গাশশ্চ বকস্তথা। শেতভ্যাশনকুলিঃ শিবঃ সম্বর্তকন্তথা। এতে রুদ্রাঃ সমাখ্যাতা ধৃতশূলকপা-लकाः॥ পূর্ণোদরী স্থান্বিরজা শাল্মলী তদনন্তরং। লোলাকী वर्ड्नाकी ह मीर्घराणा मभीतिछ। इमीर्घमूशीर्णामूर्था मीर्घिक्या उरेथव छ। क्रश्नम्य्रिक्य्रो छ उथा विक्ठ-मूथाि । जानामूथा ততো জেয় পশ্চাত্রকামুখী স্মৃতা। স্থামুখী চ বিদ্যামুখ্যেতাঃ স্থাঃ স্বরশক্তয়ঃ। মহাকালী-সরস্বত্যো সর্বিসিদ্ধিসম্প্রতে। গোরী ত্রেলোক্যবিদ্যা স্থানাম্রশক্তিম্বতঃ পরং। আত্মক্তি ভূতিমাত। তথা লম্বোদরী মতা। দ্রাবিণী নাগরী ভূরঃ খেচরী চাপি मक्षती। क्रिभी वीतिगी পশ्চाৎ काका पर्गापि शृज्य।। याष्ट्रमकालीयाशित्यो भिश्चिमी शिर्द्धिमी ७था। कालवािष्ठ কুজিন্যা কপদিন্যপি বজ্রয়া। জয়া চ স্থমুখেশ্বর্যা রেবতী মাধবী ততঃ। বারুণী বায়বী প্রোক্তা পশ্চাদ্রফো-विमातिगा। ততশ্চাসহজা लक्षीर्वग्राभिनी सांग्रयात्रिण। এতা রুদ্রাঙ্গগিতহাঃ সিন্দুরারুণবিগ্রহাঃ। রজেৎপল-কপালাভ্যামলঙ্গতকরামুজাঃ॥ ততঃ দামাঅপূজাপদ্বত্যক্ত-পীঠন্তাসং কৃত্বা (৯৬পৃ)পীঠশক্তীর্ন্যদেৎ। যথা ওঁ বামায়ৈ নমঃ विश् क्षिष्ठिय द्वीरिक्य कार्रिक्य कलिक विरोध वलिक विरोध

শীকণ্ঠস্তাদের পর সামাজপুজাপদ্ধজির লিখিত নিয়মে পীঠক্তাস করিয়া পীঠ শক্তিস্তাস করিতে হইবে, যথা—জন্মের প্রাকেশরে ও বামারৈ নমঃ

यन श्रमिषित्य এত। ছৎপদাস পূর্বাদিকেশরেরু বিশ্বস্থ মধ্যে उँ यत्नाचारिय नमः তত्वপति उँ नत्ना जभवर् मकल्लाचा-শক্তিযুক্তায়ানন্তায় যোগপীঠাত্মনে নমঃ। তথাচ সারদায়াং— वांगा (कार्छ। उथा द्रोधी काली कलभनामिका। विक्रिन न्याञ्चया (প্राक्ता वलामिविक तिन्य । वल श्रम्याचिमी भन्छा । मर्वपृত्वमनाशि। मत्नामनीिजम् थ्याका देमव शीर्रम শক্তয়ঃ। নমোভগবতে পশ্চাৎ সকলাদি বদেততঃ। গুণাদিশক্তিরূপায় ততোহনন্তার তৎপরং। যোগপীঠাত্মনে कृरया नत्माश्छानिका मनूः। अमूना मनूना পশ्চानामनः গিরিজাপতেঃ। মূর্তিং মূলেন দক্ষয়্য ততাবাহ্য যজেচ্ছিবং ॥ তত খাষ্যাদিন্তাদঃ—শির্দি বামদেবায় খাষ্য়ে নমঃ মুখে পঙ্ক্তিছ्निए नगः शिन मन्निवात (पवर्णाते नगः। मात्रमाशाः—वागरमरवाग्निन्छन् १७ किर्फिवः ममाभिवः। ততঃ করাঙ্গভাদো—হাং অঙ্গুড়াভ্যাং নমঃ ইত্যাদি এবং शर क्रमग्राग्न नमः हेजाि यज् मीर्घयुक्तकात्वन ग्राम् তত্ত্তং ষড়্দীর্ঘফুকীজেন ষড়ঙ্গবিধিরীরিতঃ। তত ঈশা-

আরের কেশরে ও জেটারে নমঃ, এইরপে দক্ষিণ কেশরে রৌল্রৈ নমঃ
নৈশ্ভি কেশরে কালো, পশ্চিম কেশরে কলবিকরিলা, বায়ুকেশরে বল
বিকরিলা, উত্তর কেশরে বলপ্রমাথিনা, ঈশান কেশতে সক্ষতুভদমন্য
ভংগলমধ্যে ও নারায়ণা নমঃ এবং ভত্পরি এ নমো ভগবতে সকল
ভণাল্মশক্তিযুক্তার অনস্তার যোগণীঠালনে নমঃ, এই সকল মল্লে ভাস
করিবে। এই পীঠ শক্তিভাসবিধ্যে সারদাভিলকের লিখিত প্রমাণ এই
ভলে উদ্ভ করা হইলাছে। ভংপরে মূলের লিখিত মল্লে খ্বাদিন্তাস
করিবে। অনস্তর হাং অস্ট্রাভ্যাং নমঃ ইভাদি এবং হাং ভ্রদ্যার নমঃ
ইভাদিরণে করাল্ভাস করিয়া হস্তর্থের অস্টাদি অস্লিতে ঈশানাদি

नामाः शक्षम्खनिरम् कत्रात्रात्रमूक्षीमात्र्नीय यथा—जत्रुक्रियाः हो। त्रेमानाय नमः उर्ज्जाचीः हः उर्श्वसाय नमः मधा-ময়োঃ হ অঘোরায় নমঃ অনামিকয়োঃ হিং বামদেবায় নমঃ किनिष्ठरयाः इः मर्पााजाजाय नगः। जथाठ--जेगानामीर्ग-म्या जीतकृष्ठी नियु (मिकिः। जैगानाशः ७९श्रुक्रयम्पातः जननखत्र। वागरमवास्त्राः পশ्চा मामाकाजः क्रमाविः। अकातारेमाः शक्षद्वरिवरिवरिमायां मरयूजः वियश जन्म-त्रूली जिष्ट्र यस्ट बीजा पिकान् ग्रामर । उठस्व पत्रू नी जिः रहाः -जिमानाय नयः ইত্যाদि। मिर्तायमनकम् अश्राप्तिय प्रक्षमूर्जी-র্ন্যে । তত উর্জপ্রাগ্দকিণপশ্চিমোতরেয়ু মুখেরু তত্তসুলী-ভিত্ত हमा ठीर्नारम । मृज एव उ १ मा १ स्वा भारा १ অন্যত্রানধিকারাৎ। তত উদ্ধ্রপ্রাক্ষণপশ্চিমোত্রমুখেযু ঈশানস্থ পঞ্চলাঃ পঞ্চত্রক্ষথচঃ পদাদিকাঃ প্রণবাদিনমো-श्खा ग्राम् । जन्यथा— उँ निमानः मर्वितिमानाः उँ भिनित्य পक्ष मृद्धियान कतिरव। এই क्राम्ति खागानी, मञ्ज ও অভান্ত ভয়োক ख्यमान मूल निथिक रहेब्राइ। भर्ते भूनर्कात भक्षम् विकाम कतिया मछ एक चजुर्छ चजु विद्यात्रा होश जेमानात्र नमः, मूर्थ छर्जनीदात्रा हर ्७९शूक्याग्रनमः, श्रुवाम मधामाषात्रा छः व्याधात्रात्र नमः, श्रुष्ट्य व्यना-भिका बात्रा हिः वामएनवात्र नमः, शार्म कनिर्धाबात्रा रू मरमाखां जात्र नयः, এইসকল মত্তে পঞ্সুর্বিক্তাস করিবে। অনস্তর উর্নুথে অসুষ্ঠা-कृषा बादा टहार केमानाव नमः, भूकं मूख छर्जनी बादा ट्र छ९-পুরুষার নম:, দক্ষিণমুথে মধামা ছারা হু তৎপুরুষার নম:, পাল্চম पूर्ष चनामिका बात्रा हिः वामरमवात्र नगः, উन्नत्रपूर्य कनिष्ठाबात्रां इः मामाकांत्रां नगः, এই मक्न मात्र प्रवजात्र भक्ष्यमान क्रेमाना कि भक्षम् वि नाम क्रिया मूजांनिता धरे भराज जाम क्रियारे शाम क्रिया है ज: नद्र ति नक्न कान कविक इहेर्य, काहारक वाक्रगाति वर्गक्र विश्व

कलारिय नगः। अथवः সর্বস্থৃতাদাৎ ও অঞ্চলায়ে कलारिय नमः। बन्नाधिभि जिब कर्णार्थिभि जिब की उँ देखेमारेय कलारेश नमुः लिरवारमञ्च उँ महिरो कलारेश नमः। जना-শिवः ७ षःख्यानिरेना कलारेय नयः। ७७ः পूर्वभिष्ठम-मिक्ति। खद्रवरक्षु छ ९ शूरुष छ । छ छ । विनारम । यथा ७ ७९ शूक्षा विचार ७ मोरिखा कलारिय नमः। महामिवाय थीयशि ७ विमारिय कलारिय नयः। जत्यात्रकः उ श्राजिष्ठारिय कलारिय समः। ध्वरामिया उँ निवृरिका कलारिय नमः। ততোহদয়ে ত্রীবায়াং অংশ্বয়ে নাভৌ কুকৌ পৃষ্ঠে বক্ষসি चरचात्रचारकी कला नारमर। यथा उँ चरचारत्रजाः उँ छेगारेय कलारेय नमः। अथरचारतजाः उ त्याहारेय कलारेय नमः। एवात ७ कमारिय कलारिय नमः। एवात्रक्रात्रकाः ७ निर्मारेय क्लारेय नमः। नर्वकः नर्व उँ व्याधर्य क्लारेय नगः। मर्त्वां ७ मृठात् कलारेश नगः नत्माराष्ट्रश्च ७ कुधारेय कलारेय नमः क्रमक्र १९७३ ७ कृकारेय कलारेय नमः। ততো গুছে অওকোষে উরুদ্বয়ে জাসুদ্বয়ে জভাদ্বয়ে चिक्षा किंगाः भाषवा वामात्वय बारामिकना याम् । यथा ७ वामरमवाय नमः ७ छर्जारेय कलारेय नमः। रकाष्ट्रीय

कात, नृजािकता धरे मकन छात कतिएक शादि ना। छ०शद छैर्क, शूर्क, मिन्न, शिक्न, १९ छेखत पूर्व जेनात्तत शककमाछान ; शूर्क, मिन्न, शिक्न, शिक्न, धर्मक छेखत पूर्व छ०शूक्रदात ठड्डेन कमानाग ; स्वरत, धीवार्छ, प्रस्त, नािक्छ, छेवदा, शृद्धं, ६ वक्ष:प्रश जाद्यादान कहे कमानाग ; स्वर्क, क्ष्मकात, क्षेत्रकात, क्षाक्र्मकात, क्ष्मकात, क्ष्मकात,

नमः ७ तथारम कलारम नमः। कृष्टाम नमः ७ तर्छा कलारिय नमः। कालाय नमः ७ क्लालिरेग कलारिय नमः। कल ७ कामारिश कलारिश नमः। विकत्रशाय नमः ७ मःग-गिरिना कलारिय नमः वल ७ कियारिय कलारिय नमः। विकत-भाग नमः ७ वृदेका कलारेय नमः। वल ७ ऋतारेय कलारेय नगः। প্রমথনায় নমঃ ওঁ রাত্ত্যৈ কলায়ে নমঃ। সর্ব্বভূত-मयनाश नयः ७ जायिता कलातिश नयः। यन ७ त्याहिता कलारिय नगः। উन्मनाय नगः ७ जयारिय कलारिय नगः। ততঃ পার্ধয়োঃ স্তনয়োনাসিকায়াৎ মুদ্ধি বাহুযুগ্মে সদ্যো-জाতकारको केला नात्य । यथा ७ मत्नाजां ७१ श्रामा उँ मिरिका कलारेश नगः। मरामाजाजाश रेव नगः उँ शरिका कलारेश नमः। ভবে उँ मरें ज कलारेश नमः। অভবে उँ लदेकार कलारेय नगः। जनानिज्य उँ त्यथरिय कलारेय नमें छक्ष मार उँ थ्रह्मारेय कलारेय नमः। ज्व उँ थ्रजारेय कलारिश नगः। উদ্ভবায় नगः उँ ऋधारिश कलारिश नगः। ততঃ পঞ্চাঙ্গুলীষু ঈশানাদ্যাঃ পঞ্চাচো ग्राप्ति । उँ ঈশানঃ নর্ববিদ্যানামীশরঃ সর্বভূতানাং ব্রহ্মাধিপতিব্র ক্ষণোহ্ধি-পতিব্ৰহ্মা শিবোমেহস্ত দদাশিবোম্। ওঁ তৎপুরুষায় विनार मश्राप्तवाय धीयि जिल्लाकिषः थारापिया उ व्याचाद्वराज्याच्याद्वराज्या । यात्रावात्वराज्याः मर्ववः मर्व-मर्द्वरिं नगर्छश्य क्रज्रात्रिं। उँ वागरिवाय नर्गा काटक, प्रस्तिक, अ वाक्षाय माम्बाद्य कार्य क्यानाम कतित्। करे मकल नारित मञ्ज ७ लगाली मृत्व न्यष्टेकर्प विधिष्ठ इहेबाछ । जनस्व अञ्चलिए उ ने ने निक्त नर्सिनानाः हेजानि, ठर्जनीए उ उरमूकवाव বিল্লাং ইত্যাদি, মধ্যমাতে ওঁ অংবারেছ্য ইত্যাদি, অনামিকাতে ও বাম-

(काष्ठीय नमः अन्याय नमः कालाय नमः कलिकत्वाय नमः বলবিকরণায় নমঃ বলপ্রমথায় নমঃ সর্বভুতদমনায় নমঃ यत्नामानाय नमः। उँ मान्ताका जः अभन्तामि मान्ताका जाय रिव नमः ভবেহভবেহना पिভবে ভজস্ব मार ভবোদ্যবার नमः। উर्क्ष প্রাগ্দক্ষিণোদীচ্যপশ্চিমেরু মুখেরু এতাখাচো ন্যদেৎ। ততোহঙ্গন্যাসান্তরং কুর্য্যাৎ তদ্য়থা—এঁ ক্লী বুং স্ত্রীংশঃ সর্বজ্ঞায় হৃদয়ায় নমঃ। অমৃতে তেজোমালিনে তৃপ্তয়ে ব্রহ্মণে শিরসে স্বাহা। জ্বলিতশিখিশিখায় অনাদিবোধায় শিখায়ৈ বষট্। বজ্ঞিণে বজ্ঞহস্তায় স্বতন্ত্রায় কবচায় হুঁ। দৌঁ চৌঁ হোঁ পরতোহলুপ্তশক্তয়ে নেত্রত্রয়ায় বৌষট্। श्लीः পশুः छँ कछ् व्यनस्थानकत्य व्यक्षाय कछ्। उथाठ জামলে—সর্বজ্ঞতাতৃপ্রিরনাদিবোধঃ স্বতন্ত্রতা নিত্যমলুপ্ত-শক্তিঃ। অনন্তশক্তিশ্চ বিভোবিধিজ্ঞাঃ ষড়াত্রঙ্গানি মহে-শ্বস্থা। এবং বিশ্বস্থা ধ্যায়েৎ। যথা—মুক্রাপাতপয়ো-मरमोक्तिककार्वावर्टार्यः भक्षियारकारिकारिकार्यामामिनम्मूक्रेः

मिराय नमः हेलामि এবং कनिर्हाट मिराय छः ध्रमामि हेलामि भक्तमञ्ज्ञ नाम कितिरा। छेल भक्ष मञ्ज मूल इन्लाह मिथिछ हहेशाह । छ १ भरत मूलत मिथिह मर्ख धाना श्रकात ध्रमाम कितिरा। এই ध्रमाम विद्या धामरा मिथिह ध्रमान मूल छ कृष्ठ कता हहेशाह । এই तर्म नाम कितिया धाम कितिरा हहेरा। एमरहात ध्रमाम अविद्या धाम कितिरा हहेरा। एमरहात ध्रमाम अवेश किम मामरा वर्ग, रकान दमन भी छ वर्ग, ध्रमाम वर्गन स्थाप रकान ध्रमाम स्थाप किम मुक्तात माथ वर्ग, रकान दमन भी छ वर्ग, ध्रमाम वर्गन रम्बर्ग, ध्रमाम वर्गन स्थाप रकान प्रकार प्रमाम वर्गन किया रमन भी छ वर्ग, ध्रमाम वर्गन स्थाप रकान स्याप रकान स्थाप रकान

পূর্ণেন্দুকোটিপ্রভং। শূলং টক্ষর্পাণবজ্রদহনান্নাগেক্রঘণীকুশান্ পাশং ভীতিহরং দধান্যমিতাকল্পোক্ষলাঙ্গং ভজে এবং ধ্যাত্বা মানসৈঃ সংপূজ্য(১৪৭)অর্ঘ্যস্থাপনং কুর্ঘ্যাৎ (১০০)। অত্র শম্খ-ততঃ শৈবোক্তপাঠপূজাং বিধায় পুনর্ধ্যাত্বা মুলেন মুর্তিং সঙ্কল্প্য আবাহনাদি-পঞ্চপুষ্পাঞ্জলিদানপর্য্যন্তং বিধায়াবরণপূজামার-एक । यथा **अ**नान्गाः ७ नेनानाग् नमः भूर्यत ७ ७ ९ भूक्षाग् नमः पिक्ति एँ অঘোরায় नमः উত্তরে ওঁ বামদেবায় नमः পশ্চিমে ওঁ সদ্যোজাতায় নমঃ। ঈশানাদিকোণেয়ু নিরুত্ত্য नमः এवर প্রতিষ্ঠায়ে বিদ্যায়ে শাস্ত্যে। ততােহ্সপত্তােষু পূর্বাদি ওঁ অনস্তায় নমঃ এবং সূক্ষায় শিবোত্তমায় এক-নেত্রায় একরুদ্রায় ত্রিমূর্ত্তয়ে শ্রীকণ্ঠায় শিখণ্ডিনে তদ্বাহে উত্তরাদিক্রেমেণ ওঁ উমায়ৈ নমঃ এবং চণ্ডেশ্বরায় নন্দিনে মহাবলায় গণেশায় র্ষায় ভূঙ্গরীটায় ক্ষন্দায় তদ্বাছে পূর্ববা-मिक्कात्यण हेकामीन् वक्रामीः क शृक्षाय । ততোধূপाদि-বিসর্জনান্তং কর্ম সমাপয়েৎ। অস্তা পুরশ্চরণ পঞ্চলক্ষ-

দশ হত্তে শূল, টয় (পাষাণদারণ অন্তবিশেষ) থজা, বজ্ঞ, আয়ি, সর্প, ঘণ্টা, অয়ুশ, পাশ, এই সকল অল্প এবং এক হত্তে অভয় মৃত্রা আছে। এই প্রকারে রূপ চিস্তা করিরা ধ্যান, মানসোপচারে পূজা ও বিশেষার্ঘ্য স্থাপন করিবে। শিবপূলাতে শমস্থাপনের নিষেধ আছে, অভএব ভাষা করিবে না। তৎপরে শৈবোক্ত পীঠপুজা করিয়া পুনর্কার ধ্যান করিবে। অন-স্তর মৃশমন্তে-মৃর্ত্তিপরিকল্পনাপ্র্কক আবাহনাদি পঞ্চপুজাঞ্জি দান পর্যন্ত সকল কর্ম করিয়া আবরণ দেবভার পূজা করিবে। এই আবরণ দেবভার নাম ও পূজাগুণালী মৃত্রে ক্ষিত্রপো বিশিত হইয়াছে। পরে মৃণাদি বিস্কানান্ত সকল কর্ম সমাপনকরিয়া পূজা দাল করিবে। এই ময়েয়

छन्। তথাচ-এবং धाञा জপেয়স্তং পঞ্লকং মধ্-भू তৈঃ। প্রসূত্নিঃ করবীরোথৈজ্জ্যাতদশাংশতঃ॥

মন্ত্রান্তরং। ভ্বনেশী প্রণবং নমঃ শিবায় ভ্বনেশী প্ররুজান্ধরো মন্থঃ। তথাচ নিব্রেক্ষ—ষড়ক্ষরঃ শক্তিরুক্তঃ কথিতোইটাক্ষরোমসুঃ। অস্ত পূজা—প্রাত্তরুত্যাদি-পূর্ব্বোক্তপীঠমন্বন্তং পীঠন্তাসং বিধায় ঋষ্যাদিন্তাসং কুর্যাৎ। শিরদি বামদেবায় ঋষ্য়ে নমঃ মুখে পঙ্কিচ্ছন্দদে নমঃ ছদি উমাপত্রে নমঃ। ততঃ করাঙ্গন্তাংশী—ওঁ অঙ্কিভ্রান্তাং নমঃ। নং তর্জনীন্তাং স্বাহা। মং মধ্যমান্তাং বষট্। শিং অনামিকান্তাং হাঁ। বাং কনিষ্ঠান্তাং বেষট্। যং কর-তলপৃষ্ঠান্তাং ফট্। এবং ছদ্যাদিষু। ততোধ্যানং—বক্ষ্ কান্তং ত্রিনেত্রং শশিশকলধরং স্মেরবক্তং বহন্তং হক্তঃ শৃলং কপালং বরদমন্ত্রদৎ চারুহারং নমামি। বামোরুস্তন্ত-

পুরশ্বরণে পঞ্চলক জ্বপ ও করবীপুষ্পদ্বার। দশাংশ অর্থাৎ পঞ্চাশং সভ্জ্র হোম করিছে হইবে।

এইকণ শিবের অষ্টাক্ষর মন্ত্র ও তৎপূজাদি কথিত ছইডেছে। ছীং জঁলমঃ শিবার, ইহাট লৈবের অষ্টাক্ষর মন্ত্র। ছীং নিৰদ্ধ্যমন্তর শিথিত এই মধ্যোজারের প্রমাণ মূলে উক্ত করা হইরাছে। উক্ত মন্ত্রের পূজা প্রাপ্তেই—প্রথমে সামান্য পূজা পদ্ধতির নিয়মাত্মারে প্রাভঃক্ত্যাদি করিয়া পূর্বোক্ত বিধি অবলম্বনে পীঠনাাস কর্ম সমাপন পূর্বক মূলের লিখিত মন্ত্রে খ্যাদিনাসে ও করাক্ষনাস করিবে। তৎপরে খ্যান করিছে ইইবে। ক্ষেত্রের আকার এইরূপ—বদ্ধৃক্তুদ্মের ন্যার ইহার দেহবর্গ, ইনি ক্রিয়ন, হাল্ড বদন, ইহার কপালে অর্দ্ধিক্ত আছে, হত্তে পূল, কপাল, (মুহা মন্তক নির্মাত্ত ভিকা পাত্র) বরুমুদ্যা এবং অভরমুদ্রা ধারণ করিছে বাছেন। এই দেব ভার কর্মে পাত্র হার, বামোক্তে নিজ্ঞিয়া উপবিষ্টা

গায়াঃ করতনবিলদকারুরক্তোৎপলায়। হন্তেনাশ্লিফদৈহংমণি-ময়বিলসদ্ভূষণায়াঃ প্রিয়ায়াঃ। এবং ধ্যাত্বা মান্নোপচারেঃ मःপূজ্যাर्घाश्वाभनः कृषा শৈবোক্তপীঠপূজাং विधाय পুনর্ধ্যাত্বা व्यावाद्रनामिशकशूक्राञ्जलिमानशर्याखः विधायावत्रभशूकामात्र-(७९। यथा—किশরেম্বগ্নিঝ তিবায়ীশানকোণেয়ু মধ্যে **ठ ७** क्तग्राग्न नमः न९ नित्रम स्वादा मः निश्चित् वष्ठे निर কবচায় হুঁ বাং নেত্ৰত্নায় বেষিট্ যৎ অস্ত্রায় ফট্। ততো यरिश পूर्वािमिक्कि ठ ७ क्टल्लिशिरेश नमः এवः गगनारेश त्रकारिय कर्तानिकारिय गर्शाष्ट्रकारिय। ততঃ পত্রেষু পূর্বাদি রুষভাদীন্ পূজয়েৎ। ওঁ রুষভায় নমঃ এবং ক্ষেত্রপালায় চভেশ্বরায় তুর্গায়ে কার্তিকেয়ায় নন্দিনে বিল্পনাশকায় দেনা-পত্য়ে। ততঃ পূৰ্বপত্ৰেষু উমাদীন্ পূজ্যেৎ। তদ্বাছে ব্ৰাক্ষ্যা-म्याग्वतः পূজ্যाः। जाकी गार्थिती कोगाती विकवी वाताही हेनाग हामूछा महालक्षीः। जबहितिना विका-দীংশ্চ পুজয়েৎ। ততো ধূপাদি-বিসর্জনান্তং কর্ম্ম সমাপয়েৎ। অস্থ পুরশ্চরণৎ চতুর্দিশলক্ষজপঃ। তথাচ মনুলক্ষং জপে-শান্তং তদ্দশাৎশং যথাবিধি। জুভ্য়াশাধুরাসিক্তৈরারথধসমি-घरेतः। आत्रथयः भागानाः॥

আছেন, তাহার এক হস্তে রক্তোৎপল এবং দর্বাঙ্গে মণিমর আভরণ আছে, ইনি অপর হস্তবারা নিজপ্রির শিবকে আলিঙ্গন করিয়া রহিয়াছেন, এই প্রকার রূপ চিন্তা করিছে করিছে ধান করিয়া মানসোপচারে পূজা ও বিশেষার্ঘ্য স্থাপন পূর্কেক শিবোক্ত পীঠপূজা করিয়া পুনর্কার ধানে ও আবাহনাদি পঞ্চ পূজাঞ্জলি দান পর্যান্ত সমস্ত কর্ম সমাপনাস্তে আবরণ পূজা করিবে। এই পূজার আবরণ দেবভার নাম ও পূজাপ্রণালী সুলে স্কান্ত লিখিত হইয়াছে। তৎপরে ধূপাদি বিসর্জনান্ত কর্ম সমাপন মন্ত্রান্তরং। তারোমায়াপ্রাদাদৎ নাঃ শিবায়ান্তীক্ষরো
মন্ত্রঃ। তথাচ নিবন্ধে—তারমায়াবিয়্রবিন্দ্রমুস্বরসমন্বিতঃ।
পঞ্চাক্রসমাযুক্তো বহুবর্ণোমনুর্যাতঃ। অস্ত পূজা—প্রাতঃকুত্যাদি-শৈবোক্ত-পীঠন্থাসান্তঃ বিধায় পূর্কোক্রথম্যাদিন্থাস
করাক্ষথাসান্ কুর্যাৎ। ততোধ্যানং—বন্দে সিন্দ্রবর্ণং
মণিমুক্টলসচ্চাক্ষচন্দ্রাবতংসং ভালোদ্যমেত্রমীশং শ্বিতমুখকমলং দিব্যভ্যাক্রগিং। বামোক্রন্ত্রপাণেররুণকুবলয়ং
সংদধত্যাঃ প্রিয়ায়া রক্তোন্তুক্তরনারে নিহিতকর্তন্তনং বেদটক্ষেফ্টহন্তঃ। এবং ধ্যাত্বা মানসৈঃ সংপূজ্য(১৪৭) অর্যান্থাপনাদি
পীঠপূজান্তং বিধায়(১০০) পুনর্ধ্যাত্বা আবাহনাদি-পঞ্চপুষ্পাঞ্জলি
দানপর্য্যন্তং বিধায়াবরণপূজাং কুর্য্যাৎ। পূর্ববিদ্যানি সংপূজ্য

कतित्रा श्रुका माभ कतिता। এই मश्चित श्रुतम्हताण हजूर्लक काम । यह मश्चित श्रुक स्थान कि त्राम्य क्रिया। यह मश्चित स्थान क्रिया।

ত্ইকেণ শিবের মন্ত প্রকার মন্ত । তংগুলা প্রণালী কবিত হইতেছে, ওঁ হী গোঁনমঃ শিবাদ, ইহাই শিবের অপর মন্তাকর মন্তা। এই মন্তোজারের নিবদ্ধ গ্রন্থের লিখিত প্রমাণ মূলে উজ্ত করা হইয়াছে। এই মন্ত্র ছারা শিবের অর্জনা করিতে হইলে প্রথমে সামাক্তপুর্বাপদ্ধতি অনুসারে প্রাতঃক্তরাদি ও শিবমন্ত্রাক্ত থাবাদিল্লাস এবং করাজ্ঞাস করিছা ধাান করিবে। দেবতার আকার এইরণ—ইহার দেহ সিন্দুরের লাম রক্তবর্ণ মন্তকে মণিমর মৃক্ট, কপালে অর্দ্ধিক্তা ও একটিসেরে ভূষণ রূপে আছে, মৃথক্ষল ঈষংহাক্তম্বক্ত এবং সর্বান্ধ বিবিধ বিভূষণে বিভূষিত। ইহার নিজপ্রিয়া বামোক্তে হন্তার্পণ করিয়া বামন্তানে উপবিষ্টা আছেন, এই প্রিয়ার অণর হন্তে রক্তপদ্ম, আছে। মহাদেব ও প্রিয়ার বর্জু লাকার উচ্চ স্থানমন্তলে হন্তার্পণ করিয়া আছেন। এইরূপ ধ্যান করিয়া মানসোপচারে পূজা ও বিশেষর্যা স্থাপন পূর্বক পীঠপুরা। এবং প্রশ্বির ধ্যানাবাহনানি পঞ্চ পূজ্যার্থলি প্রদান প্র্যান্ত সমন্ত কার্যা

পত্রেষনন্তাদীন্ পত্রাগ্রেষ্ উমাদীন্ পূজ্যেৎ। অনন্তাদয়ো
যথা সারদায়াং—অনন্তং সূক্ষানামানং শিবোভ্রমনন্তরং।
পশ্চাৎ শ্রীকঠনামানং শিথণ্ডিনমনন্তরং। তদ্বহিরিজ্ঞাদীন্
বজ্ঞাদীংশ্চ পূজ্যেং। ততা ধূপাদি-বিসর্জ্জনান্তং কর্ম্ম
সমাপয়েং। অস্থ পুরশ্চরণমন্তলক্ষজপঃ। তথাচ অন্তলক্ষং
জপেনান্তং মন্ত্রী মন্ত্রবিদাংবরঃ। তৎসহস্রং প্রজুত্রাং।
পার্সাদৈয়্তপ্লুতঃ॥

মন্ত্রাস্তরং। তারং স্থিরাসকর্ণেন্দুং ভৃগুঃ সর্গসমন্বিতঃ।
ত্রাক্ষরাত্মা নিগদিতো মন্ত্রো মৃত্যুঞ্জয়াত্মকঃ। স্থিরা জকারঃ
কর্ণ উকারঃ ভৃগুঃ সকারঃ। অস্থ্য পূজা—প্রাতঃকৃত্যাদি
লৈবাক্তং পীঠন্যাসান্তং বিধার ঋষ্যাদিন্যাসং কুর্যাৎ।
শিরসি কহোলঋষয়ে নমঃ। মুখে দেবীগায়ল্রীচ্ছ দদে নমঃ।
হুদি মৃত্যুঞ্জয়ায় দেবতায়ৈ মমঃ। তথাচ—ঋষিঃ কহোল
দেব্যাদি-গায়ল্রীচ্ছন্দ সরিতং। মৃত্যুঞ্জয়ো মহাদেবো দেবতাস্থ প্রকীর্তিতা। ততঃ করাক্ষন্যাসো—সাং অকুষ্ঠাভ্যাং
নমঃ। সীং তর্জ্জনীভ্যাং স্বাহা। সৃং মধ্যমাভ্যাং বষট্।

এইক্ষণ মৃত্যুপ্তর মন্ত্র ও তৎপূজাদি কথিত হইতেছে। ওঁ জুং সঃ এই আক্ষর মন্ত্রে মৃত্যুপ্তর শিবের পূজাদি করিবে। এই পূজার প্রথমে প্রাতঃ কুড়াদি এবং শিব পূজাপদ্ধতি ক্রমে পীঠন্তাসাম্ভ কর্ম করিরা মূলের লিখিত

रिमः जनाभिकाजाः छ। सौँ कनिष्ठाजाः स्वीयहे। मः मकारत्र कूर्याए। जवाह निवस्त- एखना मीर्घयूरकन कूर्यापक्रकियाः भरनाः। ততো ধ্যাनः—हसार्वाधिविला-চনং স্মিতমুখং পদাদয়ান্তঃস্থিতং মুদ্রাপাশম্গাক্ষসূত্রবিলস্থ-পাণিং হিমাংশুপ্রভং। কোটিরেন্দুগলৎস্থধাপ্লুততমুং হারা-मिष्ट्रायाच्चलः का**ख्या वियवित्यार्**नः প**ल्ल**शिकः यूष्ट्राक्षयर ভাবয়েৎ॥ এবং ধ্যাত্বা মানদৈঃ সংপূজ্য (১৪৭) অর্ঘ্যস্থাপনাদি পীঠপূজাং বিধায় (১০০) পুনর্ধ্যাত্বা আবাহনাদি-পঞ্চপুজ্পাঞ্চলি-मानপर्याखः विधायावत् भभू जार कूर्या । जम्यथा किनाद्रयू व्यागितिकार्षियु यरधा पिक्कु ठ मांश् श्रुपाय नयः हेजापिन। य एकानि मः शृका जब दिति खानीन् वकानीः क शृका य । ততো ধুপাদি-বিসর্জনান্তৎ কর্মা সমাপয়েৎ। অস্তা পুরশ্চরণং লক্তর্জপঃ। তথাচ—গুণলকং জপেমন্ত্রং তদ্দশাংশং विनान्धीः। जुङ्गान्य्राथरेणः एकप्रभाजारमाण्टिजः॥

मृद्ध बद्याविद्यान ७ कवावद्यान किति । धनकत धान किति छ हरेद ।

एनवजान धाकान विदेश — मृज्याबन हत्य, एगाँ ७ कृति पत्र छ जिनि नवन

धाइ, हेनि हाइक्तन विदेश भागि छेनि । हेरांत हत्य मृद्धा, भान,

मृत ६ क्रमाना धाइ, हत्स्व द्यात्र हेरांत त्महत्यका, नर्साव हत्य निगति छ

स्थाधानात्र धाइ ७ ६ हातावि विविधक्ष पत्र कृति । हेरांत त्महका विविधक्ष पत्र विवधक्ष । हेरांत त्महका विवधक्ष ।

धोत्र प्राप्त धाइ कित्र । विदेश भी छ विद्याचा हानन भूक्ष क्रमान विवध ।

विदेश धाइ कित्र प्राप्त कित्र । मान कित्र प्राप्त विवधक्ष । विद्याचा हानन भूक्ष क्रमान विवध ।

विदेश धाइ कित्र प्राप्त विवध । विद्याचा ।

स्था भूक्ष प्राप्त विवध ।

स्था भूक्ष विवधक ।

स्था क्रमान विवध ।

स्या क्रमान विवध ।

स्था क्रमान विव

व्यथाभव्यक्रः। क्षमग्रः वभवः माकि लाखाश्नखान्त्रिका অহা পূজা—প্রাতঃক্যাদি-শৈবোক্তপীচমন্বতং সমাপ্য ঋষ্যাদি-न्यामः कुर्या । भित्रिम वामर्पवाय क्षयस्य नमः। भूर्य शक्ष क्रिष्ठ मटम नयः। क्रि जेमानाम (प्रविदेश नयः। ততো यूर्टिनामः। অর্জনোঃ নং তৎপুরুষায় নমঃ। यश्रायराः यर व्याचाताः नमः। कनिष्ठराः निः मरमा-काजाय नगः। जनामिकरयाः वाः वायर्गवायनमः। जञ्चलरयाः य़ः जेमानाम नमः। তথাচ निवक्त-- তাঃ স্থান্তৎপুরুষাঘোর-मान्त्रावार्यममः छकाः। यञ्जवनीमिका चार्छ । शक्यूर्डिर्यथा-क्रमर। उर्जनीयधारयात्रसानायिकात्र्रकेक श्रूनः। এवः वर्त्त रुपरा भाषवरा ७ छ मूर्कि, ठा ग्रामर। এवर প्राग्-যাম্যবারুণোদীচ্যমধ্যবজেুয়ু তা অদেৎ। ভতঃ করাঙ্গভাসো उ जित्रुष्ठी जाः नगः। नः जर्जनी जाः सारा हेजाि । এবং হৃদয়াদিষু। তথাচ নিবক্ষে—ষড়ভির্বণঃ ষড়ঙ্গানি

हेक्यां वि श्र ख्यां नित्र श्र्का कतिरव। ७९ गर्स धूशांनि वित्रर्क्षनां स्व नम्य कर्मा नमानन कतिया श्र्का नाम कतिरव। धहे महात श्र कतिरव। छिन स्वक सन् ९ इस मिश्रिक छक्ठीनका द्वारा स्वर्णत नमाः न मःशास होस कतिरव।

এইকণ শিবের পঞ্চালর ও যড়কর মন্ত্র এবং তৎপুনানি ক্থিত হৈছে। নমঃ শিবার, ইহাই পঞ্চাকর এবং ও নমঃ শিবার, ইহাই বড়কর মন্ত্র। উক্ত দিবিধ মন্ত্রে শিবের পূজা করিতে হইকে এথমে সামান্ত পূজাপদ্ধতির লিখিত নিরমান্ত্রানে প্রাভ: ক্রভানি করিরা শিবপুলা পদ্ধতি জেমে পীঠকালান্ত কর্মা করিবে। তৎপরে মূলের লিখিত মন্ত্রে ঝারানি-ভাগে ও মূর্বিভাগে করিবে। এই ভাগে বিষয়ে নিবদ্ধান্তের লিখিত প্রস্থাণ মূলে উদ্ভ করা হইরাছে। জনস্তর মূথে নং নমঃ হাদয়ে মং নমঃ পাদ-

কুর্যাশক্রত দেশিকঃ। ততো পোলকন্যাসঃ—ছদি ও
নমঃ বজে নং নমঃ অংশয়োঃ মং নমঃ শিং নমঃ উর্বোঃ
বাং নমঃ রং নমঃ। এবং কঠে নাভো পার্যব্য়ে পূঠে
ছদি মৃদ্ধি বদনে নেত্ররোঃ নসোঃ। এবং করপৎসদ্ধির্
সাগ্রেয়্। এবং শিরোবদনছৎকৃদ্ধি-উক্লপাদ্বয়েয়্ চ। এবং
ছদি বজ্রে টক্রয়গাভয়বয়েয়্। এবং বজ্রাংশছৎপাদোরুজঠয়েয়্। ততঃ পুনরপি মৃদ্ধি ভালোদরছদ্ভভেয়্ চ তাঃ
পক্ষম্ভীর্নদেং। ততোব্যাপকন্যাসং কুর্যাং। ওঁ নমো২স্ত ছামুক্তায় জ্যোতির্লিজায়তায়নে। চতুর্ম্বৃত্তিবপুশ্ছায়াভাসিতাজায় শস্ভবে। ইত্যনেন ব্যাপকং কুর্যাং। ততো
ধ্যানং। ধ্যায়েমিত্যং মহেশং রজতগিরিনিভং চাক্লচন্দ্রা-

বারে শিং নমঃ গুছো বাং নমঃ মন্তকে য়ং নমঃ পুনর্কার পূর্ক বলনে নং
নমঃ দক্ষিণ বলনে মং নমঃ পশ্চিম বলনে শিং নমঃ উত্তর বলনে বাং নমঃ
উক্ত বলনে মং নমঃ। এইরপে জাল করিয়া করালভাল করিছে। পঞাক্ষর
মত্তে শাং অপুলিভাগং নমঃ ইত্যাদি এবং শাং হলমায় নমঃ ইত্যাদি। এবং
বড়কর মত্তে ও অপুলিভাগং নমঃ নং ভর্জনীভাগং আহা। মং মধ্যমাভাগং
বয়ট্ শিং অনামিকাভাগং হ বাং কনিলভাগং বৌষট্ য়ঃ করতলপ্রভাগং
অস্তাদ কট্ এবং ও ল্পরাদ নমঃ নং শিল্পে আহা, মং শিথারৈ বয়ট্
শিং করচার ই, বাং দেজজনার বেবিট্ য়ঃ করতল প্রভাগং অস্তাদ করিছে।
এইরপে করাকভাল করিছে। অনম্ভর মুলের লিখিভ মত্তে গোলকভাল
করিছে হইবে। তৎপরে কর্তে ও নমঃ, মুখে নং নমঃ, দক্ষনেত্রে মং নমঃ
বামনেত্রে শিং নমঃ ক্ষিণ নাসিকার বাং নমঃ বাম নাসিকার য়ং নমঃ।
তংশরে হস্তপদ পরিতে কন্তপাদ্যাধ্যে এবং ক্ষাদি মুলের লিখিভ ছান
সকলে উক্ত বর্ণ সকল প্নঃ পুনঃ ক্রাদ করিছে। দেবভার আকার
এইরপ—রক্ত প্রতির ভাগ ইহার ব্যুক্তগতি, কণালে অন্ধ্রন্ত আছে।

বতংসং রক্ষাকর্মোজ্বলাঙ্গং পরশুমূগবরাভীতিহতং প্রসাং। পদাসীনং সমস্তাৎ স্তত্তমমরগগৈর্ব্যান্ত্রকৃতিং বসানং বিশ্বাদ্যং বিশ্ববীদ্ধং নিথিলভয়হরং পঞ্চবক্তুং ত্রিনেত্রং॥ এবং ধ্যাদ্বা মানসৈঃ সংপূজ্য (১৪৭) অর্য্যন্থাপনং কুর্যাৎ (১০০)। ততঃ শৈবোক্তপীঠপূজাং বিধায় পুনর্ধ্যাদ্বা আবাহনাদি-পঞ্চপূজাদ্ধান্দানপর্যন্তং বিধায় আবরণপূজামারভেৎ। যথা—কর্ণিকারাং পূর্ববদীশানাদি-পঞ্চমূতীঃ সংপূজ্য কেশরেষু নির্ত্যাদিকলাঃ পূর্ববৎ পূজরেৎ। ততোহগ্যাদিকোণেরু মধ্যে দিক্ষু চ ওঁ হুদয়ায় নমঃ নং শিরসে স্বাহা মং শিখায়ৈ বষট্ শিং কবচায় হুঁ বাং নেত্রত্রয়ায় বৌষট্। য়ৎ অক্সায় ফট্। ইতি পূজয়েৎ। ততঃ পূর্ববদনস্তাদীন্ পূজয়েৎ। ততঃ উত্তরাদিকদেশ বামাবর্তেন উমাদীন্ পূজয়েৎ। ততঃ উত্তরাদিকা

রত্ববাশির ভার সম্জ্ঞল দেহ, হতে কুঠার, মৃগ, বর ও অভর মৃত্রা আছে, ইনি প্রসর্বদন পর্যোপরি উপবিষ্ট, ইহার পরিধান ব্যাস্ত চর্ম, এবং চতুর্দ্ধিকে দেবগণ তব করিতেছেন, ইনি জগতের আদি, জগং কারণ এবং জ্বনের নিখিল ভর হরণ করেন। এই দেবতার পঞ্চ বলন এবং প্রতি বলনে তিনটি করিয়া নেত্র আছে। এই প্রকার ধান করিয়া মানসোপচারে পূজা ও বিশেবার্থা স্থাপন পূর্বাক পীঠপুজা, প্নর্মার ধ্যান ও আবাহনাদি পঞ্চ পূলাঞ্জলি প্রদান পর্যান্ত সমস্ত কর্ম করিয়া আবরণ পূলাকরিবে। কর্নিকাতে ও ঈশানার নমঃ ও তৎপুক্ষার নমঃ ও আঘোরার মমঃ ও বামদেবার নমঃ ও সলোজাতার নমঃ এই পঞ্চম্প্রির পূলা করিয়া কেশরে ও নির্ট্ডা নমঃ এইরূপে প্রতিষ্ঠার, বিদ্যারে দাজ্যে মমঃ এই সঞ্চ পূলা করিবে। অগ্নাদি চতুলোণে মধ্যে এবং পূর্বাদি দিশ্চতুইছে ও হলরার নমঃ ইত্যাদি ম্নের লিখিড ষড়কপূলা করিছে হইবে। পরে অনজার নমঃ গুলার, শিরোডনার, একনেতার একক্ষার বিন্
সূর্ভ্রে শ্রীক্ঠার ও শির্থিনে নমঃ এইসকল পূলাকরিয়া উত্তরাদিক্রমবান-

বজাদীংশ্চ পৃজ্ঞারে । ততা ধৃপাদি-বিসর্জনান্তং কর্মা সমাপরে । অস্ত পুরশ্চরণং ষট্ ত্রিংশলকজপঃ। পায়দৈ-রাজ্যসংমিশ্রেঃ ষট্ ত্রিংশংসহত্রহোমঃ। তথাচ—তত্তলক্ষং জপেনারং দীক্ষিতঃ শৈববন্ধ না। তাবংসংখ্যসহত্রাণি জুহুয়াৎ পায়দেঃ শুভিঃ। অত্র তত্ত্বশক্ষেন ষট্ ত্রিংশক্তব-মুচ্যতে অন্তরক্ষাৎ॥

অথ তুর্গামন্ত্রাঃ॥ অথ তুর্গামনূন্ বক্ষ্যে দৃষ্টাদৃষ্টফলপ্রদান্।
মায়াদ্রিকর্ণবিদ্ধাতো ভূয়েহসৌ দর্গবান্ ভবেং। পঞ্চান্তকঃ
প্রতিষ্ঠাবান্ মারুতো ভৌতিকাসনঃ। তারাদিহাদয়াস্তোহয়ং
মন্ত্রো বস্বক্ষরাত্মকঃ। অদ্রির্দকারঃ বর্ণাত্য উকারঃ পঞ্চান্তকোগকারঃ প্রতিষ্ঠা আকারঃ মারুতো যকারঃ ভৌতিক
প্রকারঃ। ততো মায়া স্ববীজক তুর্গায়ে হদয়ং ততঃ। ইতি
ভট্টঃ॥ অস্তাঃ পূজাপ্রয়োগঃ। প্রাতঃকৃত্যাদিপীঠস্থাসান্তং
বিধায় (৯৬প্) হুৎপদ্মস্থ কেশরেষ্ মধ্যে চ পীঠশক্তীর্ন্যসেং।

ভাগে ওঁ উমাধৈ নম: এই কপে চতেখনায়, নন্দিনে, মহন্দায়, বৃধায়,
ভূজনীটান ও ক্লান নম: এই কপে পূজা করিয়া ইন্তাদি ও বজাদিন পূজা
করিবে অনন্তর ধূপাদি বিসর্জনাত কর্ম সমাপন করিয়া পূজা সাল করিবে।
এই বিবিধ মন্তের পূর্করণে বট্ জিংশং লক্ষ্মপ ও ঘুঠান্তি পার্ম বারা
বটজিংশং সহল্ল হোম করিবে।

बहेकन एकी यन व न्याविश्व क्थिक रहेरकहा। एकीयत जानाश्वनी कितिल मर्काक्षमात कन व्याचि रहेनी थारक। व ही एः एकीटेन नमः, हेराई एकीन जाड़ेक्त यन। तांचनको निश्च वहें याजाबादान व्यमान मृत्म केन् क कन रहेनाहा। वहें याज एकीन भूका कितिक रहेरन व्यवद्य मानाम्रम्भानकिकारम व्याक्त काल निर्माण कितिक कर विश्व क्षान भूका कितिक व्याक्त काल क्षान भूका किता वर विश्व क्षान भूका किता वर वर वर्ग भीठेनिक काल किता कर्मन भूका व

जन्यथा जार প্रভारिय जेर यात्रारिय छेर जन्नारिय अर मृज्यारिय अँ विश्वकादेश अँ निकटिश अँ नर्विनिक्षिमदिश। नमः नर्विक । ভতুপরি ওঁ বক্তনখদং ট্রায়ুধায় মহাদিংহায় হুঁ ফট্ নমঃ हेकि नारम् । उथां निवस्त — প্रভा माग्ना क्या मुक्रा विश्वका निक्तनी श्रूनः। स्था विषया नर्विनिकिका नव-শক্যঃ। অজ্ভি इ अञ्यक्षीवत्रिः शुक्रामिगाः। क्षनवा-বস্তরং বজ্ঞনখদৎষ্ট্রায়ুধায় চ। মহাসিংহায় বর্মান্তং নতিঃ निःश्यकुर्याजः। मम्तामाननयाजन यूर्जिः यूर्णन कन्नाराष्ट्र। ততঃ अ**राा** मिछा मः। তদ্যথা— শির্দি নারদক্ষয়ে নমঃ यूर्थ भाग्रकीष्ट्र मरम नमः कृषि छ्नीरेय प्रवकारेय नमः। তথাচ निवक्त — शिवः श्रिशांत्रमण्डला गांशको प्रविश মনোঃ। তুর্গা সমীরিতা সন্ভিত্ন রিতাপিমিবারিণীতি। ততঃ क्ताञ्रणारमी—इ। एँ द्वीँ छूँ छूर्गारेय अञ्चर्छाजाः नमः द्यौँ वुँ द्वौँ वूँ वूर्गारिय उर्ध्वनीन्गाः स्वाशा दुँ वुँ द्वौँ वूँ पूर्णारेय मधामाजाः वषषे । दि उ दौँ कूँ पूर्णारेय जनामि-काजार हाँ। दशेँ उँ द्यी हाँ ह्या सिकाजार किर्वा षियु द्वी ७ द्वी प्र प्रशिष क्षयाय नमः देगापि। जथाठ निवदक-नगकावियुक्तन यूलमक्ति नाधकः। द्वामोरिष्ठः मञ् कुर्वोठ षड्कानि यथाविधि। ততো धानः—मिर्श्या निन-

लानी म्रन लाई निधि रहेन्नाइ धरः धरः धरे आग विषय विषय अरहत निधि वहन म्रन छक् कर्वा इरेक्नाइ। छ० शरत म्रन्त निधि भरत सवापिकाम ६ क्वाक्लाम क्विना थाम क्विया। स्वीत काकान धरे-क्रम—हर्नास्त्री मिश्टइन छेशनि छेशिन्ही काइन। हेट्या क्रशास कर्व

দেশকা মরকততাকা চতুর্ভিভূজৈ:। শৃথাং চক্রণস্থানাংশ্রু দেশকা নিরক্তি শোভিতা। আমৃতাসদহারকক্ষণ-রশ্বকাশীকাম পূরা। কুর্সা তুর্গতিহারিন্দ ভবতু নো রজ্লোল-স্ক্রণা। এবং ধ্যাষা মানসৈঃ সংপূক্তা (১৪৭) শর্ভামানমং ক্র্যাং। (১০০) ততঃ পীচপূজাং কৃষা কেশরের মধ্যে চ আং প্রভারে ঈং মারারে উং জয়ায়ে এং সূক্ষায়ে ঐ বিশুদ্ধায়ে উ নিন্দিতে ঐ স্প্রভারে অং বিজয়ায়ে অং সর্কাসিদ্ধিয়ায়ে তত্নপরি বজ্রনথদংক্রায়ুধায় মহাসিংহায় হুঁ ফট্ নমঃ ইতি প্রারেং। তথাচ—অজভি ক্রপ্রেরক্ষীবরহিতঃ প্রারেদ্ধায়। প্রণবানস্তরং বজ্রনথদংক্রায়ুধায় চ। মহাসিংহায় বর্দ্ধায়ং নতিঃ সিংহমকুর্মাতঃ। দদ্যাদাসনমেতেন মূর্তিং মূলেন কর্ময়েং। ততঃ প্রধ্যাদ্ধা আবাহনাদিপঞ্চপুম্পাজ্ঞানপর্যান্তং বিধায় আবরণপূজামারভেং। তদ্যথা—
জ্মিনিশ্র তিবাধীশানকোণের মধ্যে দিক্ষ্ট ক্র্যান্ত হা ও হাঁ ত্রু ত্র্পায়ৈ হদয়ায় নমঃ ইত্যাদিনা পূজয়েং। ততঃ পত্রেয়

চক্র, বরকত্যণির ভার দেহকাতি। ইহার চারি হছ, ঐ সকল হতে শ্রু,
চক্র, বল্ল ও বাণ আছে। দেবীর তিনটি নয়ন। ইনি মুক্তাহার, বলয়,
কহণ, কাঞ্চীওণ, মুপুরাদি বিবিধ আলহারে শোভা পাইতেকেন, এই দেবতা
সাধকের ছুর্গতি হরণকরেন, ইহার কর্ণে রত্ন নির্দ্ধিত কুওল আছে। এই
কোরে খান করিয়া মানসোপচারে পূজা ও বিশেষার্থা ছাপন করিবে।
তৎপরে পীঠপুলা করিয়া পুনর্মার পূর্বাবৎ ধানে ও আবাহনাদি পঞ্চ
পূজাঞ্জি প্রবান পর্যান্ত সমস্ত কর্ম সমালন পূর্বাবং খান ও আবাহনাদি পঞ্চ
পূজাঞ্জি প্রবান পর্যান্ত সমস্ত কর্ম সমালন পূর্বাবং আবারণ পূজা করিরে।
আরাক্ষি কোণচভূতরে ও পূর্বাদি চত্র্জিকে ও হী ছং ভ্রাইর জ্লরার সমঃ ইত্যাদি প্রকারে বড়ক পূজা করিয়া পাত্রতে জং ভ্রাইর ক্রমঃ
ইত্যাদি পূজা করিতে হইবে। অনতর প্রের বির্ভাগে ইক্রাদিনিক-

জং জয়ায়ৈ বিং বিজয়ায়ে কীৎ কীর্ত্তা শ্রীং প্রীত্যৈ প্রং প্রভায়ৈ শুং শুদ্ধায়ৈ শ্রুং শ্রুতিয় মং মেধায়ৈ। পরের ওঁ শন্ধায় চক্রায় গদায়ৈ ঝড়গায় পাশায় অঙ্গায় চাপায় শরায়। তদ্বাহে ইন্দ্রাদীন বজ্রাদীৎশ্চ পূজয়েৎ। তত্তো-ধূপাদিবিদর্জনান্তং কর্ম সমাপয়েৎ। অস্থ পুরশ্চরণমন্টলক্ষ-জপঃ। তথাচ—বস্থলকং জপেমন্ত্রং তিলৈর্মধুরলোড়িতৈঃ। পয়দা বা জুভ্য়াতৎসহস্রং বিজিতেক্রিয়ঃ। তেন বাচনি-কোহন্টসহস্রহোমঃ॥

অথ জয়তুর্গামন্ত্রাঃ॥ তারোত্রর্গে বুগং রক্তমন্ত্যোতান্তং
সলোচনং। দিঠান্তোজয়তুর্গেয়ং বিদ্যা বেদ্যা দশাক্ষরী॥
অস্তাঃ পূজা—প্রাতঃকৃত্যাদি তুর্গামন্ত্রোক্তং ঋষ্যাদিন্তাসান্তং
কর্মা ক্রা করাঙ্গতাদো কুর্যাৎ। যথা—ওঁ তুর্গে অঙ্গুড়ান্ত্যাং
নমঃ তুর্গে তর্জনীন্ত্যাং স্বাহা তুর্গাইয় মধ্যমান্ত্যাং হুঁ ওঁ তুর্গে
তুর্গে রক্ষণি কনিষ্ঠান্ত্যাং বৌষট্ ওঁ তুর্গে তুর্গে রক্ষণি
করতলপৃষ্ঠান্ত্যাং ফট্। এবং হৃদয়াদিষু। তথাচ নিবন্ধে—

পাল ও বজ্ঞাদিঅজ্ঞের পূজা করিয়া ধূপাদিবিসর্জনাত কর্ম সমাপন করিবে। এই মত্রের পুরশ্চরণে অষ্টলক্ষ মন্ত্র জপ করিবে এবং মধুমিশ্রিত তিল অথবা হগ্ম দারা অষ্ট সহস্র হোম করিবে।

এইকণ জারত্র্যা মন্ত্র ও তংপুজানি কণিত হইতেছে। ও ত্র্যে ত্র্যের বৃজানি করিবে। পূজার প্রধান সামালপুলাপদ্ধতিক্রমে প্রাভঃক্রডানি ও ত্র্যা মন্ত্রোক্ত খবানিভাগান্ত সমন্ত কর্ম করিয়া করালকাস করিবে। যথা ও ত্র্যে অসুষ্ঠান্তাং
নমঃ ইত্যানি মূলের লিখিত প্রণালী ক্রমে করন্তাস করিয়া ও ত্র্যে জ্বলার
নমঃ ইত্যানিরূপে ষড়ক্লাস করিছে হইবে। এই ক্রাস বিষয়ে নিবদ্রাহের
নিখিত প্রমান মূলে উদ্বিত করা হইরাছে। তৎপরে ধ্যান করিতে হইবে।

তারাদি মুর্গে হ্বদয়ং মুর্গে চ শির ঈরিতং। মুর্গায়ে স্থাচ্ছিথাবর্দ্ম স্থুতরক্ষণি কীর্ত্তিং। তারাদি মুর্গে দিতয়ং রক্ষণাস্ত্রমুদীরিতং। ততোধ্যানং। কালাভাভাং কটাকৈর-রিকুলভয়লাং মোলিবক্ষেল্বেঝাং শঝং চক্রং কুপাণং ত্রিশিথমপিকরৈক্ষরহন্তীং ত্রিনেত্রাং। দিংহক্ষাধিরুঢ়াং ত্রিদ্রম্পরিকাং তেজসা প্রয়ন্তীং ধ্যায়েদ্রুর্গাৎ জয়াখ্যাং ত্রিদশপরির্তাং দেবিতাৎ দিন্ধিকামৈঃ॥ এবং ধ্যাত্বা মানসৈঃ সংপ্রা (১৪৭) অর্যাত্বাপনং কুর্যাৎ (১০০)। ততঃ পূর্বেরাক্র পিঠপুজাং বিধায় পূর্ববিৎ পূজাৎ কুর্যাৎ। অস্থ পুরশ্চরণং পঞ্চলক্ষজপঃ। য়তেন দশাংশহোমঃ। তথাচ নিবক্ষেলবাণলক্ষৎ জপেমান্তং য়তেন জুহ্মান্ততঃ। দশাশং সংস্কৃতে বহ্নো তালানপি ভোজয়েছ। অফাক্ষরোদিতে পীর্চে পূর্ববিৎ পূজয়ে মুর্ধীঃ॥

অথ মন্ত্রান্তরাণি। থান্তবীজং সমুদ্ধৃত্য বামকর্ণান্তিদেবীর আকার এইরূপ—নীলবর্ণ মেঘের ন্তার জয়ত্র্গাদেবীর শরীরের
আভা, ইনি কটাক্ষে অরিক্লের ভর উৎপাদন করিভেক্ষেন, ইহার কপালে
অর্জন্তন্ত্র নিবদ্ধ আছে, দেবীর চারি হন্ত, এই সকল হন্তে শব্দ, চক্রা, থড়্গ
এবং ক্রিশুল ধারণ করিয়াছেন, ইনি ক্রিনয়না এবং সিংহন্তনাপরি উপবিষ্টা, ইহার ভেল্ল ক্রিল্লাছেন, পরিপূর্ণ আছে, ইনি দেবগণে পরিবৃত্তা
আছেন। সিদ্ধিকামী ব্যক্তিরা অয়ত্র্গার সেবা করিয়া থাকে। এই
প্রকারে ধ্যান করিয়া মানসোপচারে পূলা ও বিশেষার্ঘ্য স্থাপন করিবে।
পরে পূর্কবিৎ পীঠন্তাস, পুনর্কার ধ্যান ও আবাহনাদি পঞ্চপুলাঞ্জলি প্রদান
পর্যন্ত কর্ম সমাপনান্তে পূলা সাল করিবে। এই জয়ত্র্গা মল্লের
প্রশারণ করিতে হইলে পঞ্চলক্ষ মন্ত্র জপ করিয়া প্রভ্যারা অপের দশাংশ
সংখ্যার হোম করিবে।

वहेक्न इर्गात ज्ञांक मह ७ मुका लगानी कथिक इटेएएए। मूँ वहे

ভূষিতং। ইন্দুরিন্দুসমাযুক্তং বীজং পরষত্ম ভং। চতুর্বর্গপ্রাদং সাক্ষামহাপাতকনাশনং। একাক্ষরীসমা মান্তি বিদ্যা
বিজ্বনে প্রিয়ে। বিনা গদৈবিনা পুলেধিনা হোমপুরঃসরিঃ। বিনায়াদৈর্মহাদেবী জপমাত্তেণ সিদ্ধিনা। মন্ত্রভাভ
খবির্দেবি নারদঃ পরিকীর্তিতঃ। গায়ত্রীচ্ছন্দ আখ্যাতং
জগন্ধাত্রী চ দেবতা। চতুর্বর্গপ্রদা তুর্গা সর্বব্যবেষু সংস্থিতা।
বিবিধা সা মহাবিদ্যা তৎ শৃণুষ গণেশনি। কূর্চ্চাদ্যাং বা
জপেদিয়াং তদন্তে বহ্নিস্থন্দরী। লজ্জাদ্যাং বা জপেদিদ্যাং
ফড়ন্তাং বা জপেৎ স্থীঃ। বধুবীজযুতং বাপি সাহান্তাং
বা জপেৎ পুনঃ। লক্ষ্যাদ্যাং বা জপেদিদ্যাং চতুর্বর্গকলাপ্রয়ে। বাগ্ভবাদ্যাং জপেদাপি প্রণবাদ্যাং জপেহ পুনঃ।
কামবীজাদিকাং বাপি ফড়ন্তাং বা জপেৎ স্থীঃ। ত্রাক্ষরী
বিবিধা বিদ্যা কথিতা ব্রহ্মণা পুরা। দীর্ঘস্বরসমাযুক্তনিজবীজানি
পার্বিতি। বিশ্বদেদাত্মনোদেহে হাদয়াদিষু পূর্ববং। পূর্ব-

একাকর তুর্বা মন্ত্রপরম ত্র ভ ও চতুর্মর্গপ্রদ। এই মন্ত্রে ত্র্বার আরাধনা করিলে মছাপাতক নিনাল পার। ত্রিভ্বনে একাকর তুলা মন্ত্র আর
নাই, গল্প, পূলা, ও হোম বাতিরেকে কেবল এই মন্ত্র লপ করিলেই মন্ত্র
সিদ্ধি হইরা থাকে। এই মন্তের থাবি নারদ, গান্তরী ছল্প এবং লগভাত্রী
দেবতা। এই চতুর্কর্গপ্রদা তুর্বা দেবী সর্ব্ধ প্রাণীতে অবস্থিত আছেন।
তুর্বার মন্ত্র অনেক প্রকার উক্ত আছে, হং দৃং স্বাহা, হ্রীং দৃং, দৃং কট্, স্ত্রীং
দৃং, দৃং স্থাহা, প্রীং দৃং, ঐং দৃং ও দৃং, ক্রীং দৃং এবং ক্রীং দৃং দট্। এইরাপ
বিনিধ্ন জাক্ষর মন্ত্র প্রশা বনিরাছেন। দাং অলুষ্ঠাভ্যাং মনঃ দীং ভর্জারীভ্যাং
সাহা, দৃং মধামাভাাং বরট দৈং জনামিকাভাাং হং, দৌং কনিষ্ঠাভাাং
বিষিট, দৃং করতলপ্রভাগাং অল্লার ফট্। এবং দাং ক্রমন্ত্রান্ধ রৌষট,
শিরদে স্বাহা, দৃং শিথান্ধৈ বর্ষট, দৈং ক্রচার হং, ক্রোং নেজ্যনান্ধ বৌষট,

বন্ধান্তর্গন্ত পূর্কাবৎ কর্ম চাচরেও। কান্দ্রীবদাচরে বিদ্যাৎ
জপেরিদ্যানহর্নিলং। লকষাদল কৈর্দেবি পুরশ্চরণমীরিজং।
ধ্যানজ্জ-সিংহস্করাধির চাৎ নানালকার ভূষিতাং। চতু ভূ জাং
মহাদেবীং নাগজজ্ঞাপবীতিনীং। রক্তবন্ত্রপরীধানাং বালার্কদদৃশীং তমুং। নারদাদ্যৈ শুনিগণৈঃ সেবিজাং ভবগেহিনীং।
ত্রিবলীবলয়োপেতনাতিনালমুণালিনীং। রক্তবীপমহন্ত্রীপে
সিংহাসনসময়িতে। প্রফুর্লকমলার চাং ধ্যামেজাং ভবসেহিনীং। তুর্গাযন্ত্রং প্রবক্ষ্যামি শৃণুষ হরবল্লভে। ত্রিকোণং
বিভাসেৎ পূর্কং নবকোণসমন্বিতং। ত্রিবিশ্বসহিতং কার্য্যমন্তপত্রসমন্বিতং। ত্রিরেখাসহিতং কার্য্যং রুদ্রভূপুরসংযুতং।
সমীকৃত্য যথোক্তেন বিলিথে বিধিনামুনা। নানান্ত্রসংযুতং

দঃ করতল পৃঠান্ডাং অন্তায় কট্। এই বংশ করাজন্তাস করিরা পৃর্ব্বাক্ত বিধানে অন্তান্ত ন্তান করিবে। কালী পূজা বিধানে এই সকল ব্যন্তর পূজার অন্তান্ত করিরা দিবা ও রাত্রিতে মন্ত্র অপ্তান্তরে। যাদশ লক্ষ জপে উক্ত মন্ত্র সকলের পূর্ণরেণ হয়। এই সকল ন্যন্তর পূজাতে ধ্যানের বিশেষ আছে, ইহাতে দেবীর এইরূপ আকার চিন্তা করিবে। তুর্গা দেবী সিংহের স্ব্রোপরি উপবিষ্ঠা ও বিবিধ ভূবণে বিভূবিতা। ইনি চতুর্ভুজা, নাগ্রজোপরীত্বারিণী ও স্বক্তবন্ত্রপরিধানা। ইইার শরীর নবোলিত স্ব্রের ক্লান্তাদি মুনিগণ এই হরগেনিশীকে সেবা করিয়া খাকেন, ত্রিবলী বলহাকারে ইহার নাভিপন্তের মুণালম্বরূপে শোভা পাইতেতে। দেবী রম্ববিদ্যান্ত মহাবীপে সিংহাসনোপরি কান্ত্রক্ষমনে উপবিষ্ঠা আছেল। এইরূপে ক্ষেত্রীর ধ্যান করিয়া পূজা করিবে। তুর্গাদেবীর পূজাতে বেরূপ বন্ধ করিয়া পূজা করিতে হর, তাহা এই—প্রথমত ত্রিকোণ আছত করিয়া তাহার সহিত্ত নব কোণ যুক্তক্রিবে, ইহার বাছে ক্লিন্টা বৃদ্ধ করিবা তাহার সহিত্ত নব কোণ যুক্তক্রিবে, ইহার বাছে ক্লিন্টা

लिशार ठकः महाममिश्वार । उद्ध जाः श्रुक्ताक्षिः महा-श्रक्तिभिगेर । श्रम्याद्यार श्रुक्ताम् श्रीः मिर्श्वार्षे निर्वेष्ठ्यीः ।

で と



वृत्त विश्व कृतिया यह श्रास्त कृतिय वह यह मृत श्रास्त कृती व भूका कृतिया वह कृति निःश्वादिनोत्र भूका कृतिया श्रामा हेक्यावि भक्ति भूका कृति कृति होर्य। वृद्धि श्राप्त नयः हेक्यावि कृत्य भूका कृतिया भूका व्याद स्थाप मृत्यानिथि वनः वृत्तिया भूका कृतिया स्थितिक व्याधियान भूक्ति वाः कृत्या नयः हेश्यावि श्रामाद्य व्यक्तिनः निर्मा कूर्यार शृक्षारिख शर्विजाया । विक्रानित विक्रिया शृक्षित शृक्ष शृक्षित शृक्षित शृक्य शृक्षित शृक्ष शृक्षित शृक्ष शृक्ष शृक्ष शृक्ष शृक्ष शृक्ष शृक्य

অথ শ্রামাশ্রকরণং। তৈরবতত্ত্বে— স্বর্থ- বিদ্যালয় কালিকায়াঃ ইতুর্লভাঃ। যাসাং বিজ্ঞানমার্ট্রেশ জীবস্থতো-ভবেমরঃ। নাত্র চিন্তাবিশুদ্ধিঃ স্থাম বা মিত্রান্দ্রিশ্বণং। ন বা প্রয়াসবাহল্যং সময়াসময়াদিকং। ন বিত্রব্যয়বাহল্যং কায়রেশকরং ন চ। য এনাং চিন্তয়েশক্ত্রী সর্ব্বকাম-সম্বিদাং। তম্ম হস্তে সদৈবান্তি সর্ব্বসিদ্ধিন সংশয়ঃ। গদ্যপদ্যময়ী বাণী সভায়াং তম্ম জায়তে। তম্ম দর্শনমাত্রেণ বাদিনোনিশ্রভাং গতাঃ। রাজানোহপি চ দালতং ভজন্তে

ষড়ঙ্গপুঞা করিতে হইবে এরং পতের কোণে আগীপ্রভৃতি অন্ত শক্তির পূজা করিয়া ইক্রাদিদিক্পাল ও বজ্রাদি অন্তের পূজা করিয়া পূজা সাল করিবে।

এইকণ প্রামাপ্রকরণ কথিত হইতেছে। তৈরবতত্ত্বে মণাদেব বলিয়াছেন, অতঃপর দক্ষিণকালিকাদেবীর মহামন্ত্র সকল বলিব, মানবগণ এই
সকল মন্ত্র জানিলেই জীবগুক্তি লাভ করিতে পাবে। এই সকল মন্ত্রাংশে
মন্ত্রওদ্ধি বিবেচনা কিয়া অরিমিন্ত্রাদি বিচার করিতে হয় না। এই সকল
মত্তে কেবভার আরাধনা করিতে প্রয়াসবাহল্য কিয়া সময়াসময় বিকেচনা
নাই, আর অবিক অর্থবার বা কারকেশ স্বীকার করিতে হয় না। যে
সাধক সর্কাসিদ্ধিপ্রদায়িনী কালিকা কেবীকে চিন্তা করে, ভাছার ইন্তে সর্কাল
সর্কাসিদ্ধি বিদ্যালি থাকে এবং সেই হাজি সভাতে স্বাল্যস্থানী ক্রিছি বিদ্যালি থাকে এবং সেই হাজি সভাতে স্বাল্যস্থানী ক্রিছি বিশ্বনার বাক্তি সাধককে দর্শন করিলে বিশ্বনাপ নিজাত হয়
এবং রাজাও ভাহার দাস হইয়া থাকেন। যে সাধক কালীমান্ত্র সিদ্ধি

किर भरत जनार। निवासी क्रिया जातक सभी कर्ति । क्रिया जिल्ला जिल्ला क्रिया जातक समिति । क्रिया जातक समित । क्रिया जातक समिति । क्रिया जातक समिति । क्रिया जातक समिति । क

অথ শ্রামানদ্রাঃ। তত্ত্ব কালীতত্ত্বে কামত্রারং বাইসংস্থং রুতিবিন্দ্বিভূষিতং। কূর্চ্চযুগ্নং তথা লজাযুগলং
তদনস্তরং। দক্ষিণে কালিকে চেতি পূর্ববীজানি চোচ্চরেং।
অত্তে বহ্নিবধৃং দদ্যাদ্বিদ্যারাজ্ঞী প্রকীর্তিতা। মন্বর্থমাহ
যামলে ককারাজ্জলরূপত্বাৎ কেবলং মোক্ষদায়িনী। ত্বলনার্থসমাযোগাৎ সর্বতেজাময়ী শুভা। মায়াত্রয়েণ দেবেশি
স্প্রিভিত্যন্তকারিণা। বিন্দ্নাং নিকলত্বাচ্চ কৈবল্যফলদায়িনা। বীজত্রয়া শাস্তবী সা কেবলং জ্ঞানচিৎকলা।
শব্দবীজ্বয়েনের শব্দরাশিপ্রবোধিনা। লজ্জাবীজ্বয়েনের
স্প্রিভিত্যন্তকারিণা। সম্বোধনপদেনের সদা সমিধিকারিণা।
স্বাহয়া জগতাং মাতা সর্বপাপপ্রণাশিনী॥

অস্থাঃ পূজাপ্রয়োগঃ। প্রাতঃক্ত্যাদিকং কৃত্বা মন্ত্রা-

भिया किशिएक भारम, जिल्लान वभीकृष्ठ कतिएक मक्तम हम जिल्ला किश्रा किश्रा

काशवा श्रामामत कथिक इटेटिक । की की की कर हर ही ही प्रक्रिय काशित की की कि है है होर होर चाहा, अब पाविर्मकाक मन्न मन्न मन्नभान। अहे मन्नावर्गक वर्गार्थ कानायात एए, जनकरी क्यान स्थाक श्राम करन, अवर कश्चित्रभी द्वाक मन्तरकामत, कीर अहे वीक्यत करि विकित्रणव काती, विक्मका मृक्तिश्रम, हर अहे वीक्यत मनकामश्रम, हीर अहे वीक्यत क्रिकिंडि श्रमकाती, प्रक्रिय काशित्म अहे मर्पायंने महत्त एवीत मानिया हत अवर वाहा अहे भन कन्नरका बाहावन्न के मर्पायंने स्थान श्रमका

विरुक्त के माजा भूषा धनानी कथिक स्ट्रेक्ट । क्षेत्र भौताक

চমনং ক্র্যাৎ। যথা—কালিকাভিন্তিভিঃ পীতা কাল্যাদিভিরূপস্পূদেৎ। ঘাভ্যামোষ্ঠে দিরুন্ম,জ্য চৈকেন কাল্যানে করে। মুখ্যাণেক্ষণশ্রোক্তনাভুরক্ষণ ভূজো ক্রমাণ। আচম্যেক ভবেৎ কালী বৎসরাভাৎ প্রপশ্যতি। কং শিরঃ। তদ্যথা—ক্রীমিতি ত্রিরাচামেণ। ওঁ কাল্যে নমঃ ওঁ কপালিন্যে নমঃ ইতি ওঠো দিরুন্ম,জেণ। ওঁ ক্রায়ৈ নমঃ ইতি করং কালয়েণ। ওঁ ক্রকুল্লায়ৈ নমঃ ইতি মুখে। ওঁ বিরোধিতা নমঃ ইতি দক্ষিণনাসায়াং। ওঁ বিপ্রচিন্তায়ে নমঃ ইতি বামনাসারাং। ওঁ উগ্রায়ৈ নমঃ উল্লেখ্যা নমঃ ইতি বামনাসারাং। ওঁ দির্গায়ে নমঃ ওঁনীলায়ৈ নমঃ ইতি কেরেয়েঃ। ওঁ দির্গায়ে নমঃ ওঁনীলায়ে নমঃ ইতি ভ্রোক্রয়েঃ। ওঁ বনায়ে নমঃ ইতি নাভোঁও কলাক্র্যান নমঃ ইতি বক্ষসি। ওঁ মাত্রায়ৈ নমঃ ইতি কলাক্রায় নমঃ ইতি বক্ষসি। ওঁ মাত্রায়ৈ নমঃ ইতি মন্ত্রান্য নমঃ ওঁনিভারে নমঃ ইতি বক্ষসি।

शृकाश्यणाणी भरूतारत श्याणः क्रणाणि कतिया महाठमन कतिर्ता कीश विदेश मार्क जिल्ला नमः, के क्रणाणि मार्क विदेश कार्या नमः, के क्रणाणि मार्क विदेश कार्या क्रणाणि मार्क विद्यापि कार्या विदेश कार्या कार्या विद्यापि कार्या विद्याप कार्या विद्याप कार्य कार्या विद्याप कार्य कार्

প্রাণায়ামং কুর্য্যাৎ। তত ঋষ্যাদিন্যাসঃ যথা—অহা মন্ত্রহ ভৈরবঋষিরুষ্ণিক্ ছন্দো দক্ষিণকালিকা দেবতা হ্রী বীজং छ् मिकिः की कीलकः পুরুষার্থসিদ্ধ্যর্থে বিনিয়োগঃ। তথাচ कानीक्राय-कीलकः ठामारीकः आफ्डूर्वर्गकनथमः। भित्रिम ভৈরবশ্বধ্যে নমঃ। মুথে উফিক্ছন্দর্শে নমঃ। স্থাপ मिक्निनकारिय (पवजारिय नमः। श्वरम् द्यौँ वीकाय नमः। পাদয়োঃ হুँ শক্তয়ে নমঃ সর্বাঙ্গে জীং কীলকায় নমঃ। ততঃ করাঙ্গখাদৌ। ততুক্তং কালীতন্ত্রে—অঙ্গখাসকর-श्वारमी यथावन जिसेश एक। जित्र तार्थ श्रायः तथाक जिस्क ছम्म-উদাহতং। (দবত। কালিকা প্রোক্তা লজাবীজন্ত वीजकः। कीलकः চामावीजः जाक्ठ वर्वर्गक्वथाः। अकिन्ह कृष्ठिवी अर् ज्यापिन स्का मत्रयं । कविशार्थ विनियाशः স্থাদিত্যাদি। তেন মায়য়া ষড়ঙ্গভাদঃ। ষড়দীর্ঘভাজা বীজেন প্রণবাদ্যেন কল্লয়েৎ। বীরতত্ত্রে—দীর্ঘট্যুতাদ্যেন , প্রণবাদ্যেন কল্লয়েৎ ইতি বা। তদ্যথা—ওঁ হ্রীং অঙ্গুপ্তাভ্যাং नमः। ७ द्वीः ७ जनीजाः यार। ७ द्वां मधामाजाः वयष्रे। ७ द्वि९ व्यनाभिकान्ताः छः। ७ द्वाः कनिष्ठान्ताः (वीषिष्। ७ इः कत्रजनशृष्ठाजाः कष् ववः क्रमग्रामियू। उँ द्वा रुपयाय नमः रेजापि। उँ काः अञ्चलाजाः नमः रेजामिना वा। ততোবর্ণসাসঃ।—অং আং ইং ঈং উং উং एकिनशंख कार्या कतित्रा द्वीः এই मक्ष यथाविधि शानाग्राम कतित्व।

छित्ति गर्थे कार्या कतिता हो। এই मट्य यथाविधि शागायाम कतित्व। जनस्व म्ट्य लिथिक मट्य स्वाधिकाम कतिता हा। अनुक्षेका। नमक रेकांकि अवर द्वार स्वभाव ममः रेकांकि क्रिंग कतिवक किर्देश अरे मक्त्रकाम किर्देश कार्योक कर्या अरे मक्त्रकाम किर्देश कार्योक श्रीक हो। अरे मक्त्रकामिवति कार्योक श्रीक श्रीक स्वभाव म्ट्य छेक्छ क्रिय स्वभाव प्राप्त कार्योक स्वभाव स्वभ

सः सः अः इः नमः हेि क्पराः । धः धः धः सः सः सः भः घः नमः हेि पिक्तिग्वाद्ये । धः घः घः सः सः सः धः धः घः घः पः वः वः वः देि वामवाद्ये । गः छः धः मः सः मः पः पः मः देि वामवाद्ये । गः छः धः मः सः नः पः सः नः पः सः नः देि पिक्तिग्वापाः । मः सः तः नः वः मः सः मः दः नः कः नमः हेि वामवापाः । सः सः तः नः वः मः सः मः दः नः मः सः नः हि वामवापाः । वित्रभाक्तमण् पविन्त्रवः नामः । स्था वीत्रज्यः — धः वाः हेः सः छः छः सः सः नामः । स्था वीत्रज्यः — धः वाः हः सः छः छः सः सः शः कः दे क्रायः नाम्तिजाि । कानीज्यः व्रनिर्विन्तः । स्था — धः से के छे से सः अः दे क्रायः व्यानिर्विन्तः । स्था — धः से के छे से सः अः दे क्रायः व्यानिर्विन्तः । स्था — धः से के छे छे सः सः कः दे क्रायः व्यानिर्विन्तः । स्था — धः से विन्तः न वा नामि विविन्तः वा वा वर्षवानिजाां । किछ प्रविन्तः न वा नामि विविन्तः न वाथ वर्षवानिजां हार्यापितः विविन्तः विविन्तः । वाथ वर्षवानिजां हार्यापितः विविन्तः वायः वर्षवानिजां हार्यापितः विविन्तः वायः वर्षवानिजां हार्यापितः वर्षवानिजां वर्षवानिजां हार्यापितः वर्षवानिजां हार्यापितः वर्षवानिजां हार्यापितः वर्षवानिजां हार्यापितः वर्षवानिजां हार्यापितः वर्षवानिजां वर्षवानिजां हार्यापितः वर्षवानिजां वर्षवानिजां हार्यापितः वर्षवानिजां वर्षवानि

অথ ষোঢ়ান্যাসঃ। তত্ত্বজং বীরতক্সে—কেবলাং মাতৃকাং কৃষা মাতৃকাং তারসংপুটাং। মাতৃকাপুটিতং তারং ন্যুদেৎ সাধকসভ্যঃ। শ্রীবীজপুটিতাং তান্ত মাতৃকাপুটিতন্ত তৎ। কামেন পুটিতাং দেবীং তৎপুটং কামমেব চ। শক্ত্যা চ পুটিতাৎ দেবীং শক্তিঞ্চ তৎপুটাং ন্যুদেৎ। জীঁ বন্দ্বঞ্চ পুনর্ন্য স্বা ঋ ঋ ৯ ২ঞ্চ

लिथिड इन्हेबारहा । এই বর্ণদাস বিরূপাক্ষমতে অং আং ইত্যাদি রূপে এবং কালীভন্তমতে অ আ ইত্যাদি রূপে উক্ত আছে।

তৎপরে বোঢ়ান্তাস করিবে। বীরতত্ত্ব শিখিত আছে যে, প্রথমে
মাতৃকান্তাস করির। পূনর্কার ঐ মাতৃকান্তাসন্থানে মাতৃকাবর্ণদকলকে
ও এই মত্ত্বে পৃটিত করিয়া ভাসকরিবে, অর্থাৎ ললাটে ও অং ও নমঃ,
মুথে ও আং ও নমঃ ইত্যামি। পরে ও এই মন্ত্রকে মাতৃকাবর্ণারা
পৃটিত করিয়া অর্থাৎ ললাটে অং ও অং নমঃ মুথে আং ও আং নমঃ
ইত্যাদি মূপে ভাসকরিবে। পরে জীং এই বীজ্যারা মাতৃকা বর্ণকে

পূর্ববে । মূলেন পুটিতাং দেবীং তৎপুটং মন্ত্রমেব চ।
অন্পলামবিলোমেন ন্যন্ত মন্ত্রং যথাবিধি। মূলেনাউশতং
ক্র্য্যান্ত্যাপকং তদনন্তরং যথা—ওঁ অং ওঁ এবং মাতৃকাপুটিতং
তারং। এবং শ্রীবীজপুটিতাং তাং। তৎপুটিতং শ্রীবীজং।
এবং কামেন পুটিতাং মাতৃকাং। মাতৃকাপুটিতং কামং।
এবং শক্ত্যা পুটিতাং মাতৃকাং। মাতৃকাপুটিতাং শক্তিং
ন্যদেং। তথা ক্রীঁ দল্প ঋ ৠ ৯ হুঞ্চ পূর্ববং। তংপুটিতাং মাতৃকাং ন্যদেং। মাতৃকাপুটিতাং তং। মন্ত্রপুটিতাং
মাতৃকাং তৎপুটিতং মন্ত্ং। পুনরস্লোমবিলোমেন কেবলং

পুটিত করিয়া অর্থাং ললাটে ত্রীং অ॰ ত্রীং নমঃ মৃথে ত্রীং আং ত্রীং নমঃ ই-ज्यापिकार्यान्क। शानि ज्यामकां व्राव्या । यदि मान्कावर्षाता नीः अहे वीकारक পুটিত কয়িয়া अर्थार नगाটে चर और घर नगः मूर्य चार और घार नगः हेलापि कारण, भरत ननार्छ क्रीर चर क्रीर नमः এवर मूर्थ क्रीर चार क्रीर नमः हेडानि कारण जनर मनाएउ षा क्री: षार नमः मूर्थ बार क्री: बार नमः है छ। पि क्राप्त याज्ञाग्रामश्राःन ग्रामकदित्व। अनस्रत मनात्वे द्वीः अः द्वीः नमः मृत्य हो? चाः हो। नमः हेजामि क्राल जनः नगार्हे चः हो। चः नमः भूरथ चार होः चाः नमः हेलानि क्राप छानकविष्टहहरव। ७९५एव नगाटि कीर कीर भार भार तर दूर ज्यार कोर कीर भार भार तर दूर नमः मूर्य कौरकौर बार श्रुर २१ इर बार कौरकौर बार श्रुर २१ ईर नमः हेजानि धावर नाना एउँ चार क्वीर कोर श्रार क्षार कर हर चार नमः मूर्य चार क्वीर था था २ ३१ ६१ जार ननः हेजानि ऋत्भ याज्याञ्चाता जानकति । लगाए जा की जा नाः, मूर्य जाः कीः जाः नमः हेलामि श्रकारत शामक बिर्दा अरे मकल महा अस्टार्गाम । विर्लाप साम कविर्व । ' मलार्ष्ड चार नमः मृत्थ चार नमः हेजामि चसूरनाम अवर क्षमग्रामि मूर्य चर न्यः अपवाद्वापरत्र तः न्यः, हेल्यापिटक विटलाय क्रांत्र वनायात्र । एदणस्त्र

মাতৃকান্থানে ন্যক্ত মৃলেনান্তলতেন ব্যাপকং কুর্যাৎ। আয়ং
ন্যানন্তারায়া-অপি কার্যাঃ। ইতি গুপ্তেন তুর্গায়া-অন্ধরাড়া
প্রবা জারায়াঃ কালিকায়ান্চ উন্মুখ্যান্চ তথা
পরা । কুতেহিমিয়্যানবর্ষ্যে তু সর্বাং পাপং প্রণশুতি।
তত্তত্ত্বন্যানঃ। যথা—মূলং ত্রিখণ্ডং বিধায় প্রথমখণ্ডান্তে ও
আত্মতন্যার স্বাহেতি পাদাদি নাভিপর্যন্তং। দিতীয়খণ্ডান্তে
ও বিদ্যাতন্তায় স্বাহেতি নাভ্যাদি হৃদয়ান্তং। তৃতীয়থণ্ডান্তে ও শিবতন্তায় স্বাহেতি হৃদয়াদি শিরঃপর্যন্তং
ন্যানেং। তত্ত্তং স্বতন্ত্রে—মূলবিদ্যাত্তিখণ্ডান্তে প্রণবাদ্যোর্থাবিধি। আত্মবিদ্যাশিবৈস্তব্ত্ত্বন্যানং স্মাচরেং॥

অথ বীজন্যাসঃ। তছুক্তং কুমারীকল্পে—ব্রহ্মরন্ধে, ক্রর্বোর্মধ্যে ললাটে নাভিদেশকে। গুছে বক্তে চ সর্বাঙ্গে সপ্রবীজং ক্রমান্ধ্যদেং। তদ্যথা—আদ্যবীজং ব্রহ্মরন্ধে। দ্বিতীয়বীজং ক্রমধ্যে। তৃতীয়বীজং ললাটে। চতুর্ধবীজং

जिश्लाम कित्र केटिय, वर्षा—दक्षत्र क्ष्मीर नमः, क्षम्या क्षीर नमः, जनाएँ कीर नमः, नाकिए हं नमः, श्राम् होर ममः, म्राम् होर ममः, मस्ति होर नमः। भ्रामक राष्ट्राकाम, क्षम्याम व नीक्ष्माम करें छामक्षम कामा, वर्षाद कामा, वर्षाद निकाभूकार केक कामक्षम न। क्षिरम् राष्ट्र

नार्छो। शक्यवीकः छर्छ। यर्छवीकः वरकः। मख्यवीकः मर्वारमः। এত छ्राः कामाः। उर्छाम् तन मख्या वर्गमकः कृषा यथाविधि मूजाः ध्रमणी धाराः । उप्यथा कानीकरकः क्रानवंपनाः रचाताः मूक्यक्नीः कृष्ण् काः। कानिकाः पिकाः पिकाः मूख्यानाविष्ट् विछाः। मगुन्हिमनितः थ्रण्यामार्थार्क्षकतायुकाः। अञ्यय वत्रपरेक्य पिकाधिकः भागिकाः। महारम्बद्धाः। कर्णाविष्टः महारम्बद्धाः। कर्णाविष्टः महारम्बद्धाः। कर्णाविष्टः कृष्ठवाकाः भीरनाम् छपर्याः। य्रात्राक्षः। रचात्राक्षः। व्यात्राक्षः। रचात्राक्षः। रचात्राक्षः। रचात्राक्षः। रचात्राक्षः। रचात्राक्षः। रचात्राक्षः। रचात्राक्षः। यानाक्ष्रवानित्रविष्टः। वानाक्ष्यक्षनाकात्रवानितिविष्यः। वानाक्ष्यक्षनाकात्रवानितिविष्याः।

ক্ষুনা। অনন্তর মৃলমন্ত্রে সপ্তবার বাপেকভাগ করিয়া যথাবিধি মৃত্যাপ্রণর্লনপূর্বক ধানকরিবে। দক্ষিণকালিকাদেবী করালবদনা, ভরতরাকৃতি, আলুলারিতকেলা এবং চতুর্ভুলা। ইহার কঠে মৃথ্যনালা, বামভাগের
অধাহত্তে সল্পান্তির নরম্ত, ও উর্কৃত্তে ওড়্গ এবং দক্ষিণভাগের অধা
হত্তে অভ্যয়মূলা ও উর্কৃত্তে বর্মুলা আহে। দেবী প্রাণাচ মেঘের ভাষ
ভামবর্ণা ও দিগল্বরী, অর্থাৎ নয়া। ইহার পলদেশে বে নরম্ত নির্শিত
মালা আছে, ভাহাহইতে ক্ষিরধারা বিগলিত হইরা সর্বাল অভ্লিপ্ত
করিরাছে। দেবী তুইটি শিশু শবকে কর্বভূবণ করিয়াছেন, প্রতরাংই ইহার
আক্তি অভিভ্রম্বর হইয়াছে। দেবীর দক্তপ্রেণী অভিভীমণাকার, ভনবর
অভিত্বত ও সমূরত এবং কটাতে শবহন্তবিনির্শিত কাকী আহে। কালিকা
দেবী হাত্রবদনা, ইহার ওর্ত্তপ্রেম্বরহুত্তে ক্ষিরধারা বিগলিত হইকেছে,
ভাহাতে বদনক্ষণ মন্ত্রণ হইয়াছে। শক্ষ অভিভর্ম্বর, ইনি সর্বাণ
স্থানানে বাসক্রিরাণাকেন, ভাহার নের্জের নবোধিত স্থ্যম্প্রক্রের স্থার

ষিতাং। দস্তরাং দক্ষিণব্যাপিমুক্তালম্বিকচোচ্চয়াং। শবরূপমহাদেবছদয়োপরি সংস্থিতাং। শিবাভির্যোররাবাভিশ্চতার্দিকু সমন্বিতাং। মহাকালেন চ সমং বিপরীতরতাতুরাং।
স্থপ্রসন্ধবদনাং স্মেরাননসরোক্ষহাং। এবং সংচিন্তয়েৎ
কালীং সর্ব্বামসমূদ্ধিদাং। শব্যুগ্মেতি ঘোরবাণাবতৎসেতি প্রেতকর্ণাবতংসেতি চ। শকুন্তপক্ষসংযুক্তবাণকর্ণবিভূষিতাং। বির্গতান্থিকিশোরাভ্যাং কৃতবর্ণাবতংসিনীমিতি
দর্শনাত্বভয়মেব পাঠঃ॥

ধ্যানাস্তরং স্বতন্ত্র—অঞ্জনাজিনিভাং দেবীং করালবদনাং
শিবাং। মুগুমালাবলীকীর্ণাৎ মুক্তকেশীং স্মিতাননাং। মহাকালহৃদন্তোজস্থিতাং পানপ্রোধরাং। বিপরীতরতাশক্তাং
ঘোরদংষ্ট্রাং শিবৈঃ সহ। নাগ্যজ্ঞোপবীতাত্যাং চন্দ্রার্জ্বকৃত্রশেথরাং। সর্বালম্বারসংযুক্তাং মুগুমালাবিভূষিতাং। মৃত-

সমুজ্জন, দত্তশ্রেণী উন্নত ও বহির্গত, কেশগুচ্ছ দক্ষিণব্যাণী এবং আলু-লাম্বিত, মহাদেব শবরূপে পভিত আছেন, দেবী তদুপরি দণ্ডায়মানারহিরাছেন।ইহার চহুর্দিকে শিবাগণ থোররূপ শক্ষ ক্ষিত্তভ্বে। ইনি মহাকালের সহিত বিপরীতভাবে রতি করিয়া থাকেন। দেবীর মুখপদ্ম স্থাসর ও হাভাযুক্ত। যে ব্যক্তি এইপ্রকারে দক্ষিণকালিকার রূপ চিন্তাক্তর, দেবী ভাছাকে সর্ম্ব প্রশানকরেন।

বতমত্ত্বে দক্ষিণ কালিকা দেবীর অন্ত প্রকার রূপ বর্ণিত আছে।
কালিকা দেবী অঞ্জনপর্কতের নাম ক্রফবর্ণা, তালার বদন অতিবিস্তৃত,
গলাতে নরস্তালিকি মালা, কেশ আলুলারিত, মুখ হাত্তপূর্ণ, গুনদ্ধ
সুবা ও উন্নত। ইনি মহাকালের ক্রমোণার উপবিষ্টা এবং
মহাকালের সহিত বিশরীভভাবে রতিরস সম্ভোগকরিয়াথাকেন। ইনি
সর্শমিশিত বজ্ঞাপবীত ধারণক্রেম, ইহার দক্তগুলি অভিভর্কর ও
ক্লালে অন্তিজ্ঞা আছে। দেবী স্ক্রিধ ক্লম্বার ও সুগুলালা মারা

रखमरदेख्य वषकाषीर मिगर एकार। निवादकारिमरदेख्य रंगानिनी जिर्वित्रा क्रिजाः। तक्ष्णूर्गयूर्शास्त्राकाः ममाभाने ध्या-ভিকাৎ। বহুর্কশশিনেত্রাঞ্চ রক্তবিষ্ণুরিতাননাং। বিগতা-স্থকিশোরাভ্যাৎ কৃতকর্ণাবতংসিনীং। কণ্ঠাবসক্তমুণ্ডালীগল-क्रिकिकार। भागानविक्यश्राञ्चार बन्नादकभवविनकाः। সদ্যঃক্তুশিরঃখড়গবরাভীতিকরামুজাং॥ এবং ধ্যাত্বা মানসৈঃ সংপূজ্য (১৪৭) শঙ্খস্থাপনং কুর্য্যাৎ। তদ্যথা—স্বামে पृत्यी छँकाরগর্ভং ত্রিকোণং বিলিখ্যার্ঘ্যপাত্রং সংস্থাপ্য मुल्न । अञ्चलामिना भञ्चामिभाजमाभूषा , शकामिकः यज मद्या ७ अरक्ष यमूरन रिज्या किया कीर्यमावाद्य मः विक्रिम अलाग मनकला सार नगः हे छा। या प्रश्रिय छला स द्वामनकला-ম্বানে নমঃ ইতি শঙাং উং দোমমগুলায় ষোড়শকলাম্বানে नमः हेि जलः मःशृका ७ द्वार क्षाग्र नमः ७ द्वीर भित्राम आहा ७ इ.१ भिशारिय वष्टे ७ देइ१ कवाय छ१ हेठाशानाञ्चतायुष्। जात्य उँ द्वीः निक्कायाय तीयहे চতুর্দিক্ষু ওঁ ব্রঃ অস্ত্রায় ফট্। ইত্যভার্চ্য তত্ত্বপরি মৎস্থ-यूज्याष्ट्राम् यूनः मन्धा জপ्रा (४० यूज्जाय्वीक्ठार्जन

 সংরক্ষ্য ভূতিনীযোনিমুদ্রে প্রদর্শ্য তজ্জলং কিঞ্চিৎ প্রোক্ষণী-পাত্রে নিক্ষিণ্য মূলেন তেনোদকেনাত্মানং পুজোপকরণঞা-ভূয়ক্য পীঠপূজামারতেৎ॥

অন্তাঃ পূজাযন্ত্রং—তাদে রিন্দুং স্ববীজং ভুবনেশীঞ্চ বিলিখ্য ততন্ত্রিকোণং তদ্বাহে ত্রিকোণচতুষ্টয়ৎ র্তমন্তদলং পদ্মং পুনর্ত্তং চতুর্ধারাত্মকং ভূগৃহং লিখেছ। তত্ত্তং কালী-



मिन्नकानिकात প्राध्य এই तर्ण किन्न कतिर्घ क्रिटिंग व्यवस्थः अक विम् कर्नदा निक्षेत्र (क्रीः) कर्नदा होर এই वीस निविद्याः काश्य विश्विद्याः क्रिका विश्विद्याः विश्विद्याः क्रिका विश्विद्याः क्रिका विश्विद्याः क्रिका विश्विद्याः क्रिका विश्विद्याः विश्विद्

তত্ত্বে — আদে তিকোণমালিখ্য তিকোণং তছহিলিখেছ।
তত্তে। বৈ বিলিখেমন্ত্রী তিকোণত্রয়মূভমং। ততাে বৃত্তং
সমালিখ্য লিখেদউদলং ততঃ। বৃত্তং বিলিখ্য বিধিবলিথেদ্ভূপুরমেককৃং। কুমারীকল্পে—মধ্যে তু বৈন্দবং চক্রং
বীজমায়াবিভূবিতমিতি। অত বিশেষাধারো মুণ্ডমালায়াং—
তামপাত্রে কপালে বা শাশানকাণ্ঠনির্শিতে। শনিভৌমদিনে
বাপি শরীরে মৃতসন্তবে। স্বর্ণে রোপ্যেহ্থ লৌহে বা
ঢক্রং কার্য্যং বিধানতঃ। যন্ত্রান্তরমাহ তত্ত্বে —শক্ত্যগ্রিভ্যাঞ্চ
যট্কোণং শক্তিভিশ্চ নবাত্মকং। পদ্মে বস্তুদলে ভূমিপুশ্চহুর্লারসংযুতেতি।

ততঃ পীঠপূজা কুমারীকল্পে—পাঠপূজাং ততঃ কুর্য্যাদাশারশক্তিপূর্বিকাং। প্রকৃতিং কমঠং চৈব শেষৎ পৃথীৎ
তথৈব চ। স্থামূধিং মণিদ্বীপং চিন্তামণিগৃহং তথা। শ্বশানং
পারিজাতঞ্চ তমালে রত্নবেদিকাং। তত্যোপবি মণেঃ পীঠং

ভাইদল পদ্ম ও আর একটি বৃত্ত অভিত করিতে হইবে। ভাইদে বাংশ তেকুর্গার অভিতকরিয়া যন্ত্র প্রস্তুত্তকরিবে। এইরূপ যন্ত্রান্ধ্যমে কালী ভার ও কুমারীভাল্লের লিখিত প্রমাণ মূলে উদ্দুত্ত করা হইরাছে। ভার পাজে, মহুষোর কপালাহিতে, শনিবার বা মললবারে মৃত মহুষোর শরীরে, শ্রশানকাঠে, অর্থানে অথবা লেহিপাতে, বিধিক্রমে যন্ত্র অভিত করিতে কর্গবেশ অক্তপ্রকার যন্ত্রান্ধণপ্রশালী এই—প্রথমত বটকোণ অভিত কার্যা ভাহার বাহে ক্রিকোণত্রর অভিতকরিবে, ভাহার বাহে বৃত্ত, অট-দল পদ্ম ও চতুর্যার লিখিয়া যন্ত্র অভিতকরিবে।

গারে পীঠপুজা করিবে, কর্নিকাতে ও আধারশক্তরে নথঃ,
এইরুপে প্রাকৃতি, কুর্মার, শেষার, পৃথিবৈন, ক্ষাত্ধরে, মণিদীপার
ডিস্তান্দিগৃহার শাণানার পারিজাভার নমঃ, তল্পধ্যে রত্তবিকাইরু,
ভাষান উপরি মণিদীঠার চতুর্দিকে মুনিভাঃ, ধেষেভাঃ শিশাভাঃ

ज्यात्र माथकम्ब्यः। छ्यूर्फिक् यूनीन् (मवान् भिवार्भ्ड भवम् धकान्। धर्मानाधर्मानीः एक छानि द्यै खानाबादन नगः। हेठा छः नः शृजा (कगत्त्र शृक्तिं निक्तिंग शृक्ताः । रेष्टा खाना किया हिव कामिनी कामपायिनी। त्रजीतिक-थियां नमा यथा हित यतायानी। मर्वे अथाता मिन या-হত্তেন পূজয়েৎ। ততুপরি হেদীঃ দদাশিবমহাপ্রেতপদ্মাদনায় नमः। शीर्राणां उत्र ७ तन्थर किथुजा। उठः भूनर्शाषा शूश्राक्षानिभाषाय मूलमञ्जक ज्ञिङमूर्खा वावाश्यः । उ एए विभि ভক্তিञ्चल ে পরিবারসমন্বিতে। যাবত্তাং পুজয়িষ্যামি তাবত্তং স্থান্থির। ভব। ততোমূলমুচ্চার্য্যামুকি দেবি ইহাবহ ইহাবহ ইহ তিষ্ঠ তিষ্ঠ ইহ সন্নিধেহি ইহ সন্নিহিতা ভব। ততোত্মিত্যবগুঠ্যাঙ্গমন্ত্রঃ সকলীকৃত্য পরমীকরণমুদ্রমা পরমীকৃত্য ভূতিভাকর্ষণীযোনিমুদ্রাঃ প্রদর্শ্য প্রাণপ্রতিষ্ঠাং कूर्यार। यथा लिनिश्नियुक्या जाः दी काँ रःमः वीमिकिनकावाः थाना देर थानाः। वामिजािन অমুকদেবতায়া জীব ইহ স্থিতঃ। আমিক্যাদি অমুক-দেবতায়া: मर्द्विखियानि। व्याभिजानि व्याकरनवजाया বাদ্মনশ্চকুঃশ্রোত্রঘাণপ্রাণা ইহাগত্য স্থৎ চিরং তিষ্ঠস্ত

भवस्ति छाः, धर्षात्र, क्षांनात्र, देनताशात्र, धेषगात्र, व्यथ्यात्र, क्षकानात्र, किराशात्र, किराशात्र, किराशात्र, कर्मात्र दक्षणात्र, क्षांनात्र, कर्मात्र क्षांनात्र, कर्मात्र कर्मात्

यादा। ইত্যানেন প্রাণপ্রতিষ্ঠাং বিধায় মূলেন পাদ্যা-मिणिः शृक्तरम् । তত क्यः—वार्षा मृतमूक्तांम जन् शामाः जामूक दाव जादेश नमः। धावमर्शः वाद्रशः विक्राह-यनीयः यथा। यानीयः निर्वनग्रामि। युनद्राहमनीयः श्रधा। ध्रघगरका नगः। এতানি পুপানি वौषष् ততোমূলেন পঞ্চপাঞ্জলিং দত্তা ধুপদীপো দদ্যাৎ। বন-ज्लाजीजाि लिठन् यूलयूकार्या ध्रध्राता नयः। मीलयख्र স্থাকাশোমহাদীপঃ দর্বতিন্তিমিরাপহঃ। দ্বাহ্যাভ্যন্তরং জ্যোতিদীপোহ্যৎ প্রতিগৃহতাৎ। মূলমুচ্চার্য্য এষ দীপো नमः। ততঃ ওঁ জয়ধ্বনি মন্ত্রমাতঃ স্ব্যাহেতি ঘণ্টাৎ সংপূজ্য वायश्खन वामग्रन् नीरिव्ध् भः मञ्जा मृष्टिभर्याखः मीभः मम्मा । ততোমুলেন পুষ্পাঞ্জলিতায়ং দত্তা যথোপপন্থ নৈবেদাৎ ममार। তত-আবরণপূজাৎ কুর্য্যাৎ। শ্রীঅমুকি দেবি আবরণং তে পূজ্য়ামি ইত্যাজ্ঞাং গৃহীয়া কেশরেষু অগ্ন্যাদি-(कार्णयू ७ इगँ क्रम्याग्न नमः। ७ इौँ शिवरम स्राहा। उँ द्वाँ निशारिय वषष्। उँ द्विः कवष्टाय छ। उँ द्वीँ निख्ञां द्योषि ठकूर्षिक् उँ दः व्याग करे। विहः यहे (कार्ण उँ कार्ला नमः। मर्वज धार्गाष्ट्रि नरमाश्रखन পূজয়েৎ। कপालिटिश क्चारिश क्कक्चारिश विद्राधिरिश विश्विष्ठिल्दि उश्रादेश छश्रश्राद्य नीश्रादेश हेण्डला । कतित्व। कामसत्त भूनकात भागकिता भूकाश्वामश्रक मूनमञ्ज कशिक मृर्किएक व्यागहनकतिरम। अमस्त ग्रांक मूला धार्मनकतिया म्रालय लिथिड खनाली कृष्म जानशकिष्ठामि । नामामि डेन्टार्य भूमा-वर्गास कतिए इहेरव। उद्यद्भ मृत्यत गिथित नात्म कावन्य (प्रकात श्रुका कतित्व । शक्त, शूष्ण धूष, तीष व त्नित्वमा वहें भरकाष्ठात्व वंहे षायमण উনীলামৈ এবং ঘনামৈ বলাকায়ে। ইতি বিতীয়ত্তালে।
এবং মাত্রায়ে মুদ্রায়ে মিতায়ে। ইতি তৃতীয়ত্তালে।
ভঁ সর্বাঃ শ্রামা অসিকরা মুগুমালাবিভূষিতাঃ। তর্জনীং
বামহন্তেন ধারয়ন্তাঃ শুচিম্মিতাঃ। দিগস্তরা হসমুখাঃ
ব্রুষ্বাহনভূষিতাঃ। এবং ধ্যাছা অর্চয়েৎ। ততাহন্তীপত্রেয়ু পূর্বাদিক্রমেণ ওঁ ত্রাইল্যা নমঃ এবং নারায়িশ্য
মাহেশইর্য চাম্গুরি কৌমার্য্য অপরাজিতায়ে বারাই্য
নারসিংছে। এতাঃ গন্ধাদিভিঃ পূজ্য়েং। পত্রায়ে
অসিতাঙ্গাদিভিরবান্ পূজ্য়েং। ততােমুলেন পূজ্পাঞ্চলিত্রয়ং দ্বা পাদ্যাদিনা মহাকালং পূজ্য়েং। তত্য ধ্যানং।
মহাকালং যজেদেব্যা দক্ষিণে ধূত্রবর্ণকং। বিভ্রতং দশুঘট্বাঙ্গৌ দংক্টাভীমমুখং শিশুং। ব্যাত্রচর্মার্তকটীং তুন্দিলং
রক্তবাসসং। তিনেত্রমূদ্ধকেশক মুগুমালাবিভূষিতং। জটাভারলসচন্তর্মগণ্ডমুগ্রং জলন্ধিভং। তথাচ কুমারীকর্লো—

দেবতার পূলা করা কর্ত্বা। তৎপরে পলাতো ও অণিতালার ভৈরবার নমঃ, ও ক্রবে ভৈরবার নমঃ, ও চণ্ডার ভৈরবার নমঃ, ও জোধার-ভৈরবার নমঃ ও উন্মন্তার ভৈরবার নমঃ, ও কপালিনে ভৈরবার নমঃ। এইরূপে অষ্ট ভৈরবের পূলা করিরা মহাকাল ভৈরবের পূলা করিবে। মহাকাল ভৈরবের পূলা করিবে। মহাকাল ভৈরবের প্লা করিবে। মহাকাল ভিরবের আরুতি এইরূপ—মহাকাল ভৈরব দেবীর দক্ষিণভাগে বিদামান-আছেন, ইনি ধ্রবর্ণ এবং দণ্ড ও ঘটাল ধারণকরেন। ইলার বদন করাল, দল্জ অভিজ্ঞানর হইরাছে, কটিদেশ ব্যাস্থ্যক্রি আবৃত্ত, উদর অভিত্রল, পরিধান রক্ত বন্তু, ইনি জিন্তুন, ইলার কেশগুলি উর্মুণ্থ হইরা রছিন্ত্রাণ প্রদাশ মুন্তুমালা এবং মন্তক্তের চতুর্দিকে অটাগুলি বিকীর্ণ হইরা। প্রদাশে মুন্তুমালা এবং মন্তক্তের চতুর্দিকে অটাগুলি বিকীর্ণ হইরা। প্রদাশে মুন্তুমালা এবং মন্তক্তের চতুর্দিকে অটাগুলি বিকীর্ণ হইরা। পাড়িরাছে। ভাহাতে ক্রপালহিত অর্ক্তিক্ত প্রকাশ পাইডেলের

(मित्रांख मिकित्न जात्रा महाकानः श्राप्ताः है जि याः नाः लाः वाः एकाः महाकालि छत्रवं मर्विविद्यान् नाम्य नामग्र हीँ औँ कि याश। हेजातन शामामि जिन्नाताथा जिस्परिया मूरलन पितीः परकापठारैतः पृक्तस्य । ज्याह काली जा - यहां को लः या जा प्राची । अन्ति प्राची श्री अश्रिक रिव । कालीकद्रा—कविष् एक्षे ममूक्छा यार तार लार वार ह क्रान्ड । यहाकाल रे जत्वि नर्विष्ठा भाषा । नागरां जि भूनः तथां गांगः लक्षीः ममूक्तरा ए ए স্বাহয়া সমাযুক্তো মন্ত্ৰঃ স্ব্ৰাৰ্থনাধকঃ। ততো দেব্যা অন্ত্ৰং পূজয়েৎ। তথাচ কালীহৃদয়ে—দেবীবামোদ্ধাধোহন্তে খড়গং मू ७४ शृक्त रहि । (पर्या पर्कर खार्का भः शृक्त रहि यह । उटा मितीर धांषा यथामिक जञ्जा खद्या ठी जा मिना मित्रा वागरेख জপং সমর্প্য আত্মসমর্পণং কুর্য্যাৎ। চুল্লুকোদক মাদায় ওঁ ইতঃ-পূর্ববং প্রাণবুদ্ধিদেহধর্মাধিকারতো জাগ্রৎস্বপ্নস্থপুত্রবস্থান্থ কর্মণা বাচা হস্তাভ্যাৎ পদ্যামুদরেণ শিশা যৎকৃতং যত্নতং

ইনি অতিউত্তান্তি, ইহার দেহকান্তি অধির ভার আঅলামান। এই প্রকারে মহাকালের রূপ চিন্তাকরত ধ্যানকরিরা মৃলের লিখিত হ ক্ষেত্রি ইত্যাদি মাত্র প্রাকরিবে। পরে মৃলমন্ত উচ্চারণ করিয়া প্রীদক্ষিণ কালিকাদেবীং ভর্পরামি আলা, এই মত্রে তিনবার ভর্পনকরিয়া গছাদি পঞোপচারে দেবীর পূজা করিবে। মহাকাল ভৈরবের পূজাবিবরে অভাভ তরের প্রমাণ মৃলে উদ্ধৃত করা হইরাছে। তৎপরে অত্রপূজা করিতে হইবে। দেবীর বামভাগের উর্জহন্তে ও অভ্যায় নমঃ, অবৈ হতে ও মৃতার নমঃ দক্ষিণভাগের উর্জহন্তে ও অভ্যায় নমঃ এবং অবৈ হতে ও ব্রায় নমঃ। এইরূপে অত্রপূজা করিয়া ছৎপত্মধ্যা দেবীকে চিন্তাকরিতে করিতে ব্রায় নমঃ। এইরূপে অত্রপূজা করিয়া ছৎপত্মধ্যা দেবীকে

তৎসর্কাং ব্রহ্মার্পণং ভবতু মাং মদীয়ং সকলং শ্রীদক্ষিণকালিকায়ৈ সমর্পিতং। ইতি দৈব্যে সমর্পয়েও। তথাচ
স্বতন্ত্রে—ততঃ পুনর্শলদেবীং মুদ্রাতর্পণপূজনৈঃ। অর্চয়েত্রা
জপং কৃত্যা নত্বা বিসর্জয়েও হৃদি। জপকাল চ কর্পয়রুক্তা
জিহ্বা কার্যা। তথাচ—কর্পয়াত্যা সদা জিহ্বা কর্ত্বয়া
জপকর্মণি। ইতি বিশ্বসারবচনাও। ইনং কাম্যজপএবেতি।
ততঃ স্তত্বা প্রদক্ষিণীক্ত্যাফীক্পরণামং কৃত্বা শ্রীজগন্মকলং
নাম কবচং পঠেও। তত আবরণদেবতা দেব্যা অক্ষে
বিলাপ্য সংহারমুদ্রয়া অমুকি দেবি ক্ষমন্ব ইতি বিস্তজ্য
তত্তেজঃ পুলেণ সমং সহাদ্যারোপয়েও। ওঁ উত্তরে শিথরে
দেবি ভ্রমাং পর্বতবাসিনি। ব্রক্ষযোনিসমুৎপ্রেম গচ্ছ দেবি
মমান্তরমিতি মন্ত্রেণ। ততন্তরৈবেদ্যং কিঞ্চিত্রটিইটিচাণালিকৈ নমঃ ইত্যেশাত্যাং দিশি দত্ত্বা শেষমিকেভ্যো দত্ত্বা
কিঞ্চিও স্বীকৃত্য পাদোদকং পীত্বা নির্ম্মাল্যৎ শিরসি বিশ্বত্য

যথেকং বিহরেদিতি। ততোযন্ত্রলেপং বামহন্তে কুষা দব্যহন্তকনিষ্ঠয়া মায়াবীজং বিলিখ্য তয়া তিলকং কুর্যাং। তথাচ—বামে কৃষা যন্ত্রলেপং মায়াং দব্যকনিষ্ঠয়া। বিলিখ্য তিলকং কুর্যান্মন্ত্রেণানেন সাধকঃ। ওঁ যং যং স্পৃশামি পাদ্যাভ্যাং যো মাং পশ্যতি চক্ষ্মা। দএব দাসতাং যাত্র রাজানো ত্রক্তিমন্তর ততো ম্লেনান্টোত্তরশতাভিমন্ত্রিতং পুসাং চন্দনক্ষ ধুয়া ত্রৈলোক্যং বশমানয়েং। সর্ববিদ্ধিয়তো ভূষা ভিরবো বংসরান্তবেং। অত্য পুরশ্চরণং লক্ষ্মন্ত্রা ভূষা ভিরবো বংসরান্তবেং। অত্য পুরশ্চরণং লক্ষ্মন্তা ভূষা ভিরবো বংসরান্তবেং। অত্য পুরশ্চরণং লক্ষ্মন্তা। তথাচ কালীতন্ত্রে—লক্ষমেকং জপেমন্ত্রী হবিষ্যাশী দিবা শুচিঃ। রাত্রো তাম্বল্পরাত্যঃ শয্যায়াং লক্ষ্মানতঃ। ব্যবস্থামাহ শতন্ত্রে—দিবা লক্ষং শুচিভূ ত্রা হবিষ্যাশী জপেমরঃ। ততন্তত্তদশাংশেন হোমন্ত্রেদ্ধবিষা প্রিয়ে। অত্যক্তিশ্য কালান্তরমাহ নীলসারশ্বতে—লক্ষমেকং জপেমন্ত্রং হবিষ্যাশা দিবা শুচিঃ। অশুচিশ্চ তথা রাত্রো

নির্মাণ্য গ্রহণকরিয়া যথেক বিহারকরিবে। অনন্তর মন্ত্রণে চলান বামকতে লইয়া ভাহাতে দক্ষিণহত্তের কনিষ্ঠায়ার। ব্রাং এই বীঞ্জ লিখিয়া সেই চলান্যারা ও বং বং লগুলামি পাণাভ্যাং ইঙ্যালি মত্রে কাপালে ভিলক করিবে। তৎপরে নির্মাণা চলান ও পূলা মটোভরলভানার মূল মত্রে অভিমন্ত্রিভকরিয়া মতকে ধারণকরিবে। এই প্রকারে সংবৎসর পর্যান্ত দেবীর অপরাধনা করিলে সাধক স্বানি কিযুক্ত হইয়া ত্রিভ্নন; মুলীল্ছুভ করিতে পারে। এই মত্রের পূর্ণচরণে তৃই লক্ষ জপকরিতে হয়। কালীভরে লিখিত আছে যে, সাধক দিবাতে গুটি ও হবিয়ালী হইয়া এক লক্ষ মত্র অপকরিবে। এবং রাত্রিকালে ভার্লপূর্বম্বে শ্রাত্তে উপবিশ্ব হইয়া এক লক্ষ অপকরিবে এবং অপাত্তে অপের ম্লাংশালয়ের মুড্বারা হোমকরি:ত হইবে। এই পুরশ্রেণবিশ্ব নীল্নার্ম্বতে ও কুমারী

मकरमकः उरेथव छ। मनाः नः रहामरमञ्जी उर्नामाञ्ज (सहरय्र । देखि मान्ध्रामाधिकाः। वखाउख क्यातीक ह्या क लक्षरमकः जल्लिबिमाः इिवधाना मिवा छि:। त्रांखी তামুলপুরাস্তঃ শ্যায়াং লক্ষ্যানতঃ। রাত্রিজপে তু व्यथरम यात्म তৃতীयপ্রহরাবধি। निশায়াস্ত প্রজপ্রব্যং রাজিশেষে জপেরহি। এবং লক্ষর্যং জপ্তা তদশাংশেন यञ्जविए। व्ययुक्तः दश्यायाप्यनी निवाताजिविद्यनकः। वष्ठ-নেন দিবা লকং জপ্ত। তদশাংশং হোসং কুর্ঘাৎ। রাজী नकः ज्ञातातो जस्मार्भः द्या क्र्यापिति त्रकार्थः। विजानीया मर्त्वयार निवाविधितिरहो । भूमानाक তথা প্রোক্তং রাত্রাবিষ্টং মহাফলং। অন্তর্ত্র প্রজপে-माञ्चर नरू दार्छो कर्नाठन। ग्राभा ११३ शूत्रभ्ठत्रनाञ्चाक्रान-ভোজনং হবিষ্যান্ধেন কার্য়িতব্যং। তথাচ শিশ্বসারে— लक्षाकः जिल्ला इवियाना मिना छि:। उज्ञ क्रम्भाः ट्रायराक्रिया थिए। क्रियं क्रियं क्रियं তীর্থতোয়েন পার্ববর্তাং। মধুনা বা দিতামিশ্রতোয়েন পর-মেশ্বরি। দেবীঞাভিষিচেভোয়েস্তর্পণস্ত দশাংশতঃ। তদ-

তম্মত্তিতে যেস্কল প্রমাণ লিখিত আছে, সেইস্কল প্রমাণ এইস্থলে উচ্ত করা হইয়ছে। রাত্রিলপের বিশেষ নিয়ম এই—রাত্রিয় প্রথম শেষর গত হইলে তৃতীর প্রহরণর্যান্ত জপক্ষিকে, কিন্তু রাত্রির শেষভাগে ক্ষপক্রিকে না। দিখাতে একলক জপক্রিয়া দিবাভাগেই দশসহজ্র হোমক্ষিকে এবং রাত্রিভে একলক জপক্রিয়া রাত্রিকালেই ক্ষণেশ্ল ক্ষাংশসংখ্যার হোমক্ষিত্তে হটুবে। ব্রাহ্মণাদির পক্ষে দিবাতে এবং শৃজ্যের পক্ষে রাত্রিতে জনহোমাদি কার্যা প্রশক্ত। ক্ষপ্তান্ত দেবহাব শাংশং হবিষ্যাদৈর্ভক্তিতো ভোজয়েদ্বিজান্। কালীমন্ত্রবিদাে মন্ত্রী দক্ষিণাং গুরবে বিশেদিতি। পাশবং কবিতং
কল্পং শৃণু বীরং ততঃ প্রিয়ে। রাজ্রী তাম্লপুরাস্তঃ
শয্যায়াং লক্ষমানতঃ। জপ্তা দমাহিতোমন্ত্রী হোদয়েহ
কল্লিতানলে। কালাকুলার্ণবে — পাশবেন তু কল্পেন লক্ষং
জপ্যাৎ সমাহিতঃ। দিব্যগুরুমুখাল্লক্বা কালিকাং দিব্যরূপিনাং। লক্ষং জপ্যাৎ দদা মন্ত্রী বীরকল্পেন সাধকঃ।
বিশ্বসারে — প্রজপেৎ পর্যা ভক্ত্যা লক্ষমেকং দিবানিশং।
যতু কুমারীকল্পে — লক্ষমেকং জপেমন্ত্রেং হবিষ্যাশী দিবাশুচিঃ। রাজ্রী তাম্লপুরাস্তঃ শয্যায়াং লক্ষমানতঃ।
এবং লক্ষ্বয়ং জপ্তা তদ্দশাংশেন মন্ত্রবিং। ইতি বচনাৎ
লক্ষ্বয়্ম্ম বিশিষ্টম্ম পুরশ্চরণমিতি। তন্ধ পূর্কোক্রবচনবিরোধাৎ। এত্রচনম্ম পুরশ্চরণদ্বয়ে ভাৎপর্যাং॥

ष्यथ मञ्जाद्याः। वर्गामाः विक्रमरयूक् त्रिविन्द्र-

মন্ত্রপ্রশ্বনে দিবাতেই জপজোমাদি করিবে, রাজিকালে জপাদি করিবে
না। দক্ষিণকালিকার মন্ত্রশুন্তনে হবিষার্থারা ব্রাহ্মণ ভোজনকরাটবে। বিখনারতন্ত্রের লিখিত বচনে জানা যায় যে, জপের দশাংশ হোম,
হোমের দশাংশ ভর্পণ, ভর্পণের দশাংশ অভিষেক এবং অভিষেকের দশাংশ
ব্রাহ্মণ ভোজনকরাইবে। এইরূপে কার্য্যসকল করিছা ওরুকে দক্ষিণা
ব্রাহ্মণ জেলনকরাইবে। এইরূপে কার্য্যসকল করিছা ওরুকে দক্ষিণা
ব্রাহ্মণিক্রিক কর্ম সাল করিবে। এইরূপ প্রশ্বরণ প্রাচ্মবিহিত,
বীরাচারিলিণের বিশেষ আছে, বীরাচারী সাধক রাজিকালে জাপন
প্রাত্তে স্থান্য ভাত্যপ্র্যুথে এক লক্ষ অপক্রিষে। প্রভরণবিষ্ধে
অস্তান্ত ভ্রেন্ত বচন এইছলে মূলে উদ্ধৃত করা হইরাছে। ভাগভেই
প্রশ্বনের বিষয় বিশেষ পরিজ্ঞাত হইবে।

मिन्निमानिमादियोत सर्वास यस धरे—"क्री" धरेति अमानत यस.

বিস্থিতং। একাকরে। মহামন্ত্রঃ সর্বেকামফলপ্রদাং। ত্রিগুণা
তু বিশেষেণ সর্ববশাস্ত্রপ্রবেধিনী ॥ অনয়োঃ পূজাপ্রয়োগঃ।
প্রাভঃকৃত্যাদি প্রাণায়ামান্তং বিধায় পূর্ব্বোক্তথাবিচ্ছদ্দোদেবতা বিশ্বস্ত (১৫৮ পৃ) বর্ণস্থাদাং কৃষা করাজস্থাদো
কুর্যাৎ। যথা—ওঁ জা। অঙ্গুজান্তাং নমঃ। ওঁ জীঁ
তর্জনীন্তাং স্বাহা ইত্যাদি। এবং ওঁ জাঁ হুদয়ায় নমঃ
ইত্যাদি। তথা চ বীরতন্ত্রে—দীর্ঘষ্ট্কমৃত্যাদ্যেন প্রণবাদ্যেন
কল্পরেৎ। ষড়ঙ্গানি মনোরস্থ জাতিযুক্তেন দেশিকঃ॥
অন্তৎ সর্বং পূর্ববৎ কার্য্যং। একাক্ষরস্থ ধ্যানং দিজেশ্বরতত্ত্বে—শ্বারুঢ়াং মহাভীমাং ঘোরদংক্রাং বরপ্রদং। হাস্তযুক্তাং ত্রিনেত্রাঞ্চ কপালকর্ত্বাকরাং। মৃক্তকেশীৎ
ললক্জিহ্বাং পিবস্তীৎ কৃধিরং মৃত্য়। চতুর্ব্বান্ত্যুত্রাৎ দেবীং

এই মন্ত্র সাধককে অভিল বৈত কণা প্রানানকরে। ত্রীং এই একটি অন্ত একাকর মন্ত্র, এই মন্ত্রে, কালিকার আরাধনা করিলে সাধক সক্ষণান্ত্রে ক্তান লাভকরিতে পারে। এই বিবিধ মন্ত্রের পূলাপণালী এই—প্রথমে সামান্যপূলাপদ্ধতির লিখিত নির্মান্থলারে প্রাভঃকাণাদি প্রাণায়াম-পর্যন্ত কার্যাসকল করিয়া প্রেলাক খ্বাাদিকাস করিবে, তৎপরে করাল-স্থাস করিতে ক্টুবে। প্রথম মন্ত্রে ক ক্রাং অস্টাভাাং নমঃ ইত্যদি, বিতীয় মন্ত্রে ক ব্রাং অস্টাভাাং নমঃ ইত্যাদিরপে করালকাস করিখে। এই প্রার্থ অক্তান্ত সকল কার্যাই পূর্কবং জানিবে। কেবল খ্যানের বিশেষ আছে, উক্ত মন্ত্রবন্ধে পূলা করিছে ক্টলে এই প্রকারে রূপ চিন্তাক্রিবে। ক্রেরী শ্বারুঢ়া, ভরভরাক্তি, তীষ্ণদন্তা, বরপ্রদাননির্বা, হাভব্দনা ও ঝিনরনা, ইহার কেশগুলি আল্লানিত ও লোল জিহ্বা। ইনি প্নঃ প্নঃ ক্রির্বা পানকরেন। দেবীর চারি হত্ত, ঐ সকল হত্তে নরমূত্য, ব্যক্তর্য 6 স্পত্রমূলা ভাছে। উক্ত বিবিধ একাকর মন্ত্রের পুরশ্বেরণ একলক জণ বরাভ্যকরাং স্মরেৎ॥ অনয়োঃ পুরশ্চরণং লক্ষজপঃ।
তথাচ দিক্ষেরতন্ত্রে—এবং ধ্যাত্বা জপেনাত্রং লক্ষমেকং
বিধানতঃ। তদ্দশাংশং বিধানেন হোময়েৎ দাধকোত্তমঃ॥
কুলচ্ডামণো—এবং ধ্যাত্বা জপেনাত্রং হবিষ্যানী দিবা শুটিঃ।
লক্ষং রাত্রো তথা লক্ষং মহাশোচপরায়ণঃ। রাত্রো জপৈকুমাত্রেণ দক্ষিণা দিদ্ধিদা ভবেৎ॥

অথ পুরশ্চরণং। যোগিনীহৃদয়ে—গুরোরাজ্ঞাৎ সমাদায় শুদ্ধান্তঃকরণো নরঃ। ততঃ পুর্ণান্তয়াং কুর্যানাজ্ঞসংসিদ্ধিকাম্যয়া। জীবহানো যথা দেহা সর্বকর্ময় ন ক্ষমঃ।
পুরশ্চরণহানোহপি তথা মন্তঃ প্রকীর্তিতঃ। তত্মাদাদে

য়য়ৎ কুর্যয়াদ্ভরুং বা কারয়েদ্বয়ঃ। যোগিনীহৃদয়ে—
গুরোরভারে বিপ্রং বা সর্বপ্রাণিহিতে রতং। স্লিয়ং শাস্ত্রবিদৎ মিয়ং নানাগুণসমন্বিতম্। স্লিয়ং বা সগুণোপেতাং
সপুত্রাং বিনিযোজয়েও। আদে পুর্রজয়াং কর্তুং স্থান-

করিতে হয়। উক্ত প্রশ্চরণবিষয়ে সিদ্ধেরতথে লিখিত আছে থে. দেবতার ধান করিয়া একলক মন্ত্র জণকবিবে এবং বিধানক্রমে অপের দশাংশসংখ্যার হোমকরিবে। কুলচ্ডামণিতে লিখিত আছে থে. হবিষাানী সাধক গুচি হইয়া দিবাতে একলক এবং রাত্রিতে একলক জল করিবে।

परेक्न भूत-ध्रमिशिक विश्व इहेएडएड, यात्रिनीश्वर निश्व कार्ड् यि. माधक छक्त आक्षाल्माद्र छक्षाञ्चः कत्रन इहेता मञ्जनिकिकामनाम भूत-ध्रम किंद्रिय। जीवनिविधेन त्मर दिमन मसकार्या जन्छ, शूत-भुत्र-धरीन मञ्ज त्मरेक्त निक्षिणात्म जन्म। जाउध्य मञ्जल किंद्रिया क्ष्म ना छक्षाया भूतक्तिन किंद्रिय। छक्त जाउध्य जाउद्यक्ष ध्रम्माली वाक्षन निष्ठा ध्रम्मानिनी श्रीश्वरूष भूतकत्मकार्या निर्माण्ड

বির্মি উচ্যতে। গোডমীয়ে—পুণাক্ষেত্রং নদীতীরং গুহা
পর্বভমন্তকম্। তার্ধপ্রদেশাঃ সিদ্ধুনাং সঙ্গমঃ পাবনং
নহং। উদ্যানানি বিবিক্তানি বিল্লম্বাং তটং গিরেঃ।
তুলদীকাননং গোঠং র্ষণ্ডাং শিবালয়ম্। অর্থামলকীমূলং গোশালাজলমধ্যতঃ। দেবতায়তনং কুলং সমুদ্রস্থ
নিজালয়ম্। সাধনেয় প্রশস্তানি স্থানাভোতানি মন্ত্রিণাম্।
সূর্যস্থায়ে ত রোরিন্দোর্দীপদ্য চ জলদ্য চ। বিপ্রাণাঞ্চ
গবাক্ষেব সন্নিধো শদ্যতে জপঃ। অথবা নিবদেতত্ত্র যত্ত্র
চিত্তং প্রদীদতি। তথা—গৃহে শতগুণং বিদ্যাদ্গোঠে
লক্ষ্ত্রণং ভবেং। কোটির্দেবালয়ে পুণ্যমনস্তং শিবদনিধো। ব্রজ্যামলে—জপ্রমেকগুণং গেহে গোঠে দশগুণং স্মৃতম্। বনান্তরে শতগুণং তড়াগে চ মহক্রকং।
নদীতীরে লক্ষ্ণণং নগাগ্রে কোটিদ্যিতং। শিবালয়ে
কোটিশত্যনন্তং গুরুদ্মিধো। তথা—গৃহে গোঠবনারা-

कतिएक भारत । श्रान्तवनकार्यात व्यथ्य द्वाननिर्ध कावक्रक । श्र्वातक्त, ननीकीत, खरा, भन्नाक्त উপরिकाश, छीर्थ्य ननीमक्षमञ्चन,
छमान, निर्कानशान, विवश्य भन्निक्त प्रविक्र , ज्वामीकानन (शार्ष्ठ, त्वण्य
भिवानत, क्ष्में ता कामनकी तृरक्त भून, श्राक्षाना, त्वानत, क्षम्यस्य,
समूक्रकीत, छ निव्यव्य माध्मकार्या এই সকলशान व्याप्त । स्या, क्षित,
छम, ठळा, व्यविष, क्ष्मा, व्याप्त । १८०१ वह मकर्मत माध्यान क्ष्म क्रित्व
छारा क्ष्मव्यम रहा। व्यव्या (यञ्चान मन व्याप्त शारक वहेत्रभ शान महनाभीक क्रित्रा श्राम्वव्या विक्रिकार्य क्रित्व। च्यार विषय क्षम् क्रित्व
व्यक्त क्ष्म रहा। व्यव्या (व्याप्त प्रवाद । च्यार विषय क्षम् क्ष्मित्व
व्यक्त क्ष्म रहा। व्यव्या (व्याप्त) क्ष्मित्व। व्यव्यक्त क्षम् रहेत्।

মনদীনগশিবালয়ে। গুরোর্বা সিয়ধো য়ত্র স জপঃ পরমো
মতঃ। মেচ্ছছুইমুগব্যাল-শক্কাতক্ষবিবর্জ্জিতে। একান্তপাবনে নিন্দারহিতে ভক্তিসংযুতে। স্বদেশে ধার্মিকে
দেশে স্থভিকে নিরুপদ্রবে। রম্যে ভক্তজনস্থানে নিবসেভাপদঃ প্রিয়ে। গুরুণাং সিমধানে চ চিত্রৈকাগ্রন্থলে
তথা। এষামন্ততমং স্থানমাপ্রিত্য জপমাচরেৎ। য়ত্র
গ্রামে জপেমান্ত্রী তত্র কৃর্মাং বিচিন্তয়েৎ। গোতমীয়ে—
পর্বতে সিন্ধৃতীরে বা প্ণ্যারণ্যে নদাতটে। যদি কুর্যাৎ
পুরুশ্চর্যাৎ তত্র কৃর্মাং ন চিন্তয়েৎ। গ্রামে বা যদি বা বাস্তো
গৃহে তথ্ বিচিন্তয়েৎ। অথ পুরুশ্চরণে ভক্ষ্যাদিনিয়মঃ।
গোতমীয়ে—পুরশ্চরণকৃর্মন্ত্রী ভক্ষ্যাভক্ষ্যং বিভাবয়েৎ।
অন্তথা ভোজনান্দোষাৎ সিদ্ধিহানিঃ প্রজায়তে। শস্তামঞ্চ
সমশ্রীয়ামান্ত্রসিদ্ধিসমীহয়া। তথামিত্যৎ প্রযুক্তে গব্যং
তবেষরঃ। অগস্ত্যুসংহিতায়াং—দধি ক্ষীরং য়তৎ গব্যং

পর্কার্ত্রে কোটিগুণ, শিবালয়ে শতকোটিগুণ এবং গুরুসরিধানে অপ করিলে অনস্ক ফল হর। স্লেছাক্রাপ্ত ও মুগদর্পাদিভরাকুলখান পরি-ভ্যাগ করিয়া, পবিত্র অনিক্ষনীয় ভক্তিযুক্তস্থানে, অদেশে, ধার্মিকাধিটিভ ছানে, স্থতিক প্রদেশে, নিরুপত্রব স্থানে, ও ভক্তজনের আবাদ প্রদেশে ভাপসবাক্তি বসতি করিবে। আর যে স্থানে চিত্তের একাগ্রতা হয়, এইরূপ স্থানে গুরুসরিধানে অপকরিবে। স্থগ্রামে অপ করিতে হইলে কুর্ম্বচক্রাম্পারে স্থান মনোনীত করিয়া লইবে। গৌত-মীয় ভল্লে লিখিভ আছে ধে, পর্বাতে ও নদীভীরে অপ করিলে কুর্ম্বচক্র বিচার করিতে হয় না। প্রশ্বেশকালে ভক্ষাদির নিয়ম করিবে, অভ্যন্ধ। ভক্ষা নোবে সিদ্বিকার্য্যের হানি হয়। অভ্যন্ব ক্রিয়োলে প্রশন্ত ভেজনন করিবে। অগত্বসংহিভার লিখিত আছে বে, পরা দ্বি, ত্রু ও হুত, ইকু

क्रिकारः खड्विकिङ। जिलारेक्टव मिठागूमभाः कमार (क्यूक्विक्किल्। नातिरकल्यल्यक्वर्थव कमली लवनी कथा। वाज्यागमकरिक्य भनमक इती की। उकात्र ध्रमस्क हविषाः यनाए वृदेशः। बाजाखन्न हेजि। दिमाखिकः সিতাস্বিমং ধান্যং যুদগান্তিলা যবাঃ। কলায়কঙ্কনীবারা वास्त्र कः हिल्पािकित। यष्ट्रिका किलाकिक मूलकः (क्यूरक्छत्र । लगर्ग मिस्रवमायूर् गरग्र ह परिमर्निषी। পয়োকুদ্ধ তুসারঞ্চ প্রসাত্রহরীতকী। পিপ্পলী জীরককৈব नागत्रक्रकि छिड़ी। कमली लवनी थां जी कलाग्र ७ एरेनक्रवः। অতৈলপকং মুনয়ে। হবিষ্যান্ধং প্রচক্ষতে। ভূঞানো বা श्विषाञ्चः भाकः यावकत्यव व।। भएयामूलः कनः वाभि यक यकाপमञाद्य। त्रस्राकमः विसिष्किः कर्ममानांभत्र-क्रकः। क्लात्नाजानि (ভाजानि এভোইনানি বিবর্জয়েং। यञ् याशिनी जा — िकाक ना निका ना कः कलायः लकू हर তথা। कमन्नः नातिकाम खण् बण् कृत्राधकः छाज् ।

চিনী, তিল, খেত মুগ, কেম্কভির মুগ. নারিকেল, কদলী, লোণাকল, আত্র, আথলকী, কাঁঠাল ও হরীভকী এই দকল এবা হবিবো প্রশন্ত। প্রভালাক, হৈমজিকথাল, মুগ, তিল, কলাই, কাকনীদান, উড়ীধানা, বেতো শাক, সৈহব, দধি, মুভ, অহুক্তসার ত্র্য, কাঠাল, আত্র, হরীভকী, শিল্পনী, আরক, নাগরল, ভিজিড়ী, কদলী, লোণা, আমলকী, গুড়ভির ইক্ষাভ প্রবা, ও অভৈলপত্ত বস্তু এই দকল প্রব্য সুনিগণ হবিষ্যার বলেন। এইরূপ হবিষ্যার ভোজনকরিয়া প্রশংরণ করিবে, আর পাক, বাবক, ছ্যু, মুল, ফল, রন্তা, ভিজিড়ী, কমলা, ও নাগরল, প্রশংগকালে এই দকল কল ভোজনকরিছে পারে, এভত্তির কল অভোজা। যোগিলী ভারে যে ভেড্ল, নালিভাশাক, কলার, ডহু, কদৰ, নারিকেল ও কুয়াও

ততু ব্রতান্তরে বোধাং। অথ বর্জ্যানি। বিবর্জয়েয়য় কারং
লবণং তৈলমেব চ। তাম্বং কাংশ্যপাত্রঞ্চ দিবাভোজনমেব চ। তথা—ক্ষারঞ্চ লবণং মাংসং গৃঞ্জনং কাংশ্যভোজনং। মাধাঢ়কী মদূরাংশ্চ কোদ্রবাংশ্চনকানিপি।
অন্ধং পর্যু নিতকৈব নিম্নেহং কীট নৃষিতং। রামার্জনিন্দ্রকায়াং মৈথুনং তৎকু গালাপং তল্গোষ্ঠীং পরিবর্জ্জয়েৎ।
ঋতুকালং বিনা মন্ত্রী স্বন্তিয়ং নাভিসংস্পৃশেৎ। লবণকৈব
যৎক্ষারং তথা ক্ষোদ্রং রসান্তরং। কৌটিল্যং ক্ষোরমভ্যঙ্গমনিবেদিতভোজনং। অসক্ষ্মিতকু ত্যঞ্চ বর্জ্জয়েমর্দনাদিকং।
স্রায়াচ্চ পঞ্চগব্যেন কেবলামলকেন বা। মন্ত্রং জপ্তা ভূ
পানীয়ং স্থানাচমনভোজনং। কুর্যাদ্যথোক্তবিধিনা ত্রিসন্ধ্যং
দেকতার্জনং। ত্রিসন্ধ্যমেকসন্ধ্যং বান মন্ত্রং কেবলং জপেৎ।
শক্ত্যা ত্রিস্বনং স্থানমশক্তো দ্বিঃ সক্ষ্ণ বা। অস্ত্রাতস্থ

ভোজন নিসিত্ব বলিয়া উক্ত আছে, তাহা অক্যান্ত এতে জানিবে। প্র১০রণ কার্য্যে মধু, ক্ষীর, লবণ, তৈল, তাত্বল, এই সকল দ্রবা, ও কাংশু
পাত্রে ভোজন পরিত্যাগকরিবে। রামার্চনচন্দ্রিকায় লিখিত আছে
যে, এই কার্য্য আরম্ভকরিয়া সমাপনপর্যান্ত মাংস, ক্ষার্লবণ, গাঞ্জা
কাংশুণাত্রে ভোজন, মাষকলাই, অভ্হর, মসুর, কোদ্রণ, বৃঁট, পর্যু যিত জয়
কীটছক্ষিত ফলাদি বর্জনকরিবে, আর মৈথুন, মৈথুনালাণ, ও তৎসম্বনীয়
সমাজ পরিত্যাগকরিতে হইবে। শুতুসমরভিন্ন ত্রী ক্ষাক্তরিবে না।
প্রশ্চরণকালে মনের কুটিলতা, ক্ষোরকর্ম্ম, কৈল্পেবন, জনিবেদিত
অরভোজন, ও অসম্বন্ধিতিকা, পরিত্যাগ করিতে হইবে। প্রশ্তরণ
কালে পঞ্চারা ও আমলকীর রস মন্তপুত করিয়া ভজ্বায়া স্থানকরিবে।
এই কার্য্যে যথোক্তবিধানে তিনসন্থ্যা দেবতার প্রাক্তরিয়া জিসক্ষা
বা একসন্ধ্যা মন্ত জ্বপ্রবিধানে তিনসন্থ্যা দেবতার প্রাক্তরিয়া জিসক্ষা

শৃশং নান্তি ন চাতর্পয়তঃ পিতৃন্। অপবিত্রকরো নয়ঃ
শিরোৎসংপ্রার্তোপি বা। প্রলপন্ প্রজপেদ্যাবতাবিদিম্বলমূচ্যতে। নারদীয়ে—মূত্নোফং স্থপকঞ্চ কুর্যাহি লঘুভোজনং। নেব্রিঘাণাং যথা বৃদ্ধিতথা ভুঞ্জীত সাধকঃ।
কুলার্গবে—যত্থারপানপুন্টাঙ্গঃ কুরুতে ধর্মসঞ্চয়ং। অয়দাতুঃ
ফলস্রার্জং কর্ত্তু শুলিং ন সংশয়ঃ। তত্মাৎ সর্বপ্রথত্বেন
পরারং বর্জ্জয়েৎ স্থাঃ। প্রশ্চরণকালে তু সর্বকর্মস্থ
শঙ্করি। জিহ্বা দয়া পরাদেন করো দয়ো প্রতিগ্রহাৎ।
পরস্ত্রীযু মনোদয়ং কথং সিদ্ধির্বরাননে। পরায়ং ভিক্কেতরবিষয়ং। ভিক্ষায়াঃ তত্ম স্বত্ত্রোৎপাদনাৎ। তথাচ—
বৈদিকাচারযুক্তানাং শুচীনাং শ্রীমতাং সতাং। শ্বংক্লস্থানজাতানাং ভিক্ষাচারাগ্রজন্মনাং। বিহায় বৃহ্ণিং ক্রাহ্

করিবে এবং অশক্তপক্ষেও দিবসে গুইবার প্লানদ্রিতে হইবে। যে ব্যক্তিপান অথবা পিতৃতর্পণ না করিয়া পুরন্ডরণ করে, দে তাঞ্জার কল পায়না। অপবিত্র দেকে, নয় হইগা, অনাবৃত্যস্তকে, অথবা অভ আশাপ করিছে করিতে অপকরিলে তাহা নিম্মল হইয়া যায়। নারদীয় বচনে জানা যায় যে, পুরুল্ডরণকালে লঘু, অতৃষ্ণ, শ্বপক ক্রব্যভোজনকরিবে। যাহাতে ইক্রিমের বৃদ্ধি হর, এইরপ ক্রব্য ভক্ষণকরিবে না। কুলার্থবে লিখিত আছে বে, যাহার অরপানাদিখারা শরীর পোষণকরিয়া ধর্মকার্য্য করা যায়, অরদাতা সেই ফলের অর্জালী হয়, এবং কর্তার অর্জ ফল হইয়া থাকে। অভএব পুর্শ্তরণাদি কার্য্যে ক্রমেতাভাবে পরায় ভোজন বর্জনকরিবে। পরায় ভোজনাদি কির্বা, প্রতিরহ্ হস্ত এবং পর্স্তীতে মন দগ্ধ হয়, স্কৃতরাং পরায় ভোজনাদি বিদ্ধি কার্যের প্রতিবন্ধক। কিন্তু কিন্দালর অর্থের সন্ধ ক্রেয়ে, অন্তএব ক্রিমা ভিন্ন পরায়ই বর্জনীয়। কৈরিকাচারযুক্ত গুচি সংকূলজাত কিন্দুক্তি বাম্বাপন সম্ভবন্যে অপারের নিক্রি আগ্রাণ্ড ক্রেয়ে ক্রম্বাত্র ক্রমিণ সম্ভবন্যে অপারের নিক্রি আগ্রাণ সম্ভবন্যে ক্রম্বাত্র ক্রিমান বিদ্ধি ক্রমেন ক্রম্বাত্র ক্রমান বিদ্বাত্র ক্রমিণ সম্ভবন্যে অপারের নিক্র ক্রমান্ত আগ্রান্ত ক্রমান ব্যক্তি আগ্রান্ত ক্রমান ব্যক্তির আগ্রান্ত ক্রমান বিদ্বাত্র ক্রমান্ত ক্রিমান ব্যক্তির ক্রমান ব্যক্তি আগ্রান্ত ক্রমান ব্যক্তির অপার বিদ্বাত্র ক্রমান ব্যক্তি আগ্রান্ত ক্রমান ব্যক্তি আগ্রান্ত ক্রমান ব্যক্তির অপার ব্যক্তি স্থান্ত ক্রমান ব্যক্তির আগ্রান্ত ক্রমান ব্যক্তি আগ্রান্ত ক্রমান ব্যক্তির আগ্রান্ত ক্রমান ব্যক্তির ক্রমান্ত ব্যক্তির ক্রমান ব্যক্তির আগ্রান্ত ক্রমান ব্যক্তির অপার ব্যক্তির ক্রমান ব্যক্তির ক্রমান ব্যক্তির ক্রমান্ত ব্যক্তির ক্রমান ক্রমান ব্যক্তির ক

বস্তু কিঞ্চিদ্গ্রাহ্যং পরেভ্যঃ সতি সম্ভবে চ। অসম্ভবে তীর্থবহির্কিণ্ডদ্ধাৎ পর্বাতিরিক্তে প্রতিস্থ জপ্যাৎ॥ তত্রাসমর্থাইমুদিনং বিশুদ্ধাদ্যাচে চ যাবদিনমাত্রভক্ষাং। গৃহাতি রাগাদ্ধিকং ন দিনিঃ প্রজায়তে কল্পতিরমুষ্য॥ সক্ষপ্রচরিতে শব্দে প্রণবং সমুদীরয়েৎ। প্রোক্তে পারসবে শব্দে প্রাণায়ামং সক্ষপ্ররেৎ। বহুপ্রলাপী আচম্য অস্থান্তানি ততাে জপেৎ। ক্ষুতেপ্যেং তথাস্পৃশ্যস্থানানাং স্পর্শনেপি চ। এবমাদীংশ্চ নিয়মান পুরশ্চরণকৃচ্চরেৎ। বিশ্বত্রোৎসর্পবিত্রং ভবেৎ প্রিয়ে। মলিনাম্বরকেশাদিমুখদৌর্গদ্ধন্তাং। বাা জপেতং দহত্যাশু দেবতা গুপ্তিসংস্থিতা। আক্স্যং জৃম্ভণং নিদ্রাং ক্ষুতং নিষ্ঠাবনং ভয়ং। নীচাঙ্গস্পর্শনং কোপৎ জপকালে বিবর্জ্বয়েৎ। এবমুক্তবিধানেন বিলম্বং

করিতে পারে না, পবস্ত অভাব হইলে তীথাতিরিক্ত স্থানে পর্বাভিরিক্ত দিনে এক দিবদের উপযুক্ত ভক্ষা দ্রবা মাত্র ভিক্ষা করিয়া জপকরিবে। কিন্তু লোভবশত অধিক গ্রহণ করিবে না। জপকালে একরার মাত্র অভ্ত শক্ষ উচ্চাবণ করিলে প্রণব (ওঁ) উদ্ভারণকবিয়া জপকরিবে, কিন্তু যদি পারস্ত শক্ষ উচ্চাবণকরে তাহা হইলে প্রাণায়াম করিয়া জপকরিবে। আর অনেক বার অভ্ত কথা উচ্চারণকরিলে আচমন ও অক্সভাসাদি করিয়া পুনর্বার জপ আরম্ভ করিবে। জপকালে ই।চি হইলে অথবা অপপা প্রবার জপ আরম্ভ করিবে। অপকালে ই।চি হইলে অথবা অপপা স্পর্শকরিশে আচমনাদি করিবে। যদি মলম্ত্রাদির বেগ রোধকরিয়া জণকরে তাহা হইলে সেই জপ নিক্ষল হয়। মলিন বন্ত্রপরিধানকরিয়া গলিনকেশে বা তুর্গরমূথে জপকরিলে দেবতা গুপ্তভাবে সেই জপ দশ্ম করেন। আর আলহ্য, জ্বুল, নিদ্রা, কুহ, পুহকার, ভার, নীচাক্ষ স্পর্শ ও ক্রোধ ত্যাণ করিবে। উক্ত প্রকারে সংযত হইরা জপকরিবে, অতি

দ্বিতং বিনা। উক্তসংখ্যং জপং কুর্য্যাৎ পুরশ্চরণসিদ্ধয়ে।
দেবতাগুরুমন্ত্রাণামৈক্যৎ সম্ভাবয়ন্ ধিয়। জপেদেকমনাঃ
প্রাতঃকালং মধ্যন্দিনাবধি। যৎসংখ্যয়া সমারক্ষং তৎকর্তব্যমহর্নিবং। যদি ন্যুনাধিকং কুর্য্যাদ্ত্রতজ্ঞটো ভবেমরঃ।
গৌতমীয়ে—ন বীক্ষেৎ পতিতং ব্রাত্যং পিশুনং দেবনিশ্দকং। তথা নাশ্রমিণং বিপ্রং তথা বিশ্ববিনিন্দকং।
মুগুমালায়াং—যৎসংখ্যয়া সমারক্ষং তত্ত্রপ্রবাং দিনে দিনে।
ন্যুনাধিকং ন কর্ত্রবামাসমাপ্তং সদা জপেৎ। প্রজপেছক্তসংখ্যায়াশ্চত্ত্রপজপঃ কলো। অন্যত্রাপি—কুতে জপস্ত
কল্পোক্তস্ত্রেতায়াং দিগুণো জপঃ। দাপরে ত্রিগুণঃ প্রোক্তশ্রাণি ন
কলন্তি কদাচন। ম্থাবিধি কুতান্যের তৎকর্মাণি ন
কলন্তি কদাচন। যথাবিধি কুতান্যের তৎকর্মাণি নিত্যং

ক্রত বা অতি ধীর অপ নিষিক। দেবতা, শুক্র ও ময়ের ঐক্য জানে একাগ্রচিতে প্রাত্কলে ইইতে মধ্যাক্ষ কালপর্যান্ত অশুক্রিবে। আরম্ভ দিবলৈ যে সংখ্যায় জপকরিবে, প্রতিদিন সেই সংখ্যায় জপকরিতে ইইবে। জপসংখ্যার নৃক্তাধিক্য করিলে সেই জপ নিক্ষণ ইইয়া যায়। গৌতন্মীয় তত্ত্রে লিখিত আছে যে, জপকালে পতিত, ব্রাত্ত্য, (যথাকালে অমূপনীত) খল, দেরনিক্ষক, অনাশ্রমী ব্রাহ্মণ, ও বিশ্বনিক্ষক ইহাদিগকে দর্শন করিবে না এবং একনিয়মে জপকরিবে। পরস্ত কলিকালে যথোক্ত সংখ্যার চতুর্ভণ জপকরিবে। অক্যান্ত তত্ত্বে লিখিত যে, সভায়ুগে বাহার্যত সংখ্যা উক্ত আছে, সেই সংখ্যায় জপকরিবে, আর ত্রেতাযুগে বিভণ, য়াপরে ত্রিশুণ এবং কলিকালে চতুর্ভণ জপ কর্ত্ব্য। কুলার্থবে লিখিত আছে বে, সংখ্যার ন্যাধিকা করিয়া জপকরিলে ভালা ফলপ্রদ হয় না, বিধি পূর্ম্বির্ঘ্য করিলেই সেই কার্য্য সকল হয়। পূর্ণ্ডরণকালে ভূমিতে

ত্রিসবনং স্নানং কুদ্রকর্মবিবর্জনং। নিত্যপূজা নিত্যদানং
দেবতাস্ত্রতিপূর্বকং। নৈমিন্তিকার্জনকৈ বিশ্বাসা গুরুদেবয়াঃ। জপনিষ্ঠা দ্বাদশৈতে পর্মাঃ স্থামন্ত্রসিদ্ধিদাঃ। দ্রীশুদ্রপতিতরাত্যনান্তিকোচ্ছিফভাষণং। অসত্যভাষণকৈ
জ্ঞাংপরিবর্জয়েৎ। সত্যেনাপি নভাষেত জপহোমার্চনাদিয়ু। অভ্যথাসুন্তিতং সর্বাং ভবত্যেব নিরর্থকং। পুরশ্চরণকালে
তু যদি স্থামাত্রতকং। তথাপি কৃতসঙ্কল্লো ব্রতং নৈব
পরিত্যজেৎ। যোগিনীহৃদয়ে—শ্রীত কুশশ্য্যায়াং শুচিবন্ত্রধরঃ সদা। প্রত্যহং ক্ষালয়েৎ শ্যামেকাকী নির্ভয়ঃ
স্বপেৎ। অসত্যভাষণং বাচং কৌটলাং পরিবর্জয়েছ।
বর্জয়েদ্গাত-বাদ্যাদি-শ্রবণং নৃত্যদর্শনং। অভ্যঙ্গং গন্ধলেপক পুল্পধারণমেব চ। ত্যজেদ্ধোদকে স্নানমন্যদেবপ্রপ্জনং। তত্রিব—নৈকবাসা জপেমন্ত্রং বহুবাসা-

শয়ন, য়য়ঢ়য়া, মৌনয়ড়, য়াঢ়য়ায়য়ায়য়ের। প্রতিদিন বিসদ্ধা য়ান, কুল্ল কর্ম পরিত্যাগ, নিত্যপূজা, নিত্যদান, দেবতার স্থতিপাঠ, নিত্য নৈমিনিত্রক মার্চনা, দেবতার ও জলতে বিশাস ও জগনিষ্ঠা এই শাদশ ধর্ম মন্ত্র সিদ্ধিপ্রদা। প্রশ্চরণের অপকালে স্ত্রী, শুল্ল, পতিত, ব্রাত্য ও নাজিক ইহাদিগের সহিত মালাপ, মিথাকিথন এবং জ্পুণ ভ্যাগকরিবে। জপ হোমাদি কালে অলের সহিত সত্য কথাও কহিবে না. উক্ত নিয়মসকলের অল্পা করিরা অপাদি করিলে দেই জপাদি নির্ম্পক হয়। প্রশানরণের সম্বন্ধ করিয়া আরম্ভ করিলে ধনি অশৌচপাত হয়, তথাপি ব্রত পরিত্যাগকরিবে না। খোগিনীজ্বদের লিখিত আছে যে, প্রশানরণলাল কুশশব্যাতে শয়ন করিবে এবং প্রতিদিন শয়্যা ধৌত করিয়া একাকী নির্ভয়ে শয়ন করিবে লি অসভাকথন, কুটলতা, গীতবাদ্যাদিশ্রবণ, তৈলাভাক, চন্দনলেপন, পূজাধারণ, উষ্ণ জলে মান, নৃত্যাদর্শন, ও অল্পাছেবার্ডন করিবে। একবন্ত্রে কিলা বাছবন্তান্ত্রত হইয়া জপকরিবে না। এই

কুলোপি বা। বৈশম্পায়নসংহিতায়াং—বিপর্যাসং ন কুর্যাক্ত
কদাচিদপি মোহতঃ। উপর্যাধা বহির্বান্তে পুরশ্চরণকুমরঃ। বিনিয়োগে নিধানে তু ভবেদনিয়মঃ কচিৎ।
পতিতানামস্তাজানাং দর্শনে ভাষণে ভাষতে। কুতেহধোবায়ুগমনে জ্পুণে জপমুৎস্তজেৎ। তথাচম্য চ তৎপ্রাপ্তৌ
প্রাণায়ামং ষড়ঙ্গকং। কৃত্বা সম্যগ্জপেচেছ্বং যবা সূর্যাদিদর্শনং। আদিশবাবহিং ত্রাহ্মণঞ্চ। তন্ত্রাপ্তরে—মনঃসংহরণং শোচং মোনং মন্ত্রার্থচিন্তনং। অব্যথ্রত্ব মনির্বেদো
জপসম্পতিহেতবঃ। উফিশী কঞুকী নগ্নো মুক্তকেশো
গণারুতঃ। অপবিত্রকরোহশুদ্ধঃ প্রলপম জপেৎ কচিৎ।
অনাসনঃ শয়ানো বা গচহন্ ভুঞ্জান এব বা। অপ্রার্ত
করৌ কৃত্বা শিরোবা প্রার্তোপি বা। চিক্তীব্যাকুলচিত্রো বা ক্ষুকো ভ্রান্তঃ ক্ষুধান্বিতঃ। রথ্যায়ামশিবস্থানে
ন জপেতিমিরারতে। উপানদ্গুঢ়পাদো বা যানশ্যাগত-

জাপে কোন রূপেও যথাকে নিয়মের ব্যক্তিক্রম করিবে না, পতিত বা জন্তাজাতির দর্শন হইলে, তাহাদিগের কথা শ্রবণকরিলে, হাচি বা জ্পুণ হইলে
কিছা অধাবারু নিঃস্তুত্ত হইলে জপ ত্যাগকরিয়া আচমন, প্রাণারাম,
বড়সন্তাস, স্থ্য ও ব্রাহ্মণ দর্শনপূর্বক পুনর্বার জণ আরম্ভকরিবে। তপ্তাস্তরে লিখিত আছে বে, মনংসংঘম, শৌচ, মৌন, মন্ত্রাথিচিয়ন, মমের
অব্যক্তাতা ও অনির্কেদ এই সকলই জপের ফলসাধক। উক্তীশ বা চর্ম্ম
বার্থ করিয়া ম্কেন্কেশে, লগ্ন হইয়া, অপবিক্রহন্তে, অন্তর্গেন্তে ও ক্থা
ক্ষিত্তে কহিতে জপকরিবে না। আর নিরাস্দা, শগ্ন, গমন ও ভোজম
কালে, অনাব্তহন্তে, আর্ত মন্তকে, চিন্তাকুলচিতে কিয়া ক্ষর, ভ্রান্ত ও
ক্ষান্তিত হইরা, প্রিমধ্যে ব্যাহামগৃহে, শিবস্থানে, অন্ধ্রারম্ভ গৃহে,
পাত্কাবৃতপ্রে, যানারোহণে বা শ্যাতে বসিয়া অপকরিবে না আর

ন্তথা। প্রদার্য্য ন জপেৎ পাদাবৃৎকটাসন এব বা। ন
যজ্ঞকাঠে পাষাণে ন ভূমো নাসনে স্থিতঃ। মার্জারং
কুরুটং ক্রোঞ্চং শ্বানং শৃদ্রং কপিং ধরং। দৃষ্ট্রাচাম্য জপেচ্ছেষং স্পৃষ্ট্রা স্লানং বিধায়তে। সর্বত্র জপে অয়ং নিরমঃ।
মানসে তু নিয়মো নাস্ত্যেব। তথাচ—অশুচির্বা শুচির্বাপি
গচ্ছং ন্তির্চন্ স্বপন্নপি। মন্ত্রৈকশরণো বিদ্বান্ মনসৈব সদা
ভ্যমেৎ।ন দোষো মানসে জাপ্যে সর্বদেশেপি সর্বদা।
শ্যামাদিমন্ত্রজপে তু তৎপ্রকরণে বিশেষো বির্তঃ। জপফলমাহ শিবধর্ম্মে—জপনিষ্ঠো দ্বিজন্মেষ্ঠাহখলিযজ্ঞফলং
লভেৎ। সর্বেষামেব যজ্ঞানাং জায়তেহসো মহাফলং।
জপেন দেবতা নিত্যং স্তুয়মানা প্রসীদতি। প্রসন্ম বিপুলান্
কামান্ দিয়ামুক্তিঞ্চ শাশ্বতীং। যক্ষরক্ষঃ পিশাচাশ্চ গ্রহাঃ
সর্পাশ্চ ভীষণাঃ। জল্পিনং নোপস্পন্তি ভয়ভীতাঃ সমস্ততঃ। পাদ্মনারদীয়য়োঃ। যাবন্তঃ কর্ম্মযজ্ঞাঃ স্ত্যঃ প্রতিষ্ঠা-

পাদ্ধর প্রসারিত করিয়া, উৎকটাদনে উপবিষ্ট ১ইয়া অথবা যজ্ঞকাঠে, পাঘাণে, ভূমিতে বা অনাদনে জপ নিষিদ্ধ। জপকালে মার্জার, কুরুট, কুরুর, শুদ্র, বানর, বা গদভ দর্শনকরিলে আচমন এবং ইহাদিগকে স্পর্শ করিলে স্নানকরিয়া পুনর্কার জপকরিবে। সকল জপেই এইরূপ নিরম পালন করিতে হইবে কিন্তু মানস জপে কোন নিয়ম নাই। সকল কালেই মানসিক জপ করিতে পারে। আমাদি বিদ্যার মন্ত্রজপে বাহা বিশেষ আছে, তাহা সেই সেই প্রকরণে উক্ত আছে। ত্রান্ধণ জপপরারণ হইলে সকল যজ্জের ফলভাগী হয়। জপকরিলে দেবতা প্রান্ধা হন এবং সকল কামনা পূর্ণ করিয়া অন্তকালে মুক্তি দিয়া থাকেন। যক্ষ, রাক্ষ্ম, পিশাচ, গৈহ, সর্পাদি ভীবণ জীব জপকারীর নিকটে আসিতে পারে না, ভাহানা ভীত হইয়া পলায়ন করে। পদ্ম ও নারদীয় প্রাণে লিখিত আছে ধে,

দিতপাংসি চ। দর্বে তে জপযজ্ঞত কলাং নাইন্তি বোড়শীং। মাহাত্মাং বাচিকত্মৈতজ্জপযজ্ঞত কীর্তিতং। তথাচ তল্পে—

ক্যাচ্ছতগুণোপাংশুঃ সহস্রো মানসঃ শৃতঃ। তথাচ তল্পে—

মানসং সিদ্ধিকামানাং পুষ্টিকামৈরুপাংশুকঃ। বাচিকো মারণে

চৈব প্রশক্তো জপ ঈরিতঃ। গোতমীয়ে—শক্ত্যা ত্রিসবনং

সানমশক্তো দিঃ সরুচ্চ বা। ত্রিসদ্ধ্যং প্রজপেমন্ত্রং পূজনক্ষ

সমং ভবেৎ। সন্ধ্যাত্রয়ে পূজাংকুত্বা জপমন্টোতরশতমিত্যর্থঃ।

একদা বা ভবেৎ পূজা জপেত্তৎপূজনং বিনা। জপান্তে বা

ভবেৎ পূজা পূজান্তে বা তপেমনুং। প্রাতঃকালং সমারভ্য

জপেমাধ্যন্দিনাবধি। মনঃ সংহৃত্য বিষয়ামন্ত্রার্থগতমানসঃ।

ন ক্রতং ন বিলম্বঞ্চ জপেন্মোক্তিকহারবৎ। জপঃ স্থান্তক্ষরা-

প্রতিষ্ঠা, তপ্তাদি যতপ্রকার কাম আছে, সেই সম্দায় জপের যোড়শাংশ ফল দিতেলারে নাঃ বানিচক জপেরই এইরূপ ফল জানিবে, উপাংশু জপ ইহার শতশুণ এবং মানসিক রূপে উপাংশু জপের সহস্রগুণ ফল হয়। তত্রে লিখিত আছে যে, সিন্ধিকামী মানস ও পৃষ্টিকামী উপাংশু জপকরিবে। আর যাহারা মারণাদি আভিচারিককার্যো তৎপর ভাহারা বাচিক জল করিবে। গোঁতমীয়তন্ত্রে লিখিত আছে যে, শক্তবাক্তি বিসন্ধ্যা, অশক্ত হইলে ছুইবার অথবা একবার স্থানকরিয়া বিসন্ধ্যা মন্ত্রজণ ও পূলাকরিবে এবং পূলান্তে অটোত্তরশত জপকরিতে হুইবে। অশক্তবাক্তি একবার পূলাকরিয়া বিসন্ধ্যা অপকরিলেও পূলাসিন্ধি হইবে। জপের অত্তে পূলা অথবা পূলার্য পরে অপকরিবে। প্রাত্তকালে জপ আরম্ভকরিয়া মধ্যাক্তকাল পর্যান্ত জপকরা কর্ত্তবা। ইহার তাৎপর্যা এই যে, অধিকসময় জপকরিবে জিহবার জড়তা হইয়া অপসংখ্যার নৃত্যাধিত্য হইলে নিরমভঙ্গ হইকে পারে, অতএব অধিকসময় অপকরিবে না। অপকালে বিষয় চিন্তা পরিত্যাগকরিয়া মন্ত্রার্থের প্রতি মনের একাগ্রতা স্থাপনপূল্পক অতি জক্ত বা অতি বিলম্ব না হর, এইরপে একক্রমে জলকরিবে। অক্ত

রতির্ন্মানসোপাংশুবাচিকৈঃ। ধিয়া যদক্ষরশ্রেণীং বর্ণমরশদাত্মিকাং। উচ্চরেদর্থমুদ্দিশু মানসং স জপঃ স্মৃতঃ। জিহ্বোতে
চালয়েৎ কিঞ্চিৎ দেবতাগতমানসং। কিঞ্চিৎ প্রবণ্যোগ্যঃ
স্থাতুপাংশুঃ স জপঃ স্মৃতঃ। বিশুদ্ধেরতন্ত্রে—নিজকর্ণাগোচরোহয়ং সজপো মানসং স্মৃতঃ। উপাংশুর্নিজকর্ণস্থ গোচরঃ পরিকীর্তিতঃ। মন্ত্রমুচ্চারয়েদ্বাচা সঙ্গপো বাচিকঃ
স্মৃতঃ। উচ্চৈর্জপাদ্বিশিক্টঃ স্থাতুপাংশুর্দশভিগুর্বাঃ। জিহ্বাজপঃ শতগুণঃ সহস্রো মানসং স্মৃতঃ। তন্ত্রান্তরে—উচ্চের্লিগ্রমঃ প্রেতঃ প্রাক্ত উপাংশুর্মধামঃ স্মৃতঃ। উত্নোমানসো
দেবি ত্রিবিধঃ ক্থিতো জপঃ। জিহ্বাজ্পঃ সবিজ্ঞেয়ঃ
কেবলং জিহ্বয়া বুবিঃ। অতিব্রস্বো ব্যাধিহেতু রতিদীর্ঘো
ব্রক্ষয়ঃ ব্রা
অক্ষরক্ষরসংযুক্তং জপেন্মোক্তিকহারবৎ।
মনসা যৎ স্মরেৎ স্থোতঃ বচসা বা মনুং স্মরেৎ। উভয়ং

রের আবৃত্তি করাই লপ, এই লপ মানস, উপাংশু ও বাচিক ভেদে তিবিধ।
মনে মনে দার্থক মন্ত্রাক্ষরশ্রেণী উচ্চারণকরিয়া যে লপকরায়ার, ভাহার
নাম মানস লপ, লিহ্বা ও ওঠ কিঞ্চিং চালনাকরিয়া দেবভাতে চিন্ত
সমর্পণপূর্বক লপকরিলে যদি তাহা নিজকর্ণের গোচর হয়, ভালা হইলে
উক্ত লপকে উপাংশু লপ বলায়ায়। বিশুদ্ধেরতন্ত্রে লিখিত আছে বে,
যে লপ নিলকর্ণের অগোচর ভাহা শ্রানস লপ, যে লপ নিলকর্ণমালের
পোচর ভাহার নাম উপাংশু এবং বাকো মন্ত্র উচ্চারণকরিয়া যে লপ করা
য়ায় ভাহা বাচিক লপ বলে। বাচিক লপ হইতে উপাংশু লপ দশশুণে
শ্রেষ্ঠ, লিহ্বা লপ শতশুণ এবং মানস লপ সইল্রগণ ফলপ্রম। ভলাত্তরে
লিখিত আছে যে, বাচিক লপ লখম, উপাংশু লপ মধ্যম এবং মানস লপ
উত্তম। কেবল লিহ্বাছায়া যে লপকরায়ায়, ভাহাই লিহ্বালপ, লভি
লঘ্লপ রাাধির হেতু এবং অভি দীর্ঘলণে ধনক্ষম্বর, লভএব লক্ষ্যাক্ষরে
সংযোগকরিয়া লপকরিবে। মানসিকস্তোত্র এবং বাচনিক লপ উক্সই

নিক্ষলং বাতি ভিন্নভাণ্ডোদকং যথা। গৌতমীয়ে—প্রশ্নভাবে স্থিত। মন্ত্রাঃ প্রোক্তা বর্ণান্ত কেবলাঃ। সৌহন্ধবস্থাচরিতা প্রভাং প্রাপ্রবৃদ্ধি তে। মন্ত্রাক্ষরাণি চিৎশক্তো
প্রোতানি পরিভাবয়েৎ। তমের পরমব্যান্ধি পরমান্দর্বিতে। দর্শয়ত্যাত্মসদ্ভাবং পূজাহোমাদিভির্বিনা। গৌতমীয়ে দশাক্ষরপটলে—মূলমন্ত্রং প্রাণবৃদ্ধ্যা হুয়ুমামূলদেশকে।
মন্ত্রার্থৎ তস্ত চৈতক্তং জীবং ধ্যাত্বা পুনঃ পুনঃ। কুলার্গবেপি—
মনোহত্তর শিবোহত্তর শক্তিরত্তর মারুতঃ। ন সিদ্ধাতি
বরারোহে কল্পকোটিশতৈরপি। জাতসূতক্মাদে স্থাদন্তে
চ সূত্রত্বং। সূত্রকন্ধয়ংযুক্তো যো মন্ত্রঃ স ন সিদ্ধাতি।
গুরোস্তর হিতং কৃত্রা মন্ত্রং যাবজ্জপেদ্ধিয়া। সূত্রকন্মনির্মক্তঃ
স মন্ত্রঃ সর্ব্বসিদ্ধিদঃ। তত্রের। তত্মাদ্বেরি প্রমর্ক্তের প্রাণিতঃ।

ভগভতিত্বিত জলের নায় নিজ্প। গোডমীয়ে লিখিত আছে যে, পশু
ভগতিত মন্ত্রসকল কেবল বর্ণমান্ত এবং স্ব্রাধ্বনিতে উচ্চারিত মন্ত্র
প্রভ্ত প্রদানকরে। মন্ত্রের বর্ণনকলকে চিংশক্তিতে প্রোথিত ভাগনা
করিরা অপকরিলে প্রমানন্দ বর্দ্ধিত হয়। এবং এইরূপ অপে পূঞা
হোমাদি বাতিরেকেও আবাজ্ঞান ছুইরা থাকে। গোডমীয়তত্রে লিখিত
আছে যে, মূলমন্ত্রকে স্ব্রার মূলদেশস্থিত প্রাণ এবং মন্ত্রার্থিকে ভাহার
কৈতন্ত্রশ্বনপ জীব জ্ঞানকরিয়া জপকরিবে। কুলার্গবের প্রমাণে জানায়ায়
বে, মন, শিব ও শক্তি ইহাদিগকে বিভিন্ন জ্ঞানকরিয়া শতকোটিকর জপ
ভরিবেঞ্জ দিশ্বিলাভ হর না। মন্ত্র উচ্চারণের পূর্বে মন্ত্রের জাতকাশোচ এবং
মন্ত্রান্তারশ্বের পরে ভাহার মৃতাশোচ হইনা থাকে, এই জ্লেণ্ডিন্রর সংযুক্ত
মন্ত্রকালের লালিতে ও অব্যে প্রবিশ্ব সংযুক্তকরিয়া ভাটোব্রশন্ত কিল্লা

বার জপকরিয়া প্রাক্ত জপকরিবে। আর মন্ত্রার্থ, মন্ত্রটিভন্ত ও যোদি
মুদ্রা না জানিয়া জপকরিলে শতকোটিজপেও মন্ত্রসিদ্ধি হয় না। চৈতক্ত
হীনমন্ত্র ফল প্রদানকরিতেপারে না এবং চৈতন্ত্রসংযুক্ত মন্ত্র সর্কাসিদ্ধি
প্রদানকরে, আচৈতন্ত মন্ত্র কেবল ক্রিনার। সচৈতন্ত্রমন্ত্রজনে প্রথমে
বেরপ ভাব হর, আচৈতন্ত মন্ত্র শক্ত, সহল বা কোটি জপেও সেইরপ কল
হইতে পারে না। চৈতন্যসহিত মন্ত্রের জপ আরম্ভকরিলে স্ক্রিক্তির
প্রাহিতেদ, স্ক্রিল্ডির আনন্দাক্রপাত, রোমাক, দেহাবেশ ও গদগ্রেকি
প্রভৃতি ভাজিচিক প্রকাশ পার। চৈতন্যসংযুক্ত মন্ত্র এক্রির্নার
উচ্চারণকরিলেই উক্ত লক্ষণসকল প্রকাশপাইরা থাকে, আর ভূউলিনির
সহিত জন্বলামবিলোমে এক্রাস্পর্যন্ত প্রতিদিন সহল শন্ত্র কলক্রিকেই সিদ্ধি হয়। এইক্রণ ভূইলিপি ক্রিত ভ্ইতেছে। আ ই

ব্রশাঃ দক্ষিবর্ণা ব্যোমেরায়িজলক্ষরাঃ। অস্তামাদ্যং বিত্তীয়ক চতুর্বং মধ্যমং ক্রমাৎ। পঞ্চবর্গান্ধরাণি হ্যর্বান্তথেতেজ্বুক্তিঃ সহ। এবাতৃতলিপিঃ প্রোক্রা বিচছারিংশদক্ষরৈঃ। এবং জপং পুরা কৃষা তেজারূপং সমর্পয়েৎ। দেবস্থ দক্ষিণে হস্তে কুশপৃস্পার্যারারিভিঃ। সফলং তদ্মিভাব্যৈবং প্রাণায়ামং সমাচরেৎ। জপস্থাদৌ জপান্তে চ ত্রিতয়ং ত্রিতয়ং চরেৎ। শক্তিবিষয়ে দেব্যাবামহন্তে। তথাচ—এবং জপং পুরা কৃষা গন্ধাক্ষতকুশোদকৈঃ। জপং সমর্পয়েদেব্যা বামহন্তে বিচক্ষণঃ। জপান্তে প্রত্যহৎ দেবি হোময়েতদশাং শতঃ। তর্পণঞ্চাভিষেকঞ্চ তত্তদশাংশতোমনে। প্রত্যহং ভোজয়ে-বিপ্রান্ ন্যুনাধিক্যপ্রশান্তরে। অথবা দর্বসংপূর্ণে

হোমাদিকমথাচরেৎ। মৃগুমালায়াং—যক্ত ধাবান্, জপঃ
প্রোক্তন্তদশাংশজপঃ ক্রমাৎ। তত্তদ্দ্র বৈর্দ্ধপতাতে হোমং
কুর্যাদ্দিনে দিনে। অথবা লক্ষমংখ্যায়াং পূর্ণায়াং ছোমমাচরেৎ। তথা হোমাদাশকে চ—যদ্যদক্ষং ভবেন্তক্ষং
তৎসংখ্যাদিগুণোজপঃ। হোমাভাবে জপঃ কার্য্যো হোমসংখ্যাচতু গুণঃ। বিপ্রাণাং ক্রিয়াণাঞ্চ রসসংখ্যাপুণঃ
মৃতঃ। বৈশ্যানাং বহুসংখ্যাকমেয়াং স্ত্রীণাময়ং বিধিঃ।
যং বর্ণমাপ্রিতঃ শৃদ্রঃ স চ তক্স বিধিকরেৎ। অনাপ্রিতক্ত
শৃদ্রত্য দিক্সংখ্যাকঃ সমীরিতঃ। শৃদ্রত্য বিপ্রভক্তক্স তৎপদ্ধ্যাঃ সদৃশোজপঃ। অত্রাপ্যশক্তো যোগিনীহন্দ্রে—হোমকর্মণ্যশক্তানাং বিপ্রাণাং দিগুণোজপঃ। ইতরেষান্ত বর্ণানাং
সর্কেষাং ত্রিগুণোমতঃ। ত্রিগুণ ইতি ত্রিগুণাদির্হোমসংখ্যা
ত্রিগুণজপঃ ক্রিয়েণ কার্যঃ। বৈশ্যেন চতুগুণঃ শৃদ্রেণ
পঞ্জণঃ। তত্নকং কুলপ্রকাশে—যদ্যদক্ষং বিহীনং স্থাতৎ

মৃত্যালাতয়ে লিখিত আছে যে, যেদিন যতসংখাক জপ হইবে, সেই দিন
ভাচার দশাংশ সংখ্যায় যথোজ প্রবাদারা হোমকরিবে। হোমাদিতে
অশক্ত হইবে দ্বিভাগংখ্যক কপকরিবে, কিন্ত হোমের সংখ্যার চতুর্ভাগ লগ
করিতে হইবে। আহ্মণ ও করিবের প্রক্ষে বড়ন্তণ, বৈশ্বের অইণ্ডণ এবং
স্তীর পক্ষে উক্তর্রা বিধি জানিবে। শ্বে যে বর্ণের অধীনে আছে,
সেই বর্ণের অনুরূপ বিধি অবলন্ধনকরিবে। আর অনাশ্রমী দশগুণ কাপ
করিবে। ,বিপ্রভক্ত শ্বেরে আহ্মণের জায় অপবিধি জানিবে। যোগিনী
হাদমে লিখিতে আছে যে, বিপ্রের দিগুণ, ক্রিরাদি আন্তর্গাদি, অর্থাৎ ক্রিনি
মের অিগুণ, বৈশ্বের চতুর্ভাণ এবং শ্বের পক্ষণ দোমানুকর জানসংখ্যা
ভানিবে। এইছলে যে স্তী ও শ্বের হোম উক্ত হইল, এই হোম
গ্রাহ্মণদারা করাইতে হইবে। স্তী কিন্ধা শ্বের শ্বের হোমকরিবে মা,

मश्यािष्ठिशा क्रमः। क्रुकौं क्रिकृः भक्ष यथामः थाः बिक्रा-जग्रहा अञ्चल जीमूजानाः दशमाधिकातः। उथाठ मूजानाः ত্রাভ্রমীরিতমিতি কুওপ্রকরণে সারদায়াং স্ত্রীণাং হোমাধি-কারশ্চ তত্তিব। লাজৈন্ত্রিমধুরোপেতৈর্হোমং কন্সা প্রয়-চ্ছতি। অনেন বিধিনা কন্তা বর্মাপ্নোতি বাঞ্জিতং। অতএব স্ত্রীণাং হোমাধিকারঃ দ চ ব্রাহ্মণদারা। তথাচ তক্তান্তরে— उकारताकात्रगाएकामा भानशामिनार्कमा । जामगी गमनोटेकव मूज्रमाधाला । इकि माकाभिर्यथार তথা—স্ত্রীণামপি সর্ববৈদিককর্মান্ত শূদ্রভুল্যত্বপ্রতিপাদানাৎ। স্ত্রীশুদ্রকরসংস্পর্শো বজ্রপাতো মযোপরি ইতি ভগৰচনাৎ। नुनिःश्ठाभनीयि — माविजीः थनवः यजूर्नक्यीः जीमृख्या র্নেচ্ছন্তি সমূতোধোগচ্ছতি নেচ্ছন্তীতি পর্যান্তং পরাশর-ভাষ্যেপি গোবিন্দভট্টগ্নতং। স্বাহাপ্রণবসংযুক্তং শূদ্রে মন্ত্রং ममिष्किः। भूटमा नित्रय्याद्यां जिञ्जाकार्या याज्यसार्विष् যজুঃ বেদঃ। লক্ষী শ্রীবীজমিত্যর্থঃ। তথা নারায়ণকল্লেপি---व्यक्टोक्ट्रा महामञ्जः मञ्जार्वः मृक्ट्यायिकः। व्यनवानिक

বৈহেতৃ ওয়ারোচ্চারণে, হোমে, শালগ্রামিশিলার্চনে ও গ্রান্ধণীগমনে শ্রের নরকপ্রবণ আছে। স্ত্রীর পক্ষেও ক্রৈদিককর্মে শ্রেবং অন্ধিকার আছে। বিশেষত ভগষান্ স্বরং বলিয়াছেন, আমাতে যদি স্ত্রীলোকের করসংস্পর্ণ ছম, তাহা আমি বজ্রপাতের স্থায় জ্ঞানকরি। নৃসিংহভাপনীয় প্রান্তিতে লিখিত আছে বে, সাবিত্রী, প্রণব, বেদ ও শ্রী বীজ এই সকল শ্রু বা কোন স্ত্রী উচ্চারণ করিলে তাহাদিগের অধাগতি হর। আর লিখিত আছে বে, স্থাহা কিবা প্রণবসংখ্রুমন্ত্র যদি কোন ব্রান্ধণ শ্রুকে প্রদানকরে, তাহা হইলে সেই শ্রু মরকগামী হয় এবং উক্ত ব্রান্ধণেরও অধাগতি হইমা বাবে। কেহ কেই যে শ্রের হোমাধিকার বলেন, তাহাতেও স্থাহা শ্রু

(या गर्जा म खीम्रज প्रमण्डा हिंछ मर्सकीनाः मूज-वषावहातः। मृज्याभि यक्ष्करम्य हेन्द्रिः। তথাচ বারাহীতত্ত্রে—যদি কাদী ভবত্যত্র শুদ্রোপি হোদ-कर्णाणि। विक्कांशाः शतिषाका समग्रास्थन स्थारस्थ मदर्कियाः विकागक्रभः ज्यां वाणिष्ठं—यम्यमम् विशेष्त्रक তৎসংখ্যাषि छ । कर्छ वा ना का किया निकार्यः जमन एक न ভক্তিতঃ। न চেদকং বিহীয়েত ভদ্বিশিক্তমবাপুয়াং। विकः माक्काळकम् पूछ्रक इतिः यशः। छथाभक्तामः हिलासार---यमि द्शारमशामकः चार शृकाয়ार उर्भाग शिवा। তাবर मः था जिए विकास वि श्राण्डतगर्भाग्रीत। वीत्रष्टात्र—निय्यः श्रूक्ट्य एख्रा न यािषिएञ्च कथकन। न चार्मा यािषिजामज न भानर न व्यां विश्व विश्व कि विश्व कि

পরিতাগি করিল নমঃ শক্ষারা লেন্ত্রিবে। দেই সেই হোমারি
সকল মলীর কার্য্যের অপজিতে সংখ্যার বিগুণ জপকরিলেই প্রশুদ্ধণ
শিশ্ব হুইবে, ইহা বশিণ্ড বচনে প্রভীসমান হুইভেছে। একমাত্র প্রাশ্ধণ
ভৌজনে সকল প্রশুরণাল কার্য্য সকল হয়, যেহেতু প্রাশ্ধণপ বাহা
ভৌজন ক্রেন স্থাং হরি ভাহা ভোজনকরিরাবাকেন। জগজালংহিভাগও এইরূপ প্রাশ্ধণভোজনে জলীর কার্য্যের সিন্ধি উক্ত হুইরাছে।
বীরভন্ত প্রমাণে জানাবার বে, প্রশ্বের গক্ষেই নিয়ম আবস্ক্রম,
ত্রীর শক্ষে কেবল জপকরিলেই প্রশুরণ হুইভে পারে, ভাহাবিশের
ভাগানি না করিলেও কার্যাহানি হ্যবান আচার্যায়তে প্রশ্বেজ্যকন্তর

यकि शुकामानकात्नम वाजाद्यम समात्र। दक्षमः कन-मार्डाण शूत्रकर्या। विशेषर्छ। वार्ज खाक्रणर्काकनमार्ग्य-त्राथनमार्द्धन याजः नाजः ভर्यम्थन्यः। कुलार्ग्य-मीका-हीनान् नमृन् यस टाकरश्या यमनिए । नशकि भर्यमानि मत्रकारमकविश्णिक्। धवर् यः कूत्रक्टि एति श्रुत्रक्त्रविश् श्रिया। मर्काभाविनिर्मुएका (मर्वीमायुकामाश्रुयार। उथा---जमनार्यन विशार्क कोनिकानथ (ভाजराद। कीन-थथामार्टिकान्ट वर्गनिश्रद्धमङ् । उठन्ट-- खद्राय मिक्निन् न्मगा ए खाजना का मना मि जिः। खाल गर्दा मि जिन র্ভবেদ্ধ্রবম্। গুরেগভাবে তৎপুত্রায় তৎপত্নৈ বা নিবে-मर्यू । ত্यात्रভाবে দেবেশি ত্রাক্ষণেভ্যো নিবৈদয়ে । मगाक मिरिक्षकमञ्जूष्य शक्षांद्रभाशामत्वन ह। मर्द्व मञ्जान्ह मिकास्ति जৎপ্রमामार कूल्याति। शुक्रमूलिमिनः मर्वामिना-छस्रस्विति । अक्षांत्र श्रिका निजार श्रेषा वरम् छ वि গুরুষ। গুরুরেব পরং ব্রহ্ম তত্মাদাদো তমর্চয়েৎ। তদন্তে মহতীৎ পূজাং কুর্য্যাৎ সাধকসভমঃ। স্থবাসিনীং কুমারীঞ

অনুষয় আছে, বাজবিক বাদ্ধবিকে বাদ্ধবিক বাদ্ধবিক বিধান নহে।
অভএব হোমানির অনুষয় বিধান অপকরিয়া কেবল বাদ্ধবিভালন
করাইবেঃ বাদ্ধবিভালনেও দীন্দিত বাদ্ধবিক ভোজনকরাইবে, আনীকিত বাদ্ধবিক ভোজন করাইবেনা। উক্ত বিধানে পুরক্তরণ করিলে সেই
সাম্বক সেবীসামুজা লাভকরে। পুরক্তরণ করিয়া ভরুবেবকে দক্ষিণা প্রধান
করিবে, ভরুব সভোব হইলেই স্কালার্য্য সিভিহন। ভরুব অভাবে ভরুপুত্র
বা ভরুপদ্ধী ইহারিসের অভাবে বাদ্ধবিক দক্ষিণা দিবে। ভরুব অসাংক
সক্ষ কার্য্য সিভি হয় এবং ভরুই ব্রহ্মস্করণ অভএব ভরুপুত্রা করিয়াং ইই-

ভূষণৈরপি ভূষয়েৎ। মিফীয়ং বহুশঃ কার্য্য ভূমীত ধন্ধুভিঃ সহ। এবং সিদ্ধমনুর্শ্বজী সাধয়েৎ সকলেশিভান্।

অথবাল্যপ্রকারেণ পুরশ্চরণ মৃচ্যতে। গ্রহণেহর্কন্ত চেদোর্বনা শুচিঃ পূর্ববমুপোষিতঃ। নদ্যাং সমুদ্রগামিন্তাং নাভিমাত্রোদকে স্বিতঃ। ম্পর্শান্তিমুক্তিপর্য্যন্তং জপেন্মন্ত্রন্যন্তানী । যদি নক্রাদিদূষিত। নদী ভবতি তদা যথ কর্ত্তব্যথ তদাই রুদ্রযামলে—অপি শুদ্ধোদকে স্নাত্বা শুচৌ দেশে সমাহিতঃ। গ্রাসান্তিমুক্তিপর্য্যন্তং জপেন্মন্ত্রমনম্রধীঃ। ইতি রুদ্ধা ন সদেহো জপস্থ ফলভাগ্ভবেং। নদ্যভাবে—যদ্বা পুণ্যোদকে স্নাত্বা শুচিঃ পূর্ববমুপোষিতঃ। গ্রহণাদিবিমোকান্তং জপেন্মন্ত্রং সমাহিতঃ। উপবাসাসমর্থে তু তত্ত্বিব—

দেবতার মহতী পূজাকরিবে, তৎপরে কুমারীকে ভূষণাণিদার। অচনা ক্রিয়া ভাহাকে মিষ্টার ভোষনকরাহবে।

অক্ত প্রকার প্রশ্বন এই—স্থান বা চন্দ্র গ্রহণকালে ভচি ও উপবাসী
ছইয়া সমুজগামিনী নদীর নাভিমাত্রজনে অবিছিতিপুদ্দক প্রাস হইতে মুক্তি
কাল পর্যান্ত একাগ্রচিত্তে ভপকরিবে। নদীতে কুন্তীরাদির তয় থাকিলে তদ্ধ
জলে স্থানকরিয়া পবিত্র স্থানে উপবেশনপূর্ণক গ্রহণারস্ত হইতে মুক্তিকাল
পর্যান্ত অপকরিবে। গ্রহণ বিমুক্তি কাল পর্যান্ত অপকরিয়া অপের দশাংশ
হোম, ছোমের দশাংশ তর্পণ, তর্পণের দশাংশ অভিযেক এবং অভিযেকের
দশাংশ সংখ্যায় গ্রাহ্মণভোজনকরাইবে। এইরূপ করিলেই প্রশ্বরণ হয়।
ব্যোপাল মন্ত্রের পুরশ্বনণে হোমসংখ্যায় তর্পণ করিতেইইবে। গ্রহণকালে
আবল্ল ইই মন্ত্র অপকরিবে, যদি কেহ গ্রহণকালে পুরশ্বনণ আরম্ভকরিয়া
আছাদিয় অন্ধরেগেই ইইমন্তর্জপ ভাগিকরে, তাহাইইলে তাহার ইইদেবতা
কুলিত হইয়া লিত্লোকের অধােগতি বিধান করেন। গ্রহণপ্রশ্বরণেও
অপহােমাদি করিয়া মহতী পূজাকিয়া ব্রাহ্বণভোজনকরাইবে এবং শুক্তকে
সন্তর্জ করিয়া দ্বিশা প্রদানকরিতেইইবে। এইরূপ পুরশ্বনণ করিলে

व्यवश्राश्चकरित्रनं देशोत्रन्ठाञ्चनिरकाविधिः। हस्त्रमूर्याभिक्षोर्भ क जाया अग्रज्ञानमः। ज्लानीमि वियोकासः जल्लाकैः मयोशिकः। जनामनाः नटा होयः उपा होयात् जर्नाः। **डर्भन्य मर्नार्टन** ठाजिएकर मर्नाठ्य । जिल्सिक-मनार्भिन कूर्याष्ट्राक्रांक्रांक्रांक्रिनम्। এवः कृषा कू मञ्जमा জায়তে দি কিক্তমা। গোপালমন্ত্রতর্পণে তু হোমসংখ্য হয়। यथा—हेर त्शांभालगञ्जांभाः जर्भनः हागमःभाषा रेजामि। मुखी जांश ममकरहा वियोकां छ॰ जन हात्। তাবৎ यछा निकः क्र्या । এवः ख्यानाज्यमिषिङ्दर्कात न मः भारः। शहर ज्यानात्रण कष्र। अक्रिकिटन व्यक्ति व्यक्ति क्रिश् उरक्षितः। म ভবেদেবতাদোহী পিতৃন্ সপ্ত নয়তাধঃ। ইতি সন্ৎকুমার-বচনাৎ। বস্তুতস্তু আরকপুরশ্চরণবিষয়মিদং। তথাহি---व्यात्रक श्रुतन्द्रत् यिन श्रुर्गः ज्यादाना व्याकाना श्रुता त्था क्र भर न जारकर। धवर ताजाविश शूतकत्र गिति । धवर ताजाविश शूतकत्र गिति । यद्धी कूर्यगारकामा किर छङ। ज्या ज्या ज्या ज्या द्यान-मी॰क ममाठात्र । তথা—অনন্তরং দশাংশেন ক্রমানো-यामिकक्षत्वर। তদন্তে মহতীং পূজাৎ কুর্যাাদ্রাক্ষণভোজনম্। ততো মত্ত্রতা সিদ্ধার্থৎ গুরুং সংপূজা তোষয়েৎ। এবঞ মন্ত্রসিদ্ধিঃ স্থাদেবতা চ প্রদীদতি। জিয়াদারে—দীকা-

क्षिका श्रम्मा ब्हेमधारकम। यमिछ छन, हाम, छर्ना, खिछाम छ आमन जिल्लाम अहे नकाम छेनाममः किहे भूगन्तम बरण, छन्नानि स्रमानग्रहहेर ह

रीनान् পশূन् यञ्च ভোজয়েদ্বা সমন্দিরে স যাতি পরমেশানি নরকানেকবিংশতিম্। যদ্যপি পুরশ্চরণমিদং পঞ্চাঙ্গপরং তথাচ। জপহোমো তর্পণঞাভিষেকো বিপ্রভোজনম্। পঞ্চাঙ্গোপাদনং লোকে পুরশ্চরণমূচ্যতে। তথাপি গ্রহ-नामि भूत्रम्हत्रनभार (गोनः जनमाजभत्रम्। मूर्यामः १९ সমারভ্য যাবৎ দূর্য্যোদয়াবধি। তাবজ্জপ্রো মহেশানি পূরশ্চরণমিষ্যতে। ইত্যাদে তথা দর্শনাৎ। তত্র হোমা-দেরভাবাত্তার্হ কথং গ্রহণপুরশ্চরণে হোমাদিরিতি চেদ্বচ-नार्मिव জায়তে। न চ পুরশ্চরণস্থা পঞ্চাঙ্গত্বাৎ সর্ববিত্র তদেব স্থাদিতি বাচ্যং গ্রহণে তদ্বিধানমনর্থকং স্থাৎ। কিঞ গ্রহণে হোমাদিনিয়মামান্তত্র হোমাদিঃ। গ্রহণপুরশ্চরণে অতএব গ্রহণে পঞ্চাঙ্গস্তরপপুরশ্চরণে কৃতে মুখ্যপ্রয়োগে-প্যধিকারইতি প্রকটীকৃতম্। তদকরণে কেবলজপমাত্র-পুরশ্বরণে নাধিকার ইতি সর্ব্বদম্যতমিতি।

পুরশ্চরণকালস্ত্র বারাহীতন্ত্রে—চন্দ্রতারাত্মকূলে চ শুরুপক্ষে শুভেহনি। আরভেত পুরশ্চর্য্যাং হরো স্বপ্তে ন

वात्राहीखाद्वा (य शूत्रण्डतनकाण खेळ व्याह्न, खाहाख कानायात्र (य हजा खात्राखिक महत्र, खर्खामान शूत्रण्डतन कतिर्व, हतिमग्राम कतिरवना। शहन

চাচারেৎ। গ্রহণে চ মহাতীর্থে ন কালমবধারয়েৎ। প্রতিপ্রিপ্রশাসক রুদ্র্যামলে। কার্ত্তিকান্মিন-বৈশাখ-মাঘেথ মার্গ্র-শীর্ষকে। ফান্ধনে প্রাক্রণে দীক্ষা পুরশ্চর্য্যা প্রশাস্ততে। গ্রহণে চ মহাতীর্থে ন কালমবধারয়েৎ। গ্রস্তান্তে গ্রস্তাদয়ে দীক্ষাপুরশ্চরণয়ো নিষেধমাহ তন্ত্রান্তরে—গ্রস্তান্তে হ্যাদিতে নৈব ক্র্যাৎ দীক্ষাজপং প্রিয়ে। ক্তে নাশো ভবেদাশু হায়ুংশ্রীস্ততসম্পদম্।

অথ পুরশ্চরণপ্রয়োগঃ। তত্র তাবদ্ধ মেঃ পরিগ্রহং কৃষা পুরশ্চরণপ্রাক্ তৃতীয়দিবদে কোরাদিকং বিধায় বেদিকায়াশ্চতুর্দিক্ষু ক্রোশং ক্রোশবয়ং বা ক্ষেত্রং চতুরস্রং আহারাদিকিরার্গেং পরিকল্পা তত্র কূর্মচক্রান্তরূপং মণ্ডপং বিধায় একভক্তঞ্চ কুর্যাৎ। তৎপরদিনে স্নানাদিকং বিধায় শুদ্ধঃ সন্ বেদিকায়াশ্চতুর্দিক্ষু অশ্বথোভূষরপ্লকাণামগ্যতমস্থ বিভ্নিয়ালান্দ্রক্রিকানান্ত্রিদক্ষু অশ্বথোভূষরপ্লকাণামগ্যতমস্থ বিভ্নিয়ালান্দ্রক্রিকানান্ত্রিমাত্রান্দ্রক্রিকানায় অস্তায় ফট্ ইতি

কালে ও মহাতীর্থে পুরশ্চরণ করিতেহটলে কালনিতার করিবেনা। বিশেষ্ট্র কার্ত্তিক, আম্বিন, অগ্রহায়ণ, মাঘ, ফাল্লণ, বৈশাথ ও প্রাবণ এই সকল মাস দীক্ষা ও পুরশ্চরণ প্রশন্ত । গ্রন্তান্ত ও গ্রন্তান্য গ্রহণে পুরশ্চরণ করিলে আ্যু, জ্রী, পুত্র, ও সম্পদ বিনাশ পায়, অত্রব উক্তরণ গ্রহণে পুরশ্চরণ করিবেনা।

এইকণ প্রশ্বরণ প্রক্রিয় কথিত হইছেছে, প্রথমে বথাশাল্ল স্থাননির্বর করিয়া পূর্ব তৃতীয় দিবসে ক্রোরাদি কর্মকরিবে এবং এক ক্রোশ বা তৃই ক্রোশ পরিমিতস্থান বেদির চতুর্দিকে আহারবিহারার্থ চতুরপ্রক্রেরিয়া লইবে। এই চতুরপ্রের মধ্যে কুর্মক্রোম্নারে মণ্ডপ নির্মাণকরিয়া একাহারে থাকিবে। তৎপর দিন স্নানাদিকরিয়া অশ্ব ও ভূষর অব্ধা পাক্ত বৃক্ষের কাঠ্ছারা ক্রিয়া অস্থ ও ভূষর অব্ধা পাক্ত বৃক্ষের কাঠ্ছারা ক্রিয়া অস্থ ও ভূষর অব্ধা পাক্ত বৃক্ষের কাঠ্ছারা ক্রিয়া অস্থ

यद्विनारिक्षे खत्र ने जा किया जिन्द विक्रिका या निकृष् व दय होता विद्यक्लीरत। ভूविमिवासतीकभाः। विद्योष्ट्रजाण्ड य छार्च यम मञ्जूषा मिषियू। मरेमछ कीलिछः क्षांकः श्रीकष्ठाकः विषुत्रकः। जानमर्भिष्ठाक मार्क्व निर्विद्यः मिषित्रसामा हैजारनन निथ्य रव्यू उँ नमः समर्गनाय व्यक्ताय करे हैं छ ष्याः मःशृजा তেषु श्र्वामिक्याग देखामित्नाक्षान् পূজয়েৎ। यथ।—उँ ভূভু वयः ইক্রাদিলোকপাল ইহাগচ ইত্যাবাহ্ পঞ্চোপচারৈঃ পূজ্যেৎ। এবং ক্রমেণ অন্তানপি পূজয়েৎ। তথাচ মুগুমালায়াং—পুণ্যক্ষেত্রাদিকং কৃষা কুর্যান্ত মিপরিগ্রহং। তথাহ্যুকমন্ত্রশ্র পুরশ্চরণসিদ্ধয়ে। ময়েয়ৎ গৃহতে ভূমির্মান্তোহয়ং সিদ্ধাতামিতি। তথাচ---প্রামে জোশমিতৎ স্থানং নদ্যাদৌ স্বেচ্ছয়া মতম্। নগরা-माविभि जिल्लामर जिल्लामयुग्रमथाभि वा। ज्या विभिक्षेत्र विद्यातार्थः क्षकद्राराए। आदातानिविद्यातार्थः ভावजीः कृति याक्रायर। क्रोतीवृष्काम्रवान् कीलान् अञ्चयञ्चाज्यिञ्चान्। निथरनमन् मिग् जारा र जघ अक था श्रुक राष्ट्र। ताक भावान् পুনস্তেষু গন্ধাদ্যৈঃ পূজয়েৎ স্থারিতি। ততো মধ্যস্থানে (क्रज्ञ भानः वाञ्चीमक मः भूका मर्वविद्यविनामार्थर भनभिकः

মান্ত্র অস্টোতর শতবার অভিমন্ত্রিত করত সেই সকল কীলক বেদির দশদিকে ওঁ যে চাল্ল বিল্লকন্তার ইত্যাদি মন্ত্রে অস্ত্রের পূজাকরিরা সেইসকল কীলকে ইন্দ্রাদি দশদিকণালের পূজা করিবে। এই সকল পূজার প্রণালী ও সুক্তমালা তাশ্রর প্রমাণ মূলে উদ্ধৃত করা হইরাছে। শ্রামন্তর মধান্তামে ক্লেজ্রআপাল, বাল্ল ও উপানের পূজাকরিয়া গণপতির পূজাকরিবে। মূলের লিখিড
নির্মে সহলক্রিয়া বেলির মধ্যে প্রফাপচাবে গণেশের পূজাকরিতে হইবে

शृक्दत्र यथा— उ जालाजाणि महकर्वगामुकमञ्जून इतन-कर्यानि विश्वविभागार्थः गर्णमशृकामरः कतिरमा। मक्का दिनिकायाथा शरकाशादितर्गाणणः शृक्षरत्र । उठ्न जः---क्ष्याभागिकर তव পূজয়ে दिशिवज्ञः। क्ष्याभागिकर वाञ्च-बाभानः विषयाकः ममर्फाराए। किंक्भारमाख्या विनः क्ला-তত্তঃ কেত্রং সমাবিশেৎ। ততো মাষভক্তাদিনা পুজিতদেব-ভাতেশ विमर मम्मार। उँ य द्रोजा द्रोजकर्माणा द्रोज-स्वानियामिनः। याजस्याश्राञ्जलाणः गगाधिभज्यणः या। विश्रीकृठाक रा ठाएण मिथिमिक्स मगा खिलाः। अमर्स्य एक প্রীতিমনদঃ প্রতিগৃহস্থিমং বলিং। ইত্যানেন দশদিকু ভূতেভ্যো বলিং দদ্যাৎ। ততো গায়ত্রীৎ জপেৎ। তথাচ---প্রাক্তঃ স্থাত্বা তু গায়ত্র্যাঃ সহস্রৎ প্রয়তো জপেৎ। জাতা জ্ঞাত্তত পাপতা ক্ষয়ার্থং প্রথমং ততঃ। বিপ্রান্ সম্ভর্গয়েদর্থ-ভোষণাচ্ছাদনাদনৈঃ। বহুভির্বস্ত্রভুষাভিঃ সংপূজ্য গুরু-মাত্মনঃ। আরভেত জপৎ পশ্চাত্তদমুক্তাপুরঃসরমিতি। শক্ত-ভেদেন ব্যবস্থা। भाषाणी পুনস্ততদেবতায়াঃ। খথা গোবিন্দ-बुक्पविद्य-जिन्न शूर्वरः जित्न कृष्धगाग्रेखीः সर्वनानशाः।

এবং পৃঞ্জিত দেবতাগণকে সামভক্ত বলিখিতে ইইবে। মৃশের লিখিত মৃত্রে দশদিক্পালকে মামভক্ত বলিখদান করিয়া গামতী লপকরিবে। প্রাভঃকালে লাসকরিরা জাভাজ্ঞাত পাপক্ষর কামনায় সম্মাকরিয়া সহস্র গামত্রীলপ করিবে। তৎপুরে বস্ত্র ও অর্থহারা প্রাদ্ধণণণকে সম্ভইকরিয়া বস্ত্র ভূষণহারা ওক্তদেবের পূলাকরিবে। এই গায়ন্ত্রীলগে যে দেবভার মন্ত্র প্রশুবন করিবে, সেইদেবভার গায়ন্ত্রীলপ করিতে ইইবে। গোবিনার্কার বনে ইছার প্রমাণ আছে। স্থভরাং গ্রী ও শুস ইহারাও প্রশুরণাল

चयू उक्थिया एन अन्ता न्। न्। इं कि कृष्णी স্বরসাদন্যত্রাপি তথা অতএব স্ত্রীশূদ্রসাধারণমিতি মাধবা-চাर्याः। यवु প্রাতঃ স্নাম্বা তু সাবিত্র্যা অযুতং প্রয়তোজ-পেদিতি তৎ পুনরত্যস্তপাপশঙ্কয়া। অদ্যেত্যাদি জ্ঞাভাজাত পাপক্ষরকামঃ অফৌতর্দহস্রদাবিত্রীজপমহং করিষ্যে ইতি সকল্পা জপেৎ। তত উপবাসং হবিষ্যং বা কুর্য্যাৎ। পরদিনে উষদি স্নানাদিকং কৃত্বা স্বস্তিবাচনপূর্বকং সঙ্করং कूर्या । उ जामाजामि जमूक मिवजाया जमूक मञ्जमिकि थि जि-বন্ধকাশেষ্ট্রিতক্ষয়পূর্বকতন্মস্রসিদ্ধিকামোহদ্যারভ্য যাবৎ-কালেন সেৎস্তৃতি তাবৎকালং অমুকমন্ত্রস্তু ইয়ৎসংখ্যকজ্প-তদ্দশাংশ-হোম-তদ্দশাংশ-তর্ণণ-তদ্দশাংশ-ব্রাক্ষণভোজনরপপুরশ্চরণমহং করিষ্যে ইতি সঙ্কল্য ভূতশুদ্ধি-প্রাণায়ামাদিকং কৃত্বা স্বস্থ্যাং বদ্ধা স্বস্পদ্ধত্যুক্তক্রমেণ দেবতাং সংপূজ্য দীপে প্রজ্বলিতাকারাং দেবতাং হৃদয়ে কৃত্বা প্রাতঃকালমারভ্য মধ্যন্দিনং যাবৎ জপৎ কুর্য্যাৎ। হোমস্ততন্তর্পণম। কুলার্ণবে—অর্পণস্ত ততঃ কুর্যাত্তীর্থোদৈ-*5सिशिखिरिङ:। জলে দেবং সমাবাহ্য পাদ্যাদ্যৈরুদকায়াকৈ:।

গায়ন্ত্রীজপ করিতে পারিবে। গায়ন্ত্রীজপের সরয় মূলে স্পটরূপে লিখিত হইরাছে। এইদিনে উপবাসী থাকিরা পরদিনে প্রভাজ সময়ে স্নানাচরণ পূর্মক ইন্তিবাচন করিয়া সঙ্করকরিবে। সঙ্কর মূলে স্পটরূপে লিখিত হইয়াছে, অনজ্ঞর ভূতভদ্ধি ও প্রাণায়াম করিয়া মুদ্রাবন্ধনপূর্মক সম্পদ্ধতি অমুসারে দেবভার পূজাকরিবে এবং সহসারে দেবভার ধ্যানকরিয়া প্রাভঃনকাল হইতে মধ্যাহকাল পর্যান্ত জপকরিবে। পরে হোম ও তর্পকরিবে। কর্পুর মিশ্রিভ তীর্থ জলহারা তর্পকরিবে। অলেতে দেবভার আবাহন

দংপৃত্ত্য বিধিবস্ত্রত্ত্যা পরিবারসমন্ত্রিক্ । একৈকমঞ্চলিং তোরং পরিবারান্ প্রতর্পয়েৎ । ততো হোমদশাংশেন তর্পয়েৎ পরদেবতাম্ । সংপূর্ণায়াস্ত্র সংখ্যায়াং পুনরেকৈকমঞ্জলিং । তর্পাবাক্যস্ত্র মূলমুচ্চার্য্য অমুকদেবতাং তর্পয়ামি নমঃ ইতি । অথাভিষেকবাক্যস্ত্র—নমোহস্তং মূলমুচ্চার্য্য অমুকদেবতা-মভিষিঞ্চামি ইতি কলসমুদ্রয়া ষমৃদ্ধি অভিষেচয়েৎ । তথাচ গৌতমীয়ে—নমোহস্তং মূলমুচ্চার্য্য তদন্তে দেবতাভিষাং । বিতীয়াস্তামহৎ পশ্চাদভিষিঞ্চাম্যনেন তু । অভিষ্যিঞ্চেৎ অমুদ্ধানং তোয়ৈঃ কুস্তাখ্যমুদ্রয়া । ক্লিকিবিষয়ে নীলতক্রে—মূলান্তে নাম চোচ্চার্য্য সিঞ্চামীতি নমঃ পদমিতি । ততো ব্রাহ্মণান্ ভোক্সয়িয়া দক্ষিণাং কুর্য্যাৎ ওঁ অদ্যেতাদি কৃতিত্বদমুকদেবতায়া অমুকমন্ত্রপুরশ্চণকর্ম্মণঃ শাঙ্গতার্থং দক্ষিণামিদং কাঞ্চনং বহিন্দৈবতং অমুকগোত্রায় গুরবে তুভ্যমহৎ সংপ্রদদে । ততোহচ্ছিদ্রাবধারণং ।

- অথ গ্রহণপুরশ্চরণসংক্ষয়ঃ। তদ্যথা—ওঁ অদ্যেত্যাদি রাহুগ্রন্তে দিবাকরে নিশাকরে বা অমুকগোত্রঃ শীঅমুকদেব-শর্মা অমুকদেবতায়া অমুকমন্ত্রদিদ্ধিকামো গ্রাসাদ্বিমৃক্তি-

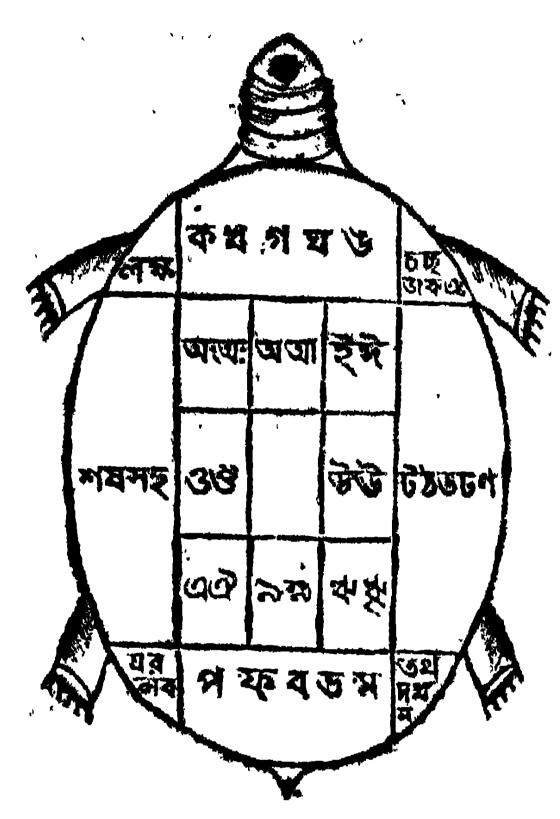
করিয়া জলাত্মক পাদ্যাদি উপচারে পূজাপুষ্ণক আবেরণ দেবতার প্রত্যেকে এক একবার তর্পণকরিয়া হোমের দশাংশ সংখ্যায় মূলদেবতার তর্পণকরিয়া পুনর্কার পরিবার দেবতাকে এক এক অঞ্চলি দিতেইইবে। অনস্তার মূল-মন্ত্র উচ্চারণকরিয়া "অমুদ্ধ দেবতাং অভিধিকামি" এই বাক্যে কলসমুদ্রায় অভিবেককরিবে। এইবিষয়ে গোত্মীয়তন্ত্র ও নীলতন্ত্রের লিখিত প্রমাণ মূলে উক্ত করাইইয়াছে। তংপরে আফ্রণ ভোজনকরাইয়া দক্ষিণা ও অভিদ্রাবধারণকরিবে।

পর্যন্তং অবৃক্ষপ্রজ্বপপুরশ্চরণমহং করিবা। ইতি সঙ্কল্যা জপেৎ। ততন্তদিনে তৎপরদিনে বা স্নানং বিধায় ওঁ অদ্যেত্যাদি অমৃক্মপ্রস্থা কৃতিতদ্গ্রহণকালীন ইয়ৎ-সংখ্যক জপ-তদ্দশাৎশ-হোম-তদ্দশাংশ-তর্পণ-তদ্দশাংশাভিষেক-তদ্দ-শাংশ-ব্রাহ্মণভোজন কর্মাহং করিব্যে ইতি সঙ্কল্যা হোমা-দিকং কর্মা কৃত্যা পূর্ববিৎ দক্ষিণাদিকং কুর্য্যাদিতি পুরশ্চরণ-প্রয়োগঃ সমাপ্তঃ।

অথ কৃষ্ণচক্রং। দীপস্থনং সমাজিত্য কৃতং কর্মা ফল-প্রদম্। দীলাতে পুরুষো যত্র দীপস্থানং তত্বচাতে। চতুরস্রাং ভুবং ভিত্তা কোষ্ঠানাং নবকং লিখেং। পূর্বকোষ্ঠাদি বিলিখেং সপ্তবর্গানমুক্রমাং। লক্ষমীশে মধ্যকোষ্ঠে স্বরান্যুক্রমাণ্টারিখেং। দিক্ষু পূর্ববিদিতো যত্র ক্ষেত্রাদ্যক্ষরসং-দিতিঃ। মুখস্ত তম্ম জানীয়াং হস্তাবুভয়তঃ স্থিতো। কোষ্ঠে কুক্ষী উভে পাদে ধ্ব শিষ্ঠং পুচ্হমীরিতং। ক্রমেণানেন

গ্রহণ প্রশ্বরণে বেরূপ সকল করিতেইইবে, ভাহা মূলে স্পষ্টরূপে লিখিড • হইশাছে। প্রথমে সঙ্গাকরিরা জপকরিবে, গ্রহণবিম্জির পর প্রস্থার সঙ্গাকরিয়া পূজা হোমাদি সমাপনপূর্ষক দক্ষিণা প্রদানকরিবে।

विक्रण कृषिक कथि उ इरेटिए। रिष्टारन श्रूक्य मीशामान हम, जाहरिक मीश्यान वरण, वह मीश्रान जाजाकतिया ज्ञाश्यान करण्या क्रिक्य । क्रियापारन वकि उच्च व्यक्तिया जाहा नयरकांत्रात्र विक्रक ज्या वकि कृष्याकात उक जाइज कतिर्दे, देशात्र श्र्यां कर कर्षा करण्या करण्य



মবিভার 'যঃ কুর্য্যাঙ্জপ-যজকং। ততা যতঃকলং নান্তি * সর্বানর্থার কল্পাতে।

শংশ্বতে। প্রাণ রাজ্য তিলারেখাঃ সমালিখেছ।
তথাচ—বীক্ষণং মূলমন্ত্রেণ শরেণ তাড়মং মতং। তেনেব
প্রোক্তং বর্মণাড়াক্ষণং মতং। তত্তো মূলমূলার্য ও
কৃথায় নমঃ ইতি সংপ্রা প্রাণগ্রা উদগগ্রান্তিজ্ঞতিলো রেখাঃ
কর্তব্যাঃ। প্রাণগ্রেম্ মূকুন্দেশপুরন্দরান্ প্রাদক্ষিণ্যেন সংপ্রা
উদগগ্রেয় ব্রক্ষবৈস্থতেন্দ্ ন্ পূজ্রেছে। স্থল্দরীপক্ষে ভূ সর্বত্রে
ঘট্তারীপ্রয়োগঃ। ঘট্তারী চ—ঐ ব্রী প্রা ঐ ব্রী নোঃ
ব্রক্ষণে নুমঃ। এবংক্রমেণ পূজ্রেছে। তথা ব্রক্ষমংহিতায়াং হোমকাণ্ডে—প্রশান্তাং বেদিকাং হস্তবিস্তারোমতিশালিনীং। কৃষান্মিন্ স্থাপয়েছ কৃষ্ণং যথোকক্রমযোগতঃ।
তত্র সংপ্রান্তেন্দবং যথাবিধ্যুপচারকৈঃ। ততাে হোমং
প্রক্রীত দেবতাসমিধানতঃ। ততঃ কৃশুমধ্যে ঘট্রোনরন্ত-ত্রিকোণং তর্হির্ক্টদলপন্থং তদ্হিশ্চত্রব্রং চতুর্মার-

এইকণ হোমবিধি কাথত হইতেছে। কুও বা ছাওল করিয়। বীক্ণাদি
গংখারপুর্বাক পূর্বাত্র তিন এবং উদ্ভরাত্র ভিন রেখা অন্ধিত কবিবে।
মৃণমন্ত্র অবলোকন, ফট্ এই মত্রে তাজ্ন, মৃলমত্রে প্রোক্ষণ এবং ক ফট্
এইমত্রে অভ্যুক্ষণকরিবে, ইহাই বীক্ষণাদি সংখার। পরে মৃলমত্রান্তে ক
কুণ্ডায় নমঃ এই মত্রে পূজাকরিয়া পূর্বাত্র রেখান্তেরে দক্ষিণাদিক্রমে ভা
মুকুলায় নমঃ, ও উন্ধানার নমঃ, ও পুরক্ষরার নমঃ এবং উদ্ভরাত্র রেখান্
লগে ও প্রস্থানার নমঃ, ও বৈবস্বভার নমঃ, ও ইল্বে নমঃ এই মত্রে পূজা
করিবে। "ক্ষানী দেবতার হোমে ঘট্ভারী মত্রে পূজাকরিবে, এই বট্ভারী
মন্ত্র মূলে লিখিত ঘট্রাছে। প্রস্থানার লিখিত আছে বে, বাগানার্ত্তার
লগানকোণে একহন্ত বিভূত এবং একহন্ত উন্নত বেনি করিয়া ভাইতে
বিধিপূর্বাক কুল্ল হাণনকরিবে এবং সেই কুল্লে ব্যালন্তবোশ্চারে ব্যবভার
পূজা করিয়া দেবতার সরিধানে হোমক্রিবে। কুল্ডমধ্য বটকেবন, ভরাক্ষে

गरमङः निषिषा जन्नमित्र मृत्नम शुल्भाञ्चनीम् प्रमार स्मारी-भटक कू बामग्रा । ' 'ककः भववानि धानदिनाकुक्ता वदरुद्धान-गीठगर्करत् । जन्यवा—कर्निका भर्यासात्र न कार्य-कामाभिएकानक्रकेटम लें भन्नाम नमः धरः कानाम रिवानाम जिथराय। श्रवामिष्ण जर्थाय जल्लानाय जिर्वतागाय **क्टिनचर्याय । यद्या उँ क्वनसाय धवः भगाय कः क्रियलगाय** चाम्नकनाष्ट्रात्व मगः छ भागमथनाग्न स्वाष्ट्रनकनाष्ट्रात्व नगः यर विश्वियश्लाम पर्णकलाषात नयः। उठः क्रिमात्रमू शृक्विषियर्था ह अ नीलारेश नयः अवर स्थलारेश नयः कृष्णरेश थ्यारेय जीबारेय म्यूनिमिरेश स्कृतिया स्निरेश। वरुगामनाम नमः। ততा वागीयतीम्बूनाणाः नीत्नकीवन-लांচनार। वागीयद्वन मःयूकाः। देखि धार्षा ७ दी वाजीश्रताय नमः ७ औँ वाजीश्रदिंग नमः। रेजि পঞোপচারেঃ সংপূজ্য সূর্য্যকান্তাদিসমূতং শ্রোত্রিয়গেছজং বা বহিন্যান-(प्रद। ञ्चन्रीभक्त पू कारमध्र कारमध्रीः भूकर्षद। (गोजभीरम-- भाषां जनमामक यमि वार्त्रागम्बरः। (जाजि- *

वृत्त, खवाट्य विद्यान, ख्याट्य अहेमननम्, ज्याट्य छ्यूनीत ६ हर्ने व्याच्या क्ष्या । व्याच्या द्याप्त द्याप्त वाणायीट्यं नक्ष्याक्षण विद्य द्याप्त व्याप्त निष्ठ व्याप्त निष्ठ व्याप्त निष्ठ व्याप्त निष्ठ व्याप्त निष्ठ व्याप्त निष्ठ व्याप्त व्याप्त

ग्रानाः (शब्जक वनकः वाथवा व्राक्र । निक्रशिकाकानाहरका क्रक्रनाचकरता ভবেर। क्रज्जवरकाम्ड्र्थाः मः कनः मनाम्-তাশনঃ। বৈশাচ্ছ ক্রাক্ত বিকলৎ ক্রায়তে হোমকর্মণ। ज्यार मर्वाक्षयाक्रन विस्मुक्र मगार्द्य ज्ञास्ट्र-দিজাতিভবনারাপি রহিন্মানীয় সাধকঃ। বৌষড়ভেন মূলেন यक्षिण् ७६ विलाकस्य । अधियावाहसम्ख्यस्य जन-नखत्र। ष्रेफएरखन मृत्नन क्रक्निमार्भः भतिज्यक्र। তত उँ राष्ट्राशिशीशा नमः। ह्याकिक उँ वामारेश नमः। जयः (जार्कादेश द्रोटिना जिल्लादेश। ज्ञां भूलभूकार्या व्यमूक्त प्रविज्ञाकु थोय नमः। इजि कू थः मः शृक्षा जन शा वाशी-শ্বরীং তত্তদেকতারূপাৎ ঋতুমতীং ধ্যাত্বা যথোক্তৎ বহ্নিমানীয় বীক্ষণাদিভিঃ সংস্কৃত্য বমিতি তথাদ্বহিন্দৃত্য মূলমুচ্চাৰ্য্য क्षि क्यार्पा अश्वा देजानन क्यां मार्भ পরিত্যজ্য বহ্নিক্রেণ দংরক্ষ্য ভ্মিত্যবগুণ্ঠ্য ধেনুমুদ্রায়তীকুত্য বাহু-ভ্যাং দগুরুত্য কুণ্ডোপরি ত্রিঃ পরিভ্রাম্য জারুস্পুর্থমহীতলঃ শিववीक्षवुका। व्यावादांश्वियुथः (प्रवाः) यानाद्वनः कित्रिष्

ভারণাতিত কিখা বাদ্ধণগৃহত্তিত করি আনমনকরিয়া হোমকরিবের হোম কার্যো সায়িক ব্রান্ধণের নিকট অলি গ্রহণকরিবে, নির্মান্ত ব্রান্ধণের নিকট অলি গ্রহণকরিয়া হোমকরিবে অর্জ, ক্রিছের নিকট চফুর্বাংশ এবং বৈশু কা প্রেয় নিকট অলি গ্রহণকরিয়া ভাহাতে হোমকরিলে নেট হোম নিক্ল ভয় । ভল্লান্তরে লিখিভ আটেছ বে, উন্ভারণ প্রাশ্ভ আগজ আনমানিয়া ব্রান্ধ্রত মূলমন্ত্রে আবাধন, এবং হু কড়ন্ত সূলমন্ত্রে ক্রন্তান্ধাংশ পরিভাগের করিবে। পরে বহিনর যোগগীঠ ও বালীখনালির প্রাক্রিয়া বীক্ষণানি সংস্কারপ্রক বাহ্যারা বহিন ধারণকরিয়া কুন্তোপরি ভিন্নার পরিভানণভ্রিয়া কাক্ষ্ম বারা মহীত্র আগক্রিমা কুন্তোপরি ভিন্নার পরিভানণভ্রিয়া কাক্ষ্ম

उट्टा औ विस्पृतिय नगः रेकाफार्का विरुट्ठिका। नगः रेजि ठिज्जाः मध्याका वैविधानिकत इन इन प्रद पर भार लिङः सर्भ जामरवमः छ्डामनः। स्वर्गवर्षभवलः मशिषः विश्वरणाम्बर। देणाशिक्टिए। उर्जार्ग प्रममुकरमय-जानागामि देखि नाम क्षा एँ दियानत जाउद्यप देशावह लाहिजाक मर्वककाणि बाध्य याहा। व्यवनाद्याकिछिः मःशृका अवदार्शित्रगानिमखेकिसारणानमः। जैमर्यार्करम क्ताव नमः रेजापि विधियक्तरका नमः। उपायस्य जा उर्वित्र है जा ना स्वाहित्या नमः उपारम् अंबाका। ना स्व मौक्ति (जा) नमः उपिरः ७ श्यामाछेनिधिका नमः उपारम मगः। ততঃ প্রাদেশমাত্রং কুশপত্রদায়ৎ মৃত্যধ্যে নিঃক্ষিপ্য मवा। भवा स्वाद्या विष्ट्रां भिन्न लां स्वयुक्षाः धाषा द्यायः कूर्या ९। उक्व पिक्व पिक्व निक्व निक्य निक्व निक जारहि व्यामिकिनात्व कुछ्तार। वायकाशामाकाः गृहीका

ওঁ দোমায় বাহা ইতি বামনেত্রে ক্রয়াৎ ততা মধ্তাগাদাজাং গৃহীছা ওঁ অমাদোমাভ্যাৎ বাহেজারেল লাটনেত্রে
জুছ্মাৎ। পুনর্দক্ষিণতঃ ওঁনমঃ ইতি ছুজং গৃহীছা ওঁঅময়ে
বিষ্টিকৃতে আহেতি অমিমুখে। ততাে মহাব্যক্ষিতিহামঃ
ওঁভুঃ বাহা ওঁভুবঃ বাহা ওঁবঃ বাহা। ওঁবৈখানর জাতবেদ
ইহাবহ লোহিতাক সর্বাকর্মাণি সাধ্য আহেত্যনেন ত্রিবারং
জুহ্মাৎ। ততােহয়ো মূলেন পীঠপূর্বকং দেবতাং সংপূজ্য
তমুখে মুতেন মূলমন্ত্রেণ পঞ্চবিংশতিবারৎ জুহ্মাৎ। বহিন্দেকায়েকিকাং বিভাব্য মূলমন্ত্রেণকাদশাহতীজু হ্মাৎ।
ততাে মূলমন্ত্রভাঙ্গদেবতাভ্যঃ বাহা এবং আবরণদেবতাভ্যঃ
বাহা। শক্তন্তেৎ প্রত্যেকমেকৈকাহতিং জুহ্মাৎ। তওঃ
সঙ্গাং বিধায় তত্তৎকল্লোক্রেব্যেণ হোমৎ ক্র্যাৎ। তওঃ
মূলমন্ত্রেণ পূর্ণাহতিং দত্তা সংহারমুদ্রেয়া স্বেউদেবতাৎ হৃদয়ে

हरेट युक गहेता व जाराय चारा वरेगा प्र मिन्न निय्व जालिक निया में विश्व विश्व

नमानीय कमस्यिक विश्वा पक्तिनाः प्रकार मही विश्वासमात्रनः दूर्शार ॥ हेकि हामिविधिः॥

অধ হোরদ্রব্যাণাং প্রমাণনভিবীরতে। কর্ষনাত্রং মৃতং
হোনে শুলিনাত্রং পরঃ মৃতং। উক্তানি পঞ্চাব্যানি তথসমানি মনীবিভিঃ। তৎসমং মধু ছুয়ামমন্দর্মাত্রমুণাছতং।
দ্বি প্রস্তিমাত্রং স্থালাজাঃ হ্যুর্মুষ্টিসন্মিতাঃ। পূথুকান্তত্তৎপ্রমাণাঃ স্থ্যঃ শক্তমোপি তথোদিতাঃ। গুড়ং পলার্দ্ধমানং
স্থাৎ শক্রাপি তথা মৃতা। আসার্দ্ধং চরুমানং স্থাদিক্দঃ
পর্বাবিধিঃ মৃতঃ। একৈকং পত্রপুপাণি তথা পূপানি কল্পয়েও। কদলীকলনারঙ্গং ফলান্থেকৈকশো বিছঃ। মাড়লুর্সং চতুঃথগুং পনসং দশধা র্কতং। অইধা নারিকেলানি
ধণ্ডিতানি বিছর্ব্ধাঃ। ত্রিধার্কতং ফলং বিল্বং কপিখং
ধণ্ডিতং বিলা। উর্বাক্ষককলং হোমে কথিতং থণ্ডিতং

ত্রিধা। ফলান্তমান্তথণানি মমিদ স্থার্দশাস্কাঃ। দূর্বাত্রিং সমুদ্দিন্টং গুড় চী চতুরঙ্গুলা। জীহরো মুষ্টিমাত্রাঃ
স্থান্দা মাষা যবা অপি। ততুলাঃ স্থান্তদর্কাংশাঃ কোদ্রবা
মুষ্টিদিন্তাঃ। গোধুমা রক্তকলমা বিহ্নিতা মুষ্টিমানতঃ।
তিলাশ্চুলুকমাত্রাঃ স্থাঃ সর্বপান্তং প্রথমাণতঃ। তক্তিপ্রমাণং
লবণং মরিচান্তাপি বিংশতিঃ। পুরং বদরমানং স্থাদ্রামঠং
তৎসমং স্বৃতঃ। চন্দামান্তর্কপূর্বকন্ত্রীকুর্মানি চ। তিন্তিরীবীজমানানি সমুদ্দিন্তানি দেশিকঃ। বৈশানরং স্থিতঃ
থ্যায়েৎ সমিদ্ধোমেরু দেশিকঃ। শরানমান্ত্রহামেরু নিষ্ধাং
শেষবস্তম্থা আন্তান্তর্কুত্য়াছক্তের্বিপশ্চিৎ সর্বকর্ণান্ত।
কর্ণহামে ভবেদ্যাধি-র্নত্রেইক্ষত্বং সমীরিতং। নাদিকায়াং

ভিনভাগের একভাগ লইয়া একএক আছ্ভি লিভেছইবে। অন্তান্ত ফললারা হোমকরিতে চইলে একএক সহভিত্তে একএকটি ফলপ্রদান করিবে। সমিধহোমে দশাস্থল পরিমিত সমিধহারা এবং দ্লাহোমে দ্লাএমদারা প্রত্যাক্ষরার আছেভি লিভেছইবে। গুড় চীছোমে চড়রস্থল পরিমিত গুড় চীক্ত, ধান্ত, মার ও যদহোমকালে এক এক মৃষ্টি, ডগুলহোমে এক মৃষ্টির দলাংশ, কোত্রব (কোনধান্ত) গোধ্ম ও রক্তশালী ছারা হোম করিছে ছইলে এক এক মৃষ্টি পরিমাণে এক এক আছভি লিবে। তিল ও সর্যাপ ছোমে এক গগুল পরিমাণ, লবণহোমে ঘুইভোলা এক এক ভাছভির শরিমাণ আদিকে। মরিচছোমে এক একবার ফুড়িটি করিয়া মরিচ লিবে। গুলার্মাণ আদিকে। মরিচছোমে এক একবার ফুড়িটি করিয়া মরিচ লিবে। গুলার্মাণ আদিকে। মরিচছোমে এক একবার ফুড়িটি করিয়া মরিচ লিবে। গুলার্মাণ আদিকে। ইত্যানিকরিয়ালে এক এক আছভিলিবে। যখন সমিধানা হোমকরিরে, তথন অরিদেবকে অক এক আছভিলিবে। যখন সমিধানা হোমকরিরে, তথন অরিদেবকে অবিছি হানক্ষিত্র চইলে অয়িকে উপবিষ্ট থানক্ষিত্র আছভি প্রদানক্ষিত্র। এই-রূপ স্বভাহামে শন্তান, এবং অন্তান্ত প্রবাহারা হোম করিতে চইলে অয়িকে উপবিষ্ট থানক্ষিত্র আছভি প্রধানক্ষিত্র। আলিগণ সকল হোমেই অরিব মুখ্য আছভি লিবে। অনির কর্ণ প্রধেশ আছভি লিবে হোমকর্নার

মনঃপীড়া মন্তকে ধনসংক্ষয়ঃ। যতঃ কাঠং ততঃ শ্রোত্রং যতো ধ্নোহত্ত্ব নাসিকা। যত্তায়ন্তলনং নেত্রং যতোহঙ্গানরন্ততঃ শিরঃ। যত্ত্ব প্রেজনিতা স্থালা সা জিহনা জাতবেদসঃ। স্বর্ণসিন্দ্রবালার্ককৃত্ব ক্লোত্তসমিতঃ। স্বর্ণরেতসো বর্ণঃ শোভনঃ পরিকীর্তিতঃ। তেরীবারিদহন্তীদ্রনিনাদোহ্মিঃ শুভাবহঃ। নাগচম্পকপুমাগপাটলাযুধিকানিতঃ। পদ্মেন্দীবরকহলারস্পিতি গ্রুলুসমিতঃ। পাবকস্ম শুভো গদ্ধ ইত্যুক্ত ক্রেন্বিদিতিঃ। প্রদক্ষিণান্ত্যক কম্পান্তত্ত্বাতাঃ শিধিনঃ শিখাঃ। স্থাদা যজমানস্থ রাজ্যস্থাপি বিশেষতঃ। কৃদ্দেন্দ্ধবলো ধ্নো রহিঃ প্রোক্তঃ শুভাবহঃ। কৃষ্ণঃ কৃষ্ণগতের্ববর্ণোযজনানঃ বিনাশয়েৎ। শেতোরাকীং নিহন্ত্যাশু বায়সম্বর্দমিতঃ। ধ্রম্বরসমো বহ্নের্বিনাশয়্বং। প্রিভ

 গদ্ধে। হতভুজো হোতুর্দ খঃপ্রদো ভবেং। ছিন্না র্ত্তা শিখা কুর্যাং মৃত্যুং ধনপরিক্ষয়ং। শুকপক্ষনিভো ধূমঃ পারাবত-সমপ্রভঃ। হানিং তুরগজাতীনাং গবাঞ্চ কুরুতেইচিরাং। এবং বিধের দোষের প্রায়শ্চিতায় দেশিকঃ। মূলেনাজ্যেন জুহুয়াং। পঞ্চবিংশতিমান্ততীঃ। ইতি হোমস্য শুভাশুভ লক্ষণং।

অথ নিত্যহোমঃ। ততুক্তং সোমভুজগাবল্যাং—নাজপ্তঃ
সিধ্যতে মন্ত্রো নাহুতশ্চ ফলপ্রদঃ। নাদিফোঁ। যচ্ছতে কামান্
তত্মাজিতয়মর্চয়েং। পূজয়া লভতে পূজাং জপাৎ সিদ্ধির্ন
সংশয়ঃ। বিভূতিঞ্চায়িকার্য্যেণ সর্ববিস্কিঞ্চ বিন্দতি। নীল
তন্ত্রেপি—নিত্যহোমং প্রবক্ষ্যামি সর্বার্থং যেন বিন্দতি।

নেই হোমে সকল বিনাশ পার। হোমায়ি হইতে ত্র্মি নির্গত হইলে যজানের ত্থে হইরা থাকে। হোমকালে যদি শিথা ভিরভির অথবা বুডা কার হর, তাহা হইলে যজমানের ধন ও আয়ুঃ ক্ষরপার। শুক্পক্ষী অথবা পারাবভের স্থার অগ্নির বর্ণ দৃষ্ট হইলে অচিরকাল মধ্যে যজমানের ক্ষর্ম ও গো বিনাশ পাইরা থাকে। যদি হোমকালে উক্ত ত্র্টলক্ষণের মধ্যে কোন কেন্দ্র দৃষ্ট হয়, তাহা হইলে সেইদোবের শান্তির নিমিত্ত প্রোয়শিচতক্ষরূপ পঞ্বিংশতি ঘৃতাত্তি দিতে হইবে।

এইক্ষণ নিভাহোমবিধি কথিত হইতেছে। সোমভূক্ষণাংলী প্রমাণে জানাযায় যে, জপানা করিলে মন্ত্র সিদ্ধ হয় না এবং হোম না করিলে সেই মন্ত্র কোন ফল প্রালানকরে না। আর শুকর নিকট মন্ত্র প্রহণ না করিয়া মন্ত্র জপকরিলে সেই মন্ত্র কোন অভিলায় পূর্ণকরে না। অতএব স্ক্রপ্রের ক্ষণ, হোম ও মন্ত্রাহণ এই কার্যাক্রয় করিবে। স্বেতার পূলা করিলে স্ক্রি স্থান লাভকরিতে পারে, মন্ত্র ক্ষণকরিলে সিদ্ধ হইয়া থাকে এবং হোম করিলে স্ক্রিশে ক্রিলে স্ক্রিল লাভ ও স্ক্রিয়া সিদ্ধ হয়। নীল-তন্ত্রপ্রমাণে আনাযার যে, যে ব্যক্তি প্রভিদিন হোমকরে, সে স্ক্রিদিদ্ধি

সপর্যাং সম্যাপাদ্য বলিপ্রবং চরে বিধিং। ততা হোমং তর্পণক চরেৎ সাধক্ষতমঃ। বলিবৈশ্যাদিককৈ ব্রাহ্মণঃ সম্পাচরেৎ। অর্ঘ্যোদকেন সংপ্রোক্ষ্য তিল্রোরেখাঃ সমালিখেৎ। রিধিবদ্যিমানীয় ক্রনাদেভ্যো নমস্তথা। মূলক্রঃ সম্কার্য্য কুণ্ডে বা স্থভিলেপি বা। ভূমো বা সংস্তরে দ্বিং ব্যাহ্নতিত্রিতয়েন চ। স্বাহান্তেন ত্রিধা হুত্বা ষড়ঙ্গ-হ্বনং চরেৎ। ততো দেবীং সমাবাহ্য মূলেন ষোড়শাহ্নতিং। হুত্বা স্ত্রত্বা নমস্কৃত্য বিস্কেদিন্দুমণ্ডলে। শ্যামাদ্যে বিশেষঃ। ভিরবাংশ্চ হুনেদক্টো আজ্যান্বিততিলঃ শুভৈঃ। পূর্বাদিদিক্রেমেণের ততো হোমং সমাচরেৎ॥ ইতি হোম প্রকরণং। অথ মালাসংকারঃ। সনৎকুমারীয়ে—অপ্রতিষ্ঠিত-

লাভকরিয়াথাকে, অভএব নাধক দেবভার পূজা করিয়া ৰলিপ্রদান পূর্মক হোম ও ভর্পণ করিবে। আলাপ প্রতিদিন বলিবৈশ্য কর্ম সমাপন করিয়া হোমকরিবে। ভাহার প্রণালী এই—প্রথম অর্থাদকদারা হোমস্থান প্রোক্ষণকরিয়া সেই স্থানে পূর্মাগ্র ভিনটি রেখা অন্ধিভকরিবে। পরে বিধিপূর্মক অয়ি আনায়নকরিয়া ও ক্রবাদেভো নমঃ এই ময়ে সেই আনীত অয়িহইতে কিঞিৎ অয়ি পরিত্যাগকরিবে এবং মৃশমন্ত্র উচারণকরিয়া কৃষ্ণে, স্থতিলে অথবা ভূমিতে অয়িস্থাপনপূর্মক ও ভূং স্থাহা ও ভূবং সাহা ও অং স্থাহা এই বাজ্বভিমত্রে ভিনবার ঘূতান্তি প্রদানকরিয়া মৃশমন্ত্রে বোড়শাহতি দিভেছবৈর। পরে দেবভার বড়কমন্ত্রে বড়াহতি প্রদানকরিয়া মৃশমন্ত্রে বোড়শাহতি দিভেছবৈর। পরে সম্বর্মকরিয়া বথোক স্রব্যালারা হোম করিয়া স্তেপাঠ ও নমন্ত্রাপূর্মক চন্ত্রমগুলে বিদ্রানকরিবে। কালিকা-দেবীর হোমে যুভমিন্তিত ভিল্বারা অসিভান্যাদি অইভেরবকে অই।ত্তি প্রদানকরিতে ইইবে। ইতি হোম প্রকরণ সমাপ্ত।

ममरक्यात एक लिकि चारह (य, रय मानव स्थितिष्ठ मानावाता छ न

মালাভির্দ্মন্তং জপতি যো নরং। সর্বাৎ তদ্মিক্ষলং বিদ্যাৎ।
কুদ্ধা ভবভি দেবতা। গোতমীয়ে—কার্পাসসম্ভবৎ সূত্রং
ধর্মকামার্থমাক্ষদম্। তচ্চ বিপ্রেন্দ্রকত্যাভিনির্দ্মিতঞ্চ
স্থেশাভনম্। থেতং রক্তং তথা কৃষ্ণৎ পট্টসূত্র মথাপিবা
শান্তিবৈশ্যাভিচারের মোক্ষের্যাজয়ের চ। শুক্রং রক্তং তবা
পীতং কষ্ণং বর্ণের চ ক্রমাৎ। সর্বেধামের বর্ণানাং রক্তং
সর্বেশিতপ্রদং। ত্রিগুণং ত্রিগুণী কৃত্য প্রথয়েৎ শিল্পশান্ততঃ।
মণিরত্রপ্রমাণক্য সূত্রং কুর্য্যাদ্বিচক্ষণঃ। একৈকং মাতৃকা
বর্ণং সতারং প্রজপেৎ স্থবীঃ। মালামানামায় সূত্রেণ প্রথয়েমাধ্যভাগতঃ। ত্রন্ধাগ্রহৎ বিধায়েখং মেক্ষক্ষ প্রস্থিসংযুতম্।
প্রথয়িত্বা পালাং ততঃ সংক্ষার মারভেৎ। কস্যচিন্মতে
মূলবিদ্যরা প্রথমেৎ—তথাচ একবীরাকল্পে—মাতৃকাবর্ণতো
প্রস্থিং বিদ্যায়া বাথ কারয়েৎ। স্বর্ণাদিগুণৈর্ব্বাপি প্রথয়েৎ
সাধকোত্রমঃ। ত্রন্ধগ্রহিং ততো দদ্যান্ধাগপাশমথাপিবা।

করে, ভাছার অপ নিজ্প হয় এবং দেবতা কুপিতা হয়েন। প্রাশ্বণকা বিনিশিত কার্পাস্থ্রে মালা গাঁথিয়া সেই মালার অপকরিলে চতুর্কর্গকল-প্রাপ্তি হয়। খেত, রক্ত অথবা কৃষ্ণবর্গ পট্ট স্ক্রছারা মালা গ্রহনকরিবে। শান্তিকামী গুরুবর্গ, বৈশ্বাদি অভিচারী ব্যক্তি রক্তবর্গ, মুক্তিকামী পীতবর্গ এবং ক্রমাকাজনী কৃষ্ণবর্গ স্বে মালা গাঁথিয়া অপকরিবে। পরস্ক সকল কার্য্যেই রক্তস্ত্রপ্রথিত মালা প্রশাস্ত। বিশুণীকৃত স্বেকে প্রক্রার বিশ্বণ করিয়া ভদ্বায়া মালা গ্রহনকরিবে। ধেরূপ মণিছারা মালা করিবে, স্বেও ভদ্মুরূপ করা কর্ত্বয়। ও আং, ও আং ইন্যাদ রূপে পঞ্চাশবর্ণে পঞ্চাশব্দ মালা গ্রহনকরিবে। প্রক্রিছিতে মালাসকল গাঁথিয়া মেক্তেও ব্রক্ষপ্রস্থি দিবে। কোন মতে মূল্যম্যে মালাতে গ্রন্থি ব্রক্ষনকরিবে। স্বর্ণাদি স্ব্রে

कव्राह्माववश्रीयाचार शानश्रायणः। मर्क्टलियः उट्टा त्यक्रर मृजबत्तममिकः। अधरम्खाद्रयार्शन वत्रीमार माथरकालमः। এবং निष्मामा (मरविभ <u>शिक्तिकाक मगांकरत्य । त्योजगीत्य</u>— मूर्थ मूथछ मश्राका भूष्ट भूष्ट नियाक्ता । भाभूष्य मन्नी याला यदा मनीकृष्टिः एछ।। मूर्यभूक्तित्रमञ्ज इन्नःमारत्-क्षाक्राक्षा (প্राक्षः यूथः शुष्ट्य निष्नग्र। कलाक्य ठ स्रकाश्मर मिन्दिष्ठियः यूथर । मिन्दिष्ठ क्षाश्मर भूष्टर শ্লক্ষমিতি স্মৃতং। এবং জাত্বা মুখং পুচছং রুদ্রাক্ষাভোরুছা-करशि:। তৎमकाতीय्रायकाकः यक्षायाका ग्राप्तर। এ किक् मिनामाय खना अचिः धकहारप्र । अ किकः माकृका वर्ष् अथनारमो कू मरজ १९ । अभिनियम खेळव । जित्राविक-গ্রন্থিকেন তথার্দ্ধেন বিধীয়তে। সার্দ্ধন্বয়াবর্ত্তনেন গ্রন্থিৎ कूर्यार यथा पृष्य । ইত্যেতাভ্যামিচ্ছাবিকলः। कालिका-পুরাণে—ত্রকাগ্রন্থিত কুর্য্যাৎ প্রতিবীজং যথান্থিতম্। ত্রথবা গ্রন্থিরহিতৎ দৃত্রজুসমিন্তিও। এবং নির্মায় মালাং

শ্রের উত্তর প্রান্ত একতা করিয়া মেরু মালাতে গ্রন্থিতি আছে যে, মালা সকলের মাপে মুথ এবং প্র্ছে পুছ যোজনাকরিয়া লোপ্ছে বা দর্পাকৃতিকরিয়া মালা করিবে। ক্রান্সের উরতভাগ মুখ এবং নিয়ন্তাপ পূক্ষ, অক্সান্ত মণির যে ভাগ সুল সেই ভাগ মুখ এবং শে ভাগ স্কা দেই ভাগ প্রছ। এই মূপে ক্রাক্ষ পদ্মাক্ষাদির মুখ ও পুছ নির্বর্গরিয়া মালা প্রস্তুত্ব করিবে। এক একটি মালার পরে এক একটি গ্রন্থি দিভেহইবে। সান্ধিভিতর বেইনে ক্ষান্য দান্ধি বিভয় বেইনে গ্রন্থি দিভেহইবে। কালিকাপ্রাণের প্রমাণ আমা ঘার যে, ব্রন্ধ গ্রন্থি বাভিরেকেও দুট্ মুজুদারা মালা গ্রিরা শোধনকরিবে।

रिव (नांधरप्रमूनिमख्यः। ज्यांथशजनवरिकः शमाकात्रस कझरार । जनारग चानरमनानाः गान्काम्नम् । कालाय अक्षातान मामाजाउन मज्जिलः। मामाजाउ-यञ्जञ्च-- ७ मत्मां जां का व्यानि व्यानि मत्मां जां का वा विकास वि ভবে ভবেনাদিভবে ভজস্ব মাং ভবোদ্ভবায় বৈ নমঃ। চন্দনা श्वक्रशक्षार्रेमार्यायपारवन पर्याय । वायानवयञ्च — ७ नत्या-(জाष्ठीय नेत्यांक्रांय नयः कालाय नयः कालिकित्रांय नरमा वलक्षमथनाय नमः मर्वक्छममनाय नरम। मरनामानाय। धृপয়েতামঘোরেণ। অঘোরমন্ত্রস্ত অঘোরেভ্যোথ ঘোরেভোঁ। ঘোরাঘোরতরেভ্যশ্চ সর্বভঃ সর্বসর্বেভো नगर्खञ्ज ऋज्ञत्भिजाः। त्नभरग्रख्श्रक्षायः। তৎপুরুষ-মন্ত্রস্ত্র—ওঁ তৎপুরুষায় বিদ্মহে মহাদেবায় ধীমহি তমো রুদ্রঃ প্রচোদয়াৎ। মন্ত্রয়েৎ পঞ্চমেনৈব প্রত্যেকন্ত শতং শতং (यंत्रक मञ्जारारेकिव मृत्नन চ नंजः नंजः। পश्चममञ्जल-ওঁ ঈশানঃ সর্ববিদ্যানামীশ্বরঃ সর্বভূতানাং ব্রহ্মাধিপত্তি-र्युक्तार्भाश्विभिक्तिः निर्वारमञ्ज मर्गार्भरवाम्। প্रত্যেকস্ত সকুৎ সকুদিতি বা। তথাচ তত্ত্বৈব—প্রত্যেকং মন্ত্রয়েশান্ত্রী

আনত্ত করিয়া ভত্পরি মাতৃকামত্র ও মূলমা উচ্চাবণ পূর্বক মালাছাপন করিবে। কংপর ও নালাছাতং প্রপদ্যামি ইত্যাদি মত্রে পঞ্চাবারা মালাখোত করিবে। ও নমো বামদেবার ই গ্রাদি মত্রে চলন, অগুরু ও গ্রাদি দারা ধর্বকরিয়া ও আঘোরেত্য ই গ্রাদি মত্রে ধুণ দিবে। পুনর্কার ও তংপুরুষার ইত্যাদি মত্রে দালা লেপন করিবে। ও করেবে। তংপরে ও স্থানাং ইত্যাদি মত্রে দালা লেপন করিবে। তংপরে ও স্থানাং স্ক্রিদ্যানাং ইত্যাদি মন্ত্র প্রত্যক মালাতে শতবার

পঞ্চমন সক্ত সক্ত। তথাচ গোতমীয়ে—সমুদায়মালা-মধিক্ত্য—পঞ্চমেনৈব সূজেন শতাস্থানেন মন্ত্রানিতি দর্শ-নামালায়াং বা শত জপঃ। তত্তাবাছ যজেদেবং যথাভিব-বিস্তরিঃ॥ মালায়াঃ প্রাণপ্রতিষ্ঠানস্তরং দেবতাং পূজরেও। তথাচ সন্তক্মারসংহিতায়াং—সংস্কৃত্যিবং বুধোমালাং তথপ্রাণাংস্তত্র যোজয়েও। মূলমন্ত্রেণ তাং মালাং পূজয়েদিজসত্রমঃ। বারাহীতত্ত্র—মালে মালে মহামালে সর্ব্বতত্ত্বরূপি। চতুর্বর্গস্তায়ি হাস্ত স্তম্মান্মে সিদ্ধিদা তব। মায়াবীজাদিকং ক্রার রক্তপুলেঃ সমর্ক্তরেও। ইতি শক্তিবিষয়ও। বিস্তৃবিষয়ে তু যামলে—বাগ্তবত্ত তথা লক্ষ্মী মক্ষাদিমালিকাং ততঃ। ওেলাং ছলয়বর্ণান্তাং মন্ত্রেণানেন পূজয়েও। মন্তব্রেলালুলমন্ত্রণ ক্রমেণোৎক্রমযোগতঃ। তথৈব মাতৃকা বর্ণেশান্ত্রনান্তর মন্ত্রবিও। যোগানীতত্ত্ব—হোমকর্ম্ম ততঃ ক্র্যান্দেতাভাবসিদ্ধয়ে। ভাটোতরশতং হত্বা সম্পাত্যাজ্যং

পাঠ করিবে। গোঁতমীয়তয়ে লিখিত আছে যে, প্রত্যেক মালাতে উক্ত ঈশানঃ সর্কাল্যানাং ইত্যাদি মন্ত্র শতবার কিয়া একবার অপ করিলেও হইতে পারে। তৎপরে মালাতে আবাহন করিয়া মথাবিধি—প্রাণপ্রতিত্তা করিয়া বিভবাস্থ্যারে দেবভার অর্জনাকরিবে। সনংকুমারতজে লিখিত আছে যে পণ্ডিতগণ মালাসংস্কার ও প্রাণপ্রতিত্তা করিয়া মালার পূজা করিবে। ব্রা মালে মালে ইত্যাদি মদ্রে রক্ত পুস্থারা মালার পূজা করিবে। যেরূপ প্রণালী উক্ত হইল, ইহা শক্তিমালা বিষয়ে আনিবে। বিফু বিষয়ে ঐ প্রী অক্ষমালারৈ নমঃ এই মন্ত্রে পূজা করিবে। এইরূপে মালার উপরি করিয়া অক্যালি বর্গের প্রত্যেক বর্গারা মূলমন্ত্র পুটিতকরিয়া মালার উপরি অন্থলামবিলোমে অপকরিবে। বোগিনীতয়ে লিখিত আছে যে, পূজা সমাপ্রে অষ্টোত্তর শত হোমকরিয়া মালাতে প্রত্যাহিতি দিবে। হোমে

বিনিক্ষিপেৎ। হোমকর্মাণ্যশক্তন্তে দিগুণং জপমাচরেছ।
নাস্তমন্ত্রং জপেমন্ত্রী কম্পয়ের বিধৃনয়েৎ। কম্পনাৎ সিদ্ধিহানিঃ স্থাদ্ধ্ননং বছত্বঃখনং। শব্দে জাতে ভবেদ্রোগঃ
করান্ত ক্টে বিনাশক্ত্রং। ছিলে সূত্রে ভবেম্ ভ্যুস্তম্মাদ্যক্রপরো ভবেৎ। জপাস্তে কর্নদেশে বা উচ্চদেশেহথবা অসেৎ।
ওঁ ত্বং মালৈ সর্বাদেবানাং সর্বাসিদ্ধিপ্রদা মতা। তেন সত্যেন
মে সিদ্ধিং দেহি মাতর্নমোহস্ততে। ইত্যুক্ত্রা পরিপূজ্যাথ
গোপয়েদ্যক্রতো গৃহী। কামনাভেদে অঙ্গুলিনিয়মমাহ
গোতমীয়ে—তর্জগুষ্ঠযোগেন শত্রু ছাটনকর্ম্মণি। অঙ্গুষ্ঠ
মধ্যমা যোগাৎ সর্বাসিদ্ধিঃ স্থনিশ্বিতা। অঙ্গুষ্ঠানামিকা যোগাছ্কাটোচ্ছাদনে মতে। জ্যেষ্ঠাকনিষ্ঠযোগেন শত্রুণাং নাশনং

অশক্ত ইইলে বিশুণ জপ করিতে ইইবে। যে দেবতার মত্রে মালা প্রতিষ্ঠা করিবে. সেই মালাঘারা অন্তদেশতার মন্ত্র জপকরিবে না। জপকরির জপকরি বীর অঙ্গ কম্পন ও মালা কম্পন করিবে না। জপকরির অঙ্গকম্পনে সিদ্ধিতানি ও মালাকম্পনে বহু ভঃও হয়। যাহাতে জপ্পকরিবে মালাভে শন্ধ না হর এবং হস্ত ইইতে মালা অলিত না হর, এইরপ সতর্ক ইইয়া অপকরিতে ইইবে। অপকালে মালাভে শন্ধ ইইলে রোগ এবং মালা এইটেলে অপকর্তার বিনাশ হর। অপসমত্রে মালার স্থা ছিয় ছইলে অপকারে মৃত্যুহর, অতএব সতর্কতাপূর্মক অপক্রিবে। অপাবদানে স্থায়করে মৃত্যুহর, অতএব সতর্কতাপূর্মক অপক্রিবে। অপাবদানে স্থায়করে অথবা কোন উচ্চাতানে মালা রাখিবে। ও জং মালে স্থাবিবে। কামনাবিশেবে অপের অঙ্গুলিনিরম কথিত ইইতেছে। গৌডমীরতত্ত্বে লিখিত আছে বে, শত্রুর উচ্চাটনালি কার্য্যে ভর্জনী ও অঙ্গুর্গ এই অঙ্গুলিগ্রা মালা অপক্রিবে। অঙ্গুর্গ, ও মধ্যমা এই তুই অঙ্গুলিত্তে অপ করিবে সর্ম্বার্যা সিদ্ধি হর। অঙ্গুর্গ ও মধ্যমা এই তুই অঙ্গুলিভে অপ করিবে সর্ম্বার্যা সিদ্ধি হর। অঙ্গুর্গ ও অধ্যমা এই তুই অঙ্গুলিভে অপ করিবে সর্ম্বার্যা সিদ্ধি হর। অঙ্গুর্গ ও অধ্যমা এই তুই অঙ্গুলিভে অপ করিবে সর্ম্বার্যা সিদ্ধি হর। অঙ্গুর্গ ও অধ্যমা এই তুই অঙ্গুলিভে অপ করিবে সর্ম্বার্যা সিদ্ধি হর। অঙ্গুর্গ ও অধ্যমা এই তুই অঙ্গুলিভে উপ করিবে সর্ম্বার্যা সিদ্ধি হর। অঙ্গুর্গ ও অধ্যমা বেণে

মতং। বৈশন্দায়নসংহিতায়াং—অসূষ্ঠমধ্যমাত্যাঞ্চ চালয়েমধ্যমধ্যতং। তর্জ্জনা ন স্পৃশেদেনাং মুক্তিদো গণনক্রমঃ।
জীর্ণে সূত্রে পুনঃ সূত্রং গ্রথয়িত্বা শতং জপেৎ। প্রমাদাৎ
পতিতো হস্তাৎ শতমকৌতরং জপেৎ। জপেদিষিদ্ধসংস্পর্শে
কালয়িত্বা যথোদিতং। ছিমেপি অফৌতরশতজপঃ কার্যাঃ।
তত্ত্বকং কুজ্জিকাতক্রে—ছিমে সূত্রে পুনঃ সূত্রং গ্রথয়িত্বা শতং
জপেদিতি। করল্রফচিমেয়েয়লাফল্কত্বাৎ॥ প্রকারান্তরমাগমকল্লক্রমে—ভূতশুদ্ধ্যাদিকাৎ পূজাৎ সমাপ্য তত্ত্ব পূজয়েৎ। গণেশসূর্যবিষ্ণীশন্তর্গাশ্চাবাহ্য মন্ত্রবিৎ। পঞ্চগব্যং ততঃ কিপ্তা হেসাঃ মন্ত্রেণ মন্ত্রবিৎ। তত্মান্ত্রোল্য তাং
মালাৎ স্বর্ণপাত্রে নিধাপয়েৎ। পয়াদিধিয়তক্ষোজশক্রাদেরক্ত্রমাৎ। তোয়ধূপান্তরিঃ কৃত্বা পঞ্চায়ত্রিধিং ততঃ।

কনিঠাসুলিবেলে অপকরিবে। বৈশম্পায়নসংহিতায় লিখিত আছে

ক্রিটাসুলিবেলে অপকরিবে। বৈশম্পায়নসংহিতায় লিখিত আছে

ক্রেটা স্পর্ক ও মধ্যমা এই ছই অসুলিছারা অপ মালা চালনকরিবে; মালাতে

তর্জনী স্পর্করাইবে না। এইরূপে অপকরিলে মৃক্তিলাত হয়। মালার

স্ত্রে জীর্ণ হইলে পুনর্কার মালা গ্রন্থনকরিয়া শতবার অপকরিবে। যদি

অনবধানতাবশতঃ অপকালে হত্তহইতে মালা পতিত হয়, তাহা হইলে

মালা গ্রহ্ণকরিয়া পুনর্কার এক শত অটবার অপকরিবে। মালাতে

অম্পর্কিশেশ হইলে প্রকার্যারা মালা ধৌতকরিয়া অপকরিবে। আগ্রম

কর্মমে প্রকারম্ভরে মালাসংস্কার ঘাহা লিখিত আছে, এস্থানে তাহা

কথিত হইতেছে। ভূতভদ্যাদি করিয়া মালাতে গণেশ, স্ব্যা, বিফু

মহাদেব ও ছুর্গা এই সকল দেবতার আবাহনপুর্কাক পুলাকরিবে।

অনম্ভর পঞ্চাব্যমধ্যে মালা নিক্ষেপকরিয়া হেলাঃ এই মত্ত্রে পঞ্চাব্য

হইতে মালা উত্তোলনকরিয়া অর্ণগাত্রে স্থাপনকরিবে ত্য়, দধি, স্থত,

মধু ও শর্কবা এই সকলের মধ্যে সংস্থাপনকরিয়া ক্রমত ঐ সকল দ্রা

ক্রমাদত্রৈর সংস্থাপ্য স্নাপয়েৎ শীতলৈর্জলৈঃ। ততশ্বন্ধনদোগন্ধিকন্ত, রীকুরুমাদিভিঃ। তামালিপ্য হেসাঃ মন্ত্রমটোত্তর
শতং জপেৎ। তন্ত্রাং নবগ্রহাংশ্চৈর দিক্পালাংশ্চাত্র পুর্বায়েৎ। ততঃ সংপুর্বা চ গুরুং গৃহ্লীয়ামালিকাং শুরুঃ।।
ইতি॥ মালা সংস্থারঃ সমাপ্তঃ॥

मगारश्वाः मीकाशक्विः।

পঞামৃত এবং শীতণ জগধারা স্নানকরাইবে। তৎপরে চন্দন, কর্তুরী ও কুছুম ইত্যাদি স্থানিজবাধারা ছেদীঃ এই মন্ত্রে মালা লেপনকরিয়া অষ্টো-ভরশতবার জপকরিবে। অনস্তর মালাতে নবগ্রহ, দিক্পাল ও ওক্লেবের অর্জনা ক্রিয়া মালাগ্রহণ করিবে। ইতি মালা সংখার।

मर्थ्।